ॐ

मानस - अनुक्रमणिका

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस की
पंक्तियों का अकारादि क्रम के अनुसार संदर्भ कोश
(आधार : गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ग्रंथ)

परामर्शदाता :
आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री
Acharya Vishnukrant Shastri

संयोजक :
कृष्ण स्वरूप दीक्षित

सम्पादक :
डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी
डॉ० उषा द्विवेदी

प्रकाशक :
श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
कलकत्ता

Rajeev

प्राक्कथन

गोस्वामी तुलसीदास की पंचशती के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने अपने साहित्यिक उत्तरदायित्व का पालन करते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किए। पंचशती-वर्ष को अविस्मरणीय बनाने के लिए एक भव्य-प्रकाशन की योजना भी हमारे मस्तिष्क में थी परन्तु गोस्वामीजी के विराट साहित्य पर ग्रंथों, स्मारिकाओं तथा प्रकाशनों का विपुल भंडार देखते हुए आलोचनात्मक ग्रंथ के प्रकाशन को लेकर ऊहापोह बना रहा।

प्रकाशन हेतु कई प्रस्ताव सामने आए किन्तु अन्त में रामचरितमानस की पंक्तियों के अकारादि क्रमानुसार संदर्भ कोश प्रकाशन की आवश्यकता पर बल देने वाला प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। वास्तव में इस प्रकार के ग्रंथ का अभाव हर मानस-प्रेमी को खटकता रहा है।

अपने बहुमुखी गुणों के कारण श्रीरामचरितमानस जन-जन का कंठहार है। उसकी पंक्तियाँ एक ओर श्रद्धालु भक्तों के लिए मंत्र सदृश हैं तो दूसरी ओर उसकी उक्तियाँ तुलसी की टकसाल से निकली हुई प्रेरक वाणियों के रूप में सर्वसाधारण का मार्गदर्शन हर परिस्थिति में करती रहती हैं। मानस एवं मानसकार की लोकप्रियता का अन्दाजा इसी बात से लग जाता है कि सामान्य जन संदर्भ ज्ञात न होने पर भी मानस की पंक्तियों का धड़ल्ले से प्रयोग करते रहते हैं। फिर भी कभी-कभी उद्धृत करनेवाले को समग्र संदर्भ की या पाठ संबंधी शंका उत्पन्न होने पर शुद्ध पाठ के ज्ञान की उत्कंठा बनी रहती है। वे विद्वज्जन भी ऐसी आवश्यकता का अनुभव करते हैं जो अपने आलेखों में पंक्तियों का शुद्ध पाठ तथा सही संदर्भ प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इन परिस्थितियों का सामना करने वाले सहृदय पाठक हमारी इस बात से सहमत होंगे कि इस विराट ग्रंथ की पंक्ति-विशेष का संदर्भ खोजना कितना दुरूह कार्य है। शायद ही कोई ऐसा मानसप्रेमी होगा जिसे इस स्थिति से गुजरकर श्रीरामचरितमानस की अनुक्रमणिका की आवश्यकता का अनुभव न हुआ हो।

इसी अभाव की पूर्ति के लिए पावन तुलसी पंचशती वर्ष में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने 'मानस अनुक्रमणिका' प्रकाशन का संकल्प किया। यह ठीक है कि मानस-अनुक्रमणिका का प्रकाशन हमारा कोई अनूठा या प्रथम प्रयास नहीं है। इस ग्रंथ से पूर्व भी इस

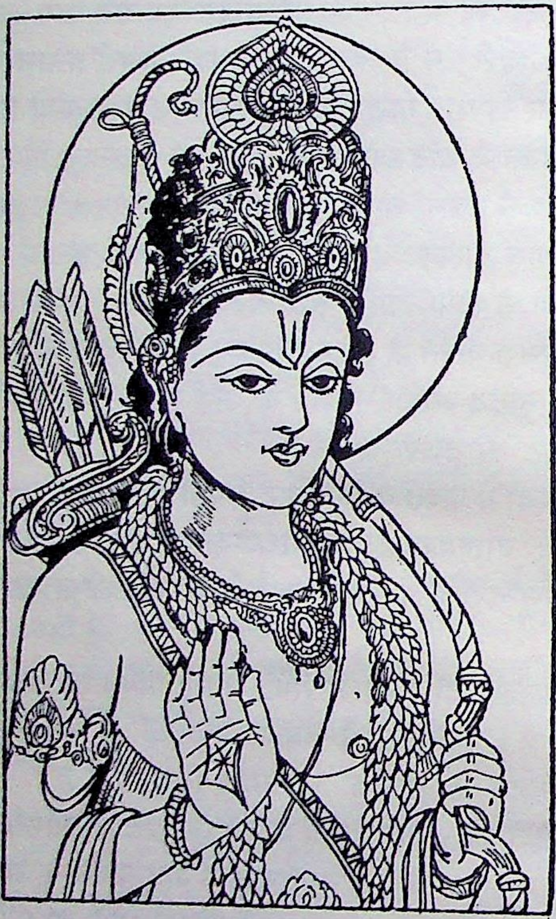

मामभिरक्षय रघुकुलनायक।
धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥

ॐ

श्री गणेशाय नमः

श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस - अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : आद्याक्षरी

अ

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । ६-३।६
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । १-१।१३
अकल अगुन अज अनघ अनामय । ६-१०९।६
अकल अनीह अनाम अरूपा । ७-११०।४
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । ७-८६।७
अग जग जीव नाग नर देवा । ७-९३।७
अग जगमय जग मम उपराजा । ७-५९।५
अग जगमय सब रहित बिरागी । १-१८४।७
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु । ७-८१।०क
अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । १-२०१।१
अगनित लोकपाल जम काला । ७-७९।६
अगम देखि नृप अति पछिताई । १-१५६।८
अगम पंथ बन भूमि पहारा । २-९७।७
अगम सनेह भरत रघुबर को । २-२४०।५
अगम सबहि बरनत बरबरनी । २-२८८।१
अगमु पंथु गिरि कानन भारी । २-१११।६
अग्य अकोबिद अंध अभागी । १-११४।१
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू । १-१०८।२
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । १-३५५।६
अग्या सम न सुसाहिब सेवा । २-३००।४
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी । १-१९४।५
अगवानन्ह जब दीखि बराता । १-३०४।७
अगुन अखंड अनंत अनादी । १-१४३।४
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । ७-७१।५
अगुन अमान जानि तेहि । ६-३१।०क
अगुन अमान मातु पितु हीना । १-६६।८
अगुन अरूप अलख अज जोई । १-११५।२
अगुन अलेप अमान एकरस । २-२१८।६
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । १-२२।१
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । १-२०।८
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । ६-११४।३
अघ अवगुन छमि आदरहिं । २-२३३।०

सौजन्य - आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, २८० चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता - ६

अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ।७।३०।४
अघ कि पिसुनता सम कछु आना ।७-१११।१०
अचल करौं तनु राखहु प्राना ।४-९।२
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा ।२-६८।८
अच्छत अंकुर लोचन लाजा ।१-३४५।५
अचवाँइ दीन्हे पान गवने ।१-९८।१२
अछत राम राजा अवध ।२-२७३।०
अज व्यापकमेकमनादि सदा ।६-११०।७
अज महेस नारद सनकादी ।६-१०४।२
अजर अमर गुननिधि सुत होहू ।५-१६।३
अजर अमर सो जीति न जाई ।१-८१।७
अजस पेटारी ताहि करि ।२-१२।०
अजसु लोक परलोक दुख ।२-२१८।०
अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ ।२-४४।१
अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ ।२-१२३।१
अजहुँ देत दुख रबि ससिहि ।१-१७०।०
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी ।१-१४०।५
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू ।२-१६४।५
अजहूँ कछु संसउ मन मोरें ।१-१०८।५
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना ।६-६२।२
अजहूँ मानहु कहा हमांरा ।१-७९।१
अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा ।२-३१।५
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि ।१-९७।३
अजिन बसन फल असन महि ।२-२११।०
अट्टहास करि गर्जा ।५-२५।०
अटनु राम गिरि बन तापस थल ।२-२७९।७
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं, पीछें ।२-१४२।६
अति अकेल बन बिपुल कलेसू ।१-१५६।६
अति अघ गुर अपमानता ।७-१०६।ख

अति अनुराग अंब उर लाए ।२-२४४।५
अति अनूप जहँ जनक निवासू ।१-२१२।७
अति अपार जे सरित बर ।१-१३।०
अति आदर खगपति कर कीन्हा ।७-६२।७
अति आदर दोउ तनय बोलाए ।१-२०७।९
अति आदर रघुनायक कीन्हा ।७-४७।२
अति आदर सब कपि पहुँचाए ।७-१८।६
अति आदर समीप बैठारी ।६-३७।४
अति आनंद उमगि अनुरागा ।२-१००।७
अति आरति कहि कथा सुनाई ।१-१३१।५
अति आरति पूछउँ सुरराया ।१-१०९।३
अति आरति सब पूँछहिं रानी ।२-१४७।१
अति उतंग गिरि पादप ।६-१।०
अति उतंग जलनिधि चहु पासा ।५-२।११
अति कटुबचन कहति कैकेई ।२-२९।८
अति कृपाल रघुनायक ।३-१।०
अति कोप करहिं प्रहार मारत ।६-९९।१३
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ।५-५६।५
अति खल जे बिषई बग कागा ।१-३७।३
अति गर्ब गनइ न सगुन असगुन ।६-७७।१०
अति गहगहे बाजने बाजे ।१-२८५।१
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं ।१-२६९।५
अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं ।६-४०।११
अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा ।७-१०५।८
अति दीन मलीन दुखी नितहीं ।७-१३।११
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद ।७-११८।३
अति नागर भव सागर सेतुः ।३-१०।१४
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ।१-२१०।६
अति नीचहु सन प्रीति ।७-९५।क

सौजन्य - आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, २८० चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता - ६

अति परिताप सीय मन माहीं ।१-२५७।८
अति प्रचंड रघुपति कै माया ।१-१२७।८
अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी ।३-४२।१
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे ।१-९२।४
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी ।७-३।७
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं ।१-३२६।१६
अति पुनीत गिरिजा कै करनी ।१-७५।८
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा ।१-२१०।३
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि ।१-८६।११
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं ।७-५।१२
अति प्रेम हृदयँ लगाइ अनुजहि ।७-४।१०
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ।१-२८।१
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता ।१-१७९।३
अतिबल मधुकैटभ जेहिं मारे ।६-५।७
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई ।३-२६।२
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका ।७-७९।४
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी ।६-७८।५
अति बिचित्र भगवंत गति ।२-७७।०
अति बिचित्र रघुपति चरित ।१-४९।०
अति बिनीत बोलेउ बचन ।७-१७।ख
अति बिनीत मृदु सीतल बानी ।१-२७८।१
अति बिषाद बस लोग लोगाईं ।२-५०।७
अति बिस्तार चारु गच ढारी ।१-२२३।२
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई ।७-११२।५
अति बिसाल तरु एक उपारा ।५-१८।५
अति रिस बोले बचन कठोरा ।१-२६९।३
अति लघु बात लागि दुखु पावा ।२-४४।७
अति लघु रूप धरौं निसि ।५-३।०
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना ।५-४।४

अति लालसा बसहिं मन माहीं ।२-१०९।३
अति सनेह बस सखीं सयानी ।१-३३३।६
अति सनेहँ सादर भरत ।२-१९८।०
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि ।६-११०।०
अति सप्रेम सिय पायँ परि ।२-११७।०
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ।४-०।३
अति सभीत नारद पहिं आए ।१-१३८।२
अति सरोष माखे लखनु ।२-२३०।०
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे ।७-६।८
अति सुकुमार न तनु तप जोगू ।१-७३।२
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा ।१-३०५।६
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला ।१-७९।२
अति संघरषन जौं कर कोई ।७-११०।१६
अति हरष मन तन पुलक लोचन ।६-१०६।९
अति हरषु राजसमाज दुहु दिसि ।१-३१६।९
अति हरि कृपा जाहि पर होई ।७-१२८।४
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के ।१-३१।८
अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी ।१-१८३।४
अतिसय प्रबल देव तव माया ।४-२०।२
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा ।३-९।१४
अतिसय प्रीति देखि रघुराई ।६-११८।१
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी ।१-२१०।४
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ।३-१।१२
अतुलितबलधामं................ ।५-श्लोक३।१
अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता ।३-२१।७
अतुलित भुज प्रताप बल धामः ।३-१०।१५
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी ।१-४२।२
अधम जाति मैं बिद्या पाएँ ।७-१०५।६
अधम ते अधम अधम अति नारी ।३-३४।३

अधम निसाचर लीन्हें जाई । ३-२८।८
अधम सिरोमनि तव पद पावा । ६-१०९।१०
अधर अरुन रद सुंदर नासा । १-१४६।२
अधर लोभ जम दसन कराला । ६-१४।५
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । ६-७९।२
अधिक सनेहँ गोद बैठारी । १-९५।७
अधिक सनेहँ देह भै भोरी । १-२३१।६
अन्न कनकभाजन भरि जाना । १-१००।८
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई । १-१६७।६
अनमिल आखर अरथ न जापू । १-१४।६
अनरथु अवध अरंभेउ जब तें । २-१५६।५
अनल दाहि पीटत घनहिं । ७-३७।०
अनवद्य अखंड न गोचर गो । ६-११०।१५
अनुसुइया के पद गहि सीता । ३-४।१
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । ७-१०।५
अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा । २-२५।१
अनारंभ अनिकेत अमानी । ७-४५।६
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । ६-४५।१०
अनिमादिक सिधि अपर रिधि । ७-८३।ख
अनिमादिक सुख संपदा । ७-२९।०
अनुचित आजु कहब अस मोरा । २-२८२।७
अनुचित उचित काजु किछु होऊ । २-२३०।३
अनुचित उचित बिचारु तजि । २-१७४।०
अनुचित कहि सब लोग पुकारे । १-२७५।८
अनुचित नाथ न मानब मोरा । २-२२८।७
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता । १-२८४।६
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो । ६-६३।४
अनुज क्रिया करि सागर तीरा । ४-२७।१
अनुज जानकी सहित निरंतर । ६-११४।८
अनुज जानकी सहित प्रभु । ६-११२।०
अनुज जानकी सहित प्रभु । ३-११।०
अनुज बधू भगिनी सुत नारी । ४-८।७
अनुज राज संपति बैदेही । ७-१५।६
अनुज सखा सँग भोजन करहीं । १-२०४।४
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ । ३-२९।५
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । ५-३०।३
अनुज समेत देहु रघुनाथा । १-२०६।१०
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । ६-१११।२
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । ५-४५।३
अनुज सहित सिर जटा बनाए । २-९३।४
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । ७-२५।३
अनुपम बालक देखेन्हि जाई । १-१९२।८
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर । १-३२४।२३
अनूप रूप भूपतिं । ३-३।२१
अपडर डरेउँ न सोच समूलें । २-२६६।३
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ । १-२५।७
अपनें चलत न आजु लगि । २-२०।०
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । १-२७३।६
अपभयँ कुटिल महीप डेराने । १-२८४।८
अपर जलचरन्हि ऊपर । ६-४।०
अपर देउ अस कोउ न आही । १-२१९।८
अपर नाम उडगन बिमल । ३-४२।०क
अपर महोदर आदिक बीरा । ६-६१।१२
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा । १-१५२।६
अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । १-१४०।१
अपराधु छमिबो बोलि पठए । १-३२५।१८
अब अति कीन्हेहु भरत भल । २-२०७।०
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । ६-६०।१३

सौजन्य - श्री पंकज दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता - ६

अब अभिलाषु एकु मन मोरें ।२-२।७
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली ।१-२७५।४
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी ।१-७४।२
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें ।२-१०१।७
अब करि कृपा देहु बर एहू ।२-१०६।८
अब करि कृपा बिलोकि मोहि ।६-११३।०
अब करुनाकर कीजिअ सोई ।२-२६७।२
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ।५-१३।३
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई ।६-२०।७
अब कुसल कौसलनाथ आरत ।७-४।१५
अब कुसल पद पंकज बिलोकि ।६-१२०।१५
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ।५-१६।६
अब कृपाल जस आयसु होई ।२-३०६।७
अब कृपाल निज भगति पावनी ।५-४८।७
अब कृपाल मोहि सो मत भावा ।२-२६८।७
अब गृह जाहु सखा सब ।७-१६।०
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई ।२-३१२।८
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे ।६-११५।५
अब जनमि तुम्हरे भवन ।१-९७।११
अब जनि कबहूँ ब्यापै ।१-२०२।०
अब जनि करहि बिप्र अपमाना ।७-१०८।१२
अब जनि कोउ माखै भट मानी ।१-२५१।३
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू ।१-२७४।३
अब जनि बतबढ़ाव खल करही ।६-२९।१
अब जनि राम खेलावहु एही ।६-८५।६
अब जहँ राउर आयसु होई ।२-१२५।२
अब जाना मैं अवध प्रभावा ।७-९६।५
अब जानी मैं श्री चतुराई ।३-५।७
अब जौं तात दुरावउँ तोही ।१-१६१।४
अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू ।१-७१।१
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं ।६-१०३।१२
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे ।१-१७८।२
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू ।२-१७६।७
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी ।१-१५०।८
अब तें रति तव नाथ कर ।१-८७।०
अब तोहि नीक लाग करु सोई ।२-३५।६
अब दसरथ कहँ आयसु देहू ।१-३३१।७
अब दीनदयाल दया करिऐ ।६-११०।१९
अब देखि प्रभु पद कंज ।६-११२।१२
अब धौं कहा करिहि करतारा ।६-१७।९
अब नाथ करि करुना बिलोकहु ।४-९।१०
अब पति मृषा गाल जनि मारहु ।६-३५।७
अब पद देखि कुसल रघुराया ।५-४५।८
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती ।४-६।२१
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ।३-०।२
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें ।२-१९४।८
अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं ।३।११।३
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं ।१-१६३।५
अब बिधि अस बूझिअ नहिं तोही ।१-५८।४
अब बिनती मम सुनहु सिव ।१-७६।०
अब बिलंबु केहि काम ।६-०।ख
अब बिलंबु केहि कारन कीजे ।५-३३।७
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई ।६।६२।७
अब भा झूठ तुम्हार पन ।१-८९।०
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि ।६-९८।१७
अब मारुतसुत दूत समूहा ।४-१८।४
अब मुनिवर बिलंब नहिं कीजै ।७-९।८
अब मैं कुसल मिटे भय भारे ।५।४६।५

सौजन्य - सुश्री रश्मि दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता - ६

अब मैं जन्मु संभु हित हारा । १-८०।२
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । १-११९।४
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । ५-६।४
अब रघुपति पद पंकरुह । १-४३।ख
अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ । १-१६१।क
अब श्रीराम कथा अति पावनि । ७-६३।३
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । २-२६१।७
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं । १-३२९।७
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा । १-१७०।३
अब सुख सोवत सोचु नहिं । १-७९।०
अब सुनहु दीन दयाल । ६-११२।१०
अब सुनु परम बिमल मम बानी । ७-८५।१
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा । ६-१९।६
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । ७-५७।२
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । ३-१२।३
अब सोइ कहउँ प्रसंग सब । १-३५।०
अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । ६-१०७।१
अब सोइ जतनु करहु मन लाई । ४-२०।८
अब हम नाथ सनाथ सब । २-१३५।०
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच । ७-१२।१७
अबला कच भूषन भूरि छुधा । ७-१०१।१
अबला बालक बृद्ध जन । २-१२१।०
अबला बिलोकहिं पुरुषमय । १-८४।११
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई । ५-१५।३
अबहीं ते उर संसय होई । ६-९।३
अबिगत अकथ अपार । २-१२६।०
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं । १-१८५।६
अबिचल राजु बिभीषन पायो । ६-१०६।८
अबिनय बिनय जथारुचि बानी । २-२९९।८
अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई । ३-९।१३
अबिरल भगति बिरति बिग्याना । ३-१०।२६
अबिरल भगति बिरति सतसंगा । ३-१२।११
अबिरल भगति बिसुद्ध तव । ७-८४।क
अबिरल भगति मागि बर । ३-३२।०
अभिमत दानि देवतरु बर से । १-३१।११
अमर नाग किंनर दिसिपाला । २-१३३।१
अमर नाग नर राम बाहुबल । २-२८४।७
अमल अचल मन त्रोन समाना । ६-७९।९
अमलमखिलमनवद्यमपारं । ३-१०।१२
अमिअ मूरिमय चूरन चारू । १-०।२
अमित दानि भर्ता बयदेही । ३-४।६
अमित नाम भट कठिन कराला । ५-५३।८
अमितबोध अनीह मितभोगी । ३-४४।८
अमित रूप प्रगटे तेहि काला । ७-५।५
अयमय खाँड़ न ऊखमय । १-२७५।०
अरथ अनूप सुभाव सुभासा । १-३६।६
अरथ धरम कामादि सुख । १-१५४।०
अरथ धरम कामादिक चारी । १-३६।९
अरथ न धरम न काम रुचि । २-२०४।०
अर्क जवास पात बिनु भयऊ । ४-१४।३
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा । १-१८९।२
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ । ६-६०।२
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । ४-५।३
अरि बस दैउ जिआवत जाही । २-२०।२
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । २-१८२।६
अरुण नयन राजीव सुवेशं । ३-१०।७
अरुन चरन पंकज नख जोती । १-१९८।२
अरुन नयन उर बाहु बिसाला । १-२०८।१

सौजन्य - सुश्री रश्मि दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता - ६

अरुन नयन बारिद तनु स्यामा ।६-८५।९
अरुन नयन भृकुटी कुटिल ।१-२६७।०
अरुन पराग जलजु भरि नीकें ।१-३२४।९
अरुन पानि नख करज मनोहर ।७-७६।१
अरुनोदयँ सकुचे कुमुद ।१-२३८।०
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ ।२-१८६।५
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा ।७-२०।५
अलिगन गावत नाचत मोरा ।२-२३५।७
अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं ।२-२७५।९
अवगुन एक मोर मैं माना ।५-३०।५
अवगुन तजि सब के गुन गहहीं ।२-१३०।१
अवगुन मूल सूलप्रद ।३-४४।०
अवगुन सिंधु मंदमति कामी ।७-३९।७
अवघट घाट बाट गिरि कंदर ।६-७२।६
अवतरेउ अपने भगत हित ।१-५०।१२
अवतार उदार अपार गुनं ।६-११०।६
अवतार नर संसार भार ।७-१२।३
अवध उजारि कीन्हि कैकेईं ।२-२८।९
अवध तहाँ जहँ राम निवासू ।२-७३।३
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें ।२-१४६।५
अवध प्रभाव जान तब प्रानी ।७-९६।७
अवध समीप पुनीत दिन ।१-३४३।०
अवधनाथु चाहत चलन ।१-३३२।०
अवध नृपति दसरथ के जाए ।३-२१।३
अवध राजु सुर राजु सिहाई ।२-३२३।६
अवधपुरी अति रुचिर बनाई ।७-१०।१
अवधपुरी नर नारि तेहि ।७-८८।क
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी ।७-८०।६
अवधपुरी प्रभु आवत जानी ।७-२।९
अवधपुरी बासिन्ह कर ।७-२६।०
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ ।७-३।४
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती ।१-१९४।३
अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ ।१-१८७।७
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना ।२-५६।२
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाएँ ।४-२१।८
अवधेस सुरेस रमेस बिभो ।७-१३।२
अवनि जमहि जाचति कैकेई ।२-२५१।६
अवनिप अकनि रामु पगु धारे ।२-४३।१
अवलोकनि बोलनि मिलनि ।१-४२।०
अवलोकि खरतर तीर ।३-१९।३
अवलोकि निज दल बिकल भट ।३-१९।२१
अवलोकि रघुकुल कमल रबि ।१-३१८।१२
अवलोकि सकहिं न सकुच ।१-९९।१२
अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को ।१-३२०।१२
अवलोके रघुपति बहुतेरे ।१-५४।४
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें ।७-१३।१२
अवसर जानि बिभीषनु आवा ।५-३७।२
अवसरु जानि सप्तरिषि आए ।१-८८।७
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू ।२-३०७।५
अवसि काज मैं करिहउँ तोरा ।१-१६७।३
अवसि चलिअ बन रामु जहँ ।२-१८४।०
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता ।२-३०।७
अवसि नरेस बचन फुर करहू ।२-१७४।१
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी ।२-२५२।३
अस अनुमानि सोच परिहरहू ।२-१६०।४
अस अनंदु अचिरिजु प्रतिग्रामा ।२-२२२।८
अस अभिमान जाइ जनि भोरे ।३-१०।२१
अस अभिलाषु नगर सब काहू ।२-२३।७

अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा ।१-९६।२
अस उर धरि महि बिचरहु जाई ।१-१३७।८
अस कपि एक न सेना माहीं ।४-२९।३
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु ।४-९।९
अस कस कहहु मानि मन ऊना ।२-२०।४
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा ।६-३९।४
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ ।२-२८९।७
अस कहि आयसु पाइ पद ।६-६०।क
अस कहि अंगद मारा लाता ।६-८४।८
अस कहि कठिन बान संधाने ।६-४९।४
अस कहि कपि गदगद भयउ ।५-१४।०
अस कहि कपि सब चले तुरंता ।७-१८।१०
अस कहि करत दंडवत देखा ।५-४५।१
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।५-४०।६
अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ।२-३३।१
अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ ।४-२८।५
अस कहि गई अपछरा जबहीं ।६-५७।३
अस कहि गहे नरेस पद ।१-१६७।०
अस कहि गे बिश्रामगृहँ ।१-३५५।०
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही ।७-१७।८
अस कहि चला बिभीषनु जबहीं ।५-४१।१
अस कहि चला महा अभिमानी ।४-७।१
अस कहि चला रचिसि मग माया ।६-५६।१
अस कहि चले देवरिषि ।७-५९।०
अस कहि चलेउ बालिसुत ।७-१९।ख
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई ।१-८३।३
अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा ।६-८२।३
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा ।१-६३।८
अस कहि जोग अगिन तनु जारा ।३-८।१

अस कहि तरल त्रिसूल चलायो । ६-७३।६
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी । १-१३४।७
अस कहि नयन नीर भरि । ६-७।०
अस कहि नारद सुमिरि हरि । १-७०।०
अस कहि पग परि पेम अति । २-२८५।०
अस कहि परी चरन धरि सीसा । १-७०।७
अस कहि परेउ चरन अकुलाई । ४-२।५
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । ५-५०।६
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा । ३-५।१०
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी । २-१२४।८
अस कहि प्रेम बिबस भए भारी । २-३००।५
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । १-२२९।३
अस कहि बहुत भाँति समुझाई । ६-९९।१
अस कहि बिबिध बिलाप । ३-२९।क
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । ५-३६।५
अस कहि बंधु समेत नहाने । २-२२५।८
अस कहि भले भूप अनुरागे । १-२४५।७
अस कहि भेंट सँजोवन लागे । २-१९२।२
अस कहि मरुत बेग रथ साजा । ६-७७।७
अस कहि मातु भरत हियँ लाए । २-१६८।५
अस कहि मुनि बसिष्ट गृह आए । ७-४९।१
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ । २-८९।८
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । ५-५७।५
अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । २-२१३।४
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । ६-८९।१
अस कहि रही चरन गहि रानी । १-३३६।१
अस कहि राउ सहित सुत रानी । १-३५९।८
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा । २-४५।५
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । ५-४८।१०

सौजन्य - श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

अस कहि लखनु ठाउँ देखरावा ।२-१३२।५
अस कहि लगे जपन हरिनामा ।१-५१।८
अस कहि लछिमन कहुँ कपि ल्यायो ।६-८३।५
अस कहि लवन सिंधु तट जाई ।४-२५।१०
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ ।२-१५२।४
अस कहि सब महिदेव सिधाए ।१-१७४।१
अस कहि सारद गइ बिधि लोका ।२-२९४।८
अस कहि सीय बिकल भइ भारी ।२-६७।१
अस को जीव जंतु जग माहीं ।२-१६१।६
अस कौतुक करि राम सर ।६-१३।ख
अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई ।६-४।१
अस जानि संसय तजहु गिरिजा ।१-९७।१२
अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ ।२-१२५।५
अस जियँ जानि जानकी देखी ।१-२६०।४
अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई ।२-२१८।८
अस जियँ जानि दसानन संगा ।३-२५।७
अस जियँ जानि भजहिं मुनि ।७-६२।ख
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि।२-६५।७
अस जियँ जानि सुजान सुदानी ।२-२०३।८
अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई।२-७०।१
अस जियँ जानि संग बन जाहू ।२-७३।८
अस तप काहुँ न कीन्ह भवानी ।१-७४।१
अस तव रूप बखानउँ जानउँ ।३-१२।१३
अस तीरथपति देखि सुहावा ।२-१०५।२
अस दीनबंधु कृपाल अपने ।३-४५।१०
अस निज हृदयँ बिचारि ।१-११५।०
अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना ।१-५६।५
अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना ।५-४९।१
अस प्रभु दीनबंधु हरि ।१-२११।०

अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी।६-४४।६
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी ।१-२२।७
अस बरु तुम्हहिं मिलाउब आनी ।१-७९।४
अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ ।१-१५०।७
अस बिचारि उर छाड़हु कोहू ।२-४९।१
अस बिचारि केहि देइअ दोसू ।२-१७१।१
अस बिचारि खल बधउँ न तोही ।६-३०।५
अस बिचारि गवनहु घर भाई ।१-२४४।४
अस बिचारि गुहँ ग्याति सन ।२-१८९।०
अस बिचारि जस आयसु होई ।२-५९।६
अस बिचारि जियँ जागहु ताता ।६-६०।८
अस बिचारि जुबराज ।६-१७।ख
अस बिचारि जे तग्य बिरागी ।६-७३।२
अस बिचारि जे परम सयाने ।७-४०।६
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी ।७-११५।८
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा ।७-११९।१९
अस बिचारि तजि संसय ।७-१२२।ख
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका ।१-७१।४
अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू ।२-९२।१
अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू ।१-४५।१
अस बिचारि भजु मोहि ।७-८७।ख
अस बिचारि मतिधीर ।७-९०।ख
अस बिचारि मन माहिं ।१-१४०।०
अस बिचारि रघुबंस मनि ।७-१३०।क
अस बिचारि सब सोच बिहाई ।२-३१४।६
अस बिचारि सुचि सेवक बोले ।२-१८५।६
अस बिचारि सुनु प्रानपति ।६-१५।ख
अस बिचारि सोइ करहु उपाई ।२-५६।३
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा ।२-७८।५

सौजन्य - श्रीमती बीना दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

अस बिचारि सोचहि मति माता ।१-९६।६
अस बिचारि संकरु मतिधीरा ।१-५६।३
अस बिचारि हरि भगत सयाने ।७-११८।७
अस बिबेक जब देइ बिधाता ।१-६।१
अस बिबेक राखेहु मन माहीं ।७-१०८।१५
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा ।१-१८२।११
अस मन आनि मुदित नर नारी ।२-२७२।२
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला ।२-४४।३
अस मन गुनत चले मग जाता ।२-२३३।४
अस मन समुझि कहति जानकी ।५-८।८
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही ।६-६०।१०
अस मानस मानस चख चाही ।१-३८।९
अस मैं अधम सखा सुनु ।५-७।०
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू ।२-२६८।६
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर ।५-५४।३
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो ।२-३१३।५
अस सज्जन मम उर बस कैसें ।५-४७।७
अस समर्थ रघुनायकहि ।७-११९।ख
अस समुझत मन संसय होई ।१-१४९।७
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि ।१-६७।०
अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ ।७-१२३।४
अस संजोग ईस जब करई ।७-११६।८
अस संसय आनत उर माहीं ।१-११८।६
अस संसय मन भयउ अपारा ।१-५०।४
अस्त भएँ बिगसत भईं ।७-९।क
अस्तुति करत जोरि कर ।१-१८५।०
अस्तुति करत देवतन्हि देखें ।६-९६।५
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ।१-१९०।८
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृन्दा ।३-८।४
अस्तुति करि करि सब चले ।३-२०।ख
अस्तुति करि न जाइ भय माना ।१-२०१।७
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए ।६-७६।५
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू ।१-८२।८
अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा ।१-१४४।४
अस्थि समूह देखि रघुराया ।३-८।६
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे ।६-५०।६
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई ।१-२९८।८
असगुन अमित होहिं तेहि काला ।६-७७।९
असगुन अमित होहिं भयकारी ।३-१७।७
असगुन होहिं नगर पैठारा ।२-१५७।४
असन पान सुचि अमिअ अमी से ।२-२१४।५
असन बसन बासन ब्रत नेमा ।२-३२३।४
असन सयन बर बसन सुहाए ।१-३०३।७
असमंजस बस अवध नेवासी ।२-२६९।२
असरन सरन बिरदु संभारी ।७-१७।३
असि प्रतीति सब के मन माहीं ।१-२४४।२
असि रघुपति लीला उरगारी ।७-७२।१
असि रव पूरि रही नव खंडा ।६-५२।७
असि रिस होति दसउ मुख तोरौं ।६-३३।२
असि सब भाँति अलौकिक करनी ।१-११७।८
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ ।७-४६।४
असि हरि भगति सुगम सुखदाई ।७-११८।१०
असुभ बेष भूषन धरें ।७-९८।क
असुभ होन लागे तब नाना ।६-१०१।७
असुर नाग खग नर मुनि देवा ।१-३३।७
असुर मारि थापहिं सुरन्ह ।१-१२१।०
असुर समूह सतावहिं मोही ।१-२०६।९
असुर सुरा बिष संकरहि ।१-१३६।०

सौजन्य - श्रीमती बीना दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

असुर सेन सम नरक निकंदिनि ।१-३०।९
अहइ एक अति सुगम उपाई ।१-१६६।२
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं ।७-२४।५
अहह कंत कृत राम बिरोधा ।६-३६।६
अहह तात दारुनि हठ ठानी ।१-२५७।२
अहह दैव मैं कत जग जायउँ ।६-५९।३
अहह धन्य लछिमन बड़भागी ।७-०।३
अहह नाथ रघुनाथ सम ।६-१०४।०
अहह बन्धु तैं कीन्हि खोटाई ।६-६२।४
अहह मंद मनु अवसर चूका ।२-१४३।६
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई ।२-१८३।८
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई ।२-२५३।७
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा ।१-१०३।४
अहोभाग्य मम अमित अति ।५-४७।०
अहंकार अति दुखद डमरुआ ।७-१२०।३५
अहंकार सिव बुद्धि अज ।६-१५।क
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं ।२-१३१।७
अत्रि कहेउ तब भरत सन ।२-३०९।०
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ ।३-२।४
अत्रि सुनायउ रघुबरहि ।२-३१०।०

आ

आइ गए बगमेल ।३-१८।०
आइ गयउ हनुमान ।६-६१।०
आइ नहाए सरित बर ।२-१३२।०
आइ पाय पुनि देखिहउँ ।२-५३।०
आइ बना भल सकल समाजू ।२-२२९।५
आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो ।६-१०५।१
आइ राम पद नावहिं माथा ।४-२१।२
आइ सबन्हि नावा पद सीसा ।५-२८।३
आए कपि सब जहँ रघुराई ।७-६६।६
आए कीस काल के प्रेरे ।६-३९।३
आए देखन चापमख ।१-२२१।०
आए देव सदा स्वारथी ।६-१०९।२
आए निकट देखि अनुरागे ।२-२७४।६
आए ब्याहि रामु घर जब तें ।१-३६०।५
आए भरत संग सब लोगा ।७-४।१
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी ।१-१४२।६
आए मुनिबर निकर तब ।१-३३०।०
आकर चारि जीव जग अहहीं ।१-४५।४
आकर चारि लच्छ चौरासी ।७-४३।४
आकर चारि लाख चौरासी ।१-७।१
आखर अरथ अलंकृति नाना ।१-८।९
आखर मधुर मनोहर दोऊ ।१-१९।१
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ।१-१०२।८
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ।२-२९२।७
आगम निगम पुरान अनेका ।७-४८।३
आगिल काजु बिचारि बहोरी ।२-११।७
आगिलि बात समुझि डरु मोही ।२-१७।८
आगें कह मृदु बचन बनाई ।४-६।७
आगें किए निषाद गन ।२-२०२।०
आगें कै हनुमंतहि लीन्हा ।४-२३।८
आगें चले बहुरि रघुराया ।४-०।१
आगें दीखि जरत रिस भारी ।२-३०।१
आगें देखि राम तन स्यामा ।३-९।२०
आगें परा गीधपति देखा ।३-२९।१८
आगें मुनिबर बाहन आछें ।२-२२०।५
आगें राम अनुज पुनि पाछें ।३-६।२
आगें रामु लखनु बने पाछें ।२-१२२।१

सौजन्य - श्रीमती बीना दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

आगें होइ चलि पंथ तेहिं ।१-५२।०
आग़ें होइ जेहि सुरपति लेई ।२-९७।४
आचारु करि गुर गौरि गनपति ।१-३२२।९
आजन्म ते परद्रोह रत ।६-१०३।१६
आजु करउँ खलु काल हवाले ।६-८९।८
आजु देउँ सब संसय नाहीं ।७-८३।२
आजु दया दुखु दुसह सहावा ।१-२७९।३
आजु धन्य मैं धन्य अति ।७-१२३।क
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा ।७-३२।७
आजु बयरु सबु लेउँ निबाही ।६-८९।७
आजु राम सेवक जसु लेऊँ ।२-२२९।३
आजु लगें अरु जब तें भयऊँ ।१-१६६।४
आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ ।४-२६।३
आजु सुफल जग जनमु हमारा ।१-३५६।७
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू ।२-१०६।५
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।५-१।३
आठवँ जथालाभ संतोषा ।३-३५।४
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा ।७।११७।२
आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन ।६-८३।९
आतुर सभय कहेसि पद जाई ।३-१।११
आदर दान प्रेम परिपोषे ।१-३५१।४
आदर दान बिनय बहु माना ।१-१०२।२
आदि अंत कोउ जासु न पावा ।१-११७।४
आदिदेव प्रभु दीनदयाला ।१-१४१।६
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया ।१-१५१।४
आदिसृष्टि ' उपजी जबहिं ।१-१६२।०
आदिहु तें सब आपनि करनी ।२-१५९।८
आधा कटकु कपिन्ह संघारा ।६-४७।४
आन उपाउ न देखिअ देवा ।२-२६४।७
आन उपाउ मोहि नहिं सूझा ।२-१८२।१
आन उपायँ निधन तव नाहीं ।१-१६५।४
आन दंड कछु करिअ गोसाँई ।५-२३।८
आन बीर बल सठ मम आगें ।६-२८।४
आनन अनल अंबुपति जीहा ।६-१४।६
आनन रहित सकल रस भोगी ।१-११७।६
आनहु रामहि बेगि बोलाई ।२-३८।१
आनि काठ रचु चिता बनाई ।५-११।३
आनि देखाई नारदहि ।१-१३०।०
आनि देहिं नल नीलहि ।६-१।०
आने फेरि कि बनहि सिधाए ।२-१४८।४
आनेउँ सब तीरथ सलिलु ।२-३०७।०
आनंद कंदु बिलोकि दूलहु ।१-३२०।१०
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु ।१-३१७।११
आनँद मगन राम महतारी ।२-७।४
आप अछत जुबराज पद ।२-१।०
आपन चरित कहा हम गाई ।४-१।४
आपन जानि न त्यागिहहिं ।२-१८३।०
आपन मोर नीक जौं चहहू ।२-६०।३
आपन रूप देहु प्रभु मोही ।१-१३१।६
आपनि दारुन दीनता ।२-१८२।०
आपनें बय बल रूप गुन ।१-३१५।१०
आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ ।२-२९०।५
आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं ।७-९९।३
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि ।१-३०१।०
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी ।२-३०२।७
आपु बिरचि उपरोहित रूपा ।१-१७१।१
आपु लखन पहिं बैठेउ जाई ।२-८९।४
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई ।१-१४९।२

सौजन्य - श्रीमती बीना दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू।२-२०२।३
आपनु आवइ ताहि पहिं।१-१५९।ख
आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ।१-१८२।१०
आपुहि सुनि खद्योत सम।५-९।०
आभीर जमन किरात खस।७-१२९।११
आँब छाँह कर मानस पूजा।७-५६।६
आयउ प्रभु श्री अनुज जुत।७-०।ग
आयसु करहिं सकल भयभीता।१-१८१।१३
आयसु काह कहिअ किन मोही।१-२७०।२
आयसु देइअ देव अब।२-३००।०
आयसु देइअ हरषि हियँ।२-४५।०
आयसु देहि मुदित मन माता।२-५२।७
आयसु देहु सो करौं अब।७-६३।क
आयसु पाइ दूत बहु धाए।६-१८।३
आयसु पाइ राखि उर रामहि।१-३५०।५
आयसु पालि जनम फलु पाई।२-४५।३
आयसु मागि करहिं पुर काजा।१-२०४।८
आयसु मागि चरन सिरु नाई।४-२२।८
आयसु मागि राम पहिं।६-५२।०
आयसु मोर सासु सेवकाई।२-६०।४
आयसु होइ त रहौं सनेमा।२-३२२।७
आयसु होइ सो करौं गोसाई।२-८।८
आयुध अनेक प्रकार।३-१९।६
आयुध सर्ब समर्पि कै।१-२०९।०
आरजसुत पद कमल बिनु।२-९७।०
आरत कहहिं बिचारि न काऊ।२-२५७।१
आरत गिरा सुनी जब सीता।३-२७।२
आरत जननी जानि सब।२-१८६।०
आरत लोग राम सबु जाना।२-२४३।१

आरति करहिं मुदित पुर नारी।१-३४७।७
आरति बस सनमुख भइउँ।२-९७।०
आरति बिनय दीनता मोरी।१-४२।१
आरति मोर नाथ कर छोहू।२-३१३।६
आरति हरन सरन सुखदायक।३-२८।२
आराम रम्य पिकादि खग रव।७-२८।१२
आवत एहिं सर अति कठिनाई।१-३७।६
आवत कपिहिं हन्यो तेहिं।६-८३।०
आवत जनकु चले एहि भाँती।२-२७४।५
आवत जानि भानुकुल केतू।१-३०३।५
आवत जानि बरात बर।१-३०४।०
आवत दीखि बरातिन्ह सीता।१-३२२।२
आवत देखहिं बिषय बयारी।७-११७।१२
आवत देखि अधिक रव बाजी।१-१५६।१
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला।६-७५।१०
आवत देखि कृतांत समाना।३-२८।१२
आवत देखि गयउ नभ सोई।६-५०।३
आवत देखि बिटप गहि तर्जा।५-१७।८
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा।२-१३३।६
आवत देखि लोग सब।७-४।क
आवत देखि सक्ति अति घोरा।६-९३।१
आवत देखि सकल खगराजा।७-६२।६
आवत देखि सैल प्रभु भारे।६-६८।४
आवत निकट हँसहिं प्रभु।७-७७।क
आवत पंथ कबंध निपाता।३-३२।६
आवत मुकुट देख कपि भागे।६-३१।७
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि।२-१५८।२
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा।६-२२।६
आवा परम क्रोध कर मारा।६-७५।५

सौजन्य -श्री राजेन्द्र धनानिया, ७७, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७

आवै पिता बोलावन जबहीं ।१-७४।३
आस त्रास इरिषादि निबारक ।७-३४।५
आसन उचित दिए सब काहू ।१-३२०।४
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे ।१-३२७।७
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी ।१-१५८।२
आसन सयन बिभूषन हीना ।२-१४७।५
आसन सयन सुबसन बिताना ।२-२१४।३
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे ।२-२०५।६
आश्रम उदधि मिली जब जाई ।२-२७५।६
आश्रम एक दीख मग माहीं ।१-२०९।११
आश्रम देखि जानकी हीना ।३-२९।६
आश्रम परम पुनीत सुहावा ।१-१२४।२
आश्रम सागर सांत रस ।२-२७५।०
आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं ।७।३१।६
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना ।५-१६।२
आसिष दींन्हि सखीं हरषानीं ।१-२६८।५
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह ।७-८।क
आसिष देइ गई सो ।५-२।०
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी ।२-४३।८
आह दइअ मैं काह नसावा ।२-१६२।६

इ

इच्छामय नरबेष सँवारें ।१-१५१।१
इच्छित फल बिन सिव अवराधें ।१-६९।८
इत उत झपटि दपटि कपि जोधा ।६-८१।५
इत कपि भालु काल सम बीरा ।६-७१।१०
इति बेद बदंति न दंतकथा ।६-११०।१६
इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला ।७-१०८।१३
इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा ।६-२८।१०
इंद्रजीत आदिक बलवाना ।६-३३।११
इंद्रजीत कर आपु बँधायो ।७-५७।४
इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ ।१-१८२।१
इन्द्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई ।७-११७।१५
इन्द्री द्वार झरोखा नाना ।७-११७।११
इन्द्रीं सकल बिकल भईं भारी ।२-१५३।२
इन्ह के नाम अनेक अनूपा ।१-१९६।४
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी ।१-८४।७
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि ।१-२१६।३
इन्ह महुँ रावन तैं कवन ।६-२४।०
इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे ।१-३०९।२
इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं ।१-३०९।३
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई ।४-८।८
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा ।२-११९।५
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा ।१-२१५।५
इमि कुपंथ पग देत खगेसा ।३-२७।१०
इरिषा परुषाच्छर लोलुपता ।७-१०१।७
इष्टदेव मम बालक रामा ।७।७४।५
इष्टदेव सैं बल रथ पायउँ ।६-७१।८
इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा ।६-९९।७
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा ।१-२००।७
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं ।१-२७२।३
इहाँ दसासन सुभट पठाए ।६-५२।२
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही ।६-८५।५
इहाँ देवरिषि गरूड़ पठायो ।६-७३।१०
इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ ।७-११५।१
इहाँ न सुधि सीता कै पाई ।४-२५।४
इहाँ निषाद सुना प्रभु आए ।६-१२०।६
इहाँ प्रात जागे रघुराई ।६-१६।१
इहाँ पवनसुन हृदयँ बिचारा ।४-१८।१

सौजन्य-श्री सांवरमल धनानिया, ७७, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७

इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा ।७-११३।१०
इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं ।४-२५।१
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा ।६-७४।३
इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई ।६-८४।१
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई ।६-५६।६
इहाँ भरतु सब सहित सहाए ।२-२३२।४
इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर ।७-३।१
इहाँ मोह कर कारन नाहीं ।७-७१।८
इहाँ राम अंगदहि बोलावा ।६-३७।३
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई ।३-२२।८
इहाँ साप बस आवत नाहीं ।४-५।१३
इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा ।६-१०।१
इहाँ सेतु बाँध्यों अरु ।६-११९।क
इहाँ संभु अस मन अनुमाना ।१-५१।५
इहाँ हरी निसिचर बैदेही ।४-१।३
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना ।१-९३।२

ई

ईति भीति धनु प्रजा दुखारी ।२-२३४।३
ईस प्रसाद असीस तुम्हारी ।२-२८२।१
ईस भजनु सारथी सुजाना ।६-७९।७
ईस रजाइ सीस सबही कें ।२-२८९।५
ईस्वर अंस जीव अबिनासी ।७-११६।२
ईश्वर जीव भेद प्रभु ।३-१४।०
ईस्वर राखा धरम हमारा ।१-१७३।२

उ

उग्र बचन सुनि सकल डेराने ।६-४१।९
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका ।६-६९।१२
उघरहिं अंत न होइ निबाहू ।१-६।६
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के ।१-०।७
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू ।२-१७६।४
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा ।२-२८९।६
उठइ धूरि मानहुँ जल धारा ।६-८६।६
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई ।२-४९।८
उठहु राम भंजहु भव चापा ।१-२५३।६
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी ।६-८२।८
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ।१-२६५।२
उठि कर जोरि रजायसु मागा ।२-२२९।१
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया ।५-१८।९
उठि बहोरि मारुति जुबराजा ।६-७५।८
उठी रेनु रबि गयउ छपाई ।६-७८।७
उठे भरत गुर बचन सुनि ।२-१६९।०
उठे राम सुनि पेम अधीरा ।२-२३९।८
उठे लखनु निसि बिगत सुनि ।१-२२६।०
उठे लखनु प्रभु सोवत जानी ।२-८९।१
उठे सकल जब रघुपति आए ।१-२१४।६
उठे सभासद कपि कहुँ देखी ।६-१८।८
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ ।१-३०७।०
उत पचार दसकंधर ।६-८०।ग
उत रावन इत राम दोहाई ।६-४०।७
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर ।६-१०१।१३
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती ।६-१९।३
उत्तम के अस बस मन माहीं ।३-४।१२
उत्तम मध्यम नीच लघु ।१-२४०।०
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें ।१-२७४।७
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई ।६-६०।१६
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई ।२-२६८।५
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही ।२-१८०।४
उतरु देत मोहि बधब अभागें ।३-२५।६

उतरु देब मैं सबहि तब ।२-१४५।०
उतरु न आव बिकल बैदेही ।२-६३।३
उतरु न आव लोग भए भोरे ।२-२५४।४
उतरु न आवत प्रेम बस ।२-७१।०
उतरु न देइ दुसह रिस रूखी ।२-५०।१
उतरु न देत दसानन जोधा ।३-२८।१८
उत्तर दिसि सरजू बह ।७-२८।०
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला ।७-६१।२
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा ।७-११०।१४
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि ।७-४।ख
उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता ।२-१०१।१
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा ।१-१५७।८
उतरि देवसरि दूसर बासू ।२-३२१।४
उतरि नहाए जमुन जल ।२-१०९।०
उतर्‍यो बीर दुर्ग तें ।६-४९।०
उतरे राम देवसरि देखी ।२-८६।२
उदउ करहु जनि रबि रघुकुल गुर ।२-३६।३
उदभव पालन प्रलय कहानी ।१-१६२।६
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं ।१-श्लोक।५
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू ।२-१३७।६
उदय केत सम हित सबही के ।१-३।६
उदर उदधि अधगो जातना ।६-१४।८
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ।६-८०।६
उदर माझ सुनु अंडज राया ।७-७९।३
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा ।४-१५।३
उदित उदयगिरि मंच पर ।१-२५४।०
उदित बिमल जन हृदय नभ ।२-३०३।०
उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना ।२-२०८।२
उदासीन अरि मीत हित ।१-४।०
उदासीन नित रहिअ गोसाईं ।७-१०५।१५
उपजइ राम चरन बिस्वासा ।७-५४।९
उपजहिं एक संग जग माहीं ।१-४।५
उपजा ग्यान चरन तब लागी ।४-१०।६
उपजा ग्यान बचन तब बोला ।४-६।१५
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना ।१-१९१।११
उपजि परी ममता मन मोरें ।१-१६३।४
उपजी राम भगति दृढ़ ।७-१२९।०
उपजे जदपि पुलस्त्यकुल ।१-१७६।०
उपजेउ सिव पद कमल सनेहू ।१-६७।५
उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे ।२-७४।९
उपमा न कोउ कह दास तुलसी ।१-३१०।९
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही ।२-१२२।४
उपमा सकल मोहि लघु लागीं ।१-२४६।२
उपरोहित जेवनार बनाई ।१-१७२।१
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ।१-३१२।१
उपरोहितहि देख जब राजा ।१-१७१।६
उपरोहितहि भवन पहुँचाई ।१-१७४।३
उपरोहित्य कर्म अति मंदा ।७-४७।६
उपल किए जलजान जेहिं ।१-२८।क
उपबरहन बर बरनि न जाहीं ।१-३५५।३
उपबीत ब्याह उछाह मंगल ।१-३६०।११
उभय अगम जुग सुगम नाम तें ।१-२२।५
उभय घरी अस कौतुक भयऊ ।१-८५।१
उभय घरी महँ दीन्ही ।४-२९।०
उभय घरी महँ मैं सब देखा ।७-८१।८
उभय बीच श्री सोहइ कैसी ।३-६।३
उभय बीच सिय सोहति कैसें ।२-१२२।२
उभय भाँति तेहि आनहु ।५-४४।०

उभय भाँति देखा निज मरना ।३-२५।५
उमगी अवध अनंद भरि ।१-३५९।०
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी ।१-७१।६
उमा अवधबासी नर ।७-४७।०
उमा एक अखंड रघुराई ।६-६०।१८
उमा करत रघुपति नरलीला ।६-६५।१
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना ।३-३८।५
उमा कहिउँ सब कथा सुहाई ।७-५१।६
उमा काल मर जाकीं ईछा ।६-१०१।३
उमा चरित सुन्दर मैं गावा ।१-७४।६
उमा जे राम चरन रत ।७-११२।ख
उमा जोग जप दान तप ।६-११७।ख
उमा दारु जोषित की नाईं ।४-१०।७
उमा न कछु कपि कै अधिकाई ।५-२।९
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई ।१-११३।६
उमा बचन सुनि परम बिनीता ।१-११९।८
उमा बिभीषनु रावनहि ।६-९४।०
उमा महेस बिबाह बराती ।१-३९।७
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता ।७-२३।९
उमा राम की भृकुटि बिलासा ।६-३४।७
उमा राम गुन गूढ़ ।३-०।
उमा राम बिषइक अस मोहा ।१-११६।४
उमा राम सम हित जग माहीं ।४-११।१
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना ।५-३३।३
उमा रावनहि अस अभिमाना ।६-३९।६
उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।५।४०।७
उयउ अरुन अवलोकहु ताता ।१-२३७।७
उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा ।१-२३८।४
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ ।१-२४१।७
उर अभिलाष निरंतर होई ।१-१४३।३
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई ।२-२६२।७
उर आनहु रघुपति प्रभुताई ।५-१४।१०
उर आयत भ्राजत बिबिध ।७-७६।०
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू ।२-२०९।१
उर कछु प्रथम बासना रही ।५-४९।६
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना ।६-१०३।४
उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए ।३-१८।५
उर धरि उमा प्रानपति चरना ।१-७३।१
उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ ।१-९७।८
उर धरि धीर राम महतारी ।२-१५३।४
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें ।२-३८।४
उर धरि राम चरन जुग ।४-२५।०
उर धरि रामहि सीय समेता ।१-३४२।३
उर मनि माल कंबु कल गीवा ।१-२३३।४
उर मनिहार पदिक की सोभा ।१-१९९।६
उर माझ गदा प्रहार घोर ।६-९३।१
उर लात घात प्रचंड लागत ।६-९३।१६
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला ।१-१४७।६
उर सीस भुज कर चरन ।३-२२।९
उलटा नामु जपत जगु जाना ।२-१९३।८
उलटा होइहि कह हनुमाना ।५-२५।४
उलटि पलटि लंका सब जारी ।५-२६।८
उहाँ दसानन जागि करि ।६-८४।०
उहाँ दसानन सचिव हँकारे ।६-५५।२
उहाँ दूत एक मरमु जनावा ।६-९९।२
उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ।५-३५।१
उहाँ रामु रजनी अवसेषा ।२-२२६।३
उहाँ राम लछिमनहि निहारी ।६-६०।१

सौजन्य - श्री अवध किशोर गुप्ता, १/१, मुकैलाश रोड, कलकत्ता-२३

उहाँ सकोपि दसानन ।६-३२ख

ऊ

ऊतरु देइ न लेइ उसासू ।२-१२।६
ऊतरु देउँ छमब अपराधू ।२-१७६।८
ऊपर आपु हेठ भट ।६-४१।०
ऊमरि तरु बिसाल तव माया ।३-१२।६
ऊसर बरषइ तृन नहिं जामा ।४-१४।१०
ऊँच निवासु नीचि करतूती ।२-११।६
ऊँच नीच कारजु भल पोचू ।२-३२२।४
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ।२-२७३।३

ए

ए कपि सब सुग्रीव समाना ।५-५४।१
ए किरीट दसकंधर केरे ।६-३१।१०
ए तरु सरित समीप गोसाँई ।२-२३६।६
ए दारिका परिचारिका ।१-३२५।१७
ए दोऊ दसरथ के ढोटा ।१-२२०।३
ए प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्रानी ।१-२१५।७
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना ।२-११८।६
ए महि परहिं डासि कुसपाता ।२-११८।७
ए सब राम भगति के बाधक ।४-६।१७
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर ।७-३७।७
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे ।७-७।७
एक अनीह अरूप अनामा ।१-१२।३
एक आइ अस कहा बहोरी ।२-२२६।२
एक एक जग जीति सक ।१-१८०।०
एक एक ब्रह्मांड महुँ ।७-८०।ख
एक एक सन भिरहिं पचारहिं ।६-८०।४
एक एक सन मरमु न कहहीं ।६-१७।७
एक एक सर सिर निकर छेदे ।६-९१।१७
एक एक सों मर्दहिं ।६-४४।०
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई ।७-२।८
एक कलप एहि बिधि अवतारा ।१-१२२।४
एक कलप एहि हेतु प्रभु ।१-१३९।०
एक कलप सुर देखि दुखारे ।१-१२२।५
एक कलस भरि आनहिं पानी ।२-११४।१
एक कहइ नृपसुत तेइ आली ।१-२२८।४
एक कहत मोहि सकुच अति ।६-२४।०
एक कहहिं ए सहज सुहाए ।२-११९।२
एक कहहिं ऐसिउ सौंधाई ।६-८७।३
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर ।६-८९।१४
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा ।२-४७।२
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा ।२-८८।३
एक कहहिं रघुबीर बड़ाई ।२-३०८।८
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ।२-११९।७
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई ।२-२२८।३
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े ।२-१९०।६
एकछत्र रिपुहीन महि ।१-१६४।०
एक जनम कर कारन एहा ।१-१२३।३
एकटक रहे जोरि कर आगे ।७-१६।२
एकटक रहे निमेष न लावहिं ।७-३२।४
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा ।२-११४।५
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा ।३-१४।५
एक देखि बट छाँह भलि ।२-११४।०
एक धरम परमिति पहिचाने ।२-४७।४
एक नखन्हि रिपु बपुष बिदारी ।६-९७।५
एक नयन मग छबि उर आनी ।२-११३।८
एक निमेष बरष सम जाई ।२-१५७।३
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं ।२-२३।०

एक पिता के बिपुल कुमारा ।७-८६।१
एक ब्याधि बस नर मरहिं ।७-१२१।क
एक बहोरि सहसभुज देखा ।६-२३।१५
एक बात नहिं मोहि सोहानी ।१-११३।७
एक बात प्रभु पूछउँ तोही ।७-११४।८
एक बान काटी सब माया ।६-५१।७
एक बानि करुनानिधान की ।३-९।८
एक बार अतिसय सब ।७-७५।ख
एक बार आवत सिव संगा ।१-९७।७
एक बार करतल बर बीना ।१-१२७।३
एक बार कालउ किन होऊ ।१-२४४।७
एक बार कुबेर पर धावा ।१-१७८।८
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं ।४-१७।२
एक बार गुर लीन्ह बोलाई ।७-१०५।१
एक बार चुनि कुसुम सुहाए ।३-०।३
एक बार जननीं अन्हवाए ।१-२००।१
एक बार तिन्ह के हित लागी ।१-१२२।२
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ ।१-१०५।४
एक बार प्रभु सुख आसीना ।३-१३।५
एक बार बसिष्ट मुनि आए ।७-४७।१
एक बार भरि मकर नहाए ।१-४४।३
एक बार भूपति मन माहीं ।१-१८८।१
एक बार रघुनाथ बोलाए ।७-४२।१
एक बार हर मंदिर ।७-१०६।क
एक बार त्रेता जुग माहीं ।१-४७।१
एक बिधातहि दूषनु देहीं ।२-४८।१
एक भरत कर संमत कहहीं ।२-४७।६
एक रचइ जग गुन बस जाकें ।३-१४।६
एक राम अवधेस कुमारा ।१-४५।७

एक लालसा बड़ि उर माहीं ।१-१४८।३
एक सखी सिय संगु बिहाई ।१-२२७।७
एक समय सब सहित समाजा ।२-१।१
एक सराहहिं भरत सनेहू ।२-२०१।५
एक सुमनप्रद एक सुमन फल ।६-८९।१३
एक सूल मोहि बिसर न काऊ ।७-१०९।२
एकनारि ब्रत रत सब झारी ।७-२१।८
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ ।४-७।५
एकु एकु निसिचर गहि ।६-४१।०
एकु छत्रु एकु मुकुटमनि ।१-२०।०
एकु दारुगत देखिअ एकू ।१-२२।४
एकु मनोरथु बड़ मन माहीं ।२-३०७।१
एकु मैं मंद मोह बस ।४-२।०
एकइ उर बस दुसह दवारी ।२-१८९।६
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा ।३-४।१०
एकउ जुगुति न मन ठहरानी ।२-२५२।७
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं ।२-११३।६
एकहि एक देहिं उपदेसू ।२-८५।४
एकहि एक न देखई ।६-४६।०
एकहि एक सकइ नहिं जीती ।६-५३।३
एकहि बात मोहि दुखु लागा ।२-३१।४
एकहि बार तासु पर ।६-६६।०
एकहिं आँक इहइ मन माहीं ।२-१८२।२
एकहिं डर डरपत मन मोरा ।१-१६५।८
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा ।१-२०८।६
एकहिं बार आस सब पूजी ।२-१५।१
एतना कपिन्ह सुना जब काना ।६-६४।३
एतना करहु तात तुम्ह जाई ।४-२९।११
एतना कहत छींक भइ बाँए ।२-१९९।४

एतना कहत नीति रस भूला।२-२२८।५
एतना मन आनत खगराया।७-७७।१
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई।२-१५६।३
एतेहु पर करिहहिं जे असंका।१-११।८
एवमस्तु करि रमानिवासा।३-११।१
एवमस्तु कहि कपट मुनि।१-१६५।०
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा।५-४८।८
एवमस्तु कहि रघुकुलनायक।७-८४।१
एवमस्तु तब बच मुनि ग्यानी।७-११३।६
एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा।१-१७६।५
एवमस्तु मुनि सन कहेउ।३-४२।०
एहि अवसर चाहिअ परम।१-१३१।०
एहि अवसर मंगलु परम।२-७।०
एहि अवसर लछिमन पुर आए।४-१८।८
एहि कर नामु सुमिरि संसारा।१-६६।६
एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा।३-१५।७
एहि कर होइ परम कल्याना।७-१०८।१
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं।२-२११।२
एहि के ह्रदयँ बस जानकी।६-९८।१४
एहि कें एक परम बल नारी।३-३७।१२
एहि कें कंठ कुठारु न दीन्हा।१-२७८।८
एहि तन कर फल बिषय न भाई।७-४३।१
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा।२-६०।५
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना।२-८०।७
एहि तें जानहु मोर हित।२-१७७।०
एहि ते तव सेवक होत मुदा।७-१३।१४
एहि तें मोर काह अब नीका।२-१७९।६
एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती।२-२११।१
एहि धनु पर ममता केहि हेतू।१-२७०।८
एहि प्रकार गत बासर सोऊ।२-२७२।३
एहि प्रकार बल मनहि देखाई।१-१३।१
एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं।१-४४।१
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ।२-४६।२
एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु।६-३२।१
एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊँ।७-१११।११
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी।२-१०५।५
एहि बिधि उपजै लच्छि जब।१-२४७।०
एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती।४-२६।१
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा।२-८५।७
एहि बिधि करत पंथ पछितावा।२-१४६।१
एहि बिधि करत बिनोद बहु।६-१६।क
एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा।५-४२।१
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा।२-८१।६
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा।५-७।२
एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय।२-१२०।०
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना।१-३०३।४
एहि बिधि कृपा रूप गुन।६-११।क
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी।३-२९।१६
एहि बिधि गए कछुक दिन बीती।३-१६।२
एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती।१-७५।३
एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी।१-१८९।५
एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई।१-११७।१
एहि बिधि जनम करम हरि केरे।१-१३९।१
एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना।६-७१।९
एहि बिधि जाइ कृपानिधि।५-३५।०
एहि बिधि जीव चराचर जेते।७-८६।६
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही।२-१६९।५
एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी।१-५९।१

एहि बिधि देखत फिरउँ मैं । ७-८०।०
एहि बिधि धरेउँ बिबिधि तनु । ७-१०९।घ
एहि बिधि नगर नारि नर । ७-३०।०
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । ५-५९।४
एहि बिधि निज गुन दोष कहि । १-२९।ग
एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन । २-२७३।२
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी । २-१४१।३
एहि बिधि पूँछहि प्रेम बस । २-११२।०
एहि बिधि बासर बीते चारी । २-२७९।१
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी । २-१५५।८
एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारीं । २-५०।४
एहि बिधि बीते बरष षट । १-१४४।०
एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी । २-२२३।८
एहि बिधि भए सोचबस ईसा । १-४८।३
एहि बिधि भरत चले मग जाहीं । २-२१९।५
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा । २-१९६।३
एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं । २-३११।१
एहि बिधि भलेहिं देवहित होई । १-८२।७
एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं । ७-१२१।८
एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें । १-१६८।१
एहि बिधि मज्जनु भरतु करि । २-१९७।०
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । ५-२८।२
एहि बिधि मुनिबर भवन देखाए । २-१३१।१
एहि बिधि रघुकुल कमल रबि । २-१२२।०
एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ । १-२४१।८
एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा । २-२९।१
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा । २-२०१।७
एहि बिधि राम बिआह उछाहू । १-३३०।८
एहि बिधि राम जगत पितु माता । १-१९९।१
एहि बिधि राम सबहि समुझावा । २-८०।१
एहि बिधि रामु मंडपहिं आए । १-३१८।८
एहि बिधि लेसै दीप । ७-११७।घ
एहि बिधि सकल कथा समुझाई । ४-३।५
एहि बिधि सकल जीव जग रोगी । ७-१२१।१
एहि बिधि सकल बल तोरि । ६-१००।१२
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । १-३११।१
एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । २-२८०।१
एहि बिधि सब संसय करि दूरी । १-३३।१
एहि बिधि सबहि नयन फलु देता । १-३३४।८
एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । ७-५।८
एहि बिधि सबही अग्या दीन्ही । १-१८१।४
एहि बिधि सबही देत सुखु । १-३४८।०
एहि बिधि सबहीं भोजनु कीन्हा । १-३२८।८
एहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा । ३-७।८
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई । २-१३६।४
एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा । १-१९९।७
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ । ३-२८।२६
एहि बिधि सीय मंडपहिं आई । १-३२२।७
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । ५-१०।५
एहि बिधि सोचत भरत मन । २-१५७।०
एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा । १-३१४।३
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । १-१३२।२
एहि बिधि होत बतकही । ४-२१।०
एहि बीच कपिन्ह विधंस कृत । ६-८४।१२
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय । १-२३५।११
एहि भाँति जानि बरात आवत । १-३१६।११
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि । १-३२२।१४
एहि भाँति निज निज मति बिलास । ७-९१।११

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी ।१-२१०।१५
एहि महँ रघुपति नाम उदारा ।१-९।१
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ।७-१२८।३
एहि मिस मोहि उपदेसेहु ।६-८०।ख
एहि राज साज समेत सेवक ।१-३२५।१६
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की ।५-२।२२
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी ।५-५।४
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं ।२-२४२।८
एहि सुख जोग न लोग सब ।२-२८०।०
एहि सुख ते सत कोटि गुन ।१-३५०।क
एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहू ।२-२७२।८
एहि संदेस सरिस जग माहीं ।७-१।१३
एहिं कलिकाल न साधन दूजा ।७-१२९।५
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी ।२-९२।३
एहिं तन राम भगति मैं पाई ।७-९४।७
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं ।१-५६।२
एहिं थल जौं किछु कहिअ बनाई ।२-२१०।२
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू ।२-९९।७
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू ।१-२४८।६
एहिं समाज थल बूझब राउर ।२-२९२।५
एहिं सर मम उत्तर तट बासी ।५-५९।५
एहीं बीच निसाचर अनी ।६-८६।१
एहूँ मिस देखौं पद जाई ।१-२०५।७

ऐ

ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति ।७-५५।०
ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई ।२-२६।५
ऐसे अधम मनुज खल ।७-४०।०
ऐसे प्रभुहि बिलोकउँ जाई ।३-४०।७
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी ।१-४६।८
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई ।१-१४३।७
ऐसेउ बचन कठोर सुनि ।२-६७।०
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे ।१-२३८।३
ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा ।७-७८।१
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना ।३-४।९
ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना ।६-९८।१०

ओ

ओर . निबाहेहु भायप भाई ।२-१५१।५

औ

और एक तोहि कहउँ लखाऊ ।१-१६८।३
औरउ एक आसिषा मोरी ।७-१०८।१६
औरउ एक कहउँ निज चोरी ।१-१९५।३
औरउ एक गुपुत मत ।७-४५।०
औरउ कथा अनेक प्रसंगा ।१-३६।१५
औरउ ग्यान भगति कर ।७-११६।ख
औरउ जे हरिभगत सुजाना ।१-२९।८
औरउ राम रहस्य अनेका ।१-११०।३
औरउ सबहिं सीय समुझाई ।२-७७।६
औरु करै अपराधु कोउ ।२-७७।०
औरु करिहि को भरत बड़ाई ।२-२५६।४
औषध मूल फूल फल पाना ।२-५।२

अं

अंग अंग पर वारिअहिं ।१-२२०।०
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा ।६-४४।७
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ।४-२९।१
अंगद तहीं बालि कर बालक ।६-२०।५
अंगद दीख दसानन बैसें ।६-१८।४
अंगद नाम बालि कर बेटा ।६-२०।३
अंगद नील मयंद नल ।६-७५।०

सौजन्य - श्रीमती जे. ए. नागरा, ७बी, जेम्स हिक्की सरणी, कलकत्ता - ६९

अंगद बचन बिनीत सुनि।७-१८।ख
अंगद बचन सुनत कपि बीरा।४-२५।७
अंगद बचन सुनत सकुचाना।६-२०।४
अंगद बैठ रहा नहिं डोला।७-१६।८
अंगद स्वामिभक्त तव जाती।६-२३।३
अंगद सहित करहु तुम्ह राजू।४-११।९
अंगद सुना पवनसुत।६-४३।०
अंगद हनुमत अनुचर जाके।६-३६।४
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा।७-१८।२
अंगदादि कपि मुरुछित।६-६५।०
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं।२-१९०।५
अँचइ पान सब काहूँ पाए।१-३५४।२
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि।१-३।क
अंड कटाह अमित लय कारी।७-९३।८
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा।७-८०।५
अंतर प्रेम तासु पहिचाना।३-२६।१७
अंतरजामी प्रभु सभ जाना।७-३५।४
अंतरजामी रामु।२-२०१।०
अंतरजामी रामु सिय।२-२५६।०
अंतरधान भए अस भाषी।१-७६।७
अंतरधान भयउ छन एका।६-९५।१
अंतर्धान भए पुनि।७-१३।क
अंतरहित सुर आसिष देहीं।१-३५०।३
अंतरहित होइ निमिष महुँ।६-१००।०
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू।२-५५।४
अंतावरीं गहि उड़त गीध।३-१९।१८
अँथयउ आजु भानुकुल भानू।२-१५५।६
अंधउ बधिर न अस कहहिं।६-२१।०
अंधकारु बरु रबिहि नसावै।७-१२१।१८
अंब ईस आधीन जगु।२-२४४।०
अंब एक दुखु मोहि बिसेषी।२-४१।५
अंभोज अंबक अंबु उमगि।१-३१७।१२
अंभोज नयन बिसाल उर भुज।७-११।१६
अंसन्ह सहित देह धरि ताता।१-१५१।२
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा।१-१८६।२

क

कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा।७-६१।९
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे।६-३१।६
कछु दिन भोजनु बारि बतासा।१-७३।५
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं।१-५५।२
कछु पुनि जाइ पुकारे।५-१८।०
कछु मारेसि कछु मर्देसि।५-१८।०
कछु मारे कछु घायल।६-४७।०
कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई।१-२२३।५
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ।२-१५९।२
कछुक काल बीतें सब भाई।१-२०२।२
कछुक दिवस जननी धरु धीरा।५-१५।४
कछुक दिवस बीते एहि भाँती।१-१९६।१
कछुक दूरि सजि बान सरासन।२-८९।२
कछुक राम गुन कहेउँ बखानी।७-५१।७
कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत।३-१९।१४
कटकटहिं मर्कट बिकट भट।५-३४।१३
कटकटान कपिकुंजर भारी।६-३१।३
कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं।६-४०।६
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा।६-६७।५
कटि कसि निषंग बिसाल भुज।३-१७।१६
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा।१-१९८।४
कटितट परिकर कस्यो निषंगा।६-८५।१०

सौजन्य - सोमानी ब्रदर्स, १६१/१, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता - ७

कटि तूनीर पीत पट बाँधे ।१-२४३।१
कटि पट पीत कसें बर भाथा ।१-२०८।२
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधें ।१-२६७।८
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें ।६-३०।८
कठिन करम गति जान बिधाता ।२-२८१।४
कठिन काल मल कोस ।३-६।ख
कठिन कुसंग कुपंथ कराला ।१-३७।७
कठिन भूमि कोमल पद गामी ।४-०।८
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं ।१-१०१।५
कत सिख देइ हमहि कोउ माई ।२-१३।१
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा ।२-३११।५
कतहुँ बिरिद बंदी उच्चरहीं ।१-२९६।६
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई ।२-३११।६
कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना ।१-७५।१
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई ।४-१७।३
कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा ।४-२३।१
कथा अरंभ करै सोइ चाहा ।७-६२।५
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी ।१-३२।४
कथा कही सब तेहिं अभिमानी ।६-६१।९
कथा जो सकल लोक हितकारी ।१-१०६।६
कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई ।७-११३।१५
कथा समस्त भुसुंड बखानी ।७-६७।७
कथा सुधा मथि काढ़हिं ।७-१२०।०
कथा सुनाई गुरहि सब ।१-२९३।०
कदलि ताल बर धुजा पताका ।३-३७।२
कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु ।२-१९।०
कनक कलप बर बेलि ।२-१६३।०
कनक कलस तोरन मनि जाला ।१-२९५।८
कनक कलस भरि कोपर थारा ।१-३०४।१

कनक कलस मनि कोपर रूरे ।१-३२३।५।
कनक कलस मंगल भरि थारा ।१-१९३।४
कनक कलित अहिबेलि बनाई ।१-२८७।२
कनक कोट बिचित्र मनि ।५-२।१२
कनक कोट मनि खचित दृढ़ ।१-१७८।क
कनक थार आरती उतारहिं ।७-६।४
कनक थार भरि मनि गन नाना ।५-५७।८
कनक थार भरि मंगलन्हि ।१-३४६।०
कनक बरन तन तेज बिराजा ।४-२९।७
कनक बसन मनि भरि भरि जाना ।१-३३२।८
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन ।१-३३०।६
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे ।२-१९८।३
कनक भूधराकार सरीरा ।५-१५।८
कनक सिंघासन सीय समेता ।२-१०।५
कनकउ पुनि पषान तें होई ।१-७९।६
कनककसिपु अरुहाटक लोचन ।१-१२१।६
कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें ।२-२०४।५
कपट कुचालि सीवँ सुरराजू ।२-३०१।१
कपट नारि बर बेष बनाई ।१-३१७।७
कपट बिप्र बर वेष बनाएँ ।१-३२०।७
कपट बोरि बानी मृदुल ।१-१६०।०
कपट सनेहु बढ़ाइ बहोरी ।२-२६।८
कपट सयानि न कहति कछु ।२-३६।०
कपटी कायर कुमति कुजाती ।२-१९५।१
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी ।२-१६७।२
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा ।७-०।४
कपि अकुलाने माया देखें ।६-५१।५
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी ।१-१३६।७
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा ।५-३२।४

सौजन्य - श्री नारायण प्रसाद मूंधड़ा, ५, क्लाईव रो, कलकत्ता - १

कपि कर मन बिचार एहि रीती ।४-३।८
कपि करि हृदयँ विचार ।५-१२।०
कपि के बचन सप्रेम सुनि ।५-१३।०
कपि कें ममता पूँछ पर ।५-२४।०
कपि तव दरस भइउँ निष्पापा ।६-५७।१
कपि तव दरस सकल दुख बीते ।७-१।११
कपि देखा दारुन भट आवा ।५-१८।४
कपि बल देखि सकल हियँ हारे ।६-३४।१
कपि बल प्रबल देखि तेहिं ।६-९५।०
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए ।५-१९।५
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह ।६-४०।१२
कपि लंगूर बिपुल नभ छाए ।६-८६।५
कपि सब उठे गीध कहँ देखी ।४-२६।६
कपि सब चरित समास बखाने ।६-५९।२
कपि सेन संग सँघारि निसिचर ।४-२९।१३
कपिपति नील रीछपति ।६-११८।ख
कपिपति बेगि बोलाए ।५-३४।०
कपिपति रीछ निसाचर राजा ।१-१७।१
कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं ।६-४३।५
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा ।५-४२।२
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ ।६-१२०।ख
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत ।७-६६।ख
कपिहि बिलोकि दसानन ।५-२०।०
कबहि देखिबे नयन भरि ।१-३००।०
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ ।२-६८।०
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना ।१-१९७।८
कबहुँ कि काँजी सीकरनि ।२-२३१।०
कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें ।७-१११।१
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम ।४-१५।ख

कबहुँ न कियहु सवति आरेसू ।२-४८।७
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा ।४-२६।४
कबहुँ नयन मम सीतल ताता ।५-१३।६
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ।३-२६।१२
कबहुँ प्रबल बह मारुत ।४-१५।क
कबहुँक करि करुना नर देही ।७-४३।६
कबहुँक फिरि पाछें पुनि जाई ।३-९।१२
कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही ।७-८७।१
कबहूँ जोग बियोग न जाकें ।१-४८।८
कबि अलखित गति बेषु बिरागी ।२-१०९।८
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा ।२-२३२।२
कबि कुल जीवनु पावन जानी ।१-३६०।७
कबि कोबिद गावहिं असि नीती ।७-१०५।१४
कबि कोबिद रघुबर चरित ।१-१४।ग
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ ।१-११।९
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू ।१-८।८
कबि बृंद उदार दुनी न सुनी ।७-१००।९
कबित बिबेक एक नहिं मोरें ।१-८।११
कबित रसिक न राम पद नेहू ।१-८।३
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु ।२-२२५।०
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा ।२-२४०।४
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा ।७-१२१।१५
कमठ पीठि पबि कूट कठोरा ।१-३५६।४
कमल कोक मधुकर खग नाना ।१-२३८।२
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं ।१-२५२।८
क्यों करै बिनय बिदेहु ।१-३२३।२३
कर कमलनि धनु सायकु फेरत ।२-२३८।८
कर गहि पतिहि भवन निज आनी ।६-५।३
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे ।७-३२।६

कर जोरि जनकु बहोरि ।१-३२५।१३
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता ।५-१९।७
कर नित करहिं राम पद पूजा ।२-१२८।४
कर परसा सुग्रीव सरीरा ।४-७।६
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं ।२-७५।५
कर सरोज जयमाल सुहाई ।१-२६३।२
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ ।७-८२।४
कर सरोज सिर परसेउ ।३-३०।०
कर सारंग साजि कटि भाथा ।६-६७।१
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा ।१-९१।५
करइ जे धरम करम मन बानी ।१-१५५।२
करइ जो करम पाव फल सोई ।२-७६।८
करइ पान सोवइ षट मासा ।१-१७९।४
करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती ।२-१२।३
करइ मनोहर मति अनुहारी ।१-३५।२
करइ स्वयंबर सो नृपबाला ।१-१२९।६
करइ स्वामि हित सेवकु सोई ।२-१८५।५
करउ अनुग्रह सोइ ।१-०।२
करउ सो मम उर धाम ।१-०।६
करउँ कृपानिधि एक ढिठाई ।७-३६।१
करउँ प्रनाम करम मन बानी ।१-१५।७
करउँ बिचार बहोरि बहोरी ।७-८१।७
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी ।३-४२।५
करउँ सदा रघुपति गुन गाना ।७-११३।११
करत अकंटक राजु पुरँ ।२-२३५।०
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ ।७-४४।४
करत चरित धरि मनुज तनु ।२-९३।०
करत दंडवत देखि तेहि ।२-१९३।०
करत दंडवत मुनि उर लाए ।३-२।६
करत दंडवत लिए उठाई ।३-४०।१०
करत न सपनेहुँ लखनु चितु ।२-१३९।०
करत प्रनाम चले दोउ भाई ।२-२३७।२
करत प्रबेस मिटे दुख दावा ।२-२३८।३
करत पान सादर सकल ।१-३२१।०
करत बतकही अनुज सन ।१-२३१।०
करत बिचार भयउ भिनुसारा ।६-४८।८
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू ।१-३३०।४
करत बिलाप बहुत यहि भाँती ।२-१६८।६
करत मनोरथ जस जियँ जाके ।२-२२४।३
करत राज लंका सठ त्यागी ।५-५२।५
करत राम हित नेम ब्रत ।२-१८८।०
करति बिलाप जाति नभ सीता ।३-२८।२४
करति बिलाप मनहिं मन भारी ।६-९९।४
करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू ।२-२०६।८
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा ।१-७।५
करनधार तुम्ह अवध जहाजू ।२-१५३।६
करनधार सदगुर दृढ़ नावा ।७-४३।८
करनबेध उपबीत बिआहा ।२-९।६
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू ।१-३५९।७
करब साधुमत लोकमत ।२-२५८।०
करब सोइ उपदेसु ।२-१५१।०
करबि पायँ परि बिनय बहोरी ।२-१५०।७
करम धरम इतिहास अनेका ।१-१६२।५
करम बचन मन छाड़ि छलु ।२-१०७।०
करम बचन मन राउर चेरा ।२-१३०।८
करम बचन मानस बिमल ।२-३०४।०
करम लिखा जौं बाउर नाहू ।१-९६।७
करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा ।१-१३६।४

सौजन्य - टांटिया ट्रस्ट, २५/२७, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता - १

करमनास जलु सुरसरि परई । २-१९३।७
करम प्रधान बिस्व करि राखा । २-२१८।४
करसि पान सोवसि दिनु राती । ३-२०।७
करहि जाइ तपु सैलकुमारी । १-७२।१
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ । २-१४९।२
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । १-१२०।७
करहिं अहार साक फल कंदा । १-१४३।१
करहिं आरती आरतिहर कें । ७-८।७
करहिं आरती पुर नर नारी । १-२६४।६
करहिं आरती बारहिं बारा । १-३४८।१
करहिं उपद्रव असुर निकाया । १-१८२।४
करहिं कूटि नारदहि सुनाई । १-१३३।३
करहिं गान कल मंगल बानीं । १-३१७।८
करहिं गान बहु तान तरंगा । १-१२५।५
करहिं जोग जप जाग तप । २-१३४।०
करहिं जोग जोगी जेहि लागी । १-३४०।५
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । २-१३४।५
करहिं निछावरि आरती । १-३३५।०
करहिं निछावरि मनिगन चीरा । १-३४७।६
करहिं निछावरि लोग सब । १-२६२।०
करहिं प्रनाम नगर नर नारी । २-१९६।५
करहिं पाप पावहिं दुख । ७-१००।क
करहिं बिदूषक कौतुक नाना । १-३०१।८
करहिं बिनय अति बारहिं बारा । ७-४१।२
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा । १-१०२।५
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । २-१५५।४
करहिं मोह बस द्रोह परावा । ७-३९।६
करहिं मोह बस नर अघ नाना । ७-४०।४
करहु कृपा हरि जस कहउँ । १-१४।ख
करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा । १-२४५।६
करहु राजु परिहरहु गलानी । २-१७४।४
करहु राम पर सहज सनेहू । २-४८।६
करहु सफल आपनि सेवकाई । १-२५६।६
करहु सीस धरि भूप रजाई । २-१७३।६
करहु सुफल सबके नयन । १-२१८।०
करहु कृपा प्रभु अस सुनि काना । ५-१६।४
करालं महाकाल कालं कृपालं । ७-१०७।४
करि आरति नेवछावरि करहीं । १-१९३।५
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । १-३१८।४
करि उपाय रिपु मारे । ३-२०।क
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा । १-१४६।८
करि कुचालि सोचत सुरराजू । २-२९५।१
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू । २-२२७।५
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा । २-१५।५
करि कुल रीति बेद बिधि राऊ । १-३०१।२
करि केहरि कपि कोल कुरंगा । २-१३७।१
करि केहरि निसिचर चरहिं । २-५९।०
करि केहरि बन जाइ न जोई । २-१११।७
करि कोप श्रीरघुबीर पर । ३-१९।२३
करि चिक्कार घोर अति । ६-७०।०
करि छलु मूढ़ हरी बैदेही । १-४८।५
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन । ५-२।२०
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । ७-६२।३
करि दाप चाप चढ़ाइ दस । ६-९६।११
करि दंडवत कहत कर जोरी । २-३१२।६
करि दंडवत भेंट धरि आगें । २-८७।३
करि दंडवत मुनिहि सनमानी । १-२०६।२
करि दंडवत सप्रेम द्विज । ७-१०७।ख

करि ध्यान ग्यान बिराग जोग । ३-३१।१२
करि न जाइ सर मज्जन पाना । १-३८।३
करि नृप क्रिया संग पुरबासी । ७-६४।६
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । २-२६९।५
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । ५-५।६
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । १-१११।५
करि प्रनामु तब रामु सिधाए । २-२९०।६
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । १-२८९।३
करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही । २-२२३।५
करि प्रनामु पूजा कर जोरी । १-३२९।५
करि प्रनामु बोले भरतु । २-२६६।०
करि प्रनामु बोले भरतु । २-२९७।०
करि प्रनामु भेंटीं सब सासू । २-३१९।२
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि । २-२१०।०
करि प्रनामु रिषि आयसु पाई । २-१०८।६
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । २-२९६।५
करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ । २-२९२।०
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । ७-१३।१५
करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी । २-२४७।१
करि पूजा कहि बचन सुहाए । ३-२।८
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा । १-२००।३
करि पूजा भूपति अस भाषा । १-१९६।३
करि पूजा मान्यता बड़ाई । १-३०५।४
करि पूजा मारीच तब । ३-२४।०
करि पूजा मुनि सुजसु बरवानी । १-४४।६
करि पूजा सब बिधि सेवकाई । १-२१६।८
करि पूजा समेत अनुरागा । ७-६२।८
करि बनाव सजि बाहन नाना । १-९४।२
करि बर बिनय ससुर सनमाने । १-३४१।७
करि बिचार जियँ देखहु नीकें । २-२५३।८
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा । ६-३८।४
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका । २-२६५।७
करि बिनती जब संभु सिधाए । ६-११५।१
करि बिनती दुख दुसह सुनाए । २-१३३।४
करि बिनती निज कथा सुनाई । १-२४३।५
करि बिनती पद गहि दस सीसा । १-१७६।३
करि बिनती पायन्ह परेउ । २-९४।०
करि बिनती मुनि आयसु पाई । ७-११३।८
करि बिनती मंदिर लै आए । ४-१९।५
करि बिनती सुर सकल सिधाए । ६-७०।१०
करि बिनती सुर सिद्ध सब । ६-११०।०
करि बिनय सिय रामहि समरपी । १-३३५।९
करि बिलाप सब रोवहिं रानी । २-१५२।७
करि बिलापु रोदति बदति । १-९६।०
करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी । १-२३६।५
करि मज्जनु प्रभु भूषन साजे । ७-१०।८
करि मज्जन सरऊ जल । १-२०६।०
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । २-२७२।४
करि मज्जनु मागहिं कर जोरी । २-१९६।६
करि मधुप मन मुनि जोगिजन । १-३२३।१५
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । १-२३७।५
करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ । ६-९२।१२
करि लोक बेद बिधानु । १-३२३।२०
करि सद्य सोनित पान । ६-१००।४
करि सबु जतनु राखि रखवारे । २-१८५।८
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । ५-७।६
करि होमु बिधिवत गाँठि जोरी । १-३२३।२४
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी । १-२७६।४

करिअ न सोचु सनेह बस । २-२८९।०
करिअ न संसय अस उर आनी । १-३२।८
करिहउँ इहाँ संभु थापना । ६-१।४
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा । १-१६८।२
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई । २-३५।४
करु परितोषु मोर संग्रामा । १-२८०।२
करुना सुख सागर सब गुन आगर। १-१९१।७
करुना निधान सुजान सीलु । १-२३५।१०
करुनानिधि मन दीख बिचारी । १-१२८।४
करुनामय मृदु राम सुभाऊ । २-३९।३
करुनामय रघुनाथ गोसाँई । २-८४।२
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर । ७-१२।२३
करुनासिंधु सुबंधु के । २-७२।०
करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह । ६-११६।घ
करेहु सदा संकर पद पूजा । १-१०१।३
करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू । १-७१।२
करौं कवन बिधि बिनय बनाई । १-३३९।८
करौं काह मुख एक प्रसंसा । १-२८४।५
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । १-१३०।७
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । १-२४२।४
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । १-३२६।४
कल गान मधुर निसान बरषहिं । १-३१७।१०
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं। १-३२१।११
कल बल छल करि जाहिं समीपा । ७-११७।८
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं । १-१३९।२
कल्प कल्प भरि एक एक नरका । ७-९९।४
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । २-५८।३
कलपभेद हरिचरित सुहाए । १-३२।७
कलबल बचन अधर अरुनारे । ७-७६।३

कल्यान काज बिबाह मंगल । १-१०२।१२
कलस सहित गहि भवनु ढहावा । ६-४३।३
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । ७-१०७।११
कलि अघ खल अवगुन कथन । १-४१।०
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । ७-१०२।८
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू । २-२११।४
कलि के कबिन्ह करउँ परनामा । १-१३।४
कलि केवल मल मूल मलीना । १-२६।४
कलि बारहिं बार दुकाल परै । ७-१००।१०
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। १-१४।५
कलिकाल तुलसी से सठन्हि । २-३२५।१२
कलिकाल बिहाल किए मनुजा । ७-१०१।५
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । ७-१०२।४
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । ७-१०२।५
कलिजुग सम जुग आन नहिं । ७-१०३।क
कलिमल ग्रसे धर्म सब । ७-९७।क
कलि मल मथन नाम ममताहन । ७-५०।९
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम । ७-१२९।१४
कलिमल समन दमन मन । ३-६।क
कलित करिबरन्हि परीं अँबारीं । १-२९९।१
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । ६-७९।१०
कवन चरित्र करत प्रभु । ७-७७।ख
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । ७-९५।८
कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला । ७-१२०।६
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी । ३-४१।४
कवन सो काज कठिन जग माहीं । ४-२९।५
कवन हेतु मन व्यग्र अति । ३-२४।०
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । ७-८९।८
कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । ७-१०८।८

सौजन्य - टांटिया ट्रस्ट, २५/२७, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता - १

कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । ५-१।६
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । ७-९६।६
कवनें अवसर का भयउ । २-२९।०
कस कीन्ह बरु बौराह बिधि जेहिं । १-९५।९
कस न कहहु अस रघुकुल केतू । २-१२५।८
कस रे सठ हनुमान कपि । ६-२६।०
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता । १-१२२।३
कस्यप अदिति महातप कीन्हा । १-१८६।३
कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ । २-२८२।६
कह अंगद बिचारि मन माहीं । ४-२६।७
कह अंगद लोचन भरि बारी । ४-२५।३
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । ६-२८।५
कह कपि तव गुन गाहकताई । ६-२३।५
कह कपि धर्म सीलता तोरी । ६-२१।५
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । ६-५७।४
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । ५-१४।९
कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । १-१६४।१
कह तापस नृप जानउँ तोही । १-१६२।८
कह दसकंठ कवन तैं बंदर । ६-१९।१
कह दास तुलसी कहि न सक । ६-७०।१६
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु । ६-८५।१३
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी । १-१९१।५
कह नृप जे बिग्यान निधाना । १-१६०।१
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । १-२४८।८
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाएँ । १-६१।८
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । ५-४२।५
कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई । ६-११।४
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । ४-११।७
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ । १-७६।६
कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू । ६-३१।९
कह बाली सुनु भीरु प्रिय । ४-७।०
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी । १-८७।८
कह मुनि तात भयउ अँधिआरा । १-१५८।८
कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । ३-१०।१
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका । १-२१५।६
कह मुनि बिहसि गूढ़ मृदु बानी । १-६६।१
कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । १-२७८।७
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा । २-२५७।६
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक । २-१३१।२
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना । १-२८५।७
कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला । ३-७।१
कह मुनीस हिमवंत सुन । १-६८।०
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । ३-३४।४
कह रघुबीर कहा मम मानहु । ६-१०७।११
कह रघुबीर देखु रन सीता । ६-११८।९
कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता । ६-८३।६
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । ५-८।४
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । ३-४।४
कह लंकेस कवन तैं कीसा । ५-२०।१
कह लंकेस कहसि निज बाता । ३-२१।२
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । ५-४९।७
कह सिव जदपि उचित अस नाहीं १-७६।१
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । ३-२७।१४
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । ५-११।७
कह सीता सुनु जती गोसाईं । ३-२७।१२
कह सुक नाथ सत्य तब बानी । ५-५६।३
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । ४-४।२
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । ४-४।७

S.P.S. Library
Srinagar

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ।४-६।११
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ।५-४२।४
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ।६-११।५
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर ।५-५१।३
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू ।२-९५।६
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ।५-३१।३
कह हनुमंत सुनहु प्रभु ।६-१२।क
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी ।६-९८।१२
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा ।१-२५५।७
कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता ।६-४९।१
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा ।१-२५७।४
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा ।६-४९।२
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा ।१-२०७।६
कहँ रघुपति के चरित अपारा ।१-११।१०
कहँ रामु कहि सिर निकर धाए ।६-९२।९
कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई ।२-१७८।८
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें ।२-२२८।८
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा ।६-९२।८
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी ।२-२२२।६
कहइ करहु किन कोटि उपाया ।२-३२।५
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं ।२-२१।४
कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा ।६-७८।११
कहइ बिभीषनु तिन्ह के नामा ।६-४४।२
कहइ भसुंड सुनहु खगनायक ।७-७५।१
कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक ।२-२।१
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ।४-२९।३
कहइ सुभाय सनेह बस ।२-१८१।०
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई ।१-३४।१३
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी ।२-५४।५

कहउँ जुगल मुनिबर्य कर ।१-४३।ख
कहउँ नामु बड़ राम तें ।१-२३।०
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू ।२-२६८।४
कहउँ राम गुन गाथ ।१-१२४।ख
कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू ।२-१७८।१
कहउँ सुभाउ न कुलहिं प्रसंसी ।१-२८३।४
कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं ।२-३२।२
कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी ।२-२६३।१
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही ।२-६०।८
कहउँ सो मति अनुहारि ।१-४७।०
कहत अनुज सन कथा अनेका ।४-१२।७
कहत कठिन समुझत कठिन ।७-११८।ख
कहत कथा इतिहास पुरानी ।१-२२५।२
कहत कूप महिमा सकल ।२-३१०।०
कहत चले पहिरें पट नाना ।१-२९५।१
कहत धरम इतिहास सप्रीती ।२-३१०।१
कहत नसाइ होइ हियँ नीकी ।१-२८।४
कहत परम आरत बचन ।२-३४।०
कहत परसपर राम जसु ।१-३५३।०
कहत बचन मनु अति सकुचाई ।१-७७।४
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला ।६-१२।३
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ ।२-२३१।८
कहत राम गुन गन अनुरागे ।२-२७३।७
कहत राम गुन भा भिनुसारा ।२-९३।२
कहत राम गुन सील सुभाऊ ।२-१७०।७
कहत राम जसु बिसद बिसाला ।१-३११।३
कहत राम जसु लंकाँ आए ।५-५२।२
कहत राम सिय राम सिय ।२-२०३।०
कहत सप्रेम नाइ महि माथा ।२-२३९।७

कहत सबहि देखहु ससिहि ।६-११ख
कहत सारदहु कर मति हीचे ।२-२८२।४
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा ।१-४७।५
कहत सुनत रघुबीर निकाई ।२-१३४।४
कहत सुनत सति भाउ भरत को ।२-३०३।२
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके ।१-१९।३
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ।१-४०।६
कहत सुनत हरि हर सुजसु ।२-३१२।०
कहत सो मोहि लागत भय लाजा ।१-४४।८
कहति न सीय सकुचि मन माहीं ।२-२८६।७
कहति राम प्रिय तात तुम्ह ।२-१६८।०
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ।२-२५९।४
कहब सँदेसु भरत के आएँ ।२-१५१।३
कहँरत भट घायल तट गिरे ।६-८७।४
कहसि न खल अस को जग माहीं ।५-४०।४
कहसि न रिपु दल तेज बल ।५-५३।०
कहसि मोर दुखु देखि बड़ ।२-२१।०
कहहिं एक अति भल नरनाहू ।२-१२१।३
कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु ।२-११४।०
कहहिं झूठि फुरि बात बनाई ।२-१५।३
कहहिं ते बेद असंमत बानी ।१-११४।३
कहहिं परसपर कोकिलबयनीं ।१-३०९।७
कहहिं परस्पर नारि ।१-३११।०
कहहिं परसपर पुर नर नारी ।२-७५।३
कहहिं परसपर बचन सप्रीती ।१-२१९।५
कहहिं परसपर भा बड़ काजू ।२-१८४।५
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा ।२-२०५।२
कहहिं परसपर लोग लोगाईं ।२-१२१।४
कहहिं परसपर सिधि समुदाई ।२-२१३।२
कहहिं पुरातन कथा कहानी ।२-१४०।२
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका ।७-९।७
कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा ।१-३५८।५
कहहिं बेद इतिहास पुराना ।१-५।४
कहहिं भगति भगवंत कै ।१-४४।०
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे ।२-२५५।७
कहहिं लहेउ एहिं जीवन लाहू ।२-११५।७
कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती ।६-८।१
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा ।६-७।८
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ।२-१२९।४
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी ।२-२४९।५
कहहिं सपेम एक एक पाहीं ।२-२२१।१
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ।७-१२८।६
कहहिं सुनहिं अस अधम नर ।१-११४।०
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ।२-२०२।५
कहहिं संत कबि कोबिद ।७-३३।०
कहहिं संत मुनि बेद पुराना ।७-११४।९
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती ।३-४४।२
कहहु कवन बिधि भा संबादा ।७-५४।५
कहहु कवन भय करिअ बिचारा ।६-७।९
कहहु कवन मैं परम कुलीना ।५-६।७
कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ ।१-७८।७
कहहु काहि यहु लाभु न भावा ।१-२५१।१
कहहु ग्यान बिराग अरु माया ।३-१३।८
कहहु जथा जानकी बिबाहीं ।१-१०९।६
कहहु तात केहि भाँति कोउ ।२-१७३।०
कहहु तात केहि भाँति जानकी ।५-२९।८
कहहु तात जननी बलिहारी ।२-५१।७
कहहु तात प्रभु आयसु पाई ।२-३०७।२

सौजन्य - टांटिया ट्रस्ट, २५/२७, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता - १

कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ।६-१०६।६
कहहु नाथ गुन दोष सब ।१-१३०।०
कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक ।१-२१५।१
कहहु नाम कर अरथ बखानी ।१-१६१।८
कहहु पाख महुँ आव न जोई ।४-१८।५
कहहु पुनीत राम गुन गाथा ।१-१०८।८
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने ।१-२९०।८
कहहु बेगि का करिअ उपाई ।६-१६।२
कहहु भगति पथ कवन प्रयासा ।७-४५।१
कहहु सखी अस को तनुधारी ।१-२२०।१
कहहु सुता के दोष गुन ।१-६६।०
कहहु सुपेम प्रगट को करई ।२-२४०।३
कहा एक मैं आजु निहारे ।१-३१०।५
कहा नाम गिरि औषधी ।६-५५।०
कहा भुसुंडि बखानि ।१-१२०।ख
कहा भूप भल सबहि सोहाना ।२-२७७।८
कहा हमार न सुनेहु तब ।१-८९।०
कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही ।६-४९।३
कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही ।२-१५४।२
कहि अनीति ते मूदहिं काना ।१-२९२।८
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी ।२-२६२।३
कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ ।१-७०।१
कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख ।३-३५।१४
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई ।१-१९१।१२
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा ।२-८६।५
कहि कहि कोटिक कपट कहानी ।२-१९।३
कहि जग गति मायिक मुनिनाथा ।२-२४६।२
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू ।१-२८४।७
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई ।२-३७।६
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए ।२-४।२
कहि जाति नहिं बिनती परस्पर ।१-३२५।२०
कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर ।६-९०।१
कहि देखा हर जतन बहु ।१-६२।०
कहि दंडक बन पावनताई ।७-६५।१
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ।१-३२५।२
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती ।२-०।५
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी ।१-५८।५
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू ।२-५३।३
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ।१-३१५।८
कहि न सकत कछु अति गंभीरा ।१-५२।२
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ।२-६९।३
कहि न सकत रघुबीर डर ।१-२५२।०
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई ।२-३०२।८
कहि न सकहिं कछु प्रेम बस ।६-११८।ग
कहि न सकहिं सत सारद सेसू ।१-३५४।५
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन ।२-१३८।६
कहि नाम बारक तेपि पावन ।७-१२९।१२
कहि निज धर्म ताहि समुझावा ।३-३३।३
कहि निषाद निज नाम सुबानी ।२-१९५।४
कहि नेति निगम पुरान आगम ।१-५०।१०
कहि प्रनामु कछु कहन लिय ।२-१५२।०
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई ।२-६७।५
कहि प्रिय बचन बिबेकमय ।२-६०।०
कहि प्रिय बचन सकल समुझाए ।२-७९।२
कहि बन के दुख दुसह सुनाए ।२-७७।४
कहि बातें मृदु मधुर सुहाईं ।१-२२४।८
कहि बिराध बध जेहि बिधि ।७-६५।०
कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह ।१-२४०।०

कहि सक न सारद सेष नारद । ३-४५।९
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । २-८४।३
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू । २-२२१।७
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । २-१८५।७
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई । २-१०५।३
कहिअ काह कहि जाइ न बाता । १-९४।७
कहिअ तात सो परम बिरागी । ३-१४।८
कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि । ७-१२७।४
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई । १-२७८।६
कहिअ सुमेरु कि सेर सम । २-२८८।०
कहिउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी । ७-११३।१६
कहिसि कथा सत सवति कै । २-१८।०
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी । १-२९।२
कही कुसल सब जाइ । ७-२।ख
कही जनक जसि अनुचित बानी । १-२५२।२
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । २-२३०।६
कही समय सिर भरत गति । २-२८७।०
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाईं । ७-१।१६
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना । ५-२६।७
कहु कपि रावन पालित लंका । ५-३२।५
कहु कहँ तात कहाँ सब माता । २-१५८।८
कहु कारनु निज हरष कर । १-२२८।०
कहु केहि रंकहि करौं नरेसू । २-२५।२
कहु खगेस अस कवन अभागी । ७-१०९।७
कहु तजि रोषु राम अपराधू । २-३१।६
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । ५-५२।८
कहु निज नाम जनक कर भाई । ६-२०।२
कहु रावन रावन जग केते । ६-२३।१२
कहु लंकेस सहित परिवारा । ५-४५।४

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी । ४-१५।१०
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी । ७-२८।५
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाए । ३-३७।४
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज । ५-२।२१
कहुँ माल देह बिसाल सैल । ५-२।१८
कहेउ कृपाल भानुकुल नाथा । २-६७।३
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । २-१०१।४
कहेउ बनावन पालकीं । २-१८६।०
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू । १-५२।८
कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू । १-३५३।६
कहेउ भूप मुनिराज कर । २-५।०
कहेउ राम बियोग तव सीता । ५-१४।१
कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । १-२७५।१
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । २-१८६।३
कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई । ७-११९।१
कहेउं न कछु करि जुगुति बिसेषी । ७-९०।२
कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । ७-१२२।१
कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । ७-१२५।१
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा । २-१४१।४
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । ७-६७।६
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । ५-९।८
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । ५-२६।३
कहेहु दंडवत प्रभु सैं । ७-१९।क
कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा । १-६१।१
कहेहु मुखागर मूढ़ सन । ५-५२।०
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । २-८७।८
कहेहू तें कछु दुख घटि होई । ५-१४।५
कहौं कहावौं का अब स्वामी । २-२६६।१
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई । १-२५।८

का आचरजु भरतु अस करहीं ।२-१८८।८
का छति लाभु जून धनु तोरें ।१-२७१।२
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि ।६-१०६।१०
का देउँ पूरनकाम संकर ।१-१००।१०
का न करै अबला प्रबल ।२-४७।०
का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना ।२-१८।२
का बरषा सब कृषी सुखानें ।१-२६०।३
का सुनाइ बिधि काह सुनावा ।२-४७।१
काई कुमति केकई केरी ।१-४०।८
काक समान पाकरिपु रीती ।२-३०१।२
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं ।६-८७।२
काकभसुंडि मागु बर ।७-८३।ख
काकभुसुंडि संग हम दोऊ ।१-१९५।४
काँख दाबि कपिराज कहुँ ।६-६५।०
काँच किरिच बदलें ते लेहीं ।७-१२०।१२
काचे घट जिमि डारौं फोरी ।१-२५२।५
काजु सँवारेहु सजग सबु ।२-२२।०
काजु हमार तासु हित होई ।६-१६।८
काटइ परसु मलय सुनु भाई ।७-३६।८
काटत बढ़हिं सीस समुदाई ।६-१०१।१
काटत सिर होइहि बिकल ।६-९९।०
काटतहीं पुनि भए नवीने ।६-९१।११
काटिअ तासु जीभ जो बसाई ।१-६३।४
काटे बहुत बढ़े पुनि ।६-९७।०
काटे सिर नभ मारग धावहिं ।६-९२।७
काटे सिर भुज बार बहु ।६-१०१।ख
काटेसि दसन नासिका काना ।६-६५।६
काटेसि पंख परा खग धरनी ।३-२८।२२
काटेहिं पइ कदरी फरइ ।५-५८।०

काटें भुजा सोह खल कैसा ।६-६९।११
कादर देखि डरहिं तहँ ।६-८७।०
कादर भयंकर रुधिर सरिता ।६-८६।११
कादर मन कहुँ एक अधारा ।५-५०।४
कान नाक बिनु भगिनि निहारी ।६-२१।७
कान मूदि कर रद गहि जीहा ।२-४७।७
कानन करउँ जनम भरि बासू ।२-२५५।८
कानन गयउ बाजि चंढ़ि तेहीं ।१-१७१।४
काननु कठिन भयंकरु भारी ।२-६१।४
काननि्ह कनक फूल छबि देहीं ।१-२१८।७
काने खोरे कूबरे ।२-१४।०
काम आदि मद दंभ न जाकें ।३-१५।१२
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी ।१-१२५।७
काम कुसुम धनु सायक लीन्हे ।१-२५६।१
काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।१-१९८।१
काम क्रोध मद गज पंचानन ।६-११४।४
काम क्रोध मद मत्सर भेका ।३-४३।३
काम क्रोध मद लोभ परायन ।७-३८।५
काम क्रोध मद लोभ रत ।७-७३।क
काम क्रोध मद लोभ सब ।५-३८।०
काम क्रोध लोभादि मद ।३-४३।०
काम कोह कलिमल करिगन के ।१-३१।७
काम कोह मद मान न मोहा ।२-१२९।१
काम कोह मद मोह नसावन ।१-४२।५
काम चरित नारद सब भाषे ।१-१२७।७
काम बात कफ लोभ अपारा ।७-१२०।३०
कामरूप इच्छामरन ।७-११३।क
कामरूप खल जिनस अनेका ।१-१७५।७
कामरूप जानहिं सब माया ।१-१८०।१

सौजन्य - श्री राधेश्याम चौधरी, २४, सैयद साली लेन, कलकत्ता - ७३

कामरूप सुंदर तन धारी । १-९३।५
कामद भे गिरि राम प्रसादा । २-२७८।१
कामधेनु सत कोटि समाना । ७-९१।४
कामादिदोषरहितं कुरु । ५श्लोक२(४)
कामादिहर बिग्यानकर सुर । ६-१२०।२०
कामिन्ह कै दीनता देखाई । ३-३८।२
कामिहि नारि पिआरि जिमि । ७-१३०ख
कामु जारि रति कहुँ बरु दीन्हा । १-८८।२
कायँ बचन मन मम पद । ७-८५ख
कारन कवन देह यह पाई । ७-९३।३
कारन कवन नाथ नहिं आयउ । ७-०।२
कारन कवन बसहु बन । ४-५।०
कारन कवन भरतु बन जाहीं । २-१८८।३
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा । १-१२३।७
कारन कवन सो नाथ सब । ७-९४ख
कारन तें कारजु कठिन । २-१७९।०
कारन मोहि सुनाउ । २-२५।०
कारुणीककलकञ्जलोचनं ...... । ७श्लोक३(२)
कारुनीक दिनकर कुल केतू । ६-३६।२
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन । ७-५०।८
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ । १-२०१।२
काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । ७-११३।१
काल करम बस होहिं गोसाईं । २-१४९।६
काल कर्म सुभाव गुन । ७-२१।०
काल कराल ब्याल खगराजहि । ७-२९।५
काल कवलु होइहि छन माहीं । १-२७३।३
काल कोटि सत सरिस अति । ७-९१ख
काल दंड गहि काहु न मारा । ६-३६।७
काल धर्म नहिं ब्यापहिं ताही । ७-१०३।७
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । १-१७५।१
काल ब्याल कर भच्छक जोई । ६-५५।८
कालब्यालकरालभूषणधरं । ६-श्लोक२(२)
काल बिबस पति कहा न माना । ६-१०३।१३
काल सुभाउ करम बरिआईं । १-६।२
कालराति निसिचर कुल केरी । ५-३९।८
कालरूप खल बन दहन । ६-४८ख
काल रूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता । ७-४०।५
कालउ तुअ पद नाइहि सीसा । १-१६४।२
कालकेतु निसिचर तहँ आवा । १-१६९।३
कालनेमि कलि कपट निधानू । १-२६।८
कालहि कर्महि ईस्वरहि । ७-४३।०
कालि लगन भलि केतिक बारा । २-१०।४
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं । ६-श्लोक२(३)
कासी मग सुरसरि क्रम नासा । १-५।८
कासीं मरत जंतु अवलोकी । १-११८।१
काह करौं सखि सूध सुभाऊ । २-१९।७
काह करौं सुनि प्रिय बचन । ६-११३।०
काह न पावकु जारि सक । २-४७।०
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । २-९१।४
काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा । १-१३३।७
काहुहि दोसु देहु जनि ताता । २-१६४।७
काहुहि लात चपेटन्हि केहू । ६-४३।८
काहु की जौं सुनहिं बड़ाई । ७-३९।२
काहू सुमति कि खल सँग जामी । ७-१११।४
काहूँ बैठन कहा न ओही । ३-१।५
काहे न होइ बिनीत परम । ७-१।२०
किए अमित उपदेस । २-२७६।०
किए चरित पावन परम । ७-७२।क

किए धरम उपदेस घनेरे । २-८४।४
किए भृंग बहु रंग बिहंगा । १-२८७।५
किए सकल भट घायल भयाकुल । ६-९६।१२
किए सुखी कहि बानी सुधा सम । ६-१०५।९
किएँ जाहिं छाया जलद । २-२१६।०
किएँ अन्यथा होइ नहिं । १-१७४।०
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू । १-६।७
किंकिनि ललाम लगामु ललित । १-३१५।१२
किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा । १-६०।१
किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा । १-१८१।११
किमि चलिहहिं मारग अगम । २-१२०।०
किमि समुझौं मैं जीव जड़ । १-३०।ख
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । ३-२९।१५
कियउ निषादनाथु अगुआईं । २-२०२।१
किलकत मोहि धरन जब धावहिं । ७-७६।१०
की तजि मान अनुज इव । ५-५६।ख
की तनु प्रान कि केवल प्राना । २-५७।४
की तुम्ह अखिल भुवन पति । ४-१।०
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । ४-०।१०
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । ५-५।८
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई । ५-५।७
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । ५-२०।२
की भइ भेंट कि फिरि गए । ५-५३।०
की मैनाक कि खगपति होई । ३-२८।१३
की रावन करि कोप चलाए । ६-३१।८
कीजिअ गुर आयसु अवसि । २-१७५।०
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला । १-१९१।१४
कीट मनोरथ दारु सरीरा । ७-७०।५
कीन्ह अनुग्रह अमित अति । २-२६६।०
कीन्ह कपटु मैं संभु सन । १-५७।०
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा । ६-७५।२
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । १-५६।७
कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । ७-३२।१
कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । २-२१५।१
कीन्ह निषाद दंडवत तेही । २-११०।५
कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा । १-२१४।१
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । २-११९।६
कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी । २-१३५।४
कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई । १-१७६।१
कीन्ह मोह बस द्रोह । ३-२।०
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । ७-८२।५
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । २-३०६।५
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । ६-१०४।८
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई । १-३२०।२
कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । १-३२।१
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी । १-३५१।६
कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । ४-४।१
कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई । १-३४२।६
कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । २-२५२।१
कीन्हि सौच सब सहज सुचि । १-३५८।०
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन । ५-७।०
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । १-१०।७
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । १-२३५।४
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक । ६-६२।५
कीरति बिजय बीरता भारी । १-२५०।४
कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । २-२०९।१
कीरति भनिति भूति भलि सोई । १-१३।९
कीरति सरित छहूँ रितु रूरी । १-४१।१

सौजन्य - श्री संजय भट्टाचार्य, ३९/१ आ. जगदीश चन्द्र बोस रोड, कलकत्ता-१७

कुअँरि चढ़ाई पालकिन्ह । १-३३८।०
कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि । १-२५१।०
कुअँरु कुअँरि कल भाँवरि देहीं । १-३२४।१
कुंजर मनि कंठा कलित । १-२४३।०
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । २-४६।४
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । २-२२७।४
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला । १-९१।२
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । १-१४६।५
क्रुद्धे कृतांत समान कपि । ६-८०।९
कुंद इंदु दर गौर सरीरा । १-१०५।६
कुंद इंदु सम देह । १-०।४
कुंद कली दाड़िम दामिनी । ३-२९।११
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं .... । ७-श्लोक३(१)
कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ । ४-श्लोक१(१)
कुपथ कुतरक कुचालि कलि । १-३२।क
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । ४-६।४
कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी । १-१३२।१
कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । २-२२।१
कुबरीं करि कबुली कैकेई । २-२१।१
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । ५-१४।३
कुंभकरन अस बंधु मम । ६-२७।०
कुंभकरन कपि फौज बिडारी । ६-६६।७
कुंभकरन घननाद कर । ७-६७।०
कुभकरन दुर्मद रन रंगा । ६-६३।२
कुंभकरन बूझा कहु भाई । ६-६१।८
कुंभकरन मन दीख बिचारी । ६-६८।१
कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा । ६-६६।१
कुंभकरन रावन द्वौ भाई । ६-११८।११
कुंभकरन रावन सुभट । १-१२२।०

कुंभजादि मुनिनायक नाना । ६-११९।२
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी । २-२४।७
कुमुख अकंपन कुलिसरद । १-१८०।०
कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा । १-२४२।५
कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे । १-३१९।११
कुल कपाट कर कुसल करम के । २-३१५।७
कुल कलंकु करि सृजेउ बिधाताँ । २-२००।६
कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही । २-१६३।५
कुल रीति प्रीति समेत रबि । १-३२२।१३
कुल समेत रिपु मूल बहाई । १-१७०।५
कुलवंति निकारहिं नारि सती । ७-१००।३
कुलिस अस्थि तें उपल तें । २-१७९।०
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती । १-११२।७
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी । २-२४६।५
कुलिसहु चाहि कठोर अति । ७-१९।ग
कुस किसलय साथरी सुहाई । २-६५।२
कुस कंटक काँकरीं कुराईं । २-३१०।५
कुस कंटक मग काँकर नाना । २-६१।५
कुस साँथरी निहारि सुहाई । २-१९८।१
कुसकेतु कन्या प्रथम जो । १-३२४।१७
कुसगुन लंक अवध अति सोकू । २-८०।४
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा । २-२९६।२
कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे । २-१०६।१
कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा । १-२१४।३
कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ । १-२९०।०
कुसल मूल पद पंकज पेखी । २-१९४।७
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा । १-१२५।२
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं । ३-३९।९
कूजत कलरव हंस गन । ७-५६।०

कूजत पिक मानहुँ गज माते । ३-३७।५
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा । ७-२२।३
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । ६-४२।६
कूदे जुगल बिगत श्रम । ६-४५।०
कूबर टूटेउ फूट कपारू । २-१६२।५
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी । २-२९८।२
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । ६-११०।१७
कृतजुग सब जोगी बिग्यानी । ७-१०२।१
कृतजुग त्रेताँ द्वापर । ७-१०२।ख
कृपा अनुग्रहु अंगु अघाई । २-२९९।५
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । २-८७।७
कृपा कोपु बधु बँधब गोसाईं । १-२७८।५
कृपा बारिधर राम खरारी । ६-६९।४
कृपा रहित हिंसक सब पापी । १-१७५।८
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । ६-५१।८
कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु । ६-१०३।०
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । ६-१०४।७
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । ७-५।६
कृपाँ भलाईं आपनी । २-२९८।०
कृपासिंधु जब मंदिर गए । ७-९।३
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । २-१४०।५
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन । २-२५९।०
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि । २-११२।०
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं । २-८२।४
कृपासिंधु बोले मुसुकाई । २-१००।१
कृपासिंधु मतिधीर । १-२०८।ख
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । १-१६३।७
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । ७-११२।२
कृपासिंधु मैं आउब । ६-११५।०
कृपासिंधु रघुनाथ भजि । ६-३७।०
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । २-३०२।१
कृपासिंधु सनमानि सुबानी । २-३००।७
कृपासिंधु सादर कहहु । ७-९३।ख
कृपासिंधु सिव परम अगाधा । १-५७।२
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन । ६-११७।ख
कृमि पालइ सबु कोइ । ७-९५।ख
कृष्नतनय होइहि पति तोरा । १-८७।२
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । ४-१४।८
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । ५-७।८
कृस सरीर मुनिपट परिधाना । १-१४२।८
केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । १-३१५।१
केकीकण्ठाभनीलं............ । ७-श्लोक१(१)
केतिक बात प्रभु जातुधान की । ५-३१।४
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । २-१०१।१
केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । २-१५०।१
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । २-२७५।४
केवट राम रजायसु पावा । २-१००।६
केवल कृपा तुम्हारिहि । ७-३६।०
केहरि कटि पट पीत धर । १-२३३।०
केहरि कंधर चारु जनेऊ । १-१४६।७
केहरि कंधर बाहु बिसाला । १-२१८।५
केहरि नाद बीर सब करहीं । ६-७८।१०
केहरिनाद भालु कपि करहीं । ५-३४।१०
केहिं अघ एकहि बार मोहि । २-२०।०
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू । १-७७।३
केहि कारन आगमन तुम्हारा । १-२०६।८
केहि कै लोभ बिडंबना । ७-७०।क
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ । २-२५४।२

सौजन्य - चौधरी कैरिंग कॉरपोरेशन, ७२, रतन सरकार गार्डेन स्ट्रीट, कल-७

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी ।३-३४।२
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी ।३-५।९
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू ।२-२५२।२
केहि भाँति बरनि सिरात रसना ।१-३२४।१४
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए ।२-११२।२
केहि हेतु रानि रिसानि परसत ।२-२४।९
कै तापस तिय कानन जोगू ।२-५९।३
कैकइ कत जनमी जग माझा ।२-१६३।४
कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले ।७-६।ख
कैकइ जठर जनमि जग माहीं ।२-१७९।७
कैकइ सुअन जोगु जग जोई ।२-१८०।१
कैकयनंदिनि मंदमति ।२-९१।०
कैकयसुता सुनत कटु बानी ।२-१९।१
कैकयसुता सुमित्रा दोऊ ।१-१९४।१
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ ।१-१८९।३
कैकेई भव तनु अनुरागे ।२-१७९।१
कैकेई सुअ कुटिलमति ।२-१७८।०
कैकेइ हरषित एहि भाँती ।२-१५८।५
को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ ।२-१०५।१
को कृपाल बिनु पालिहै ।२-२९९।०
को जान केहि आनंद बस ।१-३१७।९
को जानै केहिं सुकृत सयानी ।१-३३४।४
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें ।१-१५८।३
को तुम्ह तात कहाँ ते आए ।७-१।७
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा ।४-०।७
को न कुसंगति पाइ नसाई ।२-२३।८
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा ।२-६६।७
को बड़ छोट कहत अपराधू ।१-२०।३
को बिबेकनिधि बल्लभहि ।२-२८३।०
को रघुबीर सरिस संसारा ।२-२३।४
को साहिब सेवकहि नेवाजी ।२-२९८।५
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी ।२-१६३।६
कोउ कह ए भूपति पहिचाने ।१-२२१।३
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता ।६-४२।२
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू ।१-३३४।२
कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा ।६-११।७
कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई ।३-१७।९
कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता ।१-२२१।५
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन ।२-२२२।५
कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू ।२-१८४।७
कोउ कह संकर चाप कठोरा ।१-२२२।२
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। २-२४१।७
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं ।१-२५५।२
कोउ न हमारें कटक अस ।६-२३।ख
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें ।१-१३७।६
कोउ नृप होउ हमहि का हानी ।२-१५।६
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा ।७-८६।४
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता ।७-८६।२
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव ।६-११२।१३
कोउ बिश्राम कि पाव ।७-८९।ख
कोउ मुख हीन बिपुल मुख काहू ।१-९२।७
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी ।१-२२०।२
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई ।७-८६।३
कोउ सुनि संसय करै जनि ।१-१००।०
कोक तिलोक प्रीति अति करिही ।२-२०८।३
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही ।१-२३७।२
कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए ।६-४०।०
कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे ।६-४०।१

सौजन्य - अतुल इन्टरप्राइजेज, ३३/१, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता - १

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। १-२७२।४
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई। ६-६१।२
कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा। ६-६१।५
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। २-२२१।४
कोटि बिघ्न ते संत कर। ६-३३।ख
कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। ५-४३।१
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई। ७-५३।३
कोटि भाँति समुझावउँ। ७-८२।ख
कोटि मनोज लजावनिहारे। २-११६।१
कोटिन्ह आयुध रावन डारे। ६-८२।४
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। १-२९९।७
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा। ६-६६।३
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारै। ६-९०।५
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। ७-७९।५
कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। ७-२३।१
कोटिन्ह मेघनाद सम। ६-३४।ख
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं। ६-८७।१०
.कोटिहुँ बदन नहिं बनै बरनत। १-९९।६
कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर। ३-१७।१४
कोदंड खंडेउ राम तुलसी। १-२६०।१२
कोदंड धुनि अति चंड सुनि। ६-९०।१०
क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु। ७-१११।ख
क्रोध कें परुष बचन बल। ३-३८।ख
क्रोध मनोज लोभ मद माया। ३-३८।३
क्रोधवंत तब भयउ अनंता। ६-५३।४
क्रोधवंत तब रावन। ३-२८।०
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना। ४-१९।२
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ५-५७।४
कोप समाजु साजि सबु सोई। २-२२।७

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। २-२४।१
कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ घेरा। ६-४०।४
कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी। ६-९७।४
कोपि मरुतसुत अंगद धाए। ६-७५।६
कोपि महीधर लेइ उपारी। ६-८८।३
कोपेउ जबहिं बारिचरकेतू। १-८३।६
कोपेउ समर श्रीराम। ३-१९।२
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। २-३१०।४
कोमलचित अति दीन दयाला। ३-३२।१
कोमलचित कृपाल रघुराई। ५-९३।४
कोमलचित दीनन्ह पर दाया। ७-३७।३
कोल कराल दसन छबि गाई। १-१५५।७
कोल किरात कुरंग बिहंगा। २-२७।८
कोल किरात बेष सब आए। २-१३२।७
कोल किरात भिल्ल बनचारी। २-३२०।२
कोल किरात भिल्ल बनबासी। २-२४९।१
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। १-१५६।७
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। १-२६६।५
कोसलपति कर देखि समाजू। १-३१२।६
कोसलपति गति सुनि जनकौरा। २-२७०।१
कोसलपति समधी सजन। १-३४०।०
कोसलपुर बासी नर। १-२०४।०
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ……. । ७-श्लोक२(१)
कोसलेस दसरथ के जाए। ४-१।१
कोसलेस सुत लछिमन रामा। ४-६।२९
कोहबरहिं आने कुअँर कुअँरि। १-३२६।१५
कौड़ी लागि लोभ बस। ७-९९।क
कौतुक कहँ आए पुरबासी। ५-२४।६
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। ६-८४।५

सौजन्य - अतुल इन्टरप्राइजेज, ३३/१, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता - १

कौतुक देखत सैल बन । १-१।०
कौतुक देखहिं भालु कपि । ६-३२।क
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । १-२२४।६
कौतुक देखि पतंग भुलाना । १-१९४।८
कौतुक देखि राम मुसुकाने । ६-५१।६
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । ५-३३।८
कौतुक प्रात देखिअहू मोरा । ६-४८।६
कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न । १-३२६।२१
कौतुक लागि भवन लै आवा । ६-२३।१६
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका । ६-३५।४
कौतुकहीं कैलास पुनि । १-१७९।०
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । ६-३०।२
कौसल्या कह दोसु न काहू । २-२८१।३
कौसल्या कह धीर धरि । २-२८३।०
कौसल्या के चरनन्हि । ७-८।क
कौसल्या के बचन सुनि । २-१६६।०
कौसल्या कैकेई हाथ धरि । १-१८९।४
कौसल्या जब बोलन जाई । १-२०२।७
कौसल्या धरि धीरजु कहई । २-१७५।१
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । ७-६।६
कौसल्या सम सब महतारी । २-१४।५
कौसल्या सुत सो सुख खानी । १-२२०।६
कौसल्याँ अब काह बिगारा । २-४८।८
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना । २-१५३।३
कौसल्याँ सादर सनमानी । २-२८०।४
कौसल्यादि नारि प्रिय । १-१८८।०
कौसल्यादि मातु सब धाई । ७-५।९
कौसल्यादि मातु सब । ७-०।५
कौसल्यादि राम महतारीं । १-३४४।८

कौसल्यादि सकल महतारीं । २-१७४।६
कौसल्यादि सासु गृह माहीं । ७-२३।८
कौसिक कहा छमिअ अपराधू । १-२७४।५
कौसिक कहि कहि कथा पुरानीं । २-२७७।४
कौसिक कहेउ मोर मनु माना । १-२१३।६
कौसिक बामदेव जाबाली । २-३१८।६
कौसिक राउ लिए उर लाई । १-३०७।२
कौसिक सतानंद तब जाई । १-३३१।६
कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु । १-२७३।१
कौसिकरूप पयोनिधि पावन । १-२६१।२
कौसिकहि पूजत परम प्रीति । १-३१९।१२
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । २-२९२।३
कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । १-२२९।१
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । १-३१७।४
कंचन कलस बिचित्र सँवारे । ७-८।१
कंचन थार आरतीं नाना । ७-८।६
कंचन थार सोह बर पानी । १-९५।३
कंठु सूख मुख आव न बानी । २-३४।२
कंत करष हरि सन परिहरहू । ५-३५।६
कंत राम बिरोध परिहरहू । ६-१३।८
कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । ६-३५।१
कंद मूल फल अमिअ अहारू । २-६५।३
कंद मूल फल अंकुर नीके । २-१०६।२
कंद मूल फल पत्र सुहाए । ४-१२।२
कंद मूल फल फूल हम । २-२१२।०
कंद मूल फल भरि भरि दोना । २-१३४।२
कंद मूल फल भोजन । १-२०९।०
कंद मूल फल सुरस अति । ३-३४।०
कंदर खोह नदीं नद नारे । २-६१।७

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल-१

कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । ७-७६।२
कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । ६-१३।१
कंप पुलक तन नयन सनीरा । २-६९।२
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें । १-२९२।४
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । ५-३६।४
कंपित मोहि बिलोकि अति । ७-१०७।क
कंबल बसन बिचित्र पटोरे । १-३२५।३
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । १-१९८।७

ख

खग कंक काक सृगाल । ३-१९।१३
खग मृग परिज़न नगरु बनु । २-६५।०
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । २-१२३।८
खग मृग बृंद अनंदित रहहीं । ३-१३।३
खग मृग मगन देखि छबि होहीं । २-१२२।८
खग मृग सहज बयरु बिसराई । ७-२२।२
खग मृग हय गय जाहिं न जोए । २-१५७।७
खगपति राम कथा मैं बरनी । ७-१४।६
खगहा करि हरि बाघ बराहा । २-२३५।३
खप्परिन्ह खग अलुज्झि जुज्झहिं । ६-८७।१२
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए । २-२०३।३
खबरि लेन हम पठए नाथा । २-२७१।७
खर आरुढ़ नगन दससीसा । ५-१०।४
खर कुठार मैं अकरुन कोही । १-२७४।६
खर दूषन तिसिरा कर घाता । ३-२१।१२
खर दूषन तिसिरा बधेउ । ३-२५।०
खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । ३-१७।२
खर दूषन बध बहुरि बखाना । ७-६५।४
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा । ६-८९।५
खर दूषन मोहि सम बलवंता । ३-२२।२
खर दूषन सुनि लगे पुकारा । ३-२१।११
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । ५-२०।९
खर स्वान सुअर सृकाल मुख । १-९२।११
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । २-१५७।५
खर्ब निसाचर बाँधेउ । ७-५८।०
खरभरु देखि बिकल पुर नारीं । १-२६७।१
खरभरु नगर सोचु सब काहू । २-४८।२
खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । १-५।१
खल कामादि निकट नहिं जाहीं । ७-११९।६
खल खंडन मंडन रम्य छमा । ६-११०।२१
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । ६-२१।४
खल दल बिदारन परम कारन । ६-१०२।१३
खल परिहास होइ हित मोरा । १-८।१
खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । ३-२७।१
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । ७-१२०।१८
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । ६-४४।३
खल मल धाम काम रत रावन । ६-११३।१०
खल मंडलीं बसहु दिनु राती । ५-४५।५
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । १-६।४
खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी । ७-३८।३
खलानां दण्डकृद्योऽसौ । ६-श्लोक३(२)
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । २-१८।४
खाईं सिंधु गभीर अति । १-१७८।क
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । ५-१७।४
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । ५-२१।३
खाहिं निसाचर दिवस निसि । ६-३१।ख
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । ६-४।६
खाहु जाइ फल मूल सुहाए । ६-४।४
खेद खिन्न छुद्धित तृषित । १-१५७।०

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल-१

खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई।७-५८।२
खेलउँ तहूँ बालकन्ह मीला।७-१०९।४
खेलत मनसिज मीन जुग।१-२५८।०
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई।१-२८९।७
खेलहिं बालक मारहिं जाई।६-२३।१४
खैंचहिं गीध आँत तट भए।६-८७।५
खैंचि धनुष सर सत संधाने।६-६९।७
खैंचि सरासन श्रवन लगि।६-१०२।०
खोज मारि रथु हाँकहु ताता।२-८४।८
खोजइ सो कि अग्य इव नारी।१-५०।२
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी।४-१४।४
खोजत ब्याकुल सरित सर।१-१५७।०
खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती।६-८२।२
खंजन मंजु तिरीछे नयननि।२-११६।७
खंजन सुक कपोत मृग मीना।३-२९।१०

ग

गइ बिषम बिपति बियोग भव।७-५।१३
गइ मुरुछा तब भूपति जागे।२-८०।५
गइ मुरुछा रामहि सुमिरि।२-४३।०
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी।३-१६।१२
गई बहोर गरीब नेवाजू।१-१२।७
गई भवानी भवन बहोरी।१-२३४।४
गई सहमि सुनि बचन कठोरा।२-७२।६
गईं समीप महेस तब।१-५५।०
गए अवध चर भरत गति।२-२७१।०
गए जनकु रघुनाथ समीपा।२-२९५।२
गए जानि अंगद हनुमाना।६-४५।३
गए देव सब निज निज धामा।१-१८७।१
गए बिभीषन पास पुनि।१-१७७।०
गए बीति कछु दिन एहि भाँती।१-३११।४
गए लखनु जहँ जानकिनाथू।२-७५।१
गए सकल तुहिनाचल गेहा।१-९३।६
गए सुमंत्रु तब राउर माहीं।२-३७।३
गएँ काल कछु संपति पाई।७-१०४।२
गएँ जाम जुग भूपति आवा।१-१७१।५
गएँ भवन पूछहिं पितु माता।१-९४।६
गएँ समीप सो अवसि नसाई।१-८९।८
गएँ सरन प्रभु राखिहैं।५-२२।०
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा।१-६।९
गगन पंथ देखी मैं जाता।४-४।४
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना।१-१८६।८
गगन बिमल संकुल सुर जूथा।१-१९०।६
गगन समीर अनल जल धरनी।५-५८।२
गगन सिद्ध सुर त्रासित।६-७०।०
गगनगिरा गंभीर भइ।१-१८६।०
गगनोपरि हरि गुन गन गाए।६-७०।११
गज बाजि खच्चर निकर पदचर।५-२।१४
गज रथ तुरग चिकार कठोरा।६-८६।४
गज रथ तुरग दास अरु दासी।१-३२५।४
गज रथ तुरग हेम गो हीरा।१-१९५।८
गत ग्रीषम बरषा रितु आई।४-११।८
गति कूर कबिता सरित की।१-९।१२
गननायक बरदायक देवा।१-२५६।७
गनपति गौरि गिरीसु मनाई।२-८०।२
गनिका अजामिल ब्याध गीध।७-१२९।१०
गनी गरीब ग्रामनर नागर।१-२७।६
गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा।७-६२।१
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब।७-१२५।क

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल-१

गयउ जहाँ बाहेर नगर ।२-८२।०
गयंउ दसानन मंदिर माहीं ।५-४।६
गयउ दूरि घन गहन बराहू ।१-१५६।५
गयउ न गृह मन बहुत गलानी ।१-१५७।४
गयउ निकट तप देखि बिधाता ।१-१७६।२
गयउ बसीठी बीरबर ।७-६७।क
गयउ भवन अति सोचबस ।३-२२।०
गयउ मोर संदेह ।७-६८।क
गयउ सभा दरबार तब ।६-१८।०
गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा ।६-१८।७
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा ।२-२८।५
गयउँ उजेनी सुनु उरगारी ।७-१०४।१
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ।७-७९।ख
ग्यान अखंड एक सीताबर ।७-७७।४
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका ।७-४४।३
ग्यान गिरा गोतीत अज ।७-२५।०
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन ।७-४८।२
ग्यान निधान अमान मानप्रद ।७-३३।५
ग्यान निधान सुजान सुचि ।२-२९१।०
ग्यान पंथ कृपान कै धारा ।७-११८।१
ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना ।७-८३।१
ग्यान बिरति बिग्यान निवासा ।७-९३।२
ग्यान बिराग जोग बिग्याना ।७-११४।१५
ग्यान बिराग सकल गुन अयना ।१-२०५।८
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं ।३-१४।७
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें ।२-२३९।०
ग्यानवंत अपि सो नर ।७-७८।क
ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ ।७-५३।४
ग्यानहि भगतिहि अंतर केता ।७-११४।११

ग्यानी तापस सूर कबि ।७-७०।क
ग्यानी भगत सिरोमनि ।७-६२।क
गरइ गलानि कुटिल कैकेई ।२-२७२।१
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा ।१-३००।१
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ।३-१७।८
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा ।६-३८।८
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका ।५-५४।८
गर्जहिं भालु बलीमुख ।६-४७।०
गर्जहिं सिंघनाद कपि ।६-३९।०
गर्जि परे रिपु कटक मझारी ।६-४३।७
गर्जेउ अट्टहास करि ।६-७२।०
गर्जेउ मरत घोर रव भारी ।६-१०२।४
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी ।६-९२।२
गर्भ न गयहु ब्यर्थ तुम्ह जायहु ।६-२०।६
गर्भ स्त्रवहिं अवनिप रवनि ।१-२७९।०
गर्भन्ह के अर्भक दलन ।१-२७२।०
गरल कंठ उर नर सिर माला ।१-९१।४
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।५-४।२
गरल सुधासम अरि हित होई ।७-११९।७
गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा ।७-९४।१
गरुड़ महाग्यानी गुन रासी ।७-५४।३
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही ।५-४।३
गलीं सकल अरगजाँ सिंचाईं ।१-३४३।५
गवनी बाल मराल गति ।१-२६३।०
गवनु निठुरता निकट किय ।२-२४।०
गवने तुरत तहाँ रिषिराई ।१-१३२।४
गवने भरत पयादेहिं पाए ।२-२०२।४
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ ।५-३४।१६
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई ।३-४२।६

गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । ५-२।३
गहत चरन कह बालिकुमारा । ६-३४।२
गहबरि हियँ कह कौसिला । २-२८२।०
गहसि न राम चरन सठ जाई । ६-३४।३
गहहु घाट भट समिटि सब । २-१९२।०
गहि कर पादप उपल पहारा । ६-८१।२
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं । ६-७२।५
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ। ६-५७।८
गहि गिरि पादप उपल नख । ६-७४।क
गहि गिरीस कुस कन्या पानी । १-१००।२
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । २-२३१।७
गहि पद कमल अनुज कर जोरी । ३-२९।४
गहि पद डारहिं सागर माहीं । ६-४६।८
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । २-३३।६
गहि पद भरत मातु सब राखी । २-१६९।२
गहि पद लगे सुमित्रा अंका । २-२४४।३
गहि बाँह सुर नर नाह । ४-९।१३
गहि भालु बीसहुँ कर मनहुँ । ६-९७।१७
गहि भूमि पार्‍यो लात मार्‍यो । ६-९६।९
गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं । ६-४८।१४
गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । ६-९४।५
गहें छत्र चामर ब्यजन धनु । ७-११।१२
गहे चरन सिय सहित बहोरी । २-८।४
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । ६-९७।८
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । ७-४।६
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । ६-६५।७
गहेसि जाइ मुनि चरन तब । १-१२६।०
गा चह पार जतनु हियँ हेरा । २-२५६।३
गाइ राम गुन गन बिमल । ७-१०३।क

गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । २-१९२।८
गाथे महामनि मौर मंजुल । १-३२६।११
गाधितनय मन चिंता ब्यापी । १-२०५।५
गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि । १-२७५।०
गाधिसूनु सब कथा सुनाई । १-२११।२
गान निसान कोलाहलु भारी । १-३२२।६
गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि । १-९८।९
गारीं सकल कैकइहि देहीं । २-१५५।७
गावत राम चरित मृदु बानी । ३-४०।९
गावन लगे राम कल । ७-५०।०
गावहिं किंनर सुरबधू । ६-१०९।क
गवहिं गीत मनोहर नाना । १-३००।५
गावहिं छबि अवलोकि सहेली । १-२६३।८
गावहिं बेद पुरान । ७-८९।क
गावहिं मंगल कोकिलबयनीं । २-७।७
गावहिं मंगल मंजुल बानीं । १-२९६।३
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । १-२९६।७
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला । ३-४५।७
गावँ गावँ अस होइ अनंदू । २-१२१।१
गिरत सँभारि उठा दसकंधर । ६-३१।५
गिर्‍यो धरनि दसकंधर बिकलतर । ६-८३।१०
गिरा अरथ जल बीचि सम । १-१८।०
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । १-२५८।१
गिरा ग्राम्य सिय राम जस । १-१०।०
गिरा मुखर तन अरध भवानी । १-२४६।५
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । १-१८७।५
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । १-१८७।४
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । ४-२३।७
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी । ५-२।१०

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । ३-२८।२५
गिरि बन नदीं ताल छबि छाए । ३-१३।२
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । १-१८३।५
गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । ७-५५।७
गिरिबर गुहाँ पैठ सो जाई । ४-५।५
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं । २-२७४।२
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । ४-२७।११
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । १-१७७।५
गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । ७-५७।१
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी । १-१२३।६
गिरिजा जासु नाम जपि । ६-७३।०
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । ७-४९।९
गिरिजा ते नर मंदमति । ६-७१।०
गिरिजा रघुपति कै यह रीती । ६-२।६
गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । ७-५१।१
गिरिजा सुनहु राम कै लीला । १-११२।८
गिरिजा संत समागम । ७-१२५।०
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं । ६-३२।९
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन । १-७७।०
गीध अधम खग आमिष भोगी । ३-३२।२
गीध देह तजि धरि हरि रूपा । ३-३१।१
गीधराज सुनि आरत बानी । ३-२८।७
गीधराज सैं भेंट भइ । ३-१३।०
ग्रीषम दुसह राम बनगवनू । १-४१।४
गुन अवगुन जानत सब कोई । १-४।९
गुन कृत सन्यपात नहिं केही । ७-७०।१
गुन ग्यान निधान अमान अजं । ६-११०।९
गुन तुम्हार समुझइ निज दोषा । २-१३०।३
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । ७-९८।४
गुन यह उभय न देखिअहिं । ७-४१।०
गुन सागर नागर नर जोऊ । ५-३७।८
गुन सागर नागर बर बीरा । १-२४०।२
गुन सील कृपा परमायतनं । ७-१३।१९
गुनउ बहुत कलिजुग कर । ७-१०२।क
गुनह लखन कर हम पर रोषू । १-२८०।५
गुनागार संसार दुख । ३-४५।०
गुनातीत सचराचर स्वामी । ३-३८।१
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु । १-४८।क
गुर अनुरागु भरत पर देखी । २-२५८।१
गुर अनुसासन श्रवन सुनि । २-१५७।०
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । २-८।२
गुर आयउ अभिमान तें । ७-१०६।क
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । २-१७५।७
गुर के बचन सुरति करि । ७-११०।क
गुर कें बचन प्रतीति न जेही । १-७९।८
गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु । २-३२०।०
गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू । २-२६०।८
गुरजन लाज समाजु बड़ । १-२४८।०
गुर तें पहिलेहिं जगतपति । १-२२६।०
गुर नित मोहि प्रबोध । ७-१०५।ख
गुर नृप भरत सभा अवलोकी । २-३१२।३
गुर पद कमल प्रनामु करि । २-२५३।०
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । ७-१२७।७
गुर पद पंकज नाइ सिर । १-२२५।०
गुर पद पंकज सेवा । ३-३५।०
गुर पद बंदि सहित अनुरागा । १-२५४।४
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि । २-३०५।०
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला । २-२६६।२

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल-१

गुर प्रसाद सब जानिअ राजा ।१-१६३।२
गुर पितु मातु न जानउँ काहू ।२-७१।४
गुर पितु मातु बचन अनुसारी ।२-२५३।४
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं ।२-७३।५
गुर पितु मातु महेस भवानी ।१-१४।३
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी ।२-१७६।३
गुर बसिष्ट कहँ गयउ हँकारा ।१-१९२।७
गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे ।७-७।६
गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई ।७-९।४
गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई ।७-९२।५
गुर बिबेक सागर जगु जाना ।२-१८१।१
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं ।१-२५३।३
गुर श्रुति संमत धरम फलु ।२-६१।०
गुर सन कहब सँदेसु ।२-१५१।०
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे ।२-७९।३
गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई ।२-२१६।८
गुर समाज भाइन्ह सहित ।२-२७३।०
गुर समाज लघु बंधु गुन ।२-३०४।०
गुर समीप गवने सकुचि ।१-२७८।०
गुर सिष बधिर अंध का लेखा ।७-९८।६
गुर सुर संत पितर महिदेवा ।१-१५४।४
गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई ।१-२०३।४
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला ।१-१८८।२
गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू ।२-४९।४
गुरतिय पद बंदे दुहु भाई ।२-२४४।१
गुरपतिनिहि मुनि तियन्ह समेता ।२-२४५।२
गुरहि देखि सानुज अनुरागे ।२-२४२।३
गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा ।१-३१२।८
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा ।१-२६०।५
गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाईं ।२-२०१।८
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा ।३-२५।२
गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन ।१-१।१
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू ।२-७०।४
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा ।३-१५।१०
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें ।२-३१४।५
गुरु बसिष्ट तेहि राखा ।१-१९७।०
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ ।२-९।४
गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई ।२-१४३।१
गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती ।२-८९।३
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई ।२-८८।७
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी ।२-१३६।८
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा ।४-१६।३
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर ।७-२७।३
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ।१-२११।७
गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि ।२-१६।०
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ।१-२३३।७
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ।२-२८३।४
गूढ़उ तत्त्व न साधु दुरावहिं ।१-१०९।२
गूलरि फल समान तव लंका ।६-३३।३
गृह कारज नाना जंजाला ।१-३७।८
गृह गृह बाज बधाव सुभ ।१-१९४।०
गृही बिरति रत हरष जस ।४-१३।०
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा ।७-११७।१४
ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस ।२-१८०।०
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू ।१-३११।६
ग्रह भेषज जल पवन पट ।१-७।क
ग्राम निकट जब निकसहिं जाई ।२-१०८।७
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि ।२-८८।०

गे नहाइ गुर पहिं रघुराई । २-२८९।३
गै जननी सिसु पहिं भयभीता । १-२००।५
गै निसि बहुत सयन अब कीजे । १-१६८।७
गै श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । १-१५८।१
गो गोचर जहँ लगि मन जाई । ३-१४।३
गो द्विज धेनु देव हितकारी । ५-३८।३
गो द्विज हितकारी जय असुरारी । १-१८५।२
गोद राखि कराव पय पाना । ७-८७।८
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । २-५१।४
गोदावरी निकट प्रभु । ३-१३।०
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी । २-२३१।२
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर । ३-३१।८
गोमाय गीध कराल खर रव । ६-७७।१२
गौतम तिय गति सुरति करि । १-२६५।०
गौतम नारि श्राप बस । १-२१०।०
गौर किसोर बेषु बर काछें । १-२२०।७
गौर सरीर स्याम मन माहीं । १-२७६।७
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । ७-५४।६
गौरि सरीर भूति भलि भ्राजा । १-२६७।४
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । २-२८६।४
गंग गौरि सम सब सनमानीं । २-२४४।२
गंग बचन सुनि मंगल मूला । २-१०३।१
गंग सकल मुद मंगल मूला । २-८६।४

घ

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई । १-२३७।१
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । ६-३८।१०
घन घमंड नभ गरजत घोरा । ४-१३।१
घर घर करहिं जागरन नारीं । १-३५७।२
घर घर साजहिं बाहन नाना । २-१८५।१
घर तरु तर सर बाग बन । २-११६।०
घर पुर देस राखि रखवारे । २-२७१।४
घर मसान परिजन जनु भूता । २-८२।७
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू । २-२५।८
घरु जाउ अपजसु होउ जग । १-९५।१२
घहरात जिमि पबिपात गर्जत । ६-४८।१२
घायल बीर बिराजहिं कैसे । ६-५३।१
घुरुघुरात हय आरौ पाएँ । १-१५५।८
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं । ६-६७।६
घेरेन्हि नगर निसान बजाई । १-१७४।५
घोर जंतु सम पुर नर नारी । २-८२।६
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । १-४०।४
घोर निसाचर बिकट भट । १-३५६।०
घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं । १-३०१।७

च

चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं । ५-२।१३
चक चकोर चातक सुक पिक गन । २-२३५।६
चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी । २-१८६।१
चक्रबर्ति के लच्छन तोरें । १-१५८।४
चक्रबाक बक खग समुदाई । ३-३९।३
चक्रबाक बक हंस उड़ाहीं । ४-२३।६
चक्रबाक मन दुख निसि पेखी । ४-१६।४
चकित चितव मुदरी पहिचानी । ५-१२।२
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी । १-१७३।६
चकित बिलोकति सकल दिसि । १-२२९।०
चढ़ि गिरि सिखर चहूँ दिसि देखा । ४-२३।५
चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर । १-२९९।०
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु । १-१३।०
चढ़ि बर बाजि बार एक राजा । १-१५५।३

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल- १

चढ़ि बिमान आए सब । ७-११।०
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन । ६-११६।५
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । २-८२।२
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं । ७-८।ख
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारीं । १-३००।४
चढ़ु मम सायक सैल समेता । ६-५९।६
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । ६-४१।२
चतुर गँभीर राम महतारी । २-१७।१
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई । १-२६३।५
चतुर सखीं सुंदर सकल । १-२४६।०
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । ७-११९।१०
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । ७-५८।८
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हें । ३-३७।१०
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप । १-१५६।०
चर अरु अचर नाग नर देवा । १-१०६।८
चर अरु अचर हर्षजुत । १-१९०।०
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे । १-१३।३
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । २-६१।६
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । २-९९।४
चरन कमल रज चाहति । १-२१०।०
चरन कमल सिरु नाइ कपि । ५-२७।०
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । २-१९७।३
चरन नलिन उर धरि गृह आवा । ७-१९।५
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । ६-५।४
चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । ४-१९।१
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा । १-२०६।३
चरन परेउ प्रेमाकुल । ५-३२।०
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । २-१२८।५
चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । २-१९८।२
चरन सरोज धूरि धरि सीसा । १-३३८।७
चरन सरोरुह नाथ जनि । ३-४।०
चरनपीठ करुनानिधान के । २-३१५।५
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । २-१४२।५
चरम देह द्विज कै मैं पाई । ७-१०९।३
चरित करत नर अनुहरत । २-८७।०
चरित राम के सगुन भवानी । ६-७३।१
चरित सिंधु गिरिजा रमन । १-१०३।०
चरित सिंधु रघुनायक । ७-१२३।ख
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई । १-१६४।५
चलइ जोंक जल बक्रगति । २-४२।०
चलइ बहुत सो बीर न होई । ६-२२।१०
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । ६-७८।६
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े । १-११।२
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । ७-१०७।७
चलत गगन भै गिरा सुहाई । १-५६।४
चलत दसानन डोलति अवनी । १-१८१।५
चलत न देखन पायउँ तोही । २-१५९।५
चलत पयादें खात फल । २-२२२।०
चलत प्रात लखि निरनउ नीके । २-१८४।२
चलत बिमान कोलाहल होई । ६-११८।३
चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । ५-२७।१
चलत मार अस हृदयँ बिचारा । १-८३।४
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही । ५-३०।१
चलत राम सब पुर नर नारी । १-२५४।६
चलत रामु लखि अवध अनाथा । २-८२।३
चलत होहिं अति असुभ भयंकर । ६-८५।१
चलन चहत बन जीवननाथू । २-५७।३
चलहिं सदा पावहिं सुखहि । ७-२०।०

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल-१

चलहु तात मुनि कहेउ तब । १-२३९।०
चलहु बेगि रघुबीर बराता । १-२९७।२
चलहु बेगि सुनि गुर बचन । १-२९४।०
चलहु सफल श्रम सब कर करहू । २-१३१-८
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ । ३-२२।७
चला इंद्रजित अतुलित जोधा । ५-१८।३
चला कटकु को बरनैं पारा । ५-३४।८
चला कटकु प्रभु आयसु पाई । ६-३।९
चला गगनपथ आतुर । ३-२८।०
चला न अचल रहा रथ रोपी । ६-८१।४
चला रुधिर रघुनायक जाना । ३-०।८
चलि ल्याइ सीतहि सखीं सादर । १-३२१।९
चलिअ करिअ बिश्रामु । २-२०१।०
चलिहि बरात सुनत सब रानीं । १-३३३।२
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । १-२२८।८
चली तमीचर अनी अपारा । ६-८५।३
चली न अचल समाधि सिव । १-८६।०
चली नाइ पद पदुम सिरु । २-६९।०
चली बरात निसान बजाई । १-३४२।७
चली बलीमुख सेन पराई । ६-६४।१०
चली बिभीषन सन्मुख । ६-९३।०
चली सुभग कबिता सरिता सो । १-३८।११
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी । १-१२५।३
चली सेन कछु बरनि न जाई । ६-३।२
चलीं मुदित परिछनि करन । १-३१७।०
चलीं मुदित परिछनि करन । १-३४६।०
चलीं सती सिव आयसु पाई । १-५१।४
चलीं संग लै सखीं सयानी । १-२४७।१
चले अवध लेइ रथहि निषादा । २-१४३।२

चले अवधपति अवधपुर । १-३३९।०
चले चित्रकूटहि भरतु । २-२७१।०
चले जनक मंदिर मुदित । १-३३४।०
चले जहाँ दसरथु जंनवासे । १-३०६।८
चले जात मुनि दीन्हि देखाई । १-२०८।५
चले जात सिव सती समेता । १-४९।४
चले जुगल मुनि पद सिर नाई । १-१३८।८
चले तमीचर बिकलतर । ६-७४।ख
चले नहाइ नदिहि सिर नाई । २-२२०।४
चले निषाद जोहारि जोहारी । २-१९०।३
चले निसाचर आयसु मागी । ६-३९।७
चले निसाचर निकर पराई । ६-४१।३
चले निसान बजाइ सुर । १-३५३।०
चले पढ़त गावत गुन गाथा । १-३३०।७
चले पराइ भालु कपि नाना । ६-८१।६
चले बान सपच्छ जनु उरगा । ६-९१।१
चले बिचलि मर्कट भालु सकल । ६-९५।१०
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी । २-१६५।२
चले बीर सब अतुलित बली । ६-७७।८
चले भरत मन प्रेम अति । ७-३।क
चले भरतु जहँ सिय रघुराई । २-२३२।६
चले भवानिहि नाइ सिर । १-९०।०
चले भागि कपि भालु भवानी । ६-६९।२
चले मत्त गज घंट बिराजी । १-२९९।२
चले मत्त गज जूथ घनेरे । ६-७८।३
चले मिलन मुनिनायकहि । १-२१४।०
चले राम त्यागा बन सोऊ । ३-३६।१
चले राम मुनि आयसु पाई । ३-१२।१८
चले राम लछिमन मुनि संगा । १-२११।१

सौजन्य - श्री गणेश शंकर तिवारी एवं परिवार, १८, आर.एन.मुखर्जी रोड, कल- १

चले सकल गृह काज बिसारी । १-२३९।६
चले सकल बन खोजत । ४-२३।०
चले सकल सेवक समुदाई । १-२९९।८
चले सखा कर सों कर जोरें । २-१९७।५
चले सप्रेम असीस सुनि । २-३१८।०
चले सबेग रामु तेहि काला । २-२४२।२
चले समीर बेग हय हाँके । २-१५७।१
चले ससीय मुदित दोउ भाई । २-१११।२
चले सहित सिय लखन जन । २-१०८।०
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । २-८३।७
चले संग हिमवंतु तब । १-१०२।०
चले हरषि तजि नगर नृप । ४-१६।०
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज । १-३२६।२६
चले हरषि रघुनायक पासा । ५-२७।६
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । ५-१७।१
चलेउ निसाचर कटकु अपारा । ६-७८।१
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ । ६-८५।०
चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी । २-३८।२
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । ५-४१।४
चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं । १-२९८।४
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । २-१०४।८
चलै कि जल बिनु नाव । ७-८९।ख
चहत न भरत भूपतहि भोरें । २-३५।१
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । १-२१।८
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा । १-२१।७
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका । १-२६।१
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । १-२२३।३
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि । ६-९९।१५
चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन । १-२२७।१
चातक कोकिल कीर चकोरा । १-२२६।६
चातक रटत तृषा अति ओही । ४-१६।५
चातक हंस सराहिअत । २-३२४।०
चातकु रटनि घटें घटि जाई । २-२०४।४
चाप समीप रामु जब आए । १-२५९।३
चाप स्रुवा सर आहुति जानू । १-२८२।२
चापत चरन लखनु उर लाएँ । १-२२५।७
चामर चरम बसन बहु भाँती । २-५।३
चारा चाषु बाम दिसि लेई । १-३०२।२
चारि खानि जग जीव अपारा । १-३४।४
चारि पदारथ करतल ताकें । २-४५।२
चारि पदारथ भरा भँडारू । २-१०४।४
चारि भाँति भोजन बिधि गाई । १-३२८।४
चारि लच्छ बर धेनु मगाईं । १-३३०।२
चारि सिंघासन सहज सुहाए । १-३४९।१
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । ७-२०।३
चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए । १-३३४।१
चारिउ सील रूप गुन धामा । १-१९७।६
चारु चरन नख लेखति धरनी । २-५७।५
चारु चिबुक नासिका कपोला । १-२३२।५
चारु चित्रसाला गृह । ७-२७।०
चारु पुरट मनि रचित बनाई । ७-७५।८
चारु बजारु बिचित्र अँबारी । १-२१२।२
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी । २-३११।३
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि । १-३२६।२०
चाहउँ तुम्हहि समान सुत । १-१४९।०
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । १-४६।४
चाहिअ करन सो सब करि बीते । ६-६।२
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । २-२१२।५

सौजन्य - श्री राधाकृष्ण गुप्ता, पी-२, डालिम तल्ला लेन, कलकत्ता-७०० ००६

चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । १-१९८।१०
चिक्करत लागत बान । ३-१९।१०
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि। १-२६०।१०
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि । ५-३४।११
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि । ६-९०।१२
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल । ६-८०।१२
चितइ सबन्हि पर कीन्ही दाया । ६-११७।३
चितई सीय कृपायतन । १-२६०।०
चित्त खगेस राम कर । ७-१९।ग
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ । ७-११७।ख
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ । १-११६।३
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । ३-७।३
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु । ३-१७।१७
चितवति चकित चहूँ दिसि सीता । १-२३१।१
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी । १-२१८।८
चितवनि चारु मार मनु हरनी । १-२४२।३
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । १-३१३।५
चितवहिं सादर रूप अनूपा । १-१४७।६
चिंता कवनिहु बात कै । २-९५।०
चिंता साँपिनि को नहिं खाया । ७-७०।४
चिदानंद सुखधाम सिव । १-७५।०
चिदानंद संदोह मोहापहारी । ७-१०७।१२
चिदानंद संदोह । ७-६८।ख
चिदानंदमय देह तुम्हारी । २-१२६।५
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु । २-२८५।७
चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चार्‍यो । १-३२६।२४
चिरु जीवहुँ सुत चारि । १-२९५।०
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । २-१३४।६
चित्रकूट के बिहग मृग । २-१३८।०
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । २-१३१।३
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । २-१३२।४
चित्रकूट महिमा अमित । २-१३२।०
चित्रकूट रघुनंदनु छाए । २-१३३।५
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । २-३०७।३
चित्रकेतु कर घरु उन घाला । १-७८।२
चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । २-२६९।३
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई । १-२०२।३
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । ५-२६।२
चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । ६-३९।१०
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही । ३-२८।२०
चौकें चारु सुमित्राँ पूरी । २-७।३
चौकें भाँति अनेक पुराईं । १-२८७।७
चौथि भगति मम गुन गन । ३-३५।०
चौथेंपन पायउँ सुत चारी । १-२०७।२
चौदह भुवन एक पति होई । ५-३७।७
चौहट सुंदर गलीं सुहाईं । १-२१२।४
चंचल तुरग मनोहर चारी । ६-८८।४
चंद किरन रस रसिक चकोरी । २-५८।८
चंदु चवै बरु अनल कन । २-४८।०
चंदन अगर भार बहु आए । २-१६९।३
चंद्रहास हरु मम परितापं । ५-९।५
चंपक बकुल कदंब तमाला । ३-३९।६

छ

छठ दम सील बिरति बहु करमा । ३-३५।२
छठें श्रवन यह परत कहानी । १-१६५।२
छतज नयन उर बाहु बिसाला । ६-५२।१
छन एक सोच मगन होइ रहे । ४-२५।८
छन महिं सबहि मिले भगवाना । ७-५।७

छन महुँ प्रभु के सायकन्हि । ६-६८।०
छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर । १-९८।०
छन महुँ सब कें परुसि गे । १-३२८।०
छन सुख लागि जनम सत कोटी । ३-४।१७
छबि ललना गन मध्य जनु । १-३२२।०
छबिखानि मातु भवानि गवनीं । १-९९।११
छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी । १-१४७।५
छमब आजु अति अनुचित मोरा । २-२९६।६
छमासील जे पर उपकारी । ७-१०८।५
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । १-७।८
छमहु चूक अनजानत केरी । १-२८१।४
छमेहु सकल अपराध अब । १-१०१।०
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती । १-३२८।५
छरे छबीले छयल सब । १-२९८।०
छल करि टारेउ तासु ब्रत । १-१२३।०
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी । २-१६६।४
छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । १-२८०।३
छत्र मुकुट ताटंक तब । ६-१३।क
छत्र मेघडंबर सिर धारी । ६-१२।५
छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई । १-१७३।१
छत्रि जाति रघुकुल जनमु । २-२२९।०
छत्रिय तनु धरि समर सकाना । १-२८३।३
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहू । २-३४।७
छाड़ा बान माझ उर लागा । ६-७५।१६
छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसिआई । ६-९०।४
छाँड़े बिपुल नाराच । ३-११।८
छाड़े बिषम बिसिख उर लागे । १-८६।३
छाँह करहिं घन बिबुधगन । २-११३।०
छिति जल पावक गगन समीरा । ४-१०।४
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । ६-११।८
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । २-६५।४
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी । २-१३९।२
छिनु छिनु लखि सिय राम पद । २-१३९।०
छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती । ६-७१।३
छीनि लेइ जनि जान जड़ । १-१२५।०
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा । १-१२७।४
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । १-२७१।३
छुअत सिला भइ नारि सुहाई । २-९९।५
छुअतहिं टूट पिनाक पुराना । १-२८२।८
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई । ४-१३।५
छुधा छीन बलहीन सुर । १-१८१।०
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू । ६-८।३
छुहे पुरट घट सहज सुहाए । १-३४५।६
छूट जानि बन गवनु सुनि । २-५१।०
छूट न राम कृपा बिनु । ७-७१।ख
छूटइ मल कि मलहि के धोएँ । ७-४८।५
छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी । ७-१०९।१३
छेमकरी कह छेम बिसेषी । १-३०२।७
छेत्रु अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा । २-१०४।५
छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता । २-२९२।६
छोरत ग्रंथि जानि खगराया । ७-११७।६
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । ७-११७।५
छंद सोरठा सुंदर दोहा । १-३६।५

ज

जग कारन तारन भव । ४-१।०
जग जस भाजन चातक मीना । २-२३३।३
जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । ३-४।११
जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं । ६-६५।३

जग बहु नर सर सरि सम भाई । १-७।१३
जग बिस्तारहिं बिसद जस । १-१२१।०
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । २-२९७।६
जग महुँ सखा निसाचर जेते । ५-४३।७
जग मंगल गुनग्राम राम के । १-३१।२
जग मंगल भल काजु बिचारा । २-४।६
जग संभव पालन लय कारिनि । १-९७।४
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू । १-११६।७
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई । ६-१०३।९
जगत मातु पितु संभु भवानी । १-१०२।४
जगत मातु सर्बग्य भवानी । १-७१।८
जगद्गुरुं च शाश्वतं । ३-३।१८
जगदातमा प्रानपति रामा । ६-३४।६
जगदातमा महेसु पुरारी । १-६३।५
जगदाधार सेष किमि । ६-५४।०
जगदंबा जहँ अवतरी । १-९४।०
जगदंबा हरि आनि अब । ६-६२।०
जगदंबिका जानि भव भामा । १-९९।७
जगनिवास प्रभु प्रगटे । १-१९१।०
जगत पिता रघुपतिहि बिचारी । १-२४५।३
जगमगत जीनु जराव जोति । १-३१५।११
जग्य करत जबहीं सो देखा । ६-८४।६
जग्य बिधंसि कुसल कपि । ६-८५।०
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा । १-६४।२
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु । १-६४।०
जगु अनभल भल एकु गोसाईं । २-२६६।७
जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु । १-१०२।९
जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । २-१२६।१
जगु बिरंचि उपजावा जब तें । १-३१९।५
जगु भय मगन गगन भइ बानी । २-२३०।१
जगु भल कहिहि भाव सब काहू । १-२४८।५
जटा जूट दृढ़ बाँधें माथे । ६-८५।८
जटाजूट सिर मुनिपट धारी । २-३२३।३
जटा मुकुट सीसनि सुभग । २-११५।०
जटा मुकुट सुरसरित सिर । १-१०६।०
जड़ चेतन गुन दोषमय । १-६।०
जड़ चेतन जग जीव जत । १-७।ग
जड़ चेतन मग जीव घनेरे । २-२१६।१
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई । ७-११६।४
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा । १-३८।२
जतन अनेक साथ हित कीन्हे । २-९८।६
जथा अनेक बेष धरि । ७-७२।ख
जथा अनंत राम भगवाना । १-११३।४
जथा गगन घन पटल निहारी । १-११६।२
जथाजोग सनमानि प्रभु । २-१३४।०
जथाजोग सेनापति कीन्हे । ६-३८।५
जथा जोगु करि बिनय प्रनामा । २-३१८।७
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई । १-१४८।५
जथा धर्मसीलन्ह के । ३-३९।ख
जथा पंख बिनु खग अति दीना । ६-६०।९
जथा बिलोकि अकेल । ३-१८।०
जथा मत्त गज जूथ महुँ । ६-१९।०
जथा सुअंजन अंजि दृग । १-१।०
जदपि अकाम तदपि भगवाना । १-७५।२
जदपि अहइ असमंजस भारी । १-८२।४
जदपि कबित रस एकउ नाहीं । १-९।७
जदपि कही कपि अति हित बानी । ५-२३।१
जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । ७-१०८।३

सौजन्य - श्री राधाकृष्ण गुप्ता, पी-२, डालिम तल्ला लेन, कलकत्ता-७०० ००६

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । १-१०९।१
जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । ४-२।१
जदपि प्रथम दुख पावइ । ७-७४।क
जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । ३-१०।१७
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा । १-६१।५
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ । १-११७।०
जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । ७-९६।४
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । ५-४८।९
जदपि सतीं पूछा बहु भाँती । १-५६।८
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी । १-१३३।६
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि । १-२९५।५
जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी । ७-२३।५
जद्यपि जग दारुन दुख नाना । १-६२।७
जद्यपि जनमु कुमातु तें । २-१८३।०
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । ५-४९।८
जद्यपि तव गुर कें नहिं क्रोधा । ७-१०६।२
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । २-२६।७
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । १-५०।५
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । ३-४१।७
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता । ४-२२।१३
जद्यपि बर अनेक जग माहीं । १-६९।६
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । ३-१२।१२
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा । ३-१८।५
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । ३-१८।११
जद्यपि मैं अनभल अपराधी । २-१८२।३
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें । २-१७६।६
जद्यपि लघुता राम कहुँ । ६-२३।घ
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना । ७-३।३
जद्यपि सम नहिं राग न रोषू । २-२१८।३

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । ७-०।६
जन कहुँ कछु अदेय नहिं मोरें । ३-४१।५
जन गुन गाहक राम । १-३३६।०
जन मन मंजु कंज मधुकर से । १-१९।८
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । १-०।४
जन रंजन भंजन खल ब्राता । ५-३८।४
जन रंजन भंजन भव भारू । २-३२५।८
जन रंजन भंजन सोक भयं । ६-११०।५
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । १-२८५।५
जनक गहे कौसिक पद जाई । १-३४२।२
जनक जाति अवलोकहिं कैसें । १-२४१।२
जनक दूत तेहि अवसर आए । २-२६९।४
जनक पाटमहिषी जग जानी । १-३२३।१
जनक बचन सुनि सब नर नारी । १-२५१।७
जनक बहोरि आइ सिरु नावा । १-२६८।४
जनक बाम दिसि सोह सुनयना । १-३२३।४
जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई । १-२३८।१०
जनक भरत संबादु सुनाई । २-२९५।४
जनक भवन कै सोभा जैसी । १-२८८।६
जनक राज गुन सीलु बड़ाई । १-३५३।७
जनक राम गुर आयसु पाई । २-२८५।३
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई । १-२६२।४
जनक सनेहु सीलु करतूती । १-३३१।१
जनक सभाँ अगनित भूपाला । ६-३५।१०
जनक सुकृत मूरति बैदेही । १-३०९।१
जनकसुतहि समुझाइ करि । ५-२७।०
जनकसुता कइ सुधि भामिनी । ३-३५।१०
जनकसुता कहुँ खोजहु जाई । ४-२१।७
जनकसुता कें आगें । ५-२६।०

सौजन्य - गुप्ता ब्रादर्स, पी-१२, न्यू हावड़ा ब्रिज एप्रोच रोड, कल-७०० ००१

जनकसुता जग जननि जानकी । १-१७।७
जनकसुता सब उर धरि धीरा । २-२४५।७
जनकसुता परिहरिहु अकेली । ३-२९।२
जनकसुता रघुनाथहि दीजे । ५-५६।७
जनकसुता सन बोले । ३-२३।०
जनकसुता समेत प्रभु । ६-१०९।ख
जनकसुता समेत रघुबीरहि । ७-२९।८
जनकसुता समेत रघुराई । ७-११।३
जनकु रहे पुर बासर चारी । २-३२१।६
जननि जनक गुर बंधु हमारे । ७-४६।२
जननि जनक सिय राम प्रेम के । १-३१।४
जननिन्ह सादर बदन निहारे । १-३५७।८
जननिहि बहुरि मिलि चली उचित । १-१०१।९
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी । १-९६।५
जननी जनक बंधु सुत दारा । ५-४७।४
जननी तूँ जननी भई । २-१६१।०
जननी भवन गए प्रभु । १-२०८।क
जननी सम जानहिं परनारी । २-१२९।६
जननी हृदयँ धीर धरु । ५-१५।०
जननीं उमा बोलि तब लीन्ही । १-१०१।२
जननीं सकल परितोषि परि परि । २-१५०।११
जन्म कोटि लगि रगर हमारी । १-८०।५
जन्म जन्म प्रभु पद कमल । ७-४९।०
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । ४-९।३
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । ७-३।५
जन्म महोत्सव देखउँ जाई । ७-७४।४
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । १-३३।८
जनम एक दुइ कहउँ बखानी । १-१२१।३
जनम जनम रति राम पद । २-२०४।०
जनम मरन सब दुख सुख भोगा । २-१४९।५
जनम रंक जनु पारस पावा । १-३४९।७
जनम हेतु सब कहँ पितु माता । २-२५४।६
जनमत मरत दुसह दुख होई । ७-१०८।७
जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई । १-९७।५
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू । २-९१।६
जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु । १-२३७।०
जनमे एक संग सब भाई । २-९।५
जनवासेहि गवने मुदित । १-३२९।०
जनहि मोर बल निज बल ताही । ३-४२।९
जनि आचरजु करहु मन माहीं । १-१६२।१
जनि जननी मानहु जियँ ऊना । ५-१३।१०
जनि जल्पना करि सुजसु नासहि । ६-८९।११
जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि । ६-२२।क
जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । १-१८६।१
जनि मानहु हियँ हानि गलानी । २-१६४।६
जनि लेहु मातु कलंकु करुना । १-९६।९
जनि सनेह बस डरपसि भोरें । २-५२।८
जनु असोक अंगार । ५-१२।०
जनु आनंद समुद्र दुइ । १-३०५।०
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर । ६-१००।१८
जनु उछाह सब सहज सुहाए । १-३४४।३
जनु अँगार रासिन्ह पर । ६-५३।०
जनु कठोरपनु धरें सरीरू । २-४०।३
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो । ५-३४।१८
जनु कालदूत उलूक बोलहिं । ६-७७।१३
जनु कोपि दिनकर कर निकर । ६-९१।१८
जनु चित्र लिखित समेत लछिमन । ६-८८।१०
जनु जीव उर चारिउ अवस्था । १-३२४।२६

सौजन्य - श्री सुशील कुमार गुप्ता, १८/३, डालिम तल्ला लेन, कल-७०० ००६

जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृहँ । ७-५।१०
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल । ६-१०२।१७
जनु पाए महिपाल मनि । १-३२५।०
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि । ७-४।१२
जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु । १-३१५।९
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई । १-२२९।६
जनु रायमुनीं तमाल पर । ६-१०२।१९
जनु राहु केतु अनेक नभ पथ । ६-९१।१५
जनु सब साचे होन हित । १-३०३।०
जनु सिंघलबासिन्ह भयउ । २-२२३।०
जनु सोहत सिंगार धरि । १-२४९।०
जप जोग धर्म समूह तें नर । ३-५।१३
जप जोग बिरागा तप मख भागा । १-१८२।९
जप तप कछु न होइ तेहि काला । १-१३०।८
जप तप नियम जोग निज धर्मा । ७-४८।१
जप तप नेम जलाश्रय झारी । ३-४३।२
जप तप ब्रत जम नियम अपारा । ७-११६।१०
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । ३-४५।३
जप तप मख सम दम ब्रत दाना । ७-९४।५
जपउँ मन्त्र सिव मन्दिर जाई । ७-१०४।८
जपहिं नामु जन आरत भारी । १-२१।५
जपहिं राम धरि ध्यान उर । १-३४।०
जपहिं सदा रघुनायक नामा । १-७४।८
जपहु जाइ संकर सत नामा । १-१३७।५
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं । ७-१२।१२
जब अति भयउ बिरह उर दाहू । ६-९९।५
जब एकांत बोलाइ सब । १-१६९।०
जब काहू कै देखहिं बिपती । ७-३९।३
जब कीन्ह तेहिं पाषंड । ६-१००।१

जब जदुबंस कृष्न अवतारा । १-८७।१
जब जब अवधपुरीं रघुबीरा । ७-११३।१२
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । ६-१०९।८
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । २-६०।६
जब जब रामु अवध सुधि करहीं । २-१४०।३
जब जब राम मनुज तनु धरहीं । ७-७४।२
जब जब होइ धरम कै हानी । १-१२०।६
जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । ७-७२।४
जब ते तुम्ह सीता हरि आनी । ६-४७।७
जब ते राम कीन्ह तहँ बासा । ३-१३।१
जब ते राम प्रताप खगेसा । ७-३०।१
जब तें आइ रहे रघुनायकु । २-१३६।५
जब तें उमा सैल गृह जाईं । १-६४।७
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । २-२०।६
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे । २-२५०।७
जब तें रामु ब्याहि घर आए । २-०।१
जब तें सतीं जाइ तनु त्यागा । १-७४।७
जब तेहिं कहा देन बैदेही । ५-५६।८
जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । ६-३१।१
जब तेहिं जानेउ मरम तब । १-१२३।०
जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ । २-१६१।१
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही । ७-४७।७
जब प्रतापरबि भयउ । १-१५३।०
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । ७-५६।१०
जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीड़ा । ७-५७।३
जब रघुनाथ समर रिपु जीते । ३-२०।१
जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन । ६-७४।११
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । ५-३।६
जब लगि आवौं सीतहि देखी । ५-०।३

जब लगि उर न बसत रघुनाथा । ५-४६।२
जब लगि ग्रसत न तब लगि । ५-३६।०
जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी । २-३५।७
जब लगि भजत न राम कहुँ । ५-४६।०
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ । २-२३३।६
जब सिय कानन देखि डेराई । २-८१।३
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी । १-२३१।८
जब सुग्रीव भवन फिरि आए । ४-११।१०
जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा । ४-३।६
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । ७-११७।१३
जब हरि माया दूरि निवारी । १-१३७।१
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती । २-८४।७
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । ५-५०।८
जबहिं राम सब कहा बखानी । ३-२३।३
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा । २-२१९।६
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक । ६-२६।६
जबहिं संभु कैलासहिं आए । १-१०२।३
जबहिं त्रिबिक्रम भए खरारी । ४-२८।८
जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी । १-३०।११
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता । ४-२७।९
जमुन तीर तेहि दिन करि बासू । २-२२०।१
जमुना उतरि पार सबु भयऊ । २-३२१।३
जय अनंत जय जगदाधारा । ६-७६।४
जय इंदिरा रमन जय भूधर । ७-३३।४
जय कृपा कंद मुकुंद द्वंद । ६-१०२।१२
जय कृपाल कहि कपि चले । ५-४४।०
जय कोसलेस महेस बंदित । ६-१०८।१०
जय गजबदन षडानन माता । १-२३४।६
जय-जय अबिनासी सब घट बासी । १-१८५।५
जय-जय गिरिबरराज किसोरी । १-२३४।५
जय-जय-जय करुनानिधि । ६-८६।०
जय-जय-जय रघुबंस मनि । ६-६६।०
जय-जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । ६-१०२।१०
जय-जय सुरनायक जन सुखदायक । १-१८५।१
जय दूषनारि खरारि । ६-११२।३
जय धुनि बिमल बेद बर बानी । १-३४७।२
जय धुनि बंदी बेद धुनि । १-३२४।०
जय निर्गुन जय-जय गुन सागर । ७-३३।३
जय प्रनतपाल दयाल-प्रभु । ७-१२।४
जय पाइअ सो हरि भगति । ७-१२०।ख
जय भगवंत अनंत अनामय । ७-३३।२
जय रघुबंस बनज बन भानू । १-२८४।१
जय राम जो तृन ते कुलिस कर । ६-८०।१६
जय राम प्रबल प्रताप । ५-३४।१४
जय राम रमारमनं समनं । ७-१३।१
जय राम रावन मत्त गज । ६-७८।१७
जय राम रूप अनूप निर्गुन । ३-३१।३
जय राम सदा सुखधाम हरे । ६-११०।१
जय राम सोभा धाम । ६-११२।१
जय रावनारि कृपाल । ६-११२।६
जय सगुन निर्गुन रूप रूप । ७-१२।१
जय सच्चिदानंद जग पावन । १-४९।३
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । १-२८४।२
जय हरन धरनी भार । ६-११२।५
जयति राम जय लछिमन । ६-३९।०
ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी । २-२९३।३
जरइ नगर भा लोग बिहाला । ५-२५।२
जरउ सो संपति सदन सुखु । २-१८५।०

सौजन्य - श्री राजीव लोचन गुप्ता, पी-२, डालिम तल्ला लेन, कल-७०० ००६

जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा । ४-२८।७
जरत बिभीषनु राखेउ । ५-४९।क
जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला । ६-२८।१
जरत सकल सुर बृंद । ४-०।३
जरहिं पतंग मोह बस । ६-२९।०
जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा । २-५०।५
जरा जन्म दु:खौघ तातप्यमानं । ७-१०७।१६
जरा मरन दुख रहित तनु । १-१६४।०
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । २-१६।८
जरे पंख अति तेज अपारा । ४-२७।४
जल ज्यों दादुर मोर । २-२५१।०
जलजंतु गज पदचर तुरग खर । ६-८६।१३
जल भरि नयन कहहिं रघुराई । ३-३०।८
जल संकोच बिकल भइँ मीना । ४-१५।८
जलचर थलचर नभचर नाना । १-३।४
जलज बिलोचन स्यामल गातहि । ७-२९।३
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ । २-२०४।३
जलधि अगाध मौलि बह फेनू । १-१६६।८
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । ५-०।९
जल सीकर महि रज गनि जाहीं । ७-५१।४
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें । २-२२५।२
जलु पय सरिस बिकाइ । १-५७।ख
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें । १-३०।३
जस कौसिलाँ मोर भल ताका । २-३२।८
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । ५-१।९
जस दूलहु तसि बनी बराता । १-९३।१
जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं । १-६८।२
जस मानस जेहि बिधि भयउ । १-३५।०
जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गाई । १-१००।१

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी । १-३२५।१
जसु गावत श्रुति चारि । ३-५।क
जसु तुम्हार मानस बिमल । २-१२८।०
जसु पावन रावन नाग महा । ६-११०।४
जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी । १-८४।३
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई । ७-३८।४
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं । ६-४।७
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना । १-५३।६
जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं । १-२०५।३
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा । २-१६९।७
जहँ जहँ आवत बसे बराती । १-३३२।३
जहँ जहँ कृपासिंधु बन । ६-११९।ख
जहँ जहँ जाहिं कुअँर बर दोऊ । १-२४३।६
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । ३-६।५
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए । १-१४२।७
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । ७-१०९।१०
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । २-११२।३
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा । २-२२०।८
जहँ जाहिं मर्कट भागि । ६-१००।७
जहँ तहँ काक उलूक बक । २-२८१।०
जहँ तहँ गईं सकल तब । ५-११।०
जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा । ६-६७।४
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । १-८५।८
जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि । १-२९६।१
जहँ तहँ थकित करि कीस । ६-१००।९
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं । ७-२७।६
जहँ तहँ धावन पठइ पुनि । ७-१०।ख
जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं । ७-२९।१
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं । ७-८।५

सौजन्य - श्री रतन कुमार गुप्ता, १३४ जी. टी. रोड ([illegible]), हावड़ा

जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ [illegible]
जहँ तहँ भागि चले कपि [illegible] । ६-४४।७
जहँ तहँ कूदि बिटप उपारी । ६-९९।११
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे । १-६४।८
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । ४-१४।१२
जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा । १-३६०।४
जहँ तहँ लागे खान फल । ५-३५।०
जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । २-१९७।१
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर । ७-०।क
जहँ न होहु तहँ देहु कहि । २-१२७।०
जहँ बस संभु भवानि । ४-०।क
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी । १-२३१।२
जहँ बैठें देखहिं सब नारी । १-२२३।७
जहँ भूप रमानिवास । ७-२७।१०
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । १-३५३।२
जहँ लगि कहे पुरान श्रुति । १-११५।०
जहँ लगि जगत सनेह सगाई । २-७१।५
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । २-६५।३
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी । २-११२।३
जहँ लगि रहे अपर मुनि बृंदा । ३-११।१३
जहँ लगि साधन बेद बखानी । ७-१२५।७
जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । २-१९७।७
जहँ सिंसुपा पुनीत तर । २-१९८।०
जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । २-३१७।१

जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जा [illegible]
जाइ उतरु अब [illegible]
जाइ उपाय रचहु नृप एहू । [illegible]
जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । [illegible]
जाइ जननि पग नायउ माथा । २-८२।४
जाइ दीख रघुबंसमनि । २-३९।०
जाइ देखि आवहु नगरु । १-२१८।०
जाइ न बरनि मनोहर जोरी । [illegible]
जाइ न बरनि [illegible]
जाइ निकट [illegible]
जाइ निकट पहिचानि [illegible]
जाइ निसाचर [illegible]
जाइ पवनसुत [illegible]
जाइ पुकारे ते [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]
जाइ [illegible]

सौजन्य - श्री सुशील कुमार शुक्ला, १३४, पी. डी. [illegible]

जाइ सुराज सुदेस सुखारी । २-२३४।४
जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा । १-५९।४
जाइहि सुनत सकल संदेहा । ७-६०।८
जाउँ राम पहिं आयसु देहू । २-१७७।७
जाउँ समीप गहन पद । ७-७७।क
जा कर चित अहि गति सम भाई । ४-६।८
जा कर नाम मरत मुख आवा । ३-३०।६
जाकर नाम सुनत सुभ होई । १-११२।५
जा करि तैं दासी सो अबिनासी । १-१८३।१२
जा कहुँ करिअ सो पैहउँ । ७-४८।०
जाकी कृपा लवलेस ते । ७-१२९।११
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी । १-२०३।५
जाके बल लवलेस तें । ५-२१।०
जाके सुमिरन तें रिपु नासा । १-११६।८
जाके ह्रदयँ भगति जसि प्रीती । १-१८४।३
जाकें अस रथ होइ दृढ़ । ६-८०।क
जाकें डर अति काल डेराई । ५-२१।९
जाकें डर सुर असुर डेराहीं । ३-२७।८
जाकें नख अरु जटा बिसाला । ७-९७।८
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा । ५-२०।५
जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन । १-८५।९
जागत सब निसि भयउ बिहाना । २-१८६।२
जागबलिक जो कथा सुहाई । १-२९।१
जागबलिक बोले मुसुकाई । १-४६।२
जागबलिक मुनि परम बिबेकी । १-४४।४
जागा निसिचर देखिअ कैसा । ६-६१।७
जागे सकल लोग भएँ भोरू । २-८५।१
जागेउ अजहुँ न अवधपति । २-३७।०
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना । १-१७१।२

जागें लाभु न हानि कछु । २-९२।०
जाचक जन जाचहिं जोइ जोई । १-३५०।७
जाचक दान मान संतोषे । २-७९।४
जाचक लिए हँकारि । १-२९५।०
जाचक सकल संतोषि संकरु । १-१०१।११
जात न जाने दिवस तिन्ह । ७-१५।०
जात पवनसुत देवन्ह देखा । ५-१।१
जात मनावन रघुबरहि । २-२२२।०
जात रहेउँ कुबेर गृह । ७-६०।०
जात रहेउँ बिरंचि के धामा । ३-७।२
जात सराहत मनहिं मन । १-३६०।०
जातरूप मनि रचित अटारीं । ७-२६।३
जातहिं जासु समीप । ७-११७।घ
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई । ३-३४।५
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई । २-१३०।५
जाति हीन अघ जन्म महि । ३-३६।०
जातुधान अंगद पन देखी । ६-३४।१३
जातुधान प्रदोष बल पाई । ६-४५।४
जातुधान बरूथ बल भंजन । ७-५०।३
जातुधान सुनि रावन बचना । ५-२४।४
जाते लाग न छुधा पिपासा । १-२०८।८
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई । ३-१५।२
जातें मोहि न कहत कछुं राऊ । २-४१।८
जातें होइ चरन रति । ३-१४।०
जान आदिकबि नाम प्रतापू । १-१८।५
जान उमापति जासु सुराई । ६-२४।२
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर । ७-९९।ख
जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । ५-२१।१
जानउँ सदा भरत कुलदीपा । २-२८२।५

जानकीकरसरोजलालितौ...... । ७-श्लोक२(२)
जानकी लघु भगिनी सकल । १-३२४।११
जानत जन की पीर । १-१८४।०
जानत परम दुर्ग अति लंका । ६-३८।९
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं । ४-११।५
जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । ५-७।१
जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । ३-८।७
जानत हौं मोहि दीन्ह । २-१४६।०
जानति कृपासिंधु प्रभुताई । ७-२३।४
जानब तैं सबही कर भेदा । ७-८४।८
जान्यो मनुज करि दनुज कानन । ६-१०३।१४
जानसि मोर सुभाउ बरोरू । २-२५।४
जानहिं तीनि काल निज ग्याना । १-२९।७
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । ६-२४।५
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । ४-१७।७
जानहिं सानुज रामहि मारी । २-१८८।५
जानहु तात तरनि कुल रीती । २-३०४।१
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । ३-४१।३
जानहूँ राम कुटिल करि मोही । २-२०४।१
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । १-२१।३
जाना जरठ जटायू एहा । ३-२८।१४
जाना प्रताप ते रहे निर्भय । ६-९५।९
जाना मन क्रम बचन यह । ५-१३।०
जाना मरमु नहात प्रयागा । २-२०७।५
जाना राम प्रभाउ तब । १-२८४।०
जाना राम सतीं दुखु पावा । १-५३।३
जानि कठिन सिवचाप बिसूरति । १-२३४।१
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । १-६७।६
जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । ६-५९।४
जानि कृपाकर किंकर मोहू । १-७।३
जानि गरुड़ गुर गिरा बहोरी । २-२१२।२
जानि गौरि अनुकूल । १-२३६।०
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । २-३०५।७
जानि न जाइ निसाचर माया । ५-४२।६
जानि नृपहि आपन आधीना । १-१६७।१
जानि पानि जुग जोरि जन । १-४।०
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । १-१०६।३
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । २-११२।६
जानि लखन सम देहिं असीसा । २-११५।५
जानि सगुन मन हरष । ७-०।घ
जानि सभय सुरभूमि सुनि । १-१८६।०
जानि समय सनकादिक आए । ७-३१।३
जानि सरद रितु खंजन आए । ४-१५।६
जानि सुअवसरु सीय तब । १-२४६।०
जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई । ७-१२१।९
जानिअ तबहिं जीव जग जागा । २-९२।४
जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । ६-१५।६
जानी श्रमित सीय मन माहीं । २-११४।३
जानी सियँ बरात पुर आई । १-३०५।७
जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । ६-८३।१
जानु पानि धाए मोहि धरना । ७-७८।६
जाने ते छीजहिं कछु पापी । ७-१२१।३
जानेउँ तव बल अधम सुरारी । ६-२९।६
जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । २-२७।१
जानेउँ राम प्रताप प्रभु । ७-५२।क
जानेसु ब्रह्म अनादि अज । ७-८५।क
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । ५-३।३
जानेहु सदा मोहि निज किंकर । ७-१२४।१०

जानें बिनु न होइ परतीती । ७-८८।७
जापक जन प्रहलाद जिमि । १-२७।०
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । २-१११।८
जामवंत अंगद दुख देखी । ४-२५।११
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । ६-७३।४
जामवंत कह तुम्ह सब लायक । ४-२९।२
जामवंत कह बैद सुषेना । ६-५४।७
जामवंत कह सुनु रघुराया । ५-२९।१
जामवंत के बचन सुहाए । ५-०।१
जामवंत नीलादि सब । ७-१७।०
जामवंत बोले दोउ भाई । ६-०।५
जामवंत मैं पूँछउँ तोही । ४-२९।१०
जामवंत मन्त्री अति बूढ़ा । ६-२२।४
जामवंत सुग्रीव बिभीषन । ६-७४।१०
जायँ जिअत जग सो महि भारू । २-१८९।८
जायँ जीव बिनु देह सुहाई । २-१७७।६
जारा नगरु निमिष एक माहीं । ५-२५।६
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । ६-३५।६
जारै जोगु सुभाउ हमारा । २-१५।७
जावक जुत पद कमल सुहाए । १-३२६।२
जासु अंस उपजहिं गुनखानी । १-१४७।३
जासु कथा कुंभज रिषि गाई । १-५०।७
जासु कृपा अज सिव सनकादी । ३-५।५
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई । १-११७।३
जासु कृपा कटाच्छु सुर । ७-२४।०
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ४-१७।६
जासु कृपाँ सो दयाल । १-०।२
जासु ग्यानु रबि भव निसि नासा । २-२७६।१
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा । ६-१४।३

जासु चरन अज सिव अनुरागी । ७-१०५।४
जासु चरित अवलोकि भवानी । १-१४०।४
जासु चलत डोलति इमि धरनी । ६-२४।७
जासु दूत बल बरनि न जाई । ५-३५।३
जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई । १-१५७।२
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । ५-१९।३
जासु नाम पावक अघ तूला । २-२४७।२
जासु नाम बल संकर कासी । ४-९।४
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । १-११५।४
जासु नाम भव भेषज । ७-१२४।क
जासु नाम सुमिरत एक बारा । २-१००।३
जासु नाम त्रय ताप नसावन । ५-३८।८
जासु पतित पावन बड़ बाना । ७-१२९।७
जासु प्रबल माया बस । ६-५१।०
जासु परसु सागर खर धारा । ६-२५।३
जासु बियोग बिकल पसु ऐसें । २-९९।१
जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । ७-१।३
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा । १-२३०।३
जासु बिलोकि भगति लवलेसू । २-३०२।५
जासु भवनु सुरतरु तर होई । १-१०७।३
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । २-७०।६
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । ५-४६।८
जासु सकल मंगलमय कीती । ५-३४।५
जासु सत्यता तें जड़ माया । १-११६।८
जासु सनेह सकोच बस । २-२०९।०
जासु समीप सरित पय तीरा । २-२२४।६
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला । २-३१।८
जासु हृदय आगार बसहिं । १-१७।०
जासु त्रास डर कहुँ डर होई । १-२२४।७

जाहि दीन पर नेह करउ । १-०।४
जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु । २-१३१।०
जाहिं कहाँ ब्याकुल भए बंदर । ६-७२।७
जाहिं चले देखत बिपिन । २-१२२।०
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ । १-२२३।०
जाहु न निज पर सूझ मोहि । ६-६४।०
जाहु बेगि संकट अति भ्राता । ३-२७।३
जाहु भवन कुल कुसल बिचारी । ३-२५।१
जाहु भवन मम सुमिरिन करेहू । ७-१९।२
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । २-५६।४
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई । २-३७।२
जिअत राम बिधु बदनु निहारा । २-१५५।२
जिअन मरन फलु दसरथ पावा । २-१५५।१
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । २-५८।६
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । ५-४०।३
जिए भरे भल भूपति जाना । २-१६५।८
जिए मीन बरु बारि बिहीना । २-३२।१
जिति पवन मन गो निरस करि । ४-९।७
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । २-२८६।३
जितेहु सुरासुर तव श्रम नाहीं । ५-३६।९
जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए । १-४२।७
जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । १-३१४।१
जिन्ह कर नासा कान निपाता । ६-४।९
जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन । ३-२१।५
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता । १-२०३।२
जिन्ह कृत महामोह मद पाना । १-११४।८
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं । १-२४९।८
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी । १-२२५।४
जिन्ह के जस प्रताप के आगे । १-२९१।२
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । ५-५२।७
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । ६-२४।६
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि । ६-३१।ख
जिन्ह के यह आचरन भवानी । १-१८३।३
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । २-१२७।४
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका । १-११४।५
जिन्ह कें असि मति सहज न आई । ४-६।३
जिन्ह कें कपट दम्भ नहिं माया । २-१२९।२
जिन्ह कें रही भावना जैसी । १-२४०।४
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । ५-२४।२
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । १-२३०।७
जिन्ह जानकी राम छबि देखी । १-३०९।५
जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय । २-१२३।०
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । २-१४६।६
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा । २-२३६।३
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । १-२२८।५
जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि । ५-४२।०
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई । १-२०३।८
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । ५-२१।५
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी । १-१९९।२
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना । १-११२।२
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी । १-११२।५
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी । २-२६१।८
जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता । १-१५।८
जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी । ७-३०।३
जिन्हहिं न सपनेहुँ खेद । १-१४।ड़
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पिआरे । २-१२९।८
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । ५-०।८
जिमि अरुनोपल निकर निहारी । ६-३९।९

सौजन्य - अभिषेक इण्टरप्राइजेज, ७, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता

जिमि कपूत के उपजें । ४-१५।क
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । २-२२९।६
जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । २-१४४।१
जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला । ६-५०।८
जिमि कोटि सत खद्योत सम । ७-९१।१०
जिमि चह कुसल अकारन कोही । १-२६६।२
जिमि चातक चातकि तृषित । २-५२।०
जिमि छीरसागर इंदिरा । ६-१०८।१४
जिमि जलु निघिटत सरद प्रकासे । २-३२४।३
जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा । १-१६१।५
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । ७-७८।८
जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर । ६-९२।०
जिमि तुम्हार आगमन सुनि । १-२३८।०
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। ७-११८।५
जिमि धोखें मदपान कर । २-१४४।०
जिमि निज बल अनुरूप ते । ६-१०१।क
जिमि नूतन पट पहिरइ । ७-१०९।ग
जिमि पाखंड बाद तें । ४-१४।०
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । ३-०।६
जिमि बासव बस अमरपुर । २-१४१।०
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु । २-४९।११
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । १-२९३।२
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाईं । ७-७३।८
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा । ३-२७।१५
जिमि हरि भगति पाइ श्रम । ४-१६।०
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । २-६४।७
जीतहु मनहि सुनिअ अस । ७-२२।०
जीति को सक संग्राम । १-३४५।०
जीति को सकइ अजय रघुराई । ५-१२।३
जीति बरीं निज बाहुबल । १-१८२।ख
जीति मोह महिपालु दल । २-२३५।०
जीतेहु जे भट संजुग माहीं । ६-८९।३
जीभ कमान बचन सर नाना । २-४०।२
जीव करम बस सुख दुख भागी । २-११।४
जीव चराचर जो संसारा । १-५४।२
जीव चराचर जंतु समाना । ३-१२।७
जीव चराचर बस कै राखे । १-१९९।४
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । ५-२।२
जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी । ७-११६।७
जीवत पाउ न पाछें धरहीं । २-१९१।२
जीवत सकल जनम फल पाए । २-१६०।३
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । ७-१२४।९
जीवन लाहु लखन भल पावा । २-१८१।७
जीवनमुक्त ब्रह्मपर । ७-४२।०
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । ७-५२।२
जुग अंगुल कर बीच सब । ७-७९।क
जुग पदचर असवार प्रति । १-२९८।०
जुग बिच भगति देव धुनिधारा । १-३९।३
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका । ७-१२०।३७
जुग सम नृपहिं गए दिन तीनी । १-१७१।७
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई । ५-७।५
जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं । १-११।०
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । ६-३३।५
जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । ६-४३।१
जुबति बृंद रोवत उठि धाईं । ६-१०३।२
जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं । १-२१९।४
जुझे सकल सुभट करि करनी । १-१७४।६
जूठनि परइ अजिर महँ । ७-७५।क

सौजन्य - अभिषेक इण्टरप्राइजेज, ७, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता

जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि ।	१-३४४।५
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनीं ।	१-२८५।२
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें ।	२-१६६।६
जे अघ मातु पिता सुत मारें ।	२-१६६।५
जे अपकारी चार ।	७-९८।ख
जे असि भगति जानि परिहरहीं ।	७-११४।१
जे एहि कथहिं सनेह समेता ।	१-१४।१०
जे कछु समाचार सुनि पावहिं ।	२-१२१।२
जे कामी लोलुप जग माहीं ।	१-१२४।८
जे ग्यान मान बिमत्त तव ।	७-१२।९
जे गावहिं यह चरित सँभारे ।	१-३७।१
जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं ।	२-२।५
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी ।	२-२५८।५
जे चरन सिव अज पूज्य रज ।	७-१२।१३
जे जन कहहिं कुसल हम देखे ।	२-२२३।७
जे जनमे कलिकाल कराला ।	१-११।१
जे जल चलहिं थलहि की नाईं ।	१-२९८।७
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी ।	३-१०।१९
जे जे बर के दोष बखाने ।	१-६८।३
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं ।	७-२।७
जे तिन्ह महुँ बयबिरिधि सयाने ।	२-१०९।४
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें ।	१-३५६।८
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ।	३-४४।३
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई ।	२-१६७।६
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ।	४-६।१
जे नर नारि न अवसर आए ।	२-१२०।६
जे नहिं साधुसंग अनुरागे ।	२-१६७।५
जे नाथ करि करुना बिलोके ।	७-१२।७
जे निज भगत नाथ तव अहहीं ।	१-१४९।८
जे नृप सीय स्वयंबर आए ।	१-३११।२
जे पद जनकसुताँ उर लाए ।	५-४१।७
जे पद परसि तरी रिषिनारी ।	५-४१।६
जे पद सरोज मनोज अरि ।	१-३२३।११
जे पर दोष लखहिं सहसाखी ।	१-३।४
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं ।	१-७।१२
जे परसि मुनिबनिता लही ।	१-३२३।१३
जे परिहरि हरि हर चरन ।	२-१६७।०
जे प्राकृत कबि परम सयाने ।	१-१३।५
जे पातक उपपातक अहहीं ।	२-१६६।७
जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं ।	२-११२।१
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा ।	७-९९।५
जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभव ।	७-१२।२१
जे बिरंचि निरलेप उपाए ।	२-३१६।८
जे भरि नयन बिलोकहि रामहि ।	२-११२।५
जे मति मलिन बिषयबस कामी ।	७-७२।२
जे मतिमंद बिमोह बस ।	१-४९।०
जे महिसुर दसरथ पुर बासी ।	२-२७७।१
जे मृग राम बान के मारे ।	१-२०४।३
जे यह कथा निरंतर ।	१२६।०
जे राखे रघुबीर ।	१-८५।१०
जे राम मंत्र जपंत संत ।	३-३१।९
जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं ।	६-२।१
जे श्रद्धा संबल रहित ।	१-३८।०
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ।	७-१४।३
जे सजीव जग अचर चर ।	१-८४।०
जे सठ गुरु सन इरिषा करहीं ।	७-१०६।५
जे सर सरित राम अवगाहहिं ।	२-११२।६
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन ।	१-३२३।१२

सौजन्य - अभिषेक इण्टरप्राइजेज, ७, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता

जे सुनि सादर नर बड़ भागी । १-१५१।३
जे सुर समर धीर बलबाना । १-१८१।२
जे हर हिय नयननि कबहुँ । २-२०९।०
जे हरषहिं पर संपति देखी । २-१२९।७
जे हरि कथाँ न करहिं रति । ७-४२।०
जे हित रहे करत तेइ पीरा । ५-१४।४
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । २-१४।३
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । १-१५२।८
जेन केन बिधि दीन्हें । ७-१०३।ख
जेवँत जो बढ़्यो अनंदु सो । १-९८।११
जेवँत देहि मधुर धुनि गारी । १-३२८।६
जेहि इमि गावहिं बेद बुध । १-११८।०
जेहि कर मनु रम जाहिं सन । १-८०।०
जेहि कारन अज अगुन अरूपा । १-१४०।२
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । १-२५८।६
जेहि कै अस्तुति सादर । ७-६३।ख
जेहि खोजत जोगीस मुनि । ७-८४।क
जेहि चाहत नर नारि सब । २-५२।०
जेहि जन पर ममता अति छोहू । १-१२।६
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे । १-१७८।७
जेहि जस रघुपति करहिं जब । १-१२४।क
जेहि जानें जग जाई हेराई । १-१११।२
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । २-११२।७
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे । १-३१५।७
जेहि ते नीच बड़ाई पावा । ७-१०५।९
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिए । ६-११०।२०
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई । ७-९४।८
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । १-३३।६
जेहि दिसि बैठे नारद फूली । १-१३४।१
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे । १-१८५।१४
जेहि न होइ रन सनमुख कोई । १-१७९।८
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर । ६-१०३।१५
जेहि नामु श्रुतिकीरति सुलोचनि । १-३२४।२१
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी । १-१०४।६
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । १-१३७।७
जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ७-१०९।१५
जेहि बस जन अनुचित करहिं । १-२७७।०
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया । २-९५।७
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु । ५-५९।०
जेहि बिधि कपट कुरंग सँग । ३-२९।०
जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए । ७-६६।१
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ । ७-२३।७
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा । १-१३१।७
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई । २-२६८।२
जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही । ७-७३।२
जेहि बिधि राम नगर निज आए । ७-६७।५
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा । १-२०४।५
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । १-१८२।५
जेहि बिधि होइ राम कल्यानू । २-७।६
जेहि बिधि होइहि परम हित । १-१३२।०
जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ । २-४९।९
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । ७-६०।६
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । २-१८४।६
जेहि लखि लखनहु तें अधिक । २-२४३।०
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी । १-१८५।७
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक । ३-३१।११
जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ३-५।८
जेहि सुख लागि पुरारि । ७-८८।क

जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी । १-२६८।३
जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । १-२८।६
जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि । ७-११३।ख
जेहिं उपाय पुनि पाय । २-३१३।०
जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । ६-९८।७
जेहिं कौतुक सिवसैलु उठावा । १-२९१।८
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । ५-०।७
जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । ६-३६।१
जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमहीं । २-२३।५
जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं । १-१८२।६
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर । १-५४।०
जाहिं जोनि जन्मौं कर्म बस । ४-९।११
जेहिं ताड़का सुबाहु हति । ३-२५।०
जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । १-२८८।७
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । २-२७०।२
जेहिं देखौं अब नयन भरि । २-३२।०
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । २-७४।८
जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता । १-२१०।१३
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । ५-५३।७
जेहिं बन जाइ रहब रघुराई । २-१०३।५
जेहिं बर बाजि रामु असवारा । १-३१६।१
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा । ६-५।८
जेहिं बहु बार नचावा मोही । ७-५८।६
जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा । १-९५।८
जेहिं बारीस बँधायउ हेला । ६-८।५
जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । ६-९८।८
जेहिं बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । ६-५८।५
जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी । १-२२२।७
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । १-११।११
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ । ६-४८।क
जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही । १-२८८।४
जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई । १-३२।३
जेहिं रघुनंदन जानकिहि । २-९१।०
जेहिं राउर अति अनभल ताका । २-२०।५
जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । १-१६९।८
जेहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । १-२८०।८
जेहिं समाज बैठे मुनि जाई । १-१३३।१
जेहिं सायक मारा मैं बाली । ४-१७।५
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी । २-१८२।८
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई । १-१८५।९
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी । १-५१।३
जैसें मिटै मोर भ्रम भारी । १-४६।१
जैहउँ अवध कवन मुहु लाई । ६-६०।११
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल । ३-३१।१५
जो अति आतप ब्याकुल होई । ७-६८।३
जो अति सुभट सराहेहु रावन । ६-२२।९
जो अपराधु भगत कर करई । २-२१७।५
जो अवलोकत लोकपति । १-३३३।०
जो आनन्द सिंधु सुखरासी । १-१९६।५
जो आपन चाहै कल्यानाँ । ५-३७।५
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । ७-११३।४
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । ७-१०८।१४
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । २-१६४।८
जो एहि बरइ अमर सोइ होई । १-१३०।३
जो अचवँत नृप मातहिं तेई । २-२३०।७
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । १-१८७।२
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । ४-६।२३
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । १-१५०।२

सौजन्य - अभिषेक इण्टरप्राइजेज, ७, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता

जो कह झूँठ मसखरी जाना । ७-९७।६
जो कह रामु लखनु बैदेही । २-१४२।७
जो किछु कहब थोर सखि सोई । २-२२२।२
जो कोसल पति राजिव नैना । ३-१०।२०
जो गति होइ सो कलि हरि । ७-१०२।ख
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई । ७-५८।५
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें । १-११५।३
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । ६-२।२
जो चेतन कहँ जड़ करइ । ७-११९।ख
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई । २-४५।८
जो जानइ रघुपति कृपाँ । ७-११६।क
जो जिअत रहिहि बरात देखत । १-९४।११
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी । २-२४३।२
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई । १-५५।३
जो न तरै भव सागर । ७-४४।०
जो न भजइ रघुबीर पद । २-१९५।०
जो नहाइ चह एहिं सर भाई । १-३८।८
जो नहिं करइ राम गुन गाना । १-११२।६
जो नहिं देखा नहिं सुना । ७-८०।क
जो नाघइ सत जोजन सागर । ४-२८।१
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई । ७-११८।२
जो प्रतिपालइ तासु हित । ६-२३।०
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । १-१३।८
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा । १-१४०।३
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई । १-११०।४
जो पावँरु अपनी जड़ताई । २-१८३।६
जो फलु चहिअ सुरतरुहिं । १-९५।१०
जो बरु नाथ चतुर नृप मागा । १-१४९।४
जो बसिष्ट अनुसासन दीन्हीं । १-३५१।१
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा । १-१८८।७
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ । १-२७३।०
जो बिलोकि रीझै कुअँरि । १-१३१।०
जो भव भय भंजन । १-१८५।११
जो भुसुंडि मन मानस हंसा । १-१४५।५
जो माया सब जगहि नचावा । ७-७१।१
जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । ७-८४।४
जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । २-६।१
जौं मोरें सिव चरन सनेहू । १-५८।८
जो रन बिमुख सुना मैं काना । ६-४१।७
जो सरूप बस सिव मन माहीं । १-१४५।४
जो सहज कृपाला दीनदयाला । १-१८५।४
जो सहससीसु अहीसु महिधरु । २-१२५।११
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । १-१।६
जो सुखु भा सिय मातु । १-३१८।०
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं । १-३४२।४
जो सुनत गावत कहत समुझत । ४-२९।१५
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें । २-२९।३
जो सुनि होइ राम पद । ७-११६।ख
जो सुमिरत भयो भाँग । १-२६।०
जो सुमिरत सिधि होइ । १-०।१
जो सृजति जगु पालति हरति । २-१२५।१०
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी । २-२८१।२
जो सेवकु साहिबहि सँकोची । २-२६७।३
जो संपति सिव रावनहि । ५-४९।ख
जो संपदा नीच गृह सोहा । १-२८८।८
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । २-४७।३
जो हमार हर नासा काना । ५-५१।६
जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई । २-१६१।८

जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । ६-११६।७
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । ५-३४।७
जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि । ७-१०९।ग
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा । २-१४५।५
जोग अगिनि करि प्रगट तब । ७-११७।क
जोग ग्यान बैराग्य निधि । १-१०७।०
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा । ३-७।७
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । १-१६७।४
जोग बियोग भोग भल मंदा । २-९१।५
जोग भोग महँ राखेउ गोई । १-१६।२
जोग लगन ग्रह बार तिथि । १-१९०।०
जोग सिद्धि फल समय जिमि । २-२९।०
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं । २-९०।५
जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें । २-१४१।१
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई । ३-३५।८
जोगि बृंद दुर्लभ गति । ६-१०४।०
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा । १-२४१।४
जोगिनि गहें करबाल । ६-१००।३
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । ६-८७।७
जोगी अकंटक भए पति गति । १-८६।९
जोगी जटिल अकाम मन । १-६७।०
जोगी सूर सुतापस ग्यानी । ७-१२३।६
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव । १-३२६।२५
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू । २-२९०।२
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । ५-१।७
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ७-७०।२
जोरि पानि कह तब हनुमंता । ७-३५।५
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । १-५२।७
जोरि पानि बर मागउँ एहू । २-१९६।८
जोरि पानि बोले बचन । १-२८४।०
जोरि पानि सबहीं सिर नाए । ६-१०५।७
जोरि पंकरुह पानि सुहाए । १-३४०।३
जोसि सोसि तव चरन नमामी । १-१६०।५
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । ५-३७।४
जौं अति प्रिय तौ करिअ उपाई । १-२७७।३
जौं अनाथ हित हम पर नेहू । १-१४५।३
जौं अनीति कछु भाषौं भाई । ७-४२।६
जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ । १-१०८।१
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ । १-११।५
जौं अब करउँ सती सन प्रीती । १-५५।८
जौ अस करौं तदपि न बड़ाई । ६-३०।१
जौं अस हिसिषा करहिं नर । १-६९।०
जौं असत्य कछु कहब बनाई । २-१८।५
जौं असि मति पितु खाए कीसा । ६-२३।२
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं । १-६८।५
जौं आवइ मर्कट कटकाई । ५-३६।३
जौं ए कंद मूल फल खाहीं । २-११९।१
जौं ए मुनि पट धर जटिल । २-११९।०
जौं एहिं खल नित करब अहारू । १-१७६।७
जौं अंतहुँ अस करतबु रहेऊ । २-३४।४
जौं कछु कहौं कपटु करि तोही । २-२५।६
जौं कदाचि मोहि मारहिं । ४-७।०
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । ७-०।५
जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई । १-३८।१
जौं केवल पितु आयसु ताता । २-५५।१
जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ६-२६।२
जौं धरु बरु कुलु होइ अनूपा । १-७०।३
जौं छबि सुधा पयोनिधि होई । १-२४६।७

सौजन्य - अभिषेक इण्टरप्राइजेज, ७, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता

जौं जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा । २-१२०।४
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । ६-६०।६
जौं जनतेउँ बिनु भट भुबि भाई । १-२५१।६
जौं जियँ धरिअ बिनय पिय मोरी । २-१५३।८
जौं जियँ होति न कपट कुचाली । २-२२७।७
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी । १-६९।५
जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाईं । १-२८१।३
जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । १-८०।१
जौं तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेषी । १-८०।३
जौं तुम्हरें मन अति संदेहू । १-५१।१
जौं तुम्हरें मन छाड़ि छलु । २-७४।०
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं । १-२५२।४
जौं तेहि आजु बधें बिनु आवौं । ६-७४।१३
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी । ७-११७।१०
जौं दिन प्रति अहार कर सोई । १-१७९।५
जौं न करौं प्रभु पद सपथ । १-२५३।०
जौं न चलब हम कहे तुम्हारें । १-१६५।७
जौं न जाउँ तव होइ अकाजू । १-१६६।५
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा । २-४१।२
जौं न ब्रह्मसर मानउँ । ५-१९।०
जौं न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू । १-७०।५
जौं न राम अपमानहि डरऊँ । ६-२९।८
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू । ३-१८।१२
जौं न होत जग जनम भरत को । २-२३२।१
जौं न होति सीता सुधि पाई । ५-२८।१
जौं नर तात तदपि अति सूरा । ३-२४।८
जौं नररूप भूपसुत कोऊ । ३-२२।६
जौं नर होइ चराचर द्रोही । ५-४७।२
जौं नरेस मैं करौं रसोई । १-१६७।५
जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा । १-४८।२
जौं नहिं दंड करौं खल तोरा । ७-१०६।४
जौं नहि फिरहिं धीर दोउ भाई । २-८१।१
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे । २-४९।५
जौं नहिं होत मोह अति मोही । ७-६८।४
जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि । १-१०८।०
जौं पटतरिअ तीय सम सीया । १-२४६।४
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा । १-५८।६
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । २-९९।८
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । ६-७४।५
जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । ७-८३।७
जौं प्रसन्न प्रभु मो पर । ७-१०८।ख
जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । ७-४४।१
जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । २-२३३।१
जौं परिहास कीन्हि कछु होई । २-४९।६
जौं पाँचहि मत लागै नीका । २-४।३
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । २-५५।२
जौं पिय मानहु मोर सिखावन । ६-६।८
जौं प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे । २-१७९।२
जौं पै इन्हहि दीन्ह बनबासू । २-११८।५
जौं पै कुरुचि रही अति तोही । २-१६०।७
जौं पै कृपा जरिहिं मुनि गाता । १-२७९।५
जौ पै जियँ न होति कुटिलाई । २-१८८।४
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई । ५-४३।४
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । १-२७६।२
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा । २-८५।६
जौं पै समर सुभट तव नाथा । ६-२७।६
जौ पै सीय रामु बन जाहीं । २-७३।४
जौं फुर कहहु त नाथ निज । २-२५६।०

सौजन्य - श्री सांवरमल पोद्दार, जी.डी/३३९, सेक्टर-१, सॉल्टलेक, कल-६४

जौं बरसइ बर बारी बिचारू । १-१०।९
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा । १-३८।४
जौं बालक कह तोतरि बाता । १-७।९
जौं बिदेहु कछु करै सहाई । १-२६५।५
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू । २-१४।७
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली । २-२२।३
जौं बिधि बस अस बनै सँजोगू । १-२२१।७
जौं बिँनु अवसर अथवँ दिनेसू । २-३०४।७
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी । १-६१।४
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा । १-१६४।४
जौं बिबाहु संकर सन होई । १-६८।४
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं । ६-१०८।७
जौं मम चरन सकसि सठ टारी । ६-३३।९
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं । १-६०।६
जौं मागा पाइअ बिधि पाहीं । २-१२०।५
जौं मृगपति बध मेड्डुकन्हि । ६-२३।ग
जौं मैं राम त कुल सहित । ३-३१।०
जौं मैं सिव सेये अस जानी । १-८९।४
जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी । १-१०७।१
जौं मोरें मन बच अरु काया । ६-५८।६
जौं मोरें सिव चरन सनेहू । १-५८।८
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा । १-१४३।८
जौं यह साँची है सदा । १-२९।०
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । ५-६।५
जौं रघुबीर होति सुधि पाई । ५-१५।१
जौं रन हमहिं पचारै कोऊ । १-२८३।२
जौं राउर आयसु मैं पावौं । १-२१७।६
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं । १-२७६।३
जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू । १-२२१।२
जौं सत संकर करहिं सहाई । ६-७४।१४
जौं सपनें सिर काटै कोई । १-११७।२
जौं सब कें रह ग्यान एकरस । ७-७७।५
जौं सभीत आवा सरनाईं । ५-४३।८
जौं सहाय कर संकरु आई । २-२२९।८
जौं सिय भवन रहै कह अंबा । २-५९।७
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू । २-५५।६
जौं सुत सहित करहु सेवकाई । २-१८।८
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू । २-२५२।६
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा । २-६१।३
जौं हम निदरहिं बिप्र बदि । १-२८३।०
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं । ६-८७।९

झ

झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । ६-३३।१२
झपटहिं चरन गहि पटकि महि । ६-४०।१०
झपटहिं टरै न कपि चरन । ६-३४।क
झरना झरहिं मत्त गज गाजहि । २-२३५।५
झरना झरहिं सुधासम बारी । २-२४८।६
झलका झलकत पायन्ह कैसें । २-२०३।१
झाँझि बिरव डिंडिमीं सुहाई । १-३४३।२
झाँझि मृदंग संख सहनाई । १-२६२।१
झूठइ लेना झूठइ देना । ७-३८।७
झूठि न होइ देवरिषि बानी । १-६७।७
झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानें । १-१११।१
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । २-२७।३

ट

टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने । १-२७७।२
टूटतहीं धनु भयउ बिबाहू । १-२८५।८
टेढ़ जानि सब बंदइ काहू । १-२८०।६

ठ

ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । ६-९४।३
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । ४-२१।५
ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ । १-२५३।८

ड

डगइ न संभु सरासनु कैसें । १-२५०।२
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ । २-६२।४
डरपे गीध बचन सुनि काना । ४-२६।५
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । २-१८१।५
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । १-२४०।६
डरे सकल सुर चले पराई । ६-९५।६
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू । १-१३६।३
डारइ परसु परिध पाषाना । ६-७२।२
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तब । ३-३७।ख
डोलत धरनि सभासद खसे । ६-३१।४
डोली भूमि गिरत दसकंधर । ६-१०२।५

ढ

ढाहत भूपरूप तरु मूला । २-३३।४
ढाहे महीधर सिखर कोटिन्ह । ६-४८।११
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । ५-५८।६

त

तकि तकि तीर महीस चलावा । १।१५६।३
तग्य कृतग्य अग्याता भंजन । ७-३३।६
तजउँ तोहि तेहि त्रास । ६-३३।ख
तजउँ न तन निज इच्छा मरना । ७-९५।५
तजउँ न नारद कर उपदेसू । १-८०।६
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । २-१८९।६
तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू । २-६८।५
तजहु आस निज निज गृह जाहू । १-२५१।४
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू । ३-२८।१६
तजि जोग पावक देह हरि पद । ३-३५।१५
तजि तजि भूषन भोग सुख । २-३२२।०
तजि मद मोह कपट छल नाना । ५-४७।३
तजि मम चरन सरोज प्रिय । ३-४५।०
तजि ममता मद मान । ७-९२।ख
तजि माया सेइअ परलोका । ४-२२।५
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं । २-१६७।७
तजि सकल आस भरोस गावहिं । ५-५९।१२
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू । १-६३।७
तजे रामु जेहिं बचनहि लागी । २-१७३।४
तजौं देह करु बेगि उपाई । ५-११।२
तड़ित बिनिंदक पीत पट । १-१४७।०
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । ५-१४।६
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । ७-११८।६
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । ३-१०।१८
तदपि असंका कीन्हिहु सोई । १-११२।१
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । २-८।६
तदपि एक मैं कहउँ उपाई । १-६८।१
तदपि कठिन दसकंठ सुनु । ६-२३।घ
तदपि करब मैं काजु तुम्हारा । १-८३।१
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा । २-२१८।५
तदपि कही गुर बारहिं बारा । १-३०।१
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी । १-११३।५
तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी । १-१०४।४
तदपि जाइ तुम्ह करहु अब । १-२८६।०
तदपि तुम्हारि साधुता देखी । ७-१०८।४
तदपि देबि मैं देबि असीसा । २-१०२।८

सौजन्य - श्री अरुण गुप्त द्वारा सूरजमल मोहनलाल, ११, के.एन.मल्लिक लेन, कल-७३

तदपि धीर धरि समउ बिचारी । २-३९।४
तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । ६-७५।३
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई । १-२९५।६
तदपि बिरोध मान जहँ कोई । १-६१।६
तदपि मलिन मन बोधु न आवा । १-१०८।४
तदपि महीसुर श्राप बस । १-१७६।०
तदपि सकोच समेत कबि । १-२४७।०
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । २-१८२।४
तदपि साप सठ दैहउँ तोही । ७-१०६।३
तदपि संत मुनि बेद पुराना । १-१२०।४
तन अनुहरत सुचंदन खोरी । १-२१८।४
तन कृस मन दुखु बदन मलीने । २-७५।४
तन काम अनेक अनूप छबी । ६-११०।३
तन खीन कोउ अति पीन पावन । १-९२।९
तन छार ब्याल कपाल भूषन । १-९४।९
तन पसेउ कदली जिमि काँपी । २-१९।२
तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन । ३-५।११
तन पुलकहिं अति हरषु हियँ । १-२२४।०
तन पुलकित मुख बचन न आवा । १-२०१।५
तन बिनु परस नयन बिनु देखा । १-११७।७
तन मन बचन उमग अनुरागा । २-३१६।५
तन मन बचन मोर पनु साचा । १-२५८।४
तन सकोचु मन परम उछाहू । १-२६३।३
तनय जजातिहि जौबनु दयऊ । २-१७३।८
तनय मातु पितु तोषनिहारा । २-४०।८
तनु तजि तात जाहु मम धामा । ३-३०।१०
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी । २-३४।८
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । २-६४।४
तनु धनु धाम राम हितकारी । ७-४६।३
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ । २-१५५।०
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें । १-३२४।१२
तनु पुलकित जलु लोचन बहई । २-८९।६
तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि । २-२०५।०
तनु पोषक नारि नरा सगरे । ७-१०१।१०
तनु पोषक निंदक अघ खानी । ६-३०।४
तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं । ६-६८।६
तप अधार सब सृष्टि भवानी । १-७२।५
तपबल तें जग सृजइ बिधाता । १-१६२।२
तपबल तेहि करि आपु समाना । १-१६८।५
तपबल बिप्र सदा बरिआरा । १-१६४।३
तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता । १-७२।३
तपबल संभु करहिं संधारा । १-१६२।३
तपबल संभु करहिं संधारा । १-७२।४
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । ७-१००।२
तब अति सोच भयउ मन मोरें । ७-५५।५
तब अदृस्य भए पावक । १-१८९।०
तब अनुजहि समुझावा । ४-१८।०
तब असोक पादप तर । ३-२९।०
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा । १-८३।५
तब उठि भूप बसिष्ठ कहुँ । १-२९३।०
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम । ६-८४।११
तब अंगद उठि नाइ सिरु । ७-१७।ख
तब कछु काल मराल तनु । ७-५७।०
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । ४-१९।६
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । ६-३८।३
तब कर अस बिमोह अब नाहीं । १-१०८।७
तब कर कमल जोरि रघुराई । २-१२४।६
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी । १-३२५।८

तव कह गीध बचन धरि धीरा । ३-३०।१
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । ६-२६।७
तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । २-२१७।३
तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई । २-२३६।१
तब खगपति बिरंचि पहिं गयऊ । ७-५९।१
तब खिसिआनी राम पहिं गई । ३-१६।१९
तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु । २-१०४।०
तब गुरु भूसुर सहित गृहँ । १-३५१।०
तब चले बान कराल । ३-१९।१
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ । १-६२।५
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु । १-३२४।१५
तब जनमेउ षटवदन कुमारा । १-१०२।७
तब जानकी सासु पग लागी । २-६८।३
तब तकि राम कठिन सर मारा । ३-२६।१४
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ । ७-७४।३
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई । १-१३९।३
तब तब जाइ राम पुर रहऊँ । ७-११३।१३
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । २-६०।७
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । १-१२०।८
तब तब राम लखनहिं निहारी । १-३१०।२
तब तव बदन पैठिहउँ आई । ५-१।५
तब ते जीव भयउ संसारी । ७-११६।५
तब ते मोहि न ब्यापी माया । ७-८८।३
तब दसकंठ बिबिध बिधि । ६-७७।०
तब देखी मुद्रिका मनोहर । ५-१२।१
तब देवन्ह दुंदुभीं बजाईं । १-८८।६
तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए । २-८।१
तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । ६-९७।६
तब नारद गवने सिव पाहीं । १-१२६।५
तब नारद बोले हरषाई । ३-४१।६
तब नारद मन हरष अति । ३-४२।०
तब नारद सबही समुझावा । १-९७।१
तब नारद हरि पद सिर नाई । १-१२८।७
तब निज भुज बल राजिवनैना । ४-२९।१२
तब निषादपति उर अनुमाना । २-८८।४
तब नृप दूत निकट बैठारे । १-२९०।३
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही । २-७७।३
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए । ७-१४।ख
तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा । ६-७०।४
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । २-१०३।२
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आएं । २-१०५।७
तब प्रभु भूषन बसन मगाए । ७-१६।५
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए । १-२११।३
तब फिरि जीव बिबिध बिधि । ७-११८।क
तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा । १-१८६।९
तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा । १-२०७।८
तब बसिष्ठ मुनि समय सम । २-१५६।०
तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि । ७-११७।ख
तब बिदेह बोले कर जोरी । १-३३९।७
तब बिवाह मैं चाहउँ कीन्हा । ३-४२।।३
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे । १-८१।८
तब बोले बिधि गिरा सुहाई । ७-५९।६
तब बंदीजन जनक बोलाए । १-२४८।७
तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा । २-१०२।१
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता । ७-११६।१६
तब मधुबन भीतर सब आए । ५-२७।७
तब मन हरषि बचन कह राऊ । १-२०६।७
तब मयना हिमवंतु अनंदे । १-९८।१

तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ । १-१८१।०
तब मारीच हृदयँ अनुमाना । ३-२५।३
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । ६-६४।७
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । १-१३७।२
तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन । ७-१०।क
तब मुनि बोले भरत सन । २-२५९।०
तब मुनि सन कह कृपानिधाना । ३-५।२
तब मुनि सादर कहा बुझाई । १-२०९।९
तब मुनि हृदयँ धीर धरि । ३-१०।०
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा । १-२०५।६
तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । ७-११०।१
तब मैं कहा कृपानिधि । ७-११०।च
तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । ७-११०।१३
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । ७-७८।७
तब मैं हृदयँ बिचारा । ७-४८।०
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई । २-१०३।६
तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ । २-२७७।५
तब रघुनाथ निकट चलि आए । ३-९।१६
तब रघुपति अनुसासन पाई । ६-१०९।१
तब रघुपति उठाइ उर लावा । ४-२।६
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । ५-३३।६
तब रघुपति जानत सब कारन । ३-२६।६
तब रघुपति बोले मुसुकाई । ४-२०।७
तब रघुपति रावन के । ६-९७।०
तब रघुपति सब सखा बोलाए । ७-१५।२
तब रघुपति सबही सिरु नाई । २-१६५।४
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । ४-६।२६
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा । २-१०७।२
तब रघुबीर अनेक बिधि । २-१११।०
तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । ३-१३।१
तब रघुबीर पचारे । ६-९५।०
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे । ६-१०५।८
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । २-१२३।३
तब रामहिं बिलोकि बैदेही । १-२५६।४
तब रावन दस सूल चलावा । ६-९१।१
तब रावन निज रूप देखावा । ३-२८।१३
तब रावन मयसुता उठाई । ६-७।१
तब रावनहि हृदय महुँ । ६-९९।०
तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही । १-२०८।३
तब लगि कुसल न जीव कहुँ । ५-४६।०
तब लगि न तुलसीदास नाथ । [illegible]
तब लगि बसति जीव मन माहीं । [illegible]
तब लगि बैठ अहउँ बटमाहीं । [illegible]
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । ५-१।२
तब लगि रहहु दीन हित लागी । [illegible]
तब लगि लै आयउ हनुमाना । [illegible]
तब लगि सुखु सपनेहुँ नाहीं । [illegible]
तब लगि हृदयँ बसत खल नाना । ५-४६।१
तब लछिमन सीतहि लै आए । ३-२०।२
तब लंकेस क्रोध उर छावा । ६-९३।२
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । ३-२८।२३
तब सखीं मंगल गान करत । १-३२४।२३
तब सत बान सारथी मारेसि । ६-९०।७
तब सब लोग नहाइ नहाई । २-२७८।६
तब सिय देखि भूप अभिलाषे । १-२६५।२
तब सिवँ तीसर नयन उघारा । १-८६।६
तब सीताँ पूजी सुरसरी । ६-१२०।८
तब सुग्रीव चरन गहि नाना । ७-१८।७

सौजन्य - श्री श्रीकिशन अग्रवाल, ६-ई, बर्मन स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००७

तब सुग्रीब बिकल होइ भागा । ४-७।३
सब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । ४-१०।८
तब सुग्रीवँ बोलाए । ४-२२।०
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी । १-३००।६
तब सुमंत्र नृप बचन सुनाए । २-८२।१
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा । २-३०९।५
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । ७-११७।४
तब संकर देखेउ धरि ध्याना । १-५५।४
तब संकर प्रभु पद सिरु नावा । १-५६।१
तब हनुमान राम पहिं जाई । ६-१०७।२
तब हनुमंत उभय दिसि । ४-४।०
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । ५-७।४
तब हनुमंत कही सब । ५-६।०
तब हनुमंत नगर महुँ आए । ६-१०६।३
तब हनुमंत नाइ पद माथा । ७-१।१५
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । ५-१२।८
तब हनुमंत बोलाए दूता । ४-१८।६
तब हम जाइ सिवहि सिर नाई । १-८२।६
तब हर गन बोले मुसुकाई । १-१३४।६
तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाईं । १-१८९।१
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी । २-११७।५
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आए । १-७६।८
तबहिं होइ सब संसय भंगा । ७-६०।४
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । २-२९९।२
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । २-१२।८
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । १-२४९।७
तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप । १-२५०।०
तमसा तीर निवासु किय । २-८४।०
तमसा प्रथम दिवस करि बासू । २-१८७।८

तमेकमद्भुतं प्रभुं । ३-३।१७
त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । ७-४०।७
तरकि पवनसुत कर गहे । ६-३२।क
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई । २-९९।६
तरपन होम करहिं बिधि नाना । २-१२८।७
तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी । ७-१२३।७
तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । ५-८।१
तरुन अरुन अंबुज सम चरना । १-१०५।७
तरुन तमाल बरन तनु सोहा । २-११४।६
तरुवर बास इन्हहि बिधि दीन्हा । २-११८।८
तलफत विषम मोह मन मापा । २-१५२।६
तलफत मीन मलीन जनु । २-१५४।०
त्वदंघ्रि मूल ये नरा: । ३-३।१३
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । ५-८।५
तव उर कुमति बसी बिपरीता । ५-३९।७
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । ५-३५।९
तव जुबतिन्ह समेत सठ । ६-३०।०
तव नाम जपामि नमामि हरी । ७-१३।१८
तव प्रताप उर राखि प्रभु । ६-६०।क
तव प्रताप महिमा भगवाना । १-२५२।६
तव पद पंकज प्रीति निरंतर । ७-४८।४
तव प्रभावँ बड़वानलहि । ५-३३।०
तव प्रभु नारि बिरहँ बलहीना । ६-२२।२
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । १-१६४।८
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । ७-११४।६
तव प्रसाद मम मोह नसाना । ७-९२।८
तव प्रेरित मायाँ उपजाए । ५-५८।३
तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि । ६-१५।७
तव बल नाथ डोल नित धरनी । ६-१०३।५

तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा । ६-१०३।११
तव बिषम माया बस सुरासुर । ७-१२।५
तव भुज बल महिमा उदघाटी । १-२३८।६
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । ७-१२७।२
तव माया बस जीव जड़ । ७-१०८।ग
तव माया बस फिरउँ भुलाना । ४-१।९
तव मूरति बिधु उर बसति । ६-१२।क
तव रिपु नारि रुदन जल धारा । ६-०।३
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक । ७-९२।७
तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । ६-२६।४
तव सोनित कीं प्यास । ६-३३।ख
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा । २-३०४।८
तस मगु भयउ न राम कहँ । २-२१६।०
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही । १-१२०।५
तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी । २-१६।२
तहँ असोक उपवन जहँ रहई । ४-२७।१२
तहँ करि भोग बिसाल । १-१५१।०
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । ६-११९।४
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय । २-९६।०
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए । ६-१०।३
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब । २-१३५।७
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा । १-१७३।७
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । १-२०९।७
तहँ पुनि देखुउँ राम सुजाना । ७-८१।६
तहँ पुनि सकल देव मुनि आए । ३-४०।३
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन । १-५७।७
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । २-१२३।४
तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । ७-५६।४
तहँ बैठे महेस गन दोऊ । १-१३३।२
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला । २-१२५।६
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । ४-०।२
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । २-९०।२
तहँ होइहि तव संसय हानी । ७-५९।८
तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू । २-२०६।७
तहँहुँ सती संकरहि बिबाहीं । १-९७।६
तहाँ जलंधर रावन भयऊ । १-१२३।२
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । ५-२।६
तहाँ बेद अस कारन राखा । १-१२।२
तहाँ रहे सनकादि भवानी । ७-३१।७
तहाँ राम रघुबंस मनि । १-२९२।०
तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा । १-४३।७
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । ५-२५।७
ता कर सुख सोइ जानइ । ७-४६।०
ता कहँ यह बिसेष सुखदाई । ७-१२७।८
ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं । ५-३३।०
ताके कर रावन कहँ । ३-१७।०
ताके गुन गन कछु कहे । ६-१०१।क
ताके जुग पद कमल मनावउँ । १-१७।८
ताके बचन बान सम लागे । ६-४८।२
ताकें भय रघुबीर कृपाला । ४-५।१२
तात अनल कर सहज सुभाऊ । १-८९।७
तात अनादि सिद्ध थल एहू । २-३०९।४
तात अनुज तव नीति बिभूषन । ५-३९।२
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । ६-६१।१०
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । ५-६।२
तात करहु जनि सोचु बिसेषी । २-२११।८
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । २-४४।६
तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू । २-७६।४

सौजन्य - मे. बंसल स्टील कार्पोरेशन, १८/१, एम.डी.रोड. कलकत्ता-७

तात कुतरक करहु जनि जाएँ। २-२६३।२
तात कुसल कहु सुखनिधान की। ६-५९।१
तात कृपा करि कीजिअ सोई। २-९४।१
तात कैकइहि दोसु नहिं। २-२०६।०
तात गलानि करहु जियँ जाएँ। २-२०९।२
तात गहरु होइहि तोहि जाता। ६-५९।५
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। २-१८७।५
तात चरन गहि मागउँ। ५-४०।०
तात जनकतनया यह सोई। १-२३०।१
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। २-५४।८
तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। २-५२।१
तात जायँ जियँ करहु गलानी। २-२६२।५
तात तात बिनु बात हमारी। २-३०४।५
तात तात हा तात पुकारी। २-१५९।४
तात तीनि अति प्रबल खल। ३-३८।क
तातु तुम्हहि मैं जानउँ नीकें। २-२६३।५
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। २-२०६।२
तात तुम्हारि मातु बैदेही। २-७३।२
तात तुम्हारि मोरि परिजन की। २-३१४।१
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। २-२३०।२
तात प्रनामु तात सन कहेहू। २-१५०।६
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। २-५३।६
तात प्रेम बस जनि कदराहू। २-६९।८
तात बचन पुनि मातु हित। २-१२५।०
तात बचन मम सुनु अति आदर। ६-८।७
तात बात फुरि राम कृपाहीं। २-२५५।१
तात बात मैं सकल सँवारी। २-१५९।१
तात बिचारु करहु मन माहीं। २-१७१।२
तात भरत अस काहे न कहहू। २-१८३।५
तात भरत कह तेरहुति राऊ। २-२९१।८
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। २-३०३।८
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। २-२०४।७
तात भाँति तेहि राखब राऊ। २-१५१।६
तात मातु हा सुनिअ पुकारा। ५-२५।३
तात मोर अति पुन्य बहूता। ५-३।८
तात राउ नहिं सोचै जोगू। २-१६०।२
तात राम कहुँ नर जनि मानहु। ४-२५।१२
तात राम जस आयसु देहू। २-२९५।५
तात राम नहिं नर भूपाला। ५-३८।१
तात लात रावन मोहि मारा। ६-६३।५
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। ५-२६।५
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ। ६-१११।३
तात स्वर्ग अपबर्ग सुख। ५-४।०
तात सुनहु सादर अति प्रीती। ७-१२०।८
तात सुनहु सादर मनु लाई। १-४६।५
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। २-५७।८
तात सुनावहु मोहि निदानू। २-५३।८
तात हृदयँ धीरजु धरहु। २-१६९।०
ताते उमा न मैं समुझावा। ७-६९।७
ताते उमा मोच्छ नहिं पायो। ६-१११।६
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। ७-७३।७
ताते कीन्ह निवारन। ३-४४।०
ताते नहिं कछु तुम्हहिं दुरावउँ। ७-७३।४
ताते नास न होइ दास कर। ७-७८।३
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ। १-२१५।४
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ। ३-८।२
ताते मैं अति अलप बखाने। १-११।६
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। ७-१५।५

तातें यह तन मोहि प्रिय । ७-११४।क
तातें सुर सीसन्ह चढ़त । ७-३७।०
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी । ३-१६।१०
तातें कछुक बात अनुसारी । २-१५।८
तातें गुपुत रहउँ जग माहीं । १-१६१।१
तातें मैं तोहि बरजउँ राजा । १-१६५।१
तातें रामचरितमानस बर । १-३४।१२
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । २-२६३।८
ता पर मैं रघुबीर दोहाई । ४-२।३
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला । ६-१०।४
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । ६-१०७।८
ता सन आइ कीन्ह छलु । ३-१।०
तानि सरासन श्रवन लगि । ३-१९।ख
तानेउ चाप श्रवन लगि । ६-९१।०
तापस अंध साप सुधि आई । २-१५४।४
तापस तप फलु पाइ जिमि । २-२३६।०
तापस नृप निज सखहि निहारी । १-१७०।१
तापस नृपहि बहुत परितोषी ११७०।६
तापस बेष गात कृस । ६-११६।ख
तापस बेष जनक सिय देखी । २-२८६।१
तापस बेष जानकी देखी । २-२८५।२
तापस बेष बिसेषि उदासी । २-२८।३
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । २-२९१।५
तापस सम दम दया निधाना । १-४३।२
तामस तनु कछु साधन नाहीं । ५-६।३
तामस धर्म करहिं नर । ७-१०१।ख
तामस बहुत रजोगुन थोरा । ७-१०३।५
तारकु असुर भयउ तेहि काला । १-८१।५
तारन तरन हरन सब दूषन । ७-३४।९

तारा बिकल देखि रघुराया । ४-१०।३
तारा सहित जाइ हनुमाना । ४-१९।४
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए । ३-३९।५
तासु अनुज काटे श्रुति नासा । ३-२१।१०
तासु कनकमय सिखर सुहाए । ७-५५।८
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । ४-२७।८
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । ६-२५।४
तासु चरन सिरु नाइ करि । ७-१२५।क
तासु तनय तजि दुसह दुख । २-२६२।०
तासु तरक तियगन मन मानी । २-२२९।५
तासु तेज प्रभु बदन समाना । ६-७०।८
तासु तेज समान प्रभु आनन । ६-१०२।९
तासु दसा देखी सखिन्ह । १-२२८।०
तासु दूत कि बंध तरु आवा । ५-१९।४
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । ४-२८।४
तासु दूत मैं जा करि । ५-२१।०
तासु दूत होइ हम कुल बोरा । ६-२१।२
तासु नारि निज सचिव बोलाई । ५-३५।८
तासु प्रभाउ जान नहिं सोई । १-१४८।६
तासु प्रीति प्रभु सन कही । ७-१९।ख
तासु बचन अति सियहि सोहाने । १-२२८।७
तासु बचन भेटत मन सोचू । २-२६३।७
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । ५-१०।८
तासु बचन सुनि सब हरषानीं । १-२२२।८
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । ५-५५।३
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा । ६-५।९
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता । ६-६।४
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा । ६-७६।२
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । ६-३७।७

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना । १-१२३।१
तासु समीप गवन नृप कीन्हा । १-१५७।६
तासों तात बयरु नहिं कीजै । ३-२४।४
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै । ५-२१।१०
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई । ७-४३।३
ताहि कि संपति सगुन सुभ । ६-७८।०
ताहि देइ गति राम उदारा । ३-३३।५
ताहि दिखावइ निसिचर । ६-५१।०
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । ७-९।२
ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि । ७-९३।क
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । ५-३८।५
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । ७-१२९।८
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । ५-२।५
ताहि मोह माया नर । ७-६२।क
ताहि राखि कपीस पहिं आए । ५-४२।३
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । ५-२९।२
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । ५-१६।९
तिन्ह कर सकल मनोरथ । ४-३०।क
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । ७-३८।२
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हें । १-२९१।३
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति । १-३८।०
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु । १-३६१।०
तिन्ह कीं ओट न देखिअ बारी । ६-३।८
तिन्ह के आयुध तिल सम । ३-१९।ख
तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए । १-२२३।६
तिन्ह के हृदय कमल महुँ । ३-१६।०
तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई । १-१८६।५
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । ५-५९।२
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु । २-१२९।०
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक । २-१२७।८
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ । २-१६७।८
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा । ७-३२।५
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृंदा । १-२९९।४
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । ७-८५।७
तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका । १-१७७।८
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । १-४९।७
तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला । ७-५५।९
तिन्ह पर कुआँरि कुअँर बैठारे । १-३४९।२
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद । ३-४३।०
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । २-१३४।३
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया । ७-८६।८
तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी । ७-८५।५
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी । १-११।४
तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी । ७-८५।६
तिन्ह रामु घेरे जाइ । ६-१००।१४
तिन्ह सब छयल भए असवारा । १-२९७।७
तिन्ह सहस्त्र महुँ सब सुख खानी । ७-५३।५
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा । २-२४५।६
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई । ४-२६।१०
तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । ६-७७।१
तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी । १-१८१।३
तिन्हहि देइ बर ब्रह्म सिधाए । १-१७७।१
तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं । १-३१३।७
तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं । १-३२१।६
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । ५-१८।७
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी । २-११६।३
तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । २-१०।७
तिभुवन तीनि काल जग माहीं । २-१।४

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु । २-४९।१२
तिमि जनक रामहिं सिय समरपी । १-३२३।२२
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ । १-१२६।८
तिमि रघुनाथ निरंतर । ७-१३०।ख
तिमि रघुपति निज दास कर । ७-७४।ख
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । ७-९०।६
तिमि सुख संपति बिनहि बोलाएँ । १-२९३।३
तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई । २-२३१।१
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि । २-१४।०
तिलक समाजु साजि सबु आना । २-२६७।८
तीतिर लावक पदचर जूथा । ३-३७।७
तीनि अवस्था तीनि गुन । ७-११७।ग
तीनि काल तिभुअन मत मोरें । २-२६२।६
तीनि लोक महँ जे भटमानी । १-२९१।६
तीनिउ भाइ राम सम जानी । १-३२७।६
तीर तीर तुलसिका सुहाई । ७-२८।६
तीर तीर देवन्ह के मंदिर । ७-२८।४
तीरथ अमित कोटि सम पावन । ७-९१।२
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा । २-२२३।२
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । ६-११९।७
तीरथ बर नैमिष बिख्याता । १-१४२।२
तीर्थाटन साधन समुदाई । ७-१२५।४
तीस तीर रघुबीर पबारे । ६-९१।१०
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । ७-१५।४
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता । २-४२।३
तुम्ह आनंद करहु मृग जाए । ३-३६।६
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । ६-१०५।२
तुम्ह कहँ भरत कलंक यह । २-२०८।०
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू । २-७७।८

तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू । २-७४।७
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना । १-२९३।८
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । २-२५५।३
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ५-४६।६
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ । १-११९।२
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी । ७-५४।२
तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु । २-२०६।०
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी । १-२९३।४
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस । २-१७८।०
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । ७-३५।७
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ । ३-१२।२
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । २-१२६।८
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । १-११३।८
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा । १-८९।६
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । ७-५२।८
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुनाई । २-१०२।७
तुम्ह तजि तात सोहात गृह । २-२९०।०
तुम्ह तजि दीनदयाल निज । १-१६६।०
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ काकें । १-२९३।६
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी । २-१२८।८
तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । १-२७४।१
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई । २-१७६।५
तुम्ह तौ भरत मोर मत एहू । २-२०७।८
तुम्ह निज मोह कही खग साईं । ७-६९।५
तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर कें । २-२०७।६
तुम्ह परिपूरन काम । १-३३६।०
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । ३-२३।२
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । ५-४०।८
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । २-९६।८

सौजन्य - श्री रमाकान्त बेरीवाल, ५, क्लाईव रो, कलकत्ता-७०० ००१

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । २-२५०।१
तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । २-९५।१
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । १-१०७।७
तुम्ह पूछहु मैं कहत डेराऊँ । २-१६।३
तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ । २-४४।०
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । २-१८२।७
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । २-१४२।२
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । १-१४९।६
तुम्ह बिग्यानरूप नहिं मोहा । ७-१२२।४
तुम्ह बिनु असमंजस समन । २-२९१।०
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं । २-२९०।३
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि । २-५५।०
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु । २-६४।०
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा । २-२८९।८
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । ७-१९।३
तुम्ह माया भगवान सिव । १-८१।०
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । २-३१४।८
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी । १-१११।८
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । ६-७४।८
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । २-९४।८
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका। १-९६।८
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका । २-१८०।३
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । १-७६।४
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा । १-१६०।४
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी । ३-१६।८
तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी । ६-१०९।५
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे । २-४२।६
तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभाऊ । २-२१०।३
तुम्ह सर्बग्य तग्य तम पारा । ७-९३।१

तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी । २-२२६।८
तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक । १-९५।११
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । ५-४७।८
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा । २-२४९।६
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । ६-२२।३
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें । १-१६१।३
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा । १-२७३।४
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । २-१२४।७
तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना । १-११०।५
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । २-१२६।४
तुम्हरी कृपाँ कृपायतन । ७-५२।क
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । १-३२९।६
तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरे । १-१३।११
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया । १-१६८।४
तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । ६-२२।१
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं । १-१२८।०
तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी । ३-१२।५
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । २-७४।३
तुम्हरें अनुग्रह तात कानन । २-१५०।९
तुम्हरें चलत चलिहि सबु लोगू । २-१८७।६
तुम्हरें जान कामु अब जारा । १-८९।२
तुम्हरें बल मैं रावनु मार्‌यो । ६-११७।४
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता । ७-९०।५
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । २-१२९।५
तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं । १-१४८।४
तुम्हहि न ब्यापत काल । ७-९४।क
तुम्हहि न सोचु सोहाग बल । २-१७।०
तुम्हहि न संसय मोह न माया । ७-६९।३
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं । २-१२८।२

सौजन्य - श्री सुखबीर अग्रवाल, ९, क्लाईव रो, कलकत्ता-७०० ००१

तुम्हहि नीक लागै रघुराई । ३-१०।२५
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा । ७-१७।५
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू । २-३०४।३
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । ६-५।६
तुम्हहू दियो निज धाम राम । ६-१०३।१७
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । ६-९१।६
तुरग नचावहिं कुअँर बर । १-३०२।०
तुरग लाख रथ सहस पचीसा । १-३३२।६
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना । ६-९१।३
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना । १-१५६।२
तुरत गयउ गिरिबर कंदरा । ६-७४।२
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना । ६-१०५।५
तुरत नाइ लछिमन पद माथा । ५-५२।१
तुरत निसाचर एक पठावा । ६-१८।१
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । ६-१२०।३
तुरत बिभीषन पाछें मेला । ६-९३।२
तुरत बिमान तहाँ चलि आवा । ६-११९।१
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई । ६-६१।२
तुरत भयउँ मैं काग तब । ७-११२।क
तुरत भवन आए गिरिराई । १-१०२।१
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू । १-२३९।८
तुरत सुतीछन गुर पहिं गयऊ । ३-११।६
तुरत सो मैं प्रभु सन कही । ५-३९।०
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा । ३-६।७
तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । ६-१०७।५
तुलसिदास ऐसे प्रभुहि । ७-७४।ख
तुलसिदास सठ तेहि भजु । १-२११।०
तुलसी उठे अवलोकि कारनु । २-२२५।११
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं । २-१५०।१२
तुलसी कहूँ न राम से । १-२९।क
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की । २-२५०।१२
तुलसी जसि भवतब्यता । १-१५९।ख
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए । २-२३६।७
तुलसी दरसन लोभु । १-४८।०
तुलसी देखि सुबेषु । १-१६९।०
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु । २-२००।११
तुलसी न समरथु कोउ जो । २-२७५।१२
तुलसी नृपति भवितब्यता । २-२४।१२
तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु । २-७४।११
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि । २-३०६।०
तुलसी बिकल सब लोग सुनि । २-३००।१२
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि । १-२३५।१२
तुलसी भीतर बाहेरहुँ । १-२१।०
तुलसी रघुबर नाम के । १-२०।०
तुलसी सराहत सकल सादर । २-१७५।१२
तुलसी सुभग सनेह बन । १-३१।०
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज । १-३३५।१२
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । ७-१०७।५
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू । २-३१।७
तूल तुरीय सँवारि पुनि । ७-११७।ग
तूल न ताहि सकल मिलि । ५-४।०
तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई । ६-३४।८
तृन धरि ओट कहति बैदेही । ५-८।६
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना । ७-१२१।१७
तृषित निरखि रबि कर भव बारी । १-४२।८
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा । १-२६०।२
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी । ७-१२०।३६
तृस्नाँ केहि न कीन्ह बौराहा । ७-६९।८

सौजन्य - श्री मुरलीधर वंशरीवाला, ८, अमरतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-७

ते अब फिरत बिपिन पदचारी । २-२००।३
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव । ७-१२।२२
ते कि सदा सब दिन मिलहिं । २-६२।०
ते किमि जानहिं रघुपतिहि । ७-७३।क
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी । ७-११४।२
ते जड़ जीव निजात्मक घाती । ७-५२।६
ते तव सिर कंदुक सम नाना । ६-२६।५
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । २-५५।८
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे । ३-५।६
ते तुम्ह सकल लोकपति साईं । ३-१२।९
ते दसरथ कौसल्या रूपा । १-१८६।४
ते धन्य तुलसीदास आस । ३-४५।१२
ते नर करहिं कलप भरि । ६-२।०
ते नर पाँवर पापमय । ५-४३।०
ते नर पाँवर पापमय । ७-३९।०
ते नर प्रान समान मम । ५-४८।०
ते नर यह सर तजहिं न काऊ । १-३८।७
ते नहिं गनहिं खगेस । ७-८८।ख
ते नहिं सूर कहावहिं । ६-२९।०
ते निज निज मरजाद तजि । १-८४।०
ते पद आजु बिलोकिहउँ । ५-४२।०
ते पद पखारत भाग्यभाजनु । १-३२३।१६
ते प्रभु समाचार सब कहहीं । २-२२३।६
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि । ७-१२।१०
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता । २-१६६।८
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । २-८८।२
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । २-११०।७
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । २-१२१।५
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । २-११९।८
ते फल भच्छक कठिन कराला । ३-१२।८
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती । २-१९९।४
ते भरतहि भेंटत सनमाने । १-२८।८
ते भाजन सुख सुजस के । २-१७४।०
ते मतिमंद जे राम तजि । ६-३।०
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । ७-९९।७
ते श्रोता बकता समसीला । १-२९।६
ते सज्जन मम प्रानप्रिय । ७-३८।०
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी । ७-११४।४
ते सठ हठ बस संसय करहीं । ७-७२।९
ते सनमुख नहिं करहिं लराई । १-१८०।६
ते सब भए परम पद जोगू । २-२१६।२
ते सिय रामु साथरीं सोए । २-९०।३
ते सिर कटु तुंबरि समतूला । १-११२।४
ते सोवत कुस डासि महि । २-२००।०
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति । ७-१३०।८
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर । ७-९९।२
तेइ एहि पावन सुभग सर । १-३६।०
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर । ७-९८।क
तेइ तृन हरित चरै जब गाई । ७-११६।११
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते । १-२२५।५
तेइ रघुनंदनु लखनु सिय । २-२६२।०
तेइँ कछु कान न कीन्ह । २-५०।०
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । २-१२६।२
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं । २-४१।४
तेउ बिलोकि रघुबर भरत । २-३१७।०
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं । ७-८।९
तेउ सुनि सरन सामुहें आए । २-२९८।३
तेऊ आजु राम पदु पाई । २-२२७।३

तेज कृसानु रोष महिषेसा । १-३।५
तेज न सहि सक सो फिरि आवा । ४-२७।३
तेज पुंज रथ दिब्य अनूपा । ६-८८।३
तेन्ह कर मरन एक बिधि होई । १-१८०।७
तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । २-१५६।१
तेल बोरि पट बाँधि पुनि । ५-२४।०
तेहि अवसर आए दोउ भाई । १-२१४।४
तेहि अवसर आए लखन । २-१०।०
तेहि अवसर एक तापसु आवा । २-१०९।७
तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू । १-३२२।८
तेहि अवसर कर हरष बिषादू । २-२४४।६
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई । २-१६२।२
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । २-२४१।८
तेहि अवसर खग मृग जल मीना । २-३२०।६
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा । १-१९५।७
तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । ६-१११।१
तेहि अवसर नारद सहित । १-९७।०
तेहि अवसर फल फूल दल । २-२७८।०
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू । २-२७८।४
तेहि अवसर भाइन्ह सहित । १-३३४।०
तेहि अवसर भंजन महिभारा । १-४७।७
तेहि अवसर रघुबर रुख पाई । २-१५२।१
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । ५-८।२
तेहि अवसर सीता तहँ आई । १-२२७।२
तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ । १-१२५।१
तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि । २-१६७।०
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ । ३-१४।४
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । ६-३६।५
तेहि कारन आवत हियँ हारे । १-३७।५

तेहि कारन करुनानिधि । ६-१०८।०
तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो । ६-९३।७
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । १-६४।६
तेहि कि मोह ममता निअराई । २-२७६।२
तेहि की क्रिया जथोचित । ३-३२।०
तेहि के रचि पचि बंध बनाए । १-२८७।३
तेहि के सत सुत अरु दस भाई । १-१६९।५
तेहि कें बचन मानि बिस्वासा । १-७८।५
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा । १-१५२।४
तेहि कौतुक कर मरमु न काहूँ । ७-७८।५
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला । १-१०५।२
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन । ६-८२।१२
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । १-२६०।८
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी । १-३६०।८
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने । १-५।२
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । २-२५७।७
तेहि तें कहहिं संत श्रुति टेरें । १-१६०।३
तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । २-१०४।१
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना । १-१५९।५
तेहि न भजसि मन मंद । ४-०।ख
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ । २-२१५।०
तेहि निसि नीद परी नहिं काहू । २-३६।८
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु । ७-१०८।ग
तेहि पर राम सपथ करि आई । २-२७।७
तेहि परिहरि गुन आए । ६-३८।क
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । २-२२०।६
तेहि पाछें समीप चहुँ पासा । १-२२३।४
तेहि पिआइअ बारुनी । २-१८०।०
तेहि पुर कै सोभा कहत । १-२८९।०

तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । २-२०९।५
तेहि बधब हम निज पानि । ३-१९।५
तेहि बन निकट दसानन गयऊ । ३-२६।१
तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ । १-१८२।१२
तेहि बासर बसि प्रातहीं । २-२२४।०
तेहि बिलोकि माया सकुचाई । ७-११५।७
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । २-१९३।४
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि । २-४१।०
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु । २-२००।१०
तेहि रावन कहँ लघु कहसि । ६-२५।०
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा । १-२९।५
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । ४-३।३
तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ। १-३२६।२३
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । २-२२१।६
तेहि सेवउँ मैं कपट समेता । ७-१०४।५
तेहि हेतु मैं बृषकेतु सुत कर । १-१०२।१०
तेहिं अपने मन अस अनुमाना । ६-४८।४
तेहिं अवसर मुनि नारद । ७-५०।०
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा । १-२६७।२
तेहिं अंगद कहुँ लात उठाई । ६-१७।५
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । १-१।२
तेहिं कलिकाल बरष बहु । ७-१०४।ख
तेहिं कलिजुग कोसलपुर जाई । ७-९६।१
तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । ७-५४।४
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए । १-१७४।४
तेहिं खल पाछिल बयरु सँभारा । १-१६९।७
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ । ६-६३।६
तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई । ७-५६।१
तेहिं तपु कीन्ह संभु पति लागी । १-८२।३
तेहिं तब कहा करहु जल पाना । ४-२४।२
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ । ५-११।२
तेहिं देखे कपि सकल पराने । ६-८१।८
तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई । १-२२७।८
तेहिं न चलहिं नर मोह बस । ७-१००।ख
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा । १-२७८।४
तेहिं पद गहि बहु बिधि समुझावा । ६-९९।९
तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा । ३-२४।३
तेहिं पुर बसइ सीलनिधि राजा । १-१२९।२
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा । २-३२३।७
तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई । ३-१७।३
तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा । १-१२।९
तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर । ६-१००।१७
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला । १-१४१।८
तेहिं मम पद सादर सिरु नावा । ७-६०।१
तेहिं मागेउ भगवंत पद । १-१७७।०
तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ । १-३०१।०
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई । ४-२४।४
तेहिं सब लोक लोकपति जीते । १-८१।६
तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । १-१८४।४
तेही निसि सीता पहिं जाई । ६-९८।१
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । २-२२९।७
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं । १-१०।३
तैं निसिचर पति गर्ब बहूता । ६-२९।७
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा । ६-३९।८
तोर कलंकु मोर पछिताऊ । २-३५।५
तोर कोस गृह मोर सब । ६-११६।क
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा । १-२४४।६
तोरें धनुषु चाड़ नहिं सरई । १-२६५।४

तोरौं छत्रक दंड जिमि । १-२५३।०
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । ७-११६।१४
तोहि जिअत दसकंधर । ३-२१।०
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । ५-२६।८
तोहि निज भगत राम कर जानी । ७-११२।१२
तोहि पटकि महि सेन हति । ६-३०।०
तोहि प्रानप्रिय राम । ३-५।ख
तोहि सम हित न मोर संसारा । २-२२।२
तौ अस को जग सुभटु जेहि । १-२८३।०
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला । ६-५८।७
तौ कृसानु सब कै गति जाना । ६-१०८।८
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं । १-८०।४
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू । १-२२१।६
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी । २-८१।२
तौ परिनाम न मोरि भलाई । २-१८५।४
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख । २-६७।०
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना । १-१०७।२
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब । १-१५।०
तौ बसीठ पठवत केहि काजा । ६-२७।७
तौ भगवानु सकल उर बासी । १-२५८।५
तौ भल जतनु करब सुबिचारी । २-२८३।३
तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ । ३-२२।४
तौ मैं जाउँ कृपायतन । १-६१।०
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी । १-५८।७
तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु । १-५९।०
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं । १-२५४।८
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा । १-८९।५

थ

थकित बचन लोचन सजल । २-१५२।०
थके नयन रघुपति छबि देखें । १-२३१।५
थके नारि नर प्रेम पिआसे । २-११५।३
थर थर काँपहिं पुर नर नारी । १-२७७।५
थाती राखि न मागिहु काऊ । २-२७।२
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । २-४१।६
थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई । ३-१४।१

द

दच्छ जग्य तव भा अपमाना । ७-५५।३
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । १-६२।३
दच्छ लिए मुनि बोलि सब । १-६०।०
दच्छ सकल निज सुता बोलाईं । १-६१।२
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । ७-४८।८
दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । १-७८।१
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु । ६-१२।ख
दधि चिउरा उपहार अपारा । १-३०४।६
दधि दुर्बा रोचन फल फूला । ७-२।५
दधिमुख केहरि निसठ सठ । ५-५४।०
दनुजवनकृशानुं............ । ५-श्लोक३।२
दम दान दया नहिं जानपनी । ७-१०१।९
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । १-२६०।६
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना । २-२१९।७
दरस परस मज्जन अरु पाना । १-३४।१
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । ३-३०।४
दरस लालसा सकुच न थोरी । १-३२४।५
दरसन तृपित न आजु लगि । २-२६०।०
दरसनु देब जानि निज दासी । २-११७।३
दल फल मूल कंद बिधि नाना । २-२७८।८
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । २-२६।४
दलन मोह तम सो सप्रकासू । १-०।६

दलि दुख सजइ सकल कल्याना । २-२५४।७
द्वन्दजुद्ध देखहु सकल । ६-८९।०
द्वन्द बिपति भव फंद बिभंजय । ७-३३।८
दसकंधर मारीच बतकही । ७-६५।५
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर । ७-१२।२
दस दस बान भाल दस मारे । ६-९१।८
दस दस बिसिख उर माझ मारे । ३-१९।२५
दस दस सर सब मारेसि । ६-५०।०
दस दिसि दाह होन अति लागा । ६-१०१।९
दस दिसि रहे बान नभ छाई । ६-७२।३
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी । ६-१९।७
दसनन्हि काटि नासिका काना । ६-४।८
दस बदन सोनित स्त्रवत पुनि । ६-९३।१०
दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई । १-१७८।३
दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । ६-५५।३
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । ३-२३।६
दसमुख देखि सभा भय पाई । ६-१३।३
दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । ६-९२।१
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा । १-१८०।२
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ । ६-२९।२
दसमुख सकल कथा तेहि आगें । ३-२४।१
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । ५-१९।६
दसरथ कौसल्या सुनु ताता । ७-८०।७
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं । २-२०८।८
दसरथ तनय राम लघु भाई । २-१८०।२
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । १-१९२।३
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे । १-३३८।६
दसरथ राउ सहित सब रानी । १-१५।६
दसरथु सहित समाज बिराजे । १-३१८।५

दस सिर ताहि बीस भुजदंडा । १-१७५।२
दससीस बाहु प्रचंड खंडन । ३-३१।४
दससीस बिनासन बीस भुजा । ७-१३।३
दहन राम गुन ग्राम जिमि । १-३२।क
दहँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । ६-९५।५
दहँ दिसि लँगूर बिराज । ६-१००।१६
दाइज अमित न सकिअ कहि । १-३३३।०
दाइज दियो बहु भाँति पुनि । १-१००।९
दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई । ४-१४।१
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । ६-७९।८
दानव देव ऊँच अरु नीचू । १-५।६
दानि कहाउब अरु कृपनाई । २-३४।६
दानि सिरोमनि कृपानिधि । १-१४९।०
दामिनि दमक रह न घन माहीं । ४-१३।२
दामिनि बरन लखन सुठि नीके । २-११४।७
दारु बिचारु कि करइ कोउ । १-१०।क
दारुन अबिद्या पंच जनित । ७-१२९।१६
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा । २-५६।७
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । २-१४७।३
दासीं दास तुरग रथ नागा । १-१००।७
दासीं दास दिए बहुतेरे । १-३३८।२
दासीं दास बोलाइ बहोरी । २-७९।५
दासीं दास साजु सब लीन्हें । २-२१३।६
दाहिन काग सुखेत सुहावा । १-३०२।३
दाहिन दइउ होइ जब सबही । २-२७९।५
द्वादस अच्छर मंत्र पुनि । १-१४३।०
द्वापर कछुक बृंद बहु । ७-४०।०
द्वापर करि रघुपति पद पूजा । ७-१०२।३
द्वार भीर सेवक सचिव । २-३७।०

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । १-१२१।४
दिए दान आनंद समेता । १-२९४।८
दिए दान बिप्रन्ह बिपुल । १-३४५।०
दिए दिब्य आसन सबहि । १-३२०।०
दिए भरत लहि भूमिसुर । २-१७०।०
दिए मुख्य गन संग तब । १-६२।०
दिगपालन्ह के लोक सुहाए । १-१८१।७
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । ६-२७।५
दिन उठि बिदा अवधपति मागा । १-३३१।२
दिन अंत पुर रुख स्त्रवत थन । ७-५।११
दिन कें अंत फिरीं दोउ अनी । ६-७१।१
दिन दस करि रघुपति पद सेवा । ७-१८।८
दिन दस गएँ बालि पहिं जाई । ६-२०।८
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ । १-३५९।४
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना । १-१५४।६
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । २-११९।६
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं । ७-२६।२
दिनेश वंश मंडनं । ३-३।७
दिब्य बसन बर भूषन । ७-११।क
दिब्य बसन भूषन पहिराए । ३-४।३
दिवस जात नहिं लागिहि बारा । २-६१।२
दिसि अरु बिदिसि पंथ नहिं सूझा । ३-९।११
दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । १-२५९।१
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । ७-१२७।५
द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । ७-१२०।२४
द्विजभोजन मख होम सराधा । १-१८०।८
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । ७-९७।२
द्विबिद मयंद नील नल । ५-५४।०
दीख जाइ उपबन बर । ४-२४।०
दीख निषादनाथ भल टोलू । २-१९१।३
दीख मंथरा नगरु बनावा । २-१२।१
दीन जानि कपि किए सनाथा । ६-११७।८
दीन बचन कह बहुबिधि रानी । २-२०।३
दीन बचन गुह कह कर जोरी । २-१०३।३
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । ५-४५।२
दीन मलीन हीन मति जाती । ६-११५।४
दीन दयाल बिरिदु संभारी । ५-२६।४
दीन बंधु दयाल रघुराया । ६-१०९।३
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर । ७-१।९
दीनबन्धु सुनि बंधु के । २-३१४।०
दीनबन्धु सुंदर सुखद । २-६६।०
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । १-३२५।७
दीन्हि असीस बिप्र बहु भाँती । १-३५९।९
दीन्हि असीस मुनीस उर । २-१०६।०
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे । २-५१।२
दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । २-५७।१
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा । ६-१२०।९
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । २-६३।६
दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं । २-७१।१
दीप दीप के भूपति नाना । १-२५०।७
दीप मनोहर मनिमय नाना । १-२८८।३
दीप सिखा सम जुबति तन । ३-४६।ख
दुइ कि होइ एक समय भुआला । २-३४।५
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । १-१९८।८
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । ७-२४।८
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर । १-८४।१२
दुइ बरदान भूप सन थाती । २-२१।५
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ । १-८३।१२

दुइ सुत मरे दहेउ पुर । ६-३७।०
दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । ७-२४।६
दुख दाह दारिद दंभ दूषन । २-३२५।११
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । १-५।५
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें । १-९६।१०
दुघरी साधि चले ततकाला । २-२७१।५
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं । २-३०१।७
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी । २-३०१।६
दुर्बासना कुमुद समुदाई । ३-४३।४
दुरबासा मोहि दीन्ही सापा । ३-३२।७
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । ६-६१।११
दुराराध्य पै अहहिं महेसू । १-६९।४
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा । १-१३४।४
दुष्ट उदयँ जग आरति हेतू । ७-१२०।२०
दुसरें सूत बिकल तेहि जाना । ६-४२।८
दुहु दिसि जय जयकार करि । ६-७९।०
दुहु समाज असि रुचि मन माहीं । २-२७९।२
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । ६-१०।६
दुहुँ दिसि पर्बत करहिं प्रहारा । ६-८६।७
दुंदुभि अस्थि ताल देखराए । ४-६।१२
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा । १-३४६।५
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि । १-३२५।२२
दूत अवधपुर पठवहु जाई । १-२८६।१
दूत बचन रचना प्रिय लागी । १-२९२।६
दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । २-२७१।१
दूतन्ह कहा राम सन जाई । ३-१८।८
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ । ३-१८।१४
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता । २-२६९।६
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । ५-३५।४
दूरि ते ताहि सबन्हि सिरु नावा । ४-२४।१
दूरि फराक रुचिर सो घाटा । ७-२८।१
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । ५-४४।२
दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । ६-१०६।५
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि । १-३२५।२४
दूलहु रामु रूप गुन सागर । १-२८८।५
दूषन भे भूषन सरिस । २-२९८।०
दूषन रहित सकल गुन रासी । १-७९।३
दे भक्ति रमानिवास त्रास । ६-११२।१७
देइ पान पूजे जनक । १-३२९।०
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ । २-२६६।८
देखउँ जन्म महोत्सव जाई । ७-८९।४
देखत अति बिपरीत । १-९३।०
देखत गिरि बन बिहग मृग । २-११३।०
देखत जग्य निसाचर धावहिं । १-२०५।४
देखत तुम्हहि नगरु जेहिं जारा । ६-५५।४
देखत पुरी अखिल अघ भागा । ७-२८।८
देखत फिरइ महीप सब । १-१३४।०
देखत बन सर सैल सुहाए । २-१२३।५
देखत बालक काल समाना । ३-२१।६
देखत भरतु बिकल भए भारी । २-१६३।२
देखत भीमरूप सब पापी । १-१८२।३
देखत भृगुपति बेषु कराला । १-२६८।१
देखत रघुनायक जन सुख दायक । १-२१०।२
देखत रूपु सकल सुर मोहे । १-९९।६
देखत स्यामल धवल हलोरे । २-२०३।५
देखत हनूमान अति हरषेउ । ७-१।१
देखन कहुँ प्रभु करुना कंदा । ६-३।४
देखन नगरु भूपसुत आए । १-२१९।१

देखन बागु कुअँर दुइ आए ।१-२२८।१
देखन भालु कीस सब आए ।६-१०७।१०
देखन मिस मृग बिहग तरु ।१-२३४।०
देखन हेतु राम बैदेही ।१-३४४।४
देखरावा मातहि निज ।१-२०१।०
देखहिं कौतुक नभ सुर बृंदा ।६-५२।८
देखहिं चराचर नारिमय ।१-८४।१०
देखहिं परसपर राम करि ।३-१९।२९
देखहिं राति भयानक सपना ।२-१५६।६
देखहिं रूप महा रनधीरा ।१-२४०।५
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना ।१-२४५।८
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ।१-१४५।६
देखहु कस न जाइ सब सोभा ।२-१३।४
देखहु खोजि भुअन दस चारी ।२-११९।४
देखहु तात बसंत सुहावा ।३-३६।१०
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी ।५-२१।८
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ।६-३९।२
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा ।१-७७।७
देखहु रामहि नयन भरि ।१-२६६।०
देखहुँ कपि जननी की नाईं ।६-१०७।१२
देखा जीव नचावइ जाही ।१-२०१।४
देखा बिधि बिचारि सब लायक ।१-५९।६
देखा भरत बिसाल अति ।६-५८।०
देखा श्रमित बिभीषनु भारी ।६-९४।१
देखा स्वबस कर्म मन बानी ।१-१६१।६
देखा सैल न औषध चीन्हा ।६-५७।७
देखि अजय रिपु डरपे कीसा ।६-७५।१३
देखि अनूप एक अँवराई ।१-२१३।५
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती ।४-६।१३
देखि इंदु चकोर समुदाई ।४-१६।७
देखि उमहि तप खीन सरीरा ।१-७३।८
देखि करहिं सब दंड प्रनामा ।२-२२४।७
देखि कुअँर बर बधुन्ह समेता ।१-३२९।३
देखि कुठार बान धनु धारी ।१-२८१।१
देखि कुठारु सरासन बाना ।१-२७२।४
देखि कृपा करि सकल सराहे ।७-४९।४
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ।३-११।४
देखि कृपाल बिकल मोहि ।७-८२।क
देखि कोस मंदिर संपदा ।६-११५।६
देखि गयउ भ्राता सहित ।३-३७।ख
देखि गोसाइँहि पूँछिउँ माता ।२-४४।८
देखि चरन सिरु नायउँ ।७-११०।ख
देखि चरित अति नर अनुसारी ।७-६८।१
देखि चरित महिमा सुनत ।१-१०८।०
देखि चरित यह सो प्रभुताई ।७-८२।१
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा ।६-८६।२
देखि जनकपुरु सुर अनुरागे ।१-३१३।४
देखि तात तव सहज सुधाई ।१-१६३।३
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं ।२-१४१।८
देखि दयाल दसा सबही की ।२-३०३।४
देखि दसा रघुपति जियँ जाना ।२-६७।२
देखि दसा सुर बरिसहिं फूला ।२-२१५।८
देखि दुखारी दीन दुहु ।२-३०१।०
देखि दूरि तें कहि निज नामू ।२-१९२।५
देखि देखि आचरन तुम्हारा ।७-४७।४
देखि देखि तरुबर अनुरागे ।२-२७८।७
देखि देखि रघुबीर तन ।१-२५७।०
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी ।२-११।२

सौजन्य - चेतराम बालकिशन, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००७

देखि दोष कबहुँ न उर आने । २-२९८।४
देखि न जाहिं बिकल महतारीं । २-२६१।२
देखि नगरबासिन्ह कै रीती । ७-७।४
देखि निबिड़ तम दसहुँ दिसि । ६-४६।०
देखि निषाद बिषादबस । २-९९।०
देखि प्रताप न कपि मन संका । ५-१९।८
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना । ६-५०।७
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । २-२१६।७
देखि परम पावन तव आश्रम । ७-६३।२
देखि परम बिरहाकुल सीता । ५-१३।८
देखि परम बिरहाकुल सीता । ५-११।१२
देखि पवनसुत कटक बिहाला । ६-५०।१
देखि पवनसुत धायउ । ६-८३।०
देखि पवनसुत पति अनुकूला । ४-३।१
देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । २-१२५।१
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । १-१४९।१
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई । २-१९५।३
देखि प्रेमु बोले मुनि ग्यानी । १-८०।८
देखि बनाव सहित अगवाना । १-३८४।८
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई । १-१७८।४
देखि बिकल सुर अंगद धायो । ६-९६।८
देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायो । ६-९३।४
देखि बिभीषनु आगें आयउ । ६-६३।३
देखि बुद्धि बल निपुन कपि । ५-१७।०
देखि भरत कर सीलु सनेहू । २-१९४।४
देखि भरत कर सोचु सनेहू । २-२३३।८
देखि भरत गति अकथ अतीवा । २-२३७।५
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी । २-२०२।८
देखि भानुकुलभूषनहिं । १-२३३।०
देखि भानु जनु मन सकुचानी । १-१९४।४
देखि भालुपति निज दल घाता । ६-९७।१५
देखि भालु कपि हरषे । ६-१०९।ख
देखि मधुर सुर हरषित । ७-३।ख
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । ५-७।७
देखि मनोहर चारिउ जोरीं । १-३४८।७
देखि मनोहर सैल अनूपा । ४-१२।३
देखि महा मर्कट प्रबल । ६-१००।०
देखि महीप सकल सकुचाने । १-२६७।३
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । १-१९५।२
देखि मातु आतुर उठि धाई । ७-८७।७
देखि मातु सब हरषीं । ७-११।ख
देखि रसाल बिटप बर साखा । १-८६।१
देखि राम अति रुचिर तलावा । ३-४०।१
देखि राम छबि अति अनुरागीं । १-३३५।१
देखि राम छबि कोउ एक कहई । १-२२१।१
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । २-१२४।२
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । ३-२।७
देखि राम जननी अकुलानी । १-२००।८
देखि राम बल पौरुष भारी । ५-५९।७
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा । १-२९२।२
देखि राम मुख पंकज । ३-७।०
देखि राम मुनि आवत । ७-३२।०
देखि राम रिपुदल चलि आवा । ३-१७।१३
देखि राम रुख बानर रीछा । ६-११७।१०
देखि राम रुख लछिमन धाए । ६-१०८।५
देखि रामु सब सभा जुड़ानी । १-३५८।२
देखि रूप मुनि बिरति बिसारी । १-१३०।१
देखि रूप लोचन ललचाने । १-२३१।४

देखि लागि मधु कुटिल किराती । २-१२।४
देखि लोग सब भए सुखारे । १-२४३।३
देखि सचिवँ जय जीव कहि । २-१४८।०
देखि सनेहु लोग अनुरागे । २-१८७।३
देखि समाजु मुदित रनिवासू । १-३५३।५
देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । ७-६२।२
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । १-३५५।७
देखि सरूप सनेह सब । २-२२१।०
देखि सहाय मदन हरषाना । १-१२५।६
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं । १-९१।६
देखि सीय सोभा सुखु पावा । १-२२९।५
देखि सुअवसर प्रभु पहिं । ६-११४।क
देखि सुभट सब लायक जाने । २-१९०।८
देखि सुभाउ कहत सबु कोई । २-१६४।३
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । २-३११।७
देखि सेतु अति सुंदर रचना । ६-१।२
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं । २-९१।८
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । ४-१४।९
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । ५-११।८
देखिअहिं रूप नाम आधीना । १-२०।४
देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्ठा । ६-४०।४
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । ५-४१।५
देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर । १-९४।१२
देखी कपिन्ह निसाचर अनी । ६-८८।८
देखी जनक भीर भै भारी । १-२३९।७
देखी नयन दूत रखवारी । ६-२१।६
देखी ब्याधि असाध नृपु । २-३४।०
देखी बिपुल बिकल बैदेही । १-२६०।१
देखी माया सब बिधि गाढ़ी । १-२०१।३
देखी राम बिकल कटकाई । ६-६६।८
देखी राम सकल कपि सेना । ५-३४।२
देखी सुंदर तरुबर छाया । ३-४०।२
देखीं राम दुखित महतारीं । २-२४३।६
देखु गरुड़ निज हृदयँ बिचारी । ७-१२२।७
देखु जनक हठि बालकु एहू । १-२७९।६
देखु देवपति भरत प्रभाऊ । २-२६५।३
देखु परम पावनि पुनि बेनी । ६-११९।८
देखु बिभीषन दच्छिन आसा । ६-१२।१
देखे कपिन्ह अमित दससीसा । ६-९५।३
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । १-५४।१
देखे थल तीरथ सकल । २-३१२।०
देखे भरत लखन प्रभु आगे । २-२३८।४
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका । १-५३।७
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा । ६-२३।८
देखेउँ करि सब करम गोसाईं । ७-९५।९
देखेउँ नयन बिरंचि सिव । ५-४७।०
देखेउँ पाय सुमंगल मूला । २-२९९।३
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन । १-२१०।१०
देखेसि आवत पबि सम बाना । ६-७५।११
देखेहु कालि मोरि मनुसाई । ६-७१।७
देखें बिनु रघुनाथ पद । २-१८२।०
देखौं बेगि सो जतनु करु । ६-११६।ख
देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । १-२८३।८
देत न बनहिं निपट लघु लागीं । १-३४८।८
देत पाँवड़े अरघु सुहाए । १-३१९।८
देबि परंतु भरत रघुबर की । २-२८८।५
देत लेत मन संक न धरई । ४-६।५
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना । २-३९।७

देन कहेहु अब जनि बरु देहू । २-२९।५
देन कहेहु बरदान दुइ । २-२७।०
देब काह हम तुम्हहि गोसाँई । २-२५०।२
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी । २-२८४।२
देबि तजिअ संसउ अस जानी । १-२५६।२
देबि दंड जुग जामिनि बीती । २-२८३।८
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे । १-२३५।२
देबि मोह बस सोचिअ बादी । २-२८१।६
देव एक बिनती सुनि मोरी । २-२६७।७
देव एकु गुनु धनुष हमारें । १-२८१।७
देव गिरा सुनि सुंदर साँची । १-३११।७
देव जच्छ गंधर्ब नर । १-१८२।ख
देव दनुज किंनर नर श्रेनीं । १-४३।४
देव दनुज गन नाना जाती । ७-८०।३
देव दनुज धरि मनुज सरीरा । १-२५०।८
देव दनुज नर किंनर ब्याला । १-८४।६
देव दनुज नर नाग खग । १-७।घ
देव दनुज नर नाग मुनि । १-६८।०
देव दनुज नर सब बस मोरें । ६-७।४
देव दनुज भूपति भट नाना । १-२८३।१
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । २-३१८।२
देव देखि तव बालक दोऊ । १-२९२।५
देव देखि रघुबीर बिबाहू । १-३५२।८
देव देव अभिषेक हित । २-३०७।०
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । २-८७।६
देव न बरषहिं धरनीं बए । ७-१०१।ख
देव पितर पूजे बिधि नीकी । १-३५०।१
देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । २-५६।१
देव बचन सुनि प्रभु मुसुकाना । ६-८५।७

देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । १-३१६।७
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू । २-२६८।३
देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी । २-२९३।६
देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं । १-२८५।०
देवन्ह देखे दसरथु जाता । १-३१४।४
देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । ६-८८।१
देवन्ह समाचार सब पाए । १-८७।४
देवहूति पुनि तासु कुमारी । १-१४१।५
देस काल अवसर अनुसारी । २-४४।५
देस काल अवसर सरिस । २-३१४।०
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । १-१८४।६
देसु कोसु परिजन परिवारू । २-३१४।७
देसु कालु लखि समउ समाजू । २-३०३।६
देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । २-३२४।१
देह धरे कर यह फलु भाई । ४-२२।६
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं । १-२०७।४
देह बिसाल परम हरुआई । ५-२५।१
देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई । २-१४५।७
देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई । १-१३५।३
देहिं असीस जोहारि सब । १-३५१।०
देहिं असीस परम सुखु पाई । २-१०७।८
देहिं असीस बूझि कुसलाता । ७-६।२
देहिं परम गति सो जियँ जानी । ६-४४।५
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं । २-२४९।४
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं । २-२९।४
देहु एक बर मागउँ स्वामी । ३-४१।२
देहु कि लेहु अज़सु करि नाहीं । २-३२।६
देहु तुरत निज नारि दुराई । ३-१८।६
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही । ५-३८।६

देहु भगति रघुपति अति पावनि । ७-३४।१
देहु भूप मन हरषित । १-२०७।०
दै दोष सकल सरोष बोलहिं । २-२७५।१०
दैहिक दैविक भौतिक तापा । ७-२०।१
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र । ६-८६।१२
दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू । २-३२५।३
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा । २-३३।३
दोउ बासना रसना दसन । २-२४।११
दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर । ७-२४।७
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने । १-३००।७
दोउ समाज निमिराजु । २-२७७।०
दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । २-२६२।८
द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । ६-४५।६
द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध । ६-९३।११
दंड एक रथ देखि न परेऊ । ६-९२।४
दंड चारि महँ भा सबु पारा । २-२०१।९
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ । ७-२२।०
दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे । १-३३०।१
दंड प्रनामु करत मुनि देखे । २-२०५।४
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू । ३-१२।१६
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहादन । १-२३।७
दंपति उर धरि भगत कृपाला । १-१५१।७
दंपति धरम आचरन नीका । १-१४१।२
दंपति परम प्रेम बस । १-१९९।०
दंपति बचन परम प्रिय लागे । १-१४५।७
दंभ मान मद करहिं न काऊ । ३-४५।६
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि । ७-९७।क

ध

धन मद मत्त परम बाचाला । ७-९६।३
धनद कोटि सत सम धनवाना । ७-९१।७
धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । ६-२३।१
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । ७-१२६।८
धन्य जनमु जगतीतल तासू । २-४५।१
धन्य ते नर एहिं ध्यान जे । ६-११।०
धन्य देस सो जहँ सुरसरी । ७-१२६।५
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी । १-१११।६
धन्य धन्य तव जननी । ६-७६।०
धन्य धन्य तव मति उरगारी । ७-९४।२
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन । ६-६३।८
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । २-२०९।८
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । २-१९३।२
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । ७-५१।९
धन्य बिहग मृग काननचारी । २-१३५।२
धन्य भरत जय राम गोसाईं । २-३०८।१
धन्य भरत जीवनु जग माहीं । २-१८४।४
धन्य भूमि बन पंथ पहारा । २-१३५।१
धन्य सती पावन मति तोरी । ७-५४।७
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ । २-१२१।६
धन्य सो भूपु नीति जो करई । ७-१२६।६
धनवंत कुलीन मलीन अपी । ७-१००।७
धन्यास्ते कृतिन: पिबन्ति । ४-श्लोक२(४)
धनिक बनिक बर धनद समाना । १-२१२।३
धनुष चढ़ाइ कहा तब । ४-१९।०
धनुष जग्य सुनि रघुकुल नाथा । १-२०९।१०
धनुही सम तिपुरारि धनु । १-२७१।०
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें । १-२६।३
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता । ५-२०।७
धरनि धरहि मन धीर । १-१८४।०

सौजन्य - चेतराम बालकिशन, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । ६-७०।६
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । ६-१०२।३
धरनि धामु धनु पुर परिवारू । २-९१।७
धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई । ६-१०२।६
धरनि परेउँ मुख आव न बाता । ७-८२।२
धरनिसुताँ धीरजु धरेउ । २-२८६।०
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना । ७-३०।७
धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना । ३-१५।१
धरम धुरीन धरम गति जानी । २-५२।५
धरम धुरीन धीर नय नागर । २-३०३।५
धरम धुरीन भानुकुल भानू । २-२५३।२
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । १-१८७।८
धरम धुरंधर धीर धरि । २-३०।०
धरम धुरंधर नीति निधाना । १-१५२।३
धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी । ३-५।४
धरम नीति उपदेसिअ ताही । २-७१।७
धर्म परायन सोइ कुल त्राता । ७-१२६।२
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई । ३-४।१४
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू । २-२८७।४
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । ३-१०।१६
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा । ३-४३।५
धरम सनेह उभयँ मति घेरी । २-५४।३
धर्मसील कोटिक महँ कोई । ७-५३।२
धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी । ७-५३।६
धर्मसीलता तव जग जागी । ६-२१।८
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं । १-२०७।०
धर्म सेतु करुनायतन । २-२४८।०
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । १-२१७।८
धर्म हीन प्रभु पद बिमुख । ६-३८।क
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । ४-८।५
धरमु न दूसर सत्य समाना । २-९४।५
धरहु कपिहि धरि मारहु । ६-३२।ख
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । १-१८८।४
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा । ३-२८।११
धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट । ६-४०।९
धरि केस नारि निकारि । ६-८४।१०
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं । ६-८०।१३
धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू । २-१५४।१
धरि धीरजु एक आलि सयानी । १-२३३।१
धरि धीरजु करि भरत बड़ाई । २-२७१।३
धरि धीरजु तब कहइ निषादू । २-१४२।१
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने । १-९४।५
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । २-१९४।६
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । २-५३।५
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । ३-१।२
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला । १-१३४।३
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । ४-०।४
धरि बड़ि धीर रामु उर आने । १-२३३।८
धरि मुनितनु जनु बीर रसु । १-२६८।०
धरि रूप पावक पानि गहि श्री । ६-१०८।१३
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । ६-५४।८
धरी न काहूँ धीर । १-८५।०
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना । ६-७२।४
धरु मारु काटु पछारु घोर । ६-८०।१५
धरु मारु बोलहिं घोर । ६-१००।५
धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी । १-१९७।१
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन । ७-१२।१५
ध्वज पताक तोरन कलस । २-६।०

सौजन्य - चेतराम बालकिशन, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००७

ध्वज पताक तोरन पुर छावा । १-११३।१
ध्वज पताक पट चामर चारू । १-२९५।७
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । ७-२६।७
धवल धाम मनि पुरट पट । १-२१३।०
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे । २-२०५।५
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा । २-३७।४
धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । ७-४।३
धाइ पूँछिहहिं मोहि जब । २-१४५।०
धाए जो मर्कट बिकट भालु । ६-९९।१२
धाए धाम काम सब त्यागी । १-२११।२
धाए निसिचर निकर बरूथा । ३-१७।४
धाए बिसाल कराल मर्कट । ६-७८।१४
धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । ६-८१।१
धावा क्रोधवंत खग कैसें । ३-२८।१०
धावा बाम बाहु गिरि धारी । ६-६९।१०
धावा बालि देखि सो भागा । ४-५।४
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । ६-४०।५
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । २-१५६।२
धावहु मर्कट बिकट बरूथा । ६-०।९
धिग कैकई अमंगल मूला । २-२००।४
धिग जीवन देव सरीर हरे । ६-११०।१८
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । ६-८३।४
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी । २-१६३।८
धीरज धर्म मित्र अरु नारी । ३-४।७
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी । २-१४९।८
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा । २-१६०।६
धीरजु धरिअ त पाइअ पारू । २-१५३।७
धीरजु धरिअ नरेस । २-२७६।०
धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । २-७३।१
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा । १-२१०।५
धुआँ देखि खरदूषन केरा । ३-२०।५
धुनि अवरेब़ कबित गुन जाती । १-३६।८
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी । २-३२४।५
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ । १-२५।५
धूप दीप नैबेद बेद बिधि । १-३४९।३
धूप धूम नभु मेचक भयऊ । १-३४६।१
धूम अनल संभव सुनु भाई । ७-१०५।१०
धूम कुसंगति कारिख होई । १-६।११
धूमउ तजइ सहज करुआई । १-९।९
धूमकेतु सत कोटि सम । ७-९१।ख
धूरि पूरि नभ मंडल रहा । ३-१७।१०
धूरि मेरुसम जनक जम । १-१७५।०
धूसर धूरि भरें तनु आए । १-२०२।९
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । ७-२९।४
धृत त्रोन बर सर चाप । ६-११२।२
धेनुधूरि बेला बिमल । १-३१२।०
धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी । १-१८३।७
धोए जनक अवधपति चरना । १-३२७।४

न

न जानामि योगं जपं नैव पूजां । ७-१०७।१५
न त एहि काटि कुठार कठोरें । १-२७४।८
न त कन्या बरु रहउ कुआरी । १-७०।४
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं । ७-१०७।१४
न तु कामी बिषयाबस । ७-११५।क
न यावद् उमानाथ पादारविंदं । ७-१०७।१३
नख आयुध गिरि पादपधारी । ५-३४।९
नख दसन सैल महाद्रुमायुध । ६-७८।१६
नख निर्गता मुनि बंदिता । ७-१२।१४

नख सिख देखि राम कै सोभा । १-२३३।४
नख सिख सुंदर बंधु दोउ । १-२१९।०
नगर नारि नर गुर सिख मानी । २-३२१।८
नगर नारि नर निपट दुखारी । २-१५७।८
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । २-१४६।८
नगर नारि नर रूप निधाना । १-३१३।६
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ । ७-४।क
नगर निकट बरात सुनि आई । १-९४।१
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । ५-१०।६
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । २-४५।६
नगर लोग सब ब्याकुल सोचा । ६-७६।८
नगर लोग सब सजि सजि जाना । २-१८६।७
नगरु सफल बनु गहबर भारी । २-८३।२
नट इव कपट चरित कर नाना । ६-७२।१२
नट कृत बिकट कपट खगराया । ७-१०३।८
नट मरकट इव सबहि नचावत । ४-६।२४
नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । २-२६८।१
नतरु निपट अवलंब बिहीना । २-९५।८
नतरु प्रजा परिजन परिवारू । २-३०४।६
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ । २-२६८।०
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी । २-७४।२
नतरु लखन सिय राम बियोगा । २-३१६।२
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका । १-४०।२
नदी पनच सर सम दम दाना । २-१३२।३
नदी पुनीत अमित महिमा अति । १-३४।२
नदी पुनीत पुरान बखानी । २-१३१।५
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । १-३८।१३
नदीं उमगि अंबुधि कहुँ धाईं । १-८४।२
नभ अरु नगर कोलाहल होई । १-३१८।७

नभ उड़त बहु भुज मुंड । ३-१९।१२
नभ चढ़ि बरष बिपुल अंगारा । ६-५१।१
नभ दुंदुभीं बाजहिं बिपुल । ७-११।९
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे । २-२२५।१०
नभ नगर गान निसान जय धुनि । १-३२३।१०
नभ पर जाइ बिभीषन तबही । ६-११६।६
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि । २-२८३।६
नमामि इंदिरा पतिं । ३-३।११
नमामि भक्त वत्सलं । ३-३।१
नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । ७-१०७।१
नयन कमल कल कुंडल काना । १-३२६।८
नयन दोष जा कहँ जब होई । ७-७२।३
नयन नीर पुलकित अति गाता । ५-४४।६
नयन नीर मन अति हरषाना । ७-९२।२
नयन नीरु हटि मंगल जानी । १-३१८।१
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । २-५८।२
नयन विषय मो कहुँ भयउ । १-३४१।०
नयन मूदि पुनि देखहिं बीरा । ४-२४।६
नयन सजल तन थर थर काँपी । २-५३।४
नयन स्त्रवहिं जलु निज हित लागी । ५-३०।८
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना । २-९८।४
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा । १-११२।३
नयनवंत रघुबरहि बिलोकी । २-१३८।१
नर अरु नारि अधर्म रत । ७-९६।ख
नर अरु नारि राम गुन गानहिं । ७-२५।८
नर अहार रजनीचर चरहीं । २-६२।१
नर कें कर आपन बध बाँची । ६-२८।२
नर गंधर्ब भूत बेताला । ७-८०।२
नर तन सम नहिं कवनिउ देही । ७-१२०।९

सौजन्य - जमिरा टी कं. लि., ५/६, फैंसी लेन, कलकत्ता-७०० ००१

नर तनु धरेहु संत सुर काजा । २-१२६।६
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं । ७-४३।२
नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो । ७-४३।७
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या । ५-२।१७
नर नारायन सरिस सुभ्राता । १-१९।५
नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि । २-२५०।११
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं । ७-१०१।३
नर बानरहि संग कहु कैसें । ५-१२।११
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत । ३-३५।१६
नर सरीर धरि जे पर पीरा । ७-४०।३
नर सहस्त्र महँ सुनहु पुरारी । ७-५३।१
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी । ७-१२०।१०
नरबर धीर धरम धुर धारी । २-७१।२
नव अंबुज अंबक छबि नीकी । १-१४६।३
नव अंबुधर बर गात अंबर । ७-११।१४
नव गयंदु रघुबीर मनु । २-५१।०
नव ग्रह निकर अनीक बनाई । ७-२६।५
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । ५-१४।२
नव तुलसिका बृंद तहँ । ५-५।०
नव नील नीरज निकट मानहुँ । ६-१०८।१६
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । ३-३९।७
नव पल्लव फल सुमन सुहाए । १-२२६।५
नव पल्लव भए बिटप अनेका । ४-१४।२
नव बिधु बिमल तात जसु तोरा । २-२०८।१
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । ३-३५।६
नव रस जप तप जोग बिरागा । १-३६।१०
नव रसाल बन बिहरनसीला । २-६२।७
नव राजीव अरुन मृदु चरना । ७-७५।६
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । ३-३४।७
नवनि नीच कै अति दुखदाई । ३-२३।७
नवम सरल सब सन छलहीना । ३-३५।५
नवसप्त साजें सुंदरीं सब । १-३२१।१०
नस्वर रूप जगत सब । ६-७७।०
न्हाइ रहे जलपानु करि । २-१५०।०
नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । २-१९४।१
नहिं अनीति नहि कछु प्रभुताई । ७-४२।४
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । २-२७।५
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू । १-२६।७
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । १-५९।८
नहिं चितव जब करि कोप कपि । ६-८४।९
नहिं तव आदि मध्य अवसाना । १-२३४।७
नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु । २-१४२।०
नहिं तोष बिचार न सीतलता । ७-१०१।६
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । ७-२०।६
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । ७-१२०।१३
नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया । २-२१५।५
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । २-२२१।४
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू । २-६७।४
नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । २-९८।२
नहिं मान पुरान न बेदहि जो । ७-१००।८
नहिं राग न लोभ न मान मदा । ७-१३।१३
नहिं सतसंग जोग जप जागा । ३-९।७
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू । १-२७३।७
नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । १-१८२।८
नाइ चरन सिर मुनि चले । १-८१।०
नाइ चरन सिरु आयसु पाई । १-१२६।२
नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । ४-२०।१
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । ६-११५।२

नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । ५-५६।९
नाइ राम पद कमल सिरु । १-२५२।०
नाइ सीस करि बिनय बहूता । ५-२३।७
नाइ सीसु पद अति अनुरागा । २-७६।२
नाऊ बारी भाट नट । १-३१९।०
नाक कान काटे जियँ जानी । ६-६५।९
नाक कान बिनु भइ बिकरारा । ३-१७।१
नाग असुर सुर नर मुनि जेते । ३-१८।३
नागर नट चितवहिं चकित । १-३०२।०
नाघहिं खग अनेक बारीसा । ६-२७।२
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । ५-२७।२
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । ५-३२।८
नाचहिं अपछरा बृंद परमानंद । ७-११।१०
नाचहिं गावहिं गीत । १-९३।०
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं । १-२६४।३
नाचि कूदि करि लोग रिझाई । ६-२३।२
नाथ आजु मैं काह न पावा । २-१०१।५
नाथ इहाँ कछु कारन आना । ७-७७।३
नाथ उमा मम प्रान सम । १-१०१।०
नाथ एक आवा कपि भारी । ५-१७।३
नाथ एक बर मागउँ । ७-४९।०
नाथ एक संसउ बड़ मोरें । १-४४।७
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । ५-५४।४
नाथ करइ रावन एक जागा । ६-८४।२
नाथ करहु बालक पर छोहू । १-२७६।१
नाथ कहहु केहि कारन । ७-५४।०
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । २-९३।६
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । ५-२८।५
नाथ कुसल पद पंकज देखें । २-८७।५

नाथ कृतारथ भयउँ मैं । ७-६३।क
नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा । १-११९।३
नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें । ५-५३।१
नाथ कृपाँ मम गत संदेहा । ७-१२८।८
नाथ कोसलाधीस कुमारा । ३-११।७
नाथ जथामति भाषेउँ । ७-१२३।ख
नाथ जबहिं कोसलपुरीं । ६-११५।०
नाथ जानि अस आयसु होऊ । १-२५२।७
नाथ जीव तव मायाँ मोहा । ४-२।२
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । ५-३०।२
नाथ तवानन ससि स्त्रवत । ७-५२।ख
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । ५-४४।७
नाथ दसानन यह गति कीन्ही । ३-३०।२
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह । २-७१।०
नाथ दीनदयाल रघुराई । ६-६।१
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । १-१४८।२
नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला । २-२३६।२
नाथ दैव कर कवन भरोसा । ५-५०।३
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू । १-११९।७
नाथ न मोहि संदेह कछु । ७-३६।०
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । ६-७९।३
नाथ नाम तव सेतु । ६-०।४
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई । २-२९९।७
नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । ५-५९।१
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । ५-२९।५
नाथ बयरु कीजे ताही सों । ६-५।५
नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई । ४-५।१
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । ४-१९।७
नाथ भगति अति सुखदायनी । ५-३३।१

सौजन्य - जमिरा टी कं. लि., ५/६, फैंसी लेन, कलकत्ता-७०० ००१

नाथ भजहु रघुनाथहि । ६-७।०
नाथ भयउ सुखु साथ गए को । २-३०६।६
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । ७-३५।६
नाथ भरतु पुरजन महतारी । २-२८९।४
नाथ भूधराकार सरीरा । ६-६४।२
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । ७-११४।१४
नाथ मोहि निज सेवक जानी । ७-१२०।२
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू । २-३।२
नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । १-२१७।५
नाथ लोग सब निपट दुखारी । २-२४७।५
नाथ सकल साधन मैं हीना । ३-७।४
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । २-६४।८
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । १-३५९।६
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई । २-२५८।४
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू । २-१५३।५
नाथ साथ मुनिनाथ के । २-२४२।०
नाथ साथ रहि पंथु देखाई । २-१०३।४
नाथ साथ साँथरी सुहाई । २-१३९।७
नाथ साथ सुरसदन सम । २-६५।०
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । ७-९३।५
नाथ सुहृद सुठि सरल चित । २-२२७।०
नाथ सैल पर कपिपति रहई । ४-३।२
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । ५-३०।६
नाथ संभुधनु भंजनिहारा । १-२७०।१
नान्या स्पृहा रघुपते । ५-श्लोक२(०)
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि । ५-२।११
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । ७-१२५।५
नाना खग बालकन्हि जिआए । ७-२७।४
नाना जनम कर्म पुनि नाना । ७-९५।७
नाना जाति न जाहिं बखाने । १-२९७।६
नाना जिनस देखि सब कीसा । ६-११७।२
नाना तरु फल फूल सुहाए । ५-२।७
नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् । १-श्लोक७(१)
नामा बरन अतुल बल । ५-३४।०
नाना बरन भालु कपि धारी । ५-५३।६
नाना बरन सकल दिसि । ४-२१।०
नाना बापीं कूप तड़ागा । १-१५४।७
नाना बाहन नानाकारा । ३-१७।५
नाना बाहन नाना बेषा । १-९२।६
नाना बिधि करि कथा सुहाई । ३-२७।११
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई । ६-७।५
नाना बिधि प्रहार कर सेषा । ६-५३।५
नाना बिधि बिनती करि । ३-४१।०
नाना बिधि बिलाप कर तारा । ४-१०।२
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही । ६-१२०।४
नाना भाँति निछावरि करहीं । ७-६।५
नाना भाँति पिसाच पिसाची । ६-५१।२
नाना भाँति बिनय तेहिं कीन्ही । ४-२४।८
नाना भाँति मनहि समुझावा । ७-५८।१
नाना भाँति राम अवतारा । १-३२।६
नाना भाँति सुमंगल साजे । ७-८।४
नानाकार सिलीमुख धाए । ६-९०।२
नानायुध सर चाप धर । ६-४०।०
नाभि मनोहर लेति जनु । १-१४७।०
नाभिकुंड पियूष बस याकें । ६-१०१।५
नाम उधारे अमित खल । १-२४।०
नाम एकतनु हेतु तेहि । १-१६२।०
नाम कामतरु काल कराला । १-२६।५

सौजन्य - आर.के. मिनरल इण्डस्ट्रीज प्रा.लि., २३-ए, एन.एस.रोड, कल- १

नाम गरीब अनेक नेवाजे । १-२४।२
नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । १-२१।१
नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । १-१६३।१
नाम निरूपन नाम जतन तें । १-२२।८
नाम प्रतापभानु अवनीसा । १-१५८।५
नाम प्रभाउ जान सिव नीको । १-१८।८
नाम प्रसाद संभु अबिनासी । १-२५।१
नाम पाहरू दिवस निसि । ५-३०।०
नाम बिभीषन जेहि जग जाना । १-१७५।५
नाम राम लछिमन दोउ भाई । ४-१।२
नाम रूप गति अकथ कहानी । १-२०।७
नाम रूप दुइ ईस उपाधी । १-२०।२
नाम लंकिनी एक निसिचरी । ५-३।२
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद । १-२२।०
नाम हमार एकतनु भाई । १-१६१।७
नाम हमार भिखारि अब । १-१६०।०
नामकरन कर अवसरु जानी । १-१९६।२
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । १-२५।४
नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा । १-२८१।२
नामु मंथरा मंदमति । २-१२।०
नामु राम को कलपतरु । १-२६।०
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं । १-२४।४
नामु सप्रेम जपत अनयासा । १-२३।२
नारद कर उपदेसु सुनि । १-७८।०
नारद कर मैं काह बिगारा । १-९६।१
नारद कहा सत्य सोइ जाना । १-७७।६
नारद कहेउ सहित अभिमाना । १-१२८।३
नारद जानेउ नाम प्रतापू । १-२५।३
नारद देखा बिकल जयंता । ३-१।९

नारद बचन न मैं परिहरऊँ । १-७९।७
नारद बचन सगर्भ सहेतू । १-७१।३
नारद बचन सत्य सब करिहउँ । १-१८६।६
नारद बचन सदा सुचि साचा । १-२३५।८
नारद बोले बचन तब । ३-४१।०
नारद भव बिरंचि सनकादी । ७-६९।६
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । ६-६२।६
नारद श्राप दीन्ह एक बारा । १-१२३।५
नारद समाचार सब पाए । १-६५।५
नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । १-७८।३
नारदहूँ यह भेदु न जाना । १-६७।२
नारदादि सनकादि मुनीसा । ७-२६।१
नारि कुमुदिनीं अवध सर । ७-९।क
नारि नयन सर जाहि न लागा । ४-२०।४
नारि पाइ फिरि जाहिं जौं । ६-९।०
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । २-३१८।८
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने । १-९८।२
नारि बचन सुनि बिसिख समाना । ६-३७।१
नारि बिबस नर सकल गोसाईं । ७-९८।१
नारि बिरहँ दुखु लहेउ अपारा । १-४५।८
नारि बिलोकहिं हरषि हियँ । १-२४१।०
नारि बृंद कर पीटहिं छाती । ६-४३।४
नारिबृंद सुर जेवँत जानी । १-९८।८
नारि बेष जे सुर बर बामा । १-३२१।५
नारि मुई गृह संपति नासी । ७-९९।६
नारि सनेह बिकल बस होहीं । २-१२०।१
नारि सहित मुनि पद सिरु नावा । १-६५।७
नारि सहित सब खग मृग बृंदा । ३-३६।४
नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । ६-१५।२

सौजन्य - श्री मंगल देसाई, ९, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता - ७००००१

नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । २-१३९।३
नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । ६-२९।५
नाहिं त कोसल नाथ कें । २-२७०।०
नाहिं त चाहत चलन अब । २-१४९।०
नाहिं त मोर मरनु परिनामा । २-८१।७
नाहिं त सन्मुख समर महि । ६-९।०
नाहिं त सपदि मानु मम बानी । ५-९।२
नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि । १-२२२।०
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू । २-२१०।५
नाहिन तात उरिन मैं तोही । ७-१।१४
नाहिन रामु राज के भूखे । २-४९।३
निकट काल जेहि आवत साईं । ६-३६।८
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । ४-१८।२
निकसि बसिष्ट द्वार भए ठाढ़े । २-७९।१
निकसे जनु जुग बिमल बिधु । १-२३२।०
निकाम श्याम सुंदरं । ३-३।३
निगम नीति कुल रीति करि । १-३४९।०
निगम नेति सिव अंत न पावा । १-२०२।८
निगम नेति सिव ध्यान न पावा । ३-२६।११
निगमागम पुरान मत एहा । ७-६८।६
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । १-५७।४
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । ७-८८।५
निज आश्रम प्रभु आनि करि । ३-१०।०
निज इच्छा निर्मित तनु । १-१९२।०
निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ । ४-२६।०
निज उर माल बसन मनि । ७-१८।ख
निज कबित्त केहि लाग न नीका । १-७।११
निज कर कमल परसि मम सीसा । ७-११२।१५
निज कर गृह परिचरजा करई । ७-२३।६
निज कर डासि नागरिपु छाला । १-१०५।५
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । २-४६।३
निज कर मुदित रायँ अरु रानी । १-३२३।६
निज करतूति न समुझिअ सपनें । २-२९८।६
निज कुल इष्टदेव भगवाना । १-२००।२
निज कृत कर्म जनित फल पायउँ । ३-१।१३
निज गिरा पावनि करन कारन । १-३६०।९
निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं । ३-४५।१
निज गुन सहित राम गुन गाथा । २-२२३।१
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । १-२५७।७
निज जन जानि ताहि अपनावा । ५-४९।२
निज जन जानि राम मोहि । ७-१२३।क
निज जननी के एक कुमारा । ६-६०।१४
निज दल बिकल देखि कटि । ६-८२।०
निज दल बिकल सुना हनुमाना । ६-४२।३
निज दल बिचल सुनी तेहिं काना । ६-४१।६
निज दल बिचलत देखेसि । ६-८१।०
निज दास ज्यों रघुबंसभूषन । ७-१।१७
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । ४-६।२
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । १-१८८।३
निज नयनन्हि देखा चहहिं । १-८८।०
निज निज आसन बैठे राजा । १-१३२।५
निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । ६-११७।५
निज निज गृह गए आयसु पाई । ७-४६।८
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा । ५-३५।२
निज निज बल सब काहूँ भाषा । ४-२८।६
निज निज बास बिलोकि बराती । १-३०६।१
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं। ७-९०।४
निज निज रुख रामहि सबु देखा । १-२४३।७

निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई। १-२२४।२
निज निज साजु समाजु बनाई । २-१९०।७
निज निज सुंदर सदन सँवारे । १-३४३।४
निज पद दीन्ह असुर कहुँ । ३-२७।०
निज पद नयन दिएँ मन । ५-८।०
निज पद भगति देइ प्रभु । ७-१०८।ख
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । २-२६५।८
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता । ३-२३।४
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । २-४६।८
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ। ७-८१।३
निज प्रभु दरसन पायउँ । ७-११४।क
निज प्रभु बदन निहारि निहारी । ७-७४।६
निज प्रभुमय देखहिं जगत । ७-११२।ख
निज परम प्रीतम देखि लोचन । ३-२५।९
निज परिताप द्रवइ नवनीता । ७-१२४।८
निज पानि जनक सुजान सब । १-३१९।१०
निज पानि मनि महुँ देखि अति । १-३२६।१९
निज पानि सर संधानि सो मोहि । ३-२५।१२
निज बिकलता बिचारि बहोरी । ६-५।१
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं । १-७।४
निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी । १-११६।१
निज भवन गवनेउ सिंधु । ५-५९।९
निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा । ६-७७।६
निज मति सरिस नाथ मैं गाई । ७-९०।१
निज माया कै प्रबलता । १-१३७।०
निज माया बल देखि बिसाला । १-१३१।८
निज माया बलु हृदयँ बखानी । १-५२।६
निज लोकहि बिरंचि गे । १-१८७।०
निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । ७-८५।२
निज सिर भारु भरत जियँ जाना । २-२६५।६
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा। ७-८९।७
निज सेन चकित बिलोकि हँसि । ६-८८।११
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना । १-६५।८
निज संताप सुनाएसि रोई । १-१८३।८
निज संदेह मोह भ्रम हरनी । १-३०।४
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । ७-१०७।२
नित जुग धर्म होहिं सब केरे । ७-१०३।१
नित नइ प्रीति राम पद पंकज । ७-१४।९
नित नव चरन उपज अनुरागा । १-७३।३
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ७-४१।५
नित नव नगर अनंद उछाहू । १-३३१।४
नित नव मंगल कौसलपुरी । ७-१४।८
नित नव राम प्रेम पनु पीना । २-३२४।२
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं । १-३५९।२
नित नव सोचु सती उर भारा । १-५८।१
नित नूतन आदरु अधिकाई । १-३३१।३
नित नूतन द्विज सहस सत । १-१६८।०
नित नूतन मंगल गृह तासू । १-६५।४
नित नूतन मंगल पुर माहीं । १-३२९।१
नित नूतन सब बाढ़त जाई । १-१७९।२
नित नूतन सुख लखि अनुकूले । १-३०३।८
नित नौमि राम अकाम प्रिय । ३-३१।१०
नित नौमि रामु कृपाल बाहु । ३-३१।६
नित पूजत प्रभु पाँवरी । २-३२५।०
नित हरि कथा होत जहँ भाई । ७-६०।७
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए । १-२३८।८
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई । २-३१०।२
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । २-१२७।७

सौजन्य - श्री बाबूलाल धनानिया, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता - ७००००७

निदरि घनहि घुर्म्मरहिं निसाना । १-३००।२
निंदहिं आपु सराहि निषादहि । २-२०१।६
निंदहिं आपु सराहहिं मीना । २-८५।५
निंदा अस्तुति उभय सम । ७-३८।०
निधरक बैठि कहइ कटु बानी । २-४०।१
निपट निरंकुस निठुर निसंकू । २-११८।३
निपटहिं द्विज करि जानहि मोही । १-२८२।१
निफल होहिं रावन सर कैसें । ६-९०।६
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । ५-२४।९
निमिष निमिष करुनानिधि । ५-३१।०
निरखि निरखि रघुबीर छबि । १-२३४।०
निरखि निषादु नगर नर नारी । २-१९५।६
निरखि बदनु कहि भूप रजाई । २-३८।७
निरखि बिबेक बिलोचनन्हिं । २-२९७।०
निरखि राम छबि धाम मुख । ३-३०।०
निरखि राम छबि बिधि हरषाने । १-३१६।४
निरखि राम रुख सचिवसुत । २-५४।०
निरखि राम सोभा उर धरहू । १-३३४।७
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई । १-२१९।३
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । २-२३७।७
निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा । १-१२४।३
निरगुन तें एहि भाँति बड़ । १-२३।०
निर्गुन निलज कुबेष कपाली । १-७८।६
निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई । ७-१०९।१६
निर्गुन रूप सुलभ अति । ७-७३।ख
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ३-१०।११
निर्नय सकल पुरान बेद कर । ७-४०।२
निर्बान दायक क्रोध जा कर । ३-२५।११
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी । ३-९।१०

निर्मम निराकार निरमोहा । ७-७१।६
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । ५-४३।५
निरस्य इंद्रियादिकं । ३-३।१६
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । ७-१०७।३
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । ७-९७।७
निरुपम न उपमा आन राम । ७-९१।९
निषंग चाप सायकं । ३-३।६
निसा घोर गंभीर बन । १-१५९।क
निसा जानि कपि चारिउ अनी । ६-४७।१
निसा सिरानि भयउ भिनुसारा । ६-७७।३
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि । ६-९७।१९
निसि तम घन खद्योत बिराजा । ४-१४।६
निसि दिन सुखद सदा सब काहू । २-२०८।४
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । ५-११।६
निसि न नीद नहिं भूख दिन । २-२५२।०
निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा । १-२२५।१
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन । १-१८५।८
निशिचर करि वरूथ मृगराजः । ३-१०।६
निसिचर अधम मलाकर । ६-७१।०
निसिचर अनी देखि कपि फिरे । ६-४५।५
निसिचर कीस लराई । ७-६७।ख
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । १-१३८।५
निसिचर निकर दले रघुनंदन । १-२३।८
निसिचर निकर देखि भट भारी । ६-१७।६
निसिचर निकर पतंग सम । ५-१५।०
निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं । ३-२९।३
निसिचर निकर मरन बिधि नाना । ७-६७।१
निसिचर निकर सकल मुनि खाए । ३-८।८
निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । ६-४०।८

निसिचर निकर सुभट संघारेहु । ६-८९।६
निसिचर भट महि गाड़हिं भालू । ६-८०।७
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । ५-१५।५
निसिचर सकल रावनहि । ६-९८।०
निसिचर हीन करउँ महि । ३-९।०
निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । ५-२।१
निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती । ६-९९।३
नीक मंत्र सब के मन माना । ६-१६।५
नीकें निरखि नयन भरि सोभा । १-२५७।१
नीच कीच बिच मगन जस । २-२५२।०
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । ७-१७।७
नीति धर्म के चरन सुहाए । ६-३७।१०
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । २-१३०।२
नीति निपुन सोइ परम सयाना । ७-१२६।३
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । २-२५३।५
नीति बिरोध न करिअ प्रभु । ६-८।०
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । २-१३।६
नीदउँ बदन सोह सुठि लोना । १-३५७।१
नील कंज तनु सुंदर स्यामा । ६-५५।६
नील कंज लोचन भव मोचन । ७-७६।५
नील तामरस स्याम काम अरि । ७-५०।२
नील महीधर सिखर सम । १-१५६।०
नील सघन पल्लव फल लाला । २-२३६।४
नील सरोरुह नील मनि । १-१४६।०
नील सरोरुह स्याम । १-०।५
नीलकंठ कलकंठ सुक । २-१३७।०
नीलकंठ लावन्यनिधि । १-१०६।०
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं..... । २-श्लोक३।१
नीलोत्पल तन स्याम । ४-३०।ख

नूतन किसलय अनल समाना । ५-११।११
नृप अभिमान मोह बस किंबा । ६-१९।५
नृप अस कहेउ गोसाइँ जस । २-९४।०
नृप उत्तानपाद सुत तासू । १-१४१।३
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा । २-२४६।३
नृप करि बिनय महाजन फेरे । १-३३९।१
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । १-१०।२
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू । २-१।८
नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा । २-१६९।१
नृप नायक दे बरदानमिदं । ६-११०।२२
नृप पाप परायन धर्म नहीं । ७-१००।६
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही । १-१५९।२
नृप बूझे बुध सचिव समाजू । २-२७०।५
नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू । १-२४९।१
नृपमंदिर सुंदर सब भाँती । ७-७५।२
नृप रानी परिजन सुकृत । १-४०।०
नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु । २-७३।०
नृप सब नखत करहिं उजिआरी । १-२३८।१
नृप सब भाँति सबहि सनमानी । १-३५४।७
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें । २-१।३
नृप समीप सोहहिं सुत चारी । १-३०८।२
नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा । १-१७३।४
नृप हरषेउ पहिचानि गुरु । १-१७२।०
नृप हितकारक सचिव सयाना । १-१५३।१
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । १-२५४।१
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । १-२५०।६
नृपहि नारि पहिं सयन कराई । १-१७०।८
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा । २-७८।३
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । २-१७३।५

सौजन्य - श्री दीपक धनानिया, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । २-४।७
नृपहिं धीर धरि हृदयँ बिचारी । २-२७०।७
नेगी नेगि जोग सब लेहीं । १-३५२।६
नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । १-३५२।२
नेति नेति कहि जासु गुन । १-१२।०
नेति नेति जेहि बेद निरूपा । १-१४३।५
नेम धर्म आचार तप । ७-१२१।ख
नेमु प्रेमु संकर कर देखा । १-७५।४
नेवते सादर सकल सुर । १-६०।०
नैहर जनमु भरब बरु जाई । २-२०।१
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा । ७-११६।१२
नौकारूढ़ चलत जग देखा । ७-७२।५
नौमी तिथि मधु मास पुनीता । १-१९०।१
नौमी भौम बार मधु मासा । १-३३।५
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुण । ६-श्लोक२।४
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं । ७-श्लोक१।४
नंदिगावँ करि परन कुटीरा । २-३२३।२
नंदीमुख सराध करि । १-१९३।०

प

पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी । २-२४३।८
पछिले पहर भूपु नित जागा । २-३७।१
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे । ७-३१।०
पठइ मोह मिस खगपति तोही । ७-६९।४
पठै दीन्हि नारद सन सोई । १-३११।७
पठए बालि होहिं मन मैला । ४-०।५
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । १-२८६।७
पठए भरतु भूप ननिअउरें । २-१७।२
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं । १-८२।५
पठवहु नाथ बेगि भट बंदर । ६-८४।३
पठवा तुरत राम पहिं ताही । ३-१।१०
पढहिं बेद मुनि मंगल बानी । १-३२३।७
पढहिं भाट गुन गावहिं गायक । २-३६।६
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ । १-१८८।०
पति अनुकूल सदा रह सीता । ७-२३।३
पति गति देखि ते करहिं पुकारा । ६-१०३।३
पतिदेवता सुतीय महुँ । १-२३५।०
पति देवर सँग कुसल बहोरी । २-१०२।३
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । ३-४।१९
पति परित्याग हृदयँ दुखु भारी । १-६०।७
पति बंचक परपति रति करई । ३-४।१६
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । ६-३५।८
पति रबिकुल कैरव बिपिन । २-५८।०
पति सिर देखत मंदोदरी । ६-१०३।१
पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी । १-१०६।५
पतिहि एकांत पाइ कह मैना । १-७०।२
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । २-९६।७
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । २-२१५।३
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । २-१११।३
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । ५-४८।४
पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव । २-९९।९
पद कमल परागा रस अनुरागा । १-२१०।१२
पद कंज द्वन्द मुकुंद राम । ७-१२।१६
पद नख निरखि देवसरि हरषी । २-१००।१
पद पखारि जलु पान करि । २-१०१।०
पद पाताल सीस अज धामा । ६-१४।१
पद राजीव बरनि नहिं जाहीं । १-१४७।१
पद सरोज अनपायनी । ७-१४।क
पन बिदेह कर कहहिं हम । १-२४९।०

सौजन्य - श्रीमती माया देवी धनानिया, १३१, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता - ७००००७

पनु करि रघुपति भगति देखाई । १-१०३।८
पन्नगारि असि नीति । ७-९५।क
पनव निसान घोर रव बाजहिं । ६-७८।८
पनिघट परम मनोहर नाना । ७-२८।२
पय अहार फल असन एक । २-१८८।०
पय पयोधि तजि अवध बिहाई । २-१३८।५
परउँ कूप तुअ बचन पर । २-२१।०
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं । १-३।७
पर उपकार बचन मन काया । ७-१२०।१४
पर उपकारी पुरुष जिमि । ३-४०।०
पर उपदेस कुसल बहुतेरे । ६-७७।२
पर घर घालक लाज न भीरा । १-९६।४
परद्रोह रत अति दुष्ट । ६-११२।९
परद्रोही की होहिं निसंका । ७-१११।२
पर द्रोही पर दार रत । ७-३९।०
परबस जीव स्वबस भगवंता । ७-७७।७
परबस सखिन्ह लखी जब सीता । १-२३३।५
पर सुख देखि जरनि सोइ छई । ७-१२०।३४
पर संपदा बिनासि नसाहीं । ७-१२०।१९
पर संपदा सकहु नहिं देखी । १-१३५।७
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । ३-३०।९
पर हित लागि तजइ जो देही । १-८३।२
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । ७-४०।१
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । १-३।२
पर त्रिय लंपट कपट सयाने । ७-९९।१
परत पाँवड़े बसन अनूपा । १-३२७।२
परदखिना करि करहिं प्रनामा । २-२०१।३
परनकुटि प्रिय प्रियतम संगा । २-१३९।५
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । ५-५४।५

परम चतुरता श्रवन सुनि । ६-३८।ख
परम तुम्हार राम कर जानिहि । २-१७४।७
परम दुखी भा पवनसुत । ५-८।०
परम धर्ममय पय दुहि भाई । ७-११६।१३
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । ७-१२०।२२
परम प्रकास रूप दिन राती । ७-११९।३
परम प्रबल रिपु सीस पर । ६-१०।०
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । ३-१०।२३
परम प्रीति कर जोरि जुग । ६-११४।ख
परम प्रीति समीप बैठारे । ७-१५।३
परम पुनीत न जाइ तजि । १-५६।०
परम पुनीत भरत आचरनू । २-३२५।५
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । ७-१६।३
परम पेम पूरन दोउ भाई । २-२४०।२
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । १-११२।४
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही । १-२३४।३
परम मनोहर चरित अपारा । १-२०२।४
परम मित्र तापस नृप केरा । १-१६९।४
परम रम्य आरामु यहु । १-२२७।०
परम रम्य उत्तम यह धरनी । ६-१।३
परम रम्य गिरिबरु कैलासू । १-१०४।८
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । १-२१७।४
परम सती असुराधिप नारी । १-१२२।७
परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । १-१३६।१
परम साधु परमारथ बिंदक । ७-१०४।४
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी । ६-११८।७
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू । २-१८०।७
परमातमा ब्रह्म नर रूपा । ७-४७।८
परमातुर बिहंगपति । ७-६०।०

सौजन्य - श्री बिजय कुमार मजेजी, पी-६, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

परमानंद कृपायतन मन । ७-३४।०
परमानंद पूरि मन राजा । १-१९२।६
परमानंद प्रेमसुख फूले । १-१९५।५
परमानंद मगन नृप । १-१८९।०
परमानंद मगन मन पुनि । ७-७।०
पर्‍यो बीर बिकल उठाव दसमुख । ६-८२।१०
परसत पद पावन सोक नसावन । १-२१०।१
परसत मृदुल चरन अरुनारे । २-१२०।३
परसा सीस सरोरुह पानी । ४-२२।१०
परसि चरन रज अचर सुखारी । २-१३८।२
परसि जासु पद पंकज धूरी । १-२२२।५
परसि राम पद पदुम परागा । २-११२।८
परसु अछत देखउँ जिअत । १-२७९।०
परसुरामु तब राम प्रति । १-२८०।०
परसुराम पितु अग्या राखी । २-१७३।७
परहिं कलप भरि नरक महुँ । १-६९।०
परा बिकल महि सर के लागें । ४-८।१
परिकर बाँधि उठे अकुलाई । १-२४९।६
परिखेसु मोहि एक पखवारा । ४-५।६
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । २-१७५।४
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । २-३२२।५
परिजन मातु पितहि मिलि सीता । २-३१९।१
परिनाम मंगल जानि अपने । २-२००।१२
परिवार पुरजन मोहि राजहि । १-३३५।११
परिहरि बयरु देहु बैदेही । ६-४८।१
परिहरि मान मोह मद । ५-३९।क
परिहरि रामु सीय जग माहीं । २-१८९।३
परिहरि लखन रामु बैदेही । २-२७९।४
परिहरि सकल भरोस रामहि । ३-६।ख

परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । १-१७०।४
परिहरु दुसह कलेस सब । १-७४।०
परी न राजहि नीद निसि । २-३८।०
परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं । २-२४५।५
परुष बचन सुनि काढ़ि असि । ५-९।०
परुसन जबहिं लाग महिपाला । १-१७२।५
परुसन लगे सुआर सुजाना । १-३२८।३
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर । ६-७०।७
परे भूमि नहिं उठत उठाए । ७-४।७
परेउ दुकाल बिपति बस । ७-१०४।ख
परेउ दंड जिमि धरनितल । २-११०।०
परेउ मुरछि महि लागत सायक । ६-५८।१
परेउ राउ कहि कोटि बिधि । २-३६।०
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी । ३-९।२१
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती । २-२००।२
पल्लवत फूलत नवल नित । ७-१२।२०
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा । २-५८।५
पलँग मंजु मनिदीप जहँ । २-९०।०
पवनतनय के चरित सुहाए । ५-२९।६
पवन तनय के बचन सुनि । ६-१२।ख
पवन तनय बल पवन समाना । ४-२९।४
पवनतनय मन भा अति क्रोधा । ६-४२।५
पवन तनय सब कथा सुनाई । ४-११।९
पस्यंति जं जोगी जतन करि । ३-३१।१६
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । २-२७६।८
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना । २-२९८।८
पसु पच्छी नभ जल थलचारी । १-८४।४
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । ६-२५।६
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ । १-२९०।६

पहिचान को केहि जान सबहि । १-३२०।९
पहिरहिं सज्जन बिमल उर । १-११।०
पहिरें बरन बरन बर चीरा । १-३१७।२
पहुनाई करि हरहु श्रम । २-२१३।०
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी । १-३३६।७
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा । १-१४२।५
पहुँचे दूत राम पुर पावन । १-२८९।१
पत्री सप्तरिषिन्ह सोइ दीन्ही । १-९०।५
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ७-७१।७
प्रगट चारि पद धर्म के । ७-१०३।ख
प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । ५-५१।१
प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । ४-१०।५
प्रगटत दुरत करत छल भूरी । ३-२६।१३
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । १-१५६।४
प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि । १-३४६।४
प्रगटि न कहत महेसु कछु । १-५६।०
प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी । ७-२२।७
प्रगटीं सुंदर सैल पर । १-६५।०
प्रगटे रामु कृतग्य कृपाला । १-७५।५
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । १-१५।५
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । १-८५।६
प्रगटेसि बिपुल हनुमान । ६-१००।१३
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । ७-१०७।९
प्रजा पाल अति बेदबिधि । १-१५३।०
प्रजा सहित रघुबंसमनि । १-११०।०
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । १-१२३।४
प्रति उत्तर सडसिन्ह मनहु । ६-२३।ङ
प्रति उपकार करौं का तोरा । ५-३१।६
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट । ७-२६।१२

प्रतिपालि आयसु कुसल देखन । २-१५०।१०
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । ७-८०।८
प्रति संबत अति होइ अनंदा । १-४४।२
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक । ६-१०८।११
प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ । ६-१०१।११
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी । २-१७०।५
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टंकोरा । ६-६७।२
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । २-३०१।३
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी । १-८८।८
प्रथम जन्म के चरित अब । ७-९६।क
प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए । २-७।१
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई । २-२५७।४
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । १-११९।५
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा । ७-११।५
प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । ७-५५।२
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । ५-५०।७
प्रथम बरात लगन तें आई । १-३०८।७
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । ६-८।१०
प्रथम बासु तमसा भयउ । २-१५०।०
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा । ३-३४।८
प्रथम मोहँ मोहि बहुत बिगोवा । ७-९५।६
प्रथम राम भेंटी कैकेई । २-२४३।७
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी । १-१०९।४
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । ७-६३।७
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । ७-१२०।३
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए । १-९३।७
प्रथमहिं जिन कहुँ आयसु दीन्हा । १-१८२।२
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । ६-३४।१२
प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा । ४-१२।०

सौजन्य- श्री श्रीप्रकाश बांगड़, १९९, सी.आर.एवेन्यू, कलकत्ता-७०० ००६

प्रथमहिं बास दिए सब केही । २-२१३।८
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती । ३-१५।६
प्रथमहिं भूप समर सब मारे । १-१६९।६
प्रथमहि मैं कहि सिव चरित । १-१०४।०
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । ७-१२५।२
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । ७-३४।२
प्रनतपालु पालिहि सब काहू । २-३१३।४
प्रनतपाल रघुनायक । ५-२२।०
प्रनतपाल रघुबंसमनि । ६-२०।०
प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू । १-१६।१
प्रनवउँ पवनकुमार खल । १-१७।०
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । १-१५।२
प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना । १-१६।३
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा । १-१७।६
प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा । १-१०४।७
प्रफुल्ल कंज लोचनं । ३-३।४
प्रबल अबिद्या कर परिवारा । ७-११७।३
प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई । ७-११९।५
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । ५-४।१
प्रबिसे सब निषंग महुँ जाई । ६-१०२।८
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई । २-९६।६
प्रभु अगाध सत कोटि पताला । ७-९१।१
प्रभु अजहूँ मैं पापी । ४-९।०
प्रभु अपने अबिबेक ते । ७-९३।ख
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । २-२८४।३
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । ७-६३।९
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । ५-५८।८
प्रभु अग्या धरि सीस । ६-१७।०
प्रभु आगवन जनाव जनु । ७-०।ख

प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा । ३-९।३
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी । २-२३।२
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । ५-५८।४
प्रभु आसन आसीन भरि । ३-३।०
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव । १-८६।१२
प्रभु उठाइ उर लायउ । ७-१८।क
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । ५-३२।२
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं । २-३१५।४
प्रभु करुनामय परम बिबेकी । २-९६।५
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । ६-११।९
प्रभु कह देन सकल सुख सही । ७-८३।४
प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचंडा । ६-७५।७
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू । ५-२९।४
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि । ६-१०१।ख
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा । ६-१०।५
प्रभु के बचन श्रवन सुनि । ६-१०६।०
प्रभु के बचन सीस धरि सीता । ६-१०८।१
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी । १-१३९।८
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं । २-३२१।२
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं । ५-५१।०
प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ । ६-१०८।१२
प्रभु छन महुँ माया सब काटी । ६-९६।१
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को । ३-२।०
प्रभु जब जात जानकी जानी । १-२३४।२
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाएँ । १-१६१।२
प्रभु जानी कैकई लजानी । ७-९।१
प्रभु जे मुनि परमारथबादी । १-१०७।५
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा । ३-१०।२७
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । ६-११७।७

प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । १-२५८।७
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा । १-१०८।६
प्रभु तरु तर कपि डार पर । १-२९।क
प्रभु तव आश्रम आएँ । ७-९४।ख
प्रभु ताते उर हतइ न तेही । ६-९८।१३
प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि । ५-५०।०
प्रभु तोषेउ सुनि संकर बचना । १-७६।५
प्रभु देखि हरष बिषाद उर । ६-१००।१९
प्रभु दोउ चापखंड महि डारे । १-२६१।१
प्रभु नारद संबाद कहि । ७-६६।०
प्रभु निमिष महुँ रिपु सर । ३-१९।२४
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेषी । २-३०७।४
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई । २-३००।६
प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । ६-४५।१
प्रभु पद पदुम पराग दोहाई । २-३००।१
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । २-३१७।७
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी । १-८।५
प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । ५-३४।१
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । २-२२८।६
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । २-१२२।५
प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । २-२६८।८
प्रभु पयान जाना बैदेहीं । ५-३४।६
प्रभु परन्तु सुठि होति ढिठाई । १-१४९।५
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । ४-१।५
प्रभु पाछें लछिमन बीरासन । ६-१०।८
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । २-२९७।५
प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । २-२९७।१
प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । ६-७४।१२
प्रभु प्रताप उर सहज असंका । ६-१७।२
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । ६-३८।६
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि । ५-१६।०
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । ६-०।२
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । ५-५८।७
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । २-३२०।८
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । २-२५६।६
प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल । ६-६१।०
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । ५-३२।६
प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि । २-२६९।०
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं । २-३।४
प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा । २-१२८।१
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । २-२९२।२
प्रभु प्रेरित कपि भालु सब । ६-११८।क
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । ७-१६।७
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ । ७-८७।२
प्रभु बलु पाई भालु कपि धाए । ६-९६।४
प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । ६-९१।१२
प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू । १-३६०।६
प्रभु बियोग लवलेस समाना । २-६५।६
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने । १-१३१।४
प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । ७-११।१
प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । ३-१८।१
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । ७-५।३
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना । १-२०८।४
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । ७-५७।६
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । १-२१७।२
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । ५-५८।५
प्रभु भाव गाहक अति कृपाल । ७-९१।१२
प्रभु मनसहिं लयलीन मनु । १-३१६।०

प्रभु माया बलवंत भवानी । ७-६१।१०
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं । ७-४।११
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । ७-२४।२
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना । ६-१२।८
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । ७-१२२।३
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी । ७-१८।५
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । ३-२६।८
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । ६-११३।४
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । ७-१६।४
प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें । ६-८५।४
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । २-९।८
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा । ३-१६।१४
प्रभु समरथ सर्बग्य सिव । १-१०७।०
प्रभु सर्बग्य कीन्ह अति । ७-१२।ग
प्रभु सर्बग्य दास निज जानी । १-१४४।५
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । २-३२०।३
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि । १-९।१३
प्रभु सोइ राम कि अपर । १-४६।०
प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । ७-८७।४
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । ५-१४।८
प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । ६-१२०।१
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । २-८।७
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । ७-८२।६
प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि । १-२५८।०
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । २-१३४।८
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी । १-१६३।८
प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे । १-२४४।१
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे । ६-३।७
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । ३-२६।१०

प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही । ६-१२०।११
प्रभुहि सेवकहि समरु । १-२८१।०
प्रमुदित तीरथराज निवासी । २-२०५।१
प्रमुदित परम दरिद्र ज़नु । १-३४५।०
प्रमुदित पुर नर नारि । २-२३।०
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे । १-३२५।१०
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरीं फेरीं । १-३२४।७
प्रलंब बाहु विक्रमं । ३-३।५
प्रस्न उमा कै सहज सुहाई । १-११०।६
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा । २-श्लोक२।१
प्रसीद मे नमामि ते । ३-३।२२
प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु । ६-८०।१४
प्राकृत सिसु इव लीला । ७-७७।ख
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । १-२३६।७
प्रात कहा मुनि सन रघुराई । १-२०९।१
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । २-२५२।८
प्रात पार भए एकहि खेवाँ । २-२२०।३
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । २-१०४।२
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । १-३५७।१
प्रात लेइ जो नाम हमारा । ५-६।८
प्रात होत प्रभु सुभट पठाए । ६-८४।४
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । १-२०४।७
प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । ७-२५।१
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । १-३२९।४
प्रातक्रिया करि तात पहिं । १-३५८।०
प्रातक्रिया करि मातु पद । २-२०२।०
प्रान कंठगत भयउ भुआलू । २-१५३।१
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । ३-२६।१६
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें । २-१४।८

प्रान प्रान के जीव के । २-२९०।०
प्राननाथ करुनायतन । २-६४।०
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । २-६४।६
प्राननाथ देवर सहित । २-१०३।०
प्राननाथ प्रिय देवर साथा । २-९८।१
प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं । २-१९८।८
प्रानहु ते प्रिय लागत । १-२०४।०
प्राबिट सरद पयोद घनेरे । ६-४५।९
प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । २-२८५।१
प्रिय परिवार पिता अरु माता । १-७२।८
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । १-३५२।७
प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही । २-१४।१
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ६-८।८
प्रिय लागिहि अति सबहि मम । १-१०।क
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । २-१६।५
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें । २-२५।५
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती । २-३०।५
प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु । २-१५४।०
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । २-१४०।७
प्रिया सोचु परिहरहु सबु । १-७१।०
प्रिया हास रिस परिहरहि । २-३२।०
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । ७-१२०।३१
प्रीति करहु रघुबीर पद । ६-१५।ख
प्रीति न हृदयँ समाइ । ६-५९।०
प्रीति परम बिलोकि रघुराई । ६-१२०।१२
प्रीति पुनीत भरत कै देखी । १-२९०।२
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । २-३२०।५
प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । ३-२०।११
प्रीति बिना नहिं भगति दिढ़ाई । ७-८८।८
प्रीति बिरोध समान सन । ६-२३।ग
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । ७-४५।७
प्रीति सहित सब भेंटे । ५-२९।०
पेम अमिअ मंदरु बिरहु । २-२३८।०
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर । २-२६१।०
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । १-२९४।३
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई । २-५१।५
प्रेम प्रमोदु बिनोदु बड़ाई । १-३५४।४
प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू । १-३१३।३
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । २-२४२।५
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं । २-७।२
प्रेम पुलकि तन मुदित मन । २-२।०
प्रेमबिबस नर नारि सब । १-३३७।०
प्रेमबिबस परिवारु सबु । १-३३८।०
प्रेम बिबस मुख आव न बानी । १-१०३।३
प्रेम भगति अनपायनी । ७-३४।०
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । ७-४८।६
प्रेम भगति जो बरनि न जाई । १-३५।६
प्रेम मगन अस राजसमाजू । २-२२४।८
प्रेम मगन कौसल्या निसि । १-२००।०
प्रेम मगन तेहि समय सब । २-२७४।०
प्रेम मगन मनु जानि नृपु । १-२१५।०
प्रेम मगन मुख बचन न आवा । ३-३३।९
प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । ७-१०९।८
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी । २-३०९।८
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा । १-३०५।३
प्रेम सहित प्रभु खाए । ३-३४।०
प्रेम सहित मुनि नारद बरनि । ७-५१।०
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । ७-८२।३

प्रेमातुर सब लोग निहारी ।७-५।४
प्रेरित काल बिंधि गिरि ।७-१०९।ख
प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा ।३-१।१
प्रेरित राम चलेउ सो ।७-४।ख
प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता ।३-४२।७
प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा ।७-१०९।५
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की ।१-२२।३
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई ।१-३३६।४
पाइ असीस महीसु अनंदा ।१-३३०।५
पाइ उमा अति गोप्यमपि ।७-६९।ख
पाइ कपट जलु अंकुर जामा ।२-२२।६
पाइ रजायसु नाइ सिरु ।२-८२।०
पाई न केहिं गति पतित पावन ।७-१२९।९
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला ।२-२६६।५
पाषंडी हरि पद बिमुख ।१-११४।०
पाछिल दुखु न हृदयँ अस ब्यापा ।१-६२।६
पाछिल मोह समुझि पछिताना ।७-९२।३
पाछें पवन तनय सिरु नावा ।४-२२।९
पाट कीट तें होइ ।७-९५।ख
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं ।७-श्लोक-१।३
पाणौ बाणशरासनं ।३-श्लोक-२।२
पाणौ महाशायक चारुचापं ।२-श्लोक-३।२
पाथोद गात सरोज मुख ।३-३१।५
पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी ।३-३४।१
पानि सरोज सोह जयमाला ।१-२४७।६
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा ।१-१००।३
पाप उलूक निकर सुखकारी ।३-४३।७
पाप करत निसि बासर जाहीं ।२-२५०।५
पाप पहार प्रगट भइ सोई ।२-३३।२
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ।२-३२५।७
पापवंत कर सहज सुभाऊ ।५-४३।३
पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं ।४-२८।३
पायो परम बिश्रामु राम ।७-१२९।२०
पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर ।६-१०५।१०
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं ।२-६६।३
पाय पखारि सकल अन्हवाए ।१-३५१।३
पारबतिहि निरमयउ जेहिं ।१-७१।०
पारबतीं तपु कीन्ह अपारा ।१-८८।४
पारबती पहिं जाइ तुम्ह ।१-७७।०
पारबती भल अवसरु जानी ।१-१०६।२
पारबती महिमा सुनत ।१-७३।०
पारबती सम पतिप्रिय होहू ।२-११७।१
पालइ पोषइ सकल अँग ।२-३१५।०
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी ।१-१८५।३
पालव बैठि पेड़ु एहिं काटा ।२-४६।५
पालेहु प्रजहि करम मन बानी ।२-१५१।४
पाव नारकी हरिपदु जैसें ।१-३३४।६
पावक जरत देखि हनुमंता ।५-२४।८
पावक प्रबल देखि बैदेही ।६-१०८।६
पावकमय ससि स्त्रवत न आगी ।५-११।९
पावक सर छाँड़ेउ रघुबीरा ।६-९०।३
पावक सर सुबाहु पुनि मारा ।१-२०९।५
पावक साखी देइ करि ।४-४।०
पावन आश्रम गवनु किय ।२-२४५।०
पावन जस कि पुन्य बिनु होई ।७-१११।७
पावन पर्बत बेद पुराना ।७-११९।१३
पावन पाथ पुन्यथल राखा ।२-३०९।३
पावन मृग मारहिं जियँ जानी ।१-२०४।२

पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं । २-२४८।३
पावनिहार बिरंचि जनु । १-२५१।०
पावहिं मोह बिमूढ़ जे । ३-०।०
पावा परम तत्व जनु जोगी । १-३४९।६
पावौं मैं तिन्ह कै गति घोरा । २-१६७।४
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । २-५९।२
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं । २-२३९।२
पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं । ६-८१।७
पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । २-११०।६
पिअर उपरना काखासोती । १-३२६।७
पिक रथांग सुक सारिका । २-८३।०
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि । २-१०१।०
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । ६-२३।१०
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । २-४२।५
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ । २-९०।६
पिता जनक देउँ पटतर केही । २-११८।६
पिता जनक भूपाल मनि । २-५८।०
पिता बचन तजि राज उदासी । १-४७।८
पिता बचन मैं नगर न आवउँ । ६-१०५।४
पिता बधे पर मारत मोही । ४-२५।५
पिता भवन उत्सव परम । १-६१।०
पिता भवन जब गईं भवानी । १-६२।१
पिता मंदमति निंदत तेही । १-६३।६
पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू । २-५२।६
पितु असीस आयसु मोहि दीजै । २-७६।३
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई । १-३०६।४
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई । २-३१४।४
पितु आयस भूषन बसन । २-१६५।०
पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । २-२८६।५

पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । २-८१।५
पितु पद गहि कहि कोटि । २-९५।०
पितु बनदेव मातु बनदेवी । २-५५।३
पितु बैभव बिलास मैं डीठा । २-९७।१
पितु मातु प्रिय परिवार पुर । २-७४।१०
पितु समीप तब जाएहु भैआ । २-५२।२
पितु समेत कहि कहि निज नामा । १-२६८।२
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू । २-१६३।७
पितु सुरपुर सिय रामु बन । २-१७७।०
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । २-९६।२
पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । २-१७०।१
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा । ६-३५।३
पिय हिय की सिय जाननिहारी । २-१०१।३
पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो । ७-१२१।क
पीत चौतनीं सिरन्हि सुहाईं । १-२४२।७
पीत जग्य उपबीत सुहाए । १-२४३।२
पीत जनेउ महाछबि देई । १-३२६।५
पीत झीनि झगुली तन सोही । ७-७६।७
पीत झगुलिआ तनु पहिराई । १-१९८।११
पीत पुनीत मनोहर धोती । १-३२६।३
पीत बसन परिकर कटि भाथा । १-२१८।३
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । ७-५६।५
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता । २-१४५।१
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं... । ७-१३०।श्लोक२
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा । ७-४४।७
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा । २-३११।२
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । ७-१८।९
पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता । ७-४४।६
पुन्य पुंज मग निकट निवासी । २-११२।४

सौजन्य-श्री नेमचन्द कन्दोई, १३५ए, बी.आर.बी.बसु रोड, कलकत्ता-१

पुन्य पुंज सब धन्य अस । २-१३८।०
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी । २-१३।८
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली । १-२३३।६
पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा । ३-६।८
पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना । ६-६५।८
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती । ६-३३।१३
पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता । ६-६४।८
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । ७-११३।१४
पुनि कछु लखन कही कटु बानी । २-९५।४
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना । ६-३४।९
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । ६-४३।६
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । ३-११।१२
पुनि करुनानिधि भरतु हँकारे । ७-१०।४
पुनि कह कटु कठोर कैकेई । २-३४।३
पुनि कह भूपति बचन सुहाए । १-३३९।५
पुनि कह राउ सुहृद जियँ जानी । २-२६।१
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । ५-५२।४
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । ५-५२।६
पुनि कृपाल पुर बाहेर गए । ७-४९।३
पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । ७-१९।१
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । ६-४६।३
पुनि कोदंड बान गहि धाए । ६-८३।८
पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ । १-१००।१२
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । २-१०३।८
पुनि चरननि मेले सुत चारी । १-२०६।५
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । २-२४४।४
पुनि जल दीख रूप निज पावा । १-१३५।१
पुनि जेवनार भई बहु भाँती । १-३२७।१
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं । २-२५७।५

पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जोऊ । १-१६७।७
पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ । ६-९३।०
पुनि देखब रघुबीर बिआहू । १-३०९।६
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । ६-११९।६
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । ६-११९।९
पुनि दंडवत करत दोउ भाई । १-३०७।३
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । ६-६८।५
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । २-८०।८
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । १-२८९।६
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही । ४-१।७
पुनि धीरजु धरि कुँअरि हँकारीं । १-३३६।६
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ । २-३।५
पुनि नभ सर मम कर निकर । ६-२२।ख
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । ६-६४।९
पुनि नाना बिधि भई लराई । ४-७।८
पुनि नारद कर मोह अपारा । ७-६३।८
पुनि निज जटा राम बिबराए । ७-१०।७
पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । ६-८२।५
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । ५-१७।७
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना । १-३।९
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनीं । ६-१२०।ख
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । १-१०९।५
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी । १-११०।१
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ । १-१७६।६
पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा । ३-३८।६
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही । ७-६५।७
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा । ७-६५।२
पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । ६-१०६।१
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ । ४-२।०

पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन । ७-५।०
पुनि प्रयास बिनु सो तनु । ७-१०९।ख
पुनि परिहरे सुखानेउ परना । १-७३।७
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । २-२८६।६
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । १-१५१।६
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । ४-२५।६
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । ५-३१।८
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । २-२४१।४
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । ७-९२।४
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । ४-८।३
पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा । १-५४।८
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । १-२२५।८
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । ६-९१।१३
पुनि पुनि प्रभु पद कमल । १-११९।०
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । १-२१६।५
पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । २-१४९।१
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी । २-११७।२
पुनि पुनि बंदत गुरु चरन । १-३५२।०
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि । ७-२।०
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । १-१०१।७
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई । १-३३६।८
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं । १-१३४।२
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । १-२७२।२
पुनि पुनि रामहि चितव सिय । १-३२६।०
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । ७-१११।१२
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । ७-८५।८
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी । १-१८१।८
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं । १-३३३।३
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी । १-३४८।४
पुनि पुनि हृदयँ बिचारु करि । १-५२।०
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । ७-६७।४
पुनि फिरि राम निकट सो आई । ३-१६।१७
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए । १-३०७।५
पुनि बसिष्टु मुनि कौसिकु आए । १-३५८।३
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । १-१५९।३
पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । १-१४।१
पुनि भानुकुलभूषन सकल । १-३२५।१९
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक । १-१७।९
पुनि मम धाम पाइहहु । ६-११६।घ
पुनि ममता जवास बहुताई । ३-४३।६
पुनि माया सीता कर हरना । ७-६५।६
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे । २-२४१।२
पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला । १-२३९।४
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । ७-११०।८
पुनि मंदिर नभबानी भइ । ७-१०८।क
पुनि मंदिर महँ बात जनाई । ७-२।२
पुनि रघुनाथ चले बन आगे । ३-८।५
पुनि रघुपति निज मंदिर गए । ७-४१।३
पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए । ७-६४।७
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । ७-७।५
पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । ६-७२।१०
पुनि रघुबीर निषंग महुँ । ६-६८।०
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी । ७-११५।४
पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे । १-३१४।८
पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । ६-९४।४
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । ६-७३।८
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । ७-६५।३
पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन । ६-७२।९

सौजन्य - श्री विनोद कुमार कन्दोई, ७ सी, क्रे. एस. राय रोड, कलकत्ता - १

पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हें । ६-९७।१०
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । ६-३२।३
पुनि सत सर मारा उर माहीं । ६-८२।७
पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । ७-१२०।१
पुनि सब कथा बिभीषन कही । ५-७।३
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी । १-३३।२
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी । ५-४९।३
पुनि सादर बोले मुनि नारद । ३-४४।४
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई । २-३२२।२
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । २-११०।४
पुनि सिय राम लखन कर जोरी । २-१११।१
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । ५-३७।३
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई । ३-३२।४
पुनि सुग्रीव मिताई बालि । ७-६६।०
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । ४-११।६
पुनि संभारि उठी सो लंका । ५-३।५
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । १-१४३।२
पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । १-२६४।१
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । ७-२६।४
पुर नर नारि सकल पहिराए । १-३५०।६
पुर नर नारि सनाथ करि । ७-९।ख
पुर नर नारि सुभग सुचि संता । १-२१२।६
पुर नर भरत प्रीति मैं गाई । ३-०।१
पुर नारि सकल पसारि अंचल । १-३१०।११
पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि । १-३२६।१२
पुर पगु धारिअ देइ असीसा । २-३१८।३
पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई । १-२२३।१
पुर पैठत रावन कर बेटा । ६-१७।३
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । १-२२३।८
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे । १-३४७।५
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई । १-२४०।८
पुरबासी सुनि चलिहि बराता । १-३३२।१
पुर बाहेर सर सरित समीपा । १-२१३।४
पुर बैकुंठ जान कह कोई । १-१८४।२
पुर रखवारे देखि बहु कपि । ५-३।०
पुर रम्यता राम जब देखी । १-२११।५
पुर सोभा अवलोकि सुहाई । १-९३।८
पुर सोभा कछु बरनि न जाई । ७-२८।८
पुर सोभा संपति कल्याना । ७-८।८
पुरइनि सघन ओट जल । ३-३९।क
पुरइनि सघन चारु चौपाई । १-३६।४
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा । १-१५१।५
पुर जन आवत अकनि बराता । १-३४३।३
पुरजन करि जोहारु घर आए । २-८८।६
पुरजन जननी भरत हित । २-२५७।०
पुर जन नारि मगन अति प्रीती । २-२५१।१
पुरजन परिजन गुर पितु माता । २-१९९।६
पुरजन परिजन जातिजन । १-३०८।०
पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं । २-३१३।१
पुरजन परिजन सकल निहोरी । २-१५१।१
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । २-२४४।८
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । २-१९९।२
पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु । २-१५८।०
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें । ७-१०८।१०
पुरी बिराजति राजति रजनी । १-३५७।३
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । ६-३३।१४
पुरुष त्यागि सक नारिहि । ७-११५।क
पुरुष नपुंसक नारि वा । ७-८७।क

पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती । ७-११४।१६
पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि । १-११६।०
पुरुषसिंह दोउ बीर । १-२०८।०
पुलक गात लोचन सजल । १-३१५।०
पुलक गात लोचन सजल । ७-६९।क
पुलक गात हियँ रामु सिय । २-२१०।०
पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू । २-३२५।१
पुलक बाटिका बाग बन । १-३७।०
पुलक सरीर नयन जल । ६-३५।क
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन । २-२८०।६
पुलकि गात बोले बचन । १-२५९।०
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । २-६।५
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े । २-२५९।३
पुलकित गात अत्रि उठि धाए । ३-२।५
पुलकित तन गदगद गिराँ । ६-११४।ख
पुलकित तन मुख आव न बचना । ४-१।६
पुत्रवती जुबती जग सोई । २-७४।१
पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ । २-२८६।२
पूछत अति सनेहँ सकुचाई । १-२८९।८
पूँछत उतरु देब मैं तेही । २-१४५।४
पूँछत जानि अजान जिमि । १-२६९।०
पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं । ७-३५।२
पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । १-२९१।१
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । १-२०९।१२
पूछिहि जबहिं लखन महतारी । २-१४५।२
पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी । १-६०।५
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । २-१२।२
पूछें कोउ न ऊतरु देई । २-३७।५
पूँछ बुझाइ खोइ श्रम । ५-२६।०

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि । ५-२४।१
पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । २-११७।६
पूँछिहि जबहिं राउ दुख दीना । २-१४५।६
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । ५-२८।४
पूँछी कुसल नाथ अब । ५-२९।०
पूँछे मातु मलिन मन देखी । २-७२।५
पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । २-२०।७
पूँछिहु नाथ राम कटकाई । ५-५३।५
पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ । २-१२७।०
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । १-१११।७
पूँछिहु राम कथा अति पावनि । ७-१२२।५
पूजन गौरि सखीं लै आईं । १-२३०।२
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । २-७३।७
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा । १-५४।३
पूजहिं माधव पद जलजाता । १-४३।५
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । २-५।८
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा । १-२२७।६
पूजि पितर सुर अतिथि गुर । २-२७९।०
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना । ३-३३।२
पूजिहि सब मनकामना । २-१०३।०
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा । २-७।५
पूजे गुर पद कमल बहोरी । १-३५१।८
पूजे जनक देव सम जानें । १-३२०।८
पूजे भूपति सकल बराती । १-३२०।३
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । २-५५।७
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें । २-१३।५
पूरन काम राम अनुरागी । ७-१२४।५
पूरनकाम राम सुख रासी । ३-२९।१७
पूरन राम सुपेम पियूषा । २-२०८।५

सौजन्य - बंका पॉली फैब लि., १०, फियर्स लेन, कलकत्ता-७०० ०१२

पूरब दिसा बिलोकि प्रभु । ६-११।ख
पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी । ६-११।१
पूरुब कल्प एक प्रभु । ७-९६।ख
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । ७-३०।२
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । १-८७।६
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा । २-१६०।८
प्रेरित काल बिंधि गिरि.... । ७-१०९।ख
पैठत नगर सचिव सकुचाई । २-१४६।३
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब । १-८।०
पंक न रेनु सोह असि धरनी । ४-१५।७
पंच कवल करि जेवन लागे । १-३२८।१
पंच कहें सिवँ सती बिबाही । १-७८।८
पंच सबद धुनि मंगल गाना । १-३१८।३
पंचबटी सो गइ एक बारा । ३-१६।४
पंचबटी बसि श्रीरघुनायक । ३-२०।४
पंथ कहत निज भगति अनूपा । ३-११।५
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । १-१४२।४
पंपा सरहि जाहु रघुराई । ३-३५।११

फ

फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई । ४-१२।६
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । ५-२८।८
फरइ कि कोदव बालि सुसाली । २-२६०।४
फरकत अधर कोप मन माहीं । १-१३५।२
फल अनुगामी महिप मनि । २-३।०
फल अनेक बर बस्तु सुहाईं । १-३०४।३
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि । ७-१२।११
फल भारन नमि बिटप सब । ३-४०।०
फिरत अहेर राम छबि देखी । २-१३७।२
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई । १-१५८।६
फिरत नारि नर अति पछिताहीं । २-११८।१
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । ७-८१।२
फिरत बिपिन आश्रम एक देखा । १-१५७।१
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू । १-१५५।५
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । १-८५।५
फिरत सदा माया कर प्रेरा । ७-४३।५
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें । १-२४।८
फिरती बार मोहि जो देबा । २-१०१।८
फिरहिं गएँ दिनु पहर अढ़ाई । २-३११।८
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई । २-२३।३
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । २-११।४
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । १-५३।५
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं । ६-२३।क
फिरि पछितैहसि अंत अभागी । २-३५।८
फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहउँ । ३-२६।०
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन सब । १-१०१।१०
फिरि सब नगर दसानन देखा । १-१७८।५
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । २-६७।७
फिरे बीर रिपु मरइ न मारा । ६-७५।९
फिरे हरष बिसमय सहित । २-३२०।०
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई । २-१४१।५
फूलइ फरइ न बेत । ६-१६।ख
फूलत फलत भयउ बिधि बामा । २-५८।४
फूलत फलत सुपल्लवत । १-२१२।०
फूलहिं नभ बरु बहुबिधि फूला । ७-१२१।१६
फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । ७-२२।१
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना । २-१३६।६
फूलें कमल सोह सर कैसा । ४-१६।२
फूलें कास सकल महि छाई । ४-१५।२

सौजन्य - पॉलियाड, वितरक-गरवारे सन कंट्रोल फिल्म, १० फियर्स लेन, कल -१२

फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । २-२३३।५
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना । १-२९८।२
फेरि भरत मति करि निज माया । २-२९४।२
फेरे सब प्रिय बचन कहि । २-११८।०
फोरै जोगु कपारु अभागा । २-१५।२

ब

बक्र उक्ति धनु बचन सर । ६-२३।ड़
बचन अमिअँ जनु बोरि । २-१७६।०
बचन कर्म मन कपट तजि । ६-६४।०
बचन कर्म मन मोरि गति । ३-१६।०
बचन कहत भरे लोचन बारी । १-१०१।४
बचन कायँ मन मम गति जाही । ५-३१।२
बचन किरातन्ह के सुनत । २-१३६।०
बचनु न आव नयन भरे बारी । ५-१३।७
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । २-१४४।७
बचन परम हित सुनत कठोरे । ६-८।९
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा । १-३।११
बचन बिनीत मधुर रघुबर के । २-५३।१
बचन बिनीत सप्रेम मृदु । ७-९३।क
बचनु मोर तजि रहहिं घर । २-४४।०
बचन सपेम लखन पहिचाने । २-२३९।३
बचन सहाइ करबि मैं । ४-२७।०
बचन सुखद गंभीर मृदु । ७-८३।क
बचन सुनत उपजा सुख भारी । ७-१९।४
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । ५-२४।३
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । २-२५०।८
बचन सुनत सब बानर । ४-२२।०
बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । २-२१७।१
बचनु न आव नयन भरे बारी । ५-१३।७
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । २-१४४।७
बचनु मोर तजि रहहिं घर । २-४४।०
बट छायाँ बेदिका बनाई । २-२३६।८
बटु बिस्वास अचल निज धरमा । १-१।११
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । १-५९।७
बड़ कुघातु करि पातकिनि । २-२२।०
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । ७-१२०।४
बड़भागी अंगद हनुमाना । ६-१०।७
बड़भागी बनु अवध अभागी । २-५५।५
बड़ बिधु नहि समात मुख माहीं । १-१५५।६
बड़ें भाग पाइब सतसंगा । ७-३२।८
बड़ें भाग बिधि बात बनाई । १-३०९।८
बड़ें भाग मानुष तनु पावा । ७-४२।७
बड़ें समाज बिलोकेउँ भागू । २-२९९।४
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । १-३२९।२
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । १-१६६।७
बढ़त देखि जल सम बचन । १-२७६।०
बढ़्यो कोलाहल करत जनु । ७-३।ग
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । ५-१।११
बदरीबन कहुँ सो गई । ४-२५।०
बधि बिराध खर दूषनहि । ६-३६।०
बधुन्ह समेत कुमार सब । १-३५२।०
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी । १-३४८।३
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब । १-३४९।०
बधू लरिकनीं पर घर आईं । १-३५४।८
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । १-३५३।४
बधें पापु अपकीरति हारें । १-२७२।७
बन उजारि रावनहि प्रबोधी । ७-६६।५
बन उपबन बापिका तड़ागा । १-८५।७

बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । १-११०।४
बनचर कोल किरात बिचारे । २-२७५।५
बनचर देह धरी छिति माहीं । १-१८७।३
बन दिसि देव सौंपि सब काहू । ३-२७।६
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । २-६५।५
बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई । २-९३।७
बनदेवीं बनदेव उदारा । २-६५।१
बन प्रदेस मुनि बास घनेरे । २-२३५।१
बन बसि कीन्हे चरित अपारा । १-१०९।७
बन बहु बिषम मोह मद माना । १-३७।९
बन बाग उपबन बाटिका । ५-२।१६
बन बाग कूप तड़ाग सरिता । १-९३।१०
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा । ६-२३।६
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा । २-१३५।६
बन मग मंगल कुसल हमारें । २-१५०।८
बन रघुपति सुरपति नरनाहू । २-१७५।३
बन सागर सब नदीं तलावा । १-९३।४
बन सिय रामु समुझि मन माहीं । २-१८७।२
बन हित कोल किरात किसोरी । २-५९।१
बनइ न बरनत नगर निकाई । १-२१२।१
बनइ न बरनत बनी बराता । १-३०२।१
बनत उपाउ करत कछु नाहीं । २-२६४।२
बना बजारु न जाइ बखाना । १-३४३।६
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि । १-९३।१२
बनी बात बेगरन चहति । २-२१७।०
बनी बिसाल बाजि गज साला । १-२१३।२
बने बराती बरनि न जाहीं । १-३४७।४
बय किसोर सुषमा सदन । १-२२०।०
बय बपु बरन रूपु सोइ आली । २-२२१।२
बयरु अकारन सब काहू सों । ७-३८।६
बयरु न कर काहू सन कोई । ७-१९।८
बयरु करत नहिं तब डरे । ६-९०।०
बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा । २-२३५।४
ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई । १-२४५।१
ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । ६-७३।३
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । ६-६१।६
ब्याकुल किए भालु कपि । ६-४२।०
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही । १-३३७।२
ब्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं । ७-५८।३
ब्याकुल नगर देखि तब । ४-१९।०
ब्याकुल भए निषाद सब । २-१४२।०
ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । २-३४।१
ब्याकुल बिलपत राजगृह । २-१६६।०
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । २-५०।२
ब्याधि नास हित जननी । ७-७४।क
ब्यापक अकल अनीह अज । १-२०५।०
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी । १-२२।६
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । ६-५४।५
ब्यापकु ब्रह्मु अलखु अबिनासी । १-३४०।६
ब्यापक ब्रह्म निरंजन । १-१९८।०
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । ७-५७।७
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । ७-७१।४
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना । १-१२।४
ब्यापि रहेउ संसार महुँ । ७-७१।क
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या । ७-११३।ख
ब्यापहिं मानस रोग न भारी । ७-११९।८
ब्याल कराल बिहग बन घोरा । २-६२।३
ब्याल पास बस भए खरारी । ६-७२।११

सौजन्य-जगन्नाथ नंदकुमार, १८१-बी, सी.आर.एवेन्यू, कलकत्ता-७००००७

ब्यास आदि कबि पुंगव नाना । १-१३।२
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए । १-३१५।२
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं । १-३१०।१२
बर अनुहारि बरात न भाई । १-९२।१
बर कुअँरि करतल जोरि । १-३२३।१७
बर कुअँरि सुंदर सकल सखीं । १-३२६।२२
बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । ७-५६।७
बर दायक प्रनतारति भंजन । १-६९।७
बर प्रसाद सो मरइ न मारा । ६-७३।९
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा । ६-११९।४
बर मागत मन भइ नहिं पीरा । २-१६१।२
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । १-३२३।८
बरु बौराह बसहँ असवारा । १-९४।८
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । ७-९७।१
बरन बरन बिकसे बन जाता । १-२११।८
बरन बरन बिरदैत निकाया । ६-७८।४
बरनै तुलसीदासु किमि । १-१०३।०
बरनहिं सारद सेष श्रुति । ७-१२।क
बरनउँ रघुबर बिमल जसु । २-०।०
बरनउँ रघुबर बिसद जसु । १-२९।ग
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू । १-२२८।६
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा । १-५७।६
बरनत बरन प्रीति बिलगाती । १-१९।४
बरनत रघुबर भरत बियोगू । २-३१७।२
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं । २-३२४।८
बरनन वर्षा सरद अरु । ७-६६।ख
बरनब राम बिबाह समाजू । १-४१।३
बरनहु रघुबर बिसद जसु । १-१०९।०
बरनाश्रम निज निज धरम । ७-२०।०
बरनि उमापति राम गुन । ७-१४।ख
बरनि न जाइ अनीति । १-१८३।०
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । २-११३।५
बरनि न जाइ मनोहर जोरी । २-११५।१
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । ७-७५।३
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला । २-१३२।८
बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । २-९।१
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । २-२८८।३
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि । ७-६५।०
बररै बालकु एकु सुभाऊ । १-२७८।३
बरबस राज सुतहि तब दीन्हा । १-१४२।१
बरबस राम सुमंत्रु पठाए । २-९९।२
बरबस रोकि बिलोचन बारी । २-६३।४
बरबस लिए उठाइ उर । २-२४०।०
बरष चारिदस बासु बन । २-८८।०
बरष चारिदस बिपिन बसि । २-५३।०
बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । १-१४४।१
बरषा काल मेघ नभ छाए । ४-१२।८
बरषा गत निर्मल रितु आई । ४-१७।१
बरषा घोर निसाचर रारी । १-४१।५
बरषा बिगत सरद रितु आई । ४-१५।१
बरषा रितु रघुपति भगति । १-१९।०
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । ४-१३।३
बरषहिं बलाहक रुधिर कच रज । ६-१०१।१२
बरषहिं राम सुजस बर बारी । १-३५।४
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा । १-३४८।६
बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा । ६-१०२।११
बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी । १-१९०।७
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि । १-३१६।१०

बरषहिं सुमन हरषि सुर । ६-१०९।क
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा । ६-५१।४
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ । २-२१९।४
बरषि सुमन कह देव समाजू । २-१३३।३
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं । ६-७६।३
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं । २-१००।८
बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं । १-३०५।१
बरिसहिं सुमन रंग बहु माला । १-२६१।६
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं । ६-६०।१२
बरु तीर मारहुँ लखनु पै । २-९९।११
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं । १-७०।८
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । १-३२३।८
बरु बौराह बसहँ असवारा । १-९४।८
बरु भल बास नरक कर ताता । ५-४५।७
बरुन कुबेर पवन जम काला । ६-७।३
बरुन कुबेर सुरेस समीरा । ६-१०३।७
बरुन पास मनोज धनु हंसा । ३-२९।१२
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा । २-२४६।८
ब्रह्म अनामय अज भगवंता । ५-३८।२
ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा । ५-१९।०
ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर । ७-९९।क
ब्रह्मग्यान रत मुनि बिग्यानी । ७-११०।२
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा । १-१२८।२
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना । १-८३।७
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । १-२१५।२
ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज । १-५०।०
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । ३-१।४
ब्रह्म निरुपन धरम बिधि । १-४४।०
ब्रह्म पयोनिधि मंदर । ७-१२०।क

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा । ५-१९।१
ब्रह्म भवन सनकादि गे । ७-३५।०
ब्रह्म राम तें नामु बड़ । १-२५।०
ब्रह्म रुद्र सरनागत । ४-६।०
ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं । ७-७९।क
ब्रह्म सच्चिदानंद घन । ७-४७।०
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना । १-६१।३
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा । १-२१।२
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी । १-१८१।१२
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना । १-१८३।११
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं । ५-१।२
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया । १-१९१।९
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि । ६-८५।१४
ब्रह्मांड भवन बिराज जाकें । ६-८२।११
ब्रह्मादि सुरबर बिप्र बेष । १-३१८।११
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम । ६-११२।२०
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । १-२६१।५
ब्रह्मानंद मगन कपि । ७-१५।०
ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं । १-३०८।८
ब्रह्मानंद सदा लयलीना । ७-३१।४
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं.......... । ४-श्लोक-२।१
बरे तुरत सत सहस बर । १-१७२।०
बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं । ३-३१।७
बल बिनय बिद्या सील सोभा । १-३१०।१०
बल बिबेक दम परहित घोरे । ६-७९।६
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा । २-२३८।७
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह । १-३३५।१०
बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ । ४-२९।०
बलिहि जितन एक गयउ पताला । ६-२३।१३

सौजन्य - श्री रामगोपाल सूँघा, ९, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता-७००००७

बलु प्रतापु बीरता बड़ाई । १-२६५।७
बसइ नगर जेहिं लच्छि करि । १-२८९।०
बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा । १-३२५।५
बस्तु अनेक निछावरि होहीं । १-३४९।५
बस्तु सकल राखीं नृप आगें । १-३०५।२
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं । १-३०५।५
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । ५-२२।४
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें । २-३१९।८
बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा । २-२२२।७
बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा । १-१४२।३
बसहिं तहाँ सुकृती सकल । १-१०५।०
बसहिं नगर सुंदर नर नारी । १-१२९।१
बसहु आजु अस जानि तुम्ह । १-१५९।क
बसहु निरंतर तासु मन । २-१३१।०
बसि तरु तर नित सहत हिम । २-२११।०
बहइ न हाथु दहइ रिस छाती । १-२७९।१
बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा । ७-२।१०
बहु आयुध धर सुभट सब । ६-४२।०
बहु कृपान तरवारि चमंकहिं । ६-८६।३
बहु छल बल सुग्रीव कर । ४-८।०
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि । १-९२।१२
बहुतक चढ़ी अटारिन्ह । ७-३।ख
बहु दाम सँवारहिं धाम जती । ७-१००।१
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं । १-२७०।७
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । ४-२३।२
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । ६-१०६।४
बहु प्रकार तेहिं ग्यान सुनावा । ४-२७।६
बहु प्रकार भूषन पहिराए । ६-१०७।७
बहु प्रकार मारन कपि लागे । ५-५१।५

बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । ४-२२।११
बहु प्रकार संकरहि सराहा । १-७५।६
बहु भट बहहि चढ़े खग जाहीं । ६-८७।६
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन । १-९६।१२
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल । ५-२।१५
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए । ७-१३।९
बहु रंग कंज अनेक खग । ७-२८।११
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी । १-१०३।२
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं । ७-२६।८
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । ७-१०३।४
बहु राम लछिमन देखि मर्कट । ६-८८।९
बहु बासना मसक हिमि रासिहि । ७-२९।९
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि । १-१२०।क
बहुबिधि करत मनोरथ । १-२०६।०
बहु बिधि कर बिलाप जानकी । ६-९८।११
बहुबिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा । १-३५१।५
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । ५-८।३
बहुबिधि चेरिहि आदरु देई । २-२२।४
बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काला । १-१३१।३
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । २-५६।६
बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी । १-३५३।८
बहुबिधि भूप सुता समुझाईं । १-३३८।१
बहुबिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु । १-१३८।०
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । ७-८७।५
बहुबिधि राम सिवहि समुझावा । १-७५।७
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन । ६-६०।१७
बहु बिधि संभु सासु समुझाई । १-१०१।१
बहु बिलाप दसकंधर करई । ६-७१।४
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा । १-२९६।८

बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई । ७-४५।४
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । २-१०१।६
बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ । २-१०२।०
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई । २-२४७।८
बहुत दिवस गुर दरसनु पाएँ । ३-११।२
बहुत दिवस बीते एहि भाँती । १-३३१।५
बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । ६-१६।७
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । २-२५५।६
बहुरि आइ देखा सुत सोई । १-२००।६
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई । २-१२२।३
बहुरि कहहु करुनायतन । १-११०।०
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना । १-९०।२
बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा । १-३२०।१
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । १-२३३।२
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । २-१५९।६
बहुरि निहारि निषाद सनेहू । २-२६१।६
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी । १-३३३।८
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं । १-३५२।५
बहुरि महाजन सकल बोलाए । १-२८६।३
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई । १-२००।४
बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ । १-९९।०
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाईं । १-९९।५
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । ७-६४।१
बहुरि राम अस मन अनुमाना । ३-२।२
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी । ५-४४।३
बहुरि राम जानकिहि देखाई । ६-११९।५
बहुरि राम पद पंकज धोए । १-३२७।५
बहुरि राममायहि सिरु नावा । १-५५।५
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । २-११०।३
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । २-१७०।८
बहुरि बच्छ कहि लालु कहि । २-६८।०
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी । २-११६।६
बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन । १-३२४।१०
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं । १-३३९।४
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं । २-२६४।३
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं । १-२३६।८
बहुरि बिभीषन भवन सिधायो । ६-११६।३
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । ७-६५।८
बहुरि बिलोकि बिदेह सन । १-२६९।०
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । १-५४।७
बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ । १-३।१
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही । १-३।१०
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाईं । १-८९।२
बहुरि सपरिजन भरत कहुँ । २-२१४।०
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । २-५४।६
बहुरि सोचबस भे सियरवनू । २-२२६।१
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । १-३६०।३
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । १-२७९।४
बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु । १-२२७।०
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं । २-८२।८
बागुर बिषम तोराइ मनहुँ । २-७५।०
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । ५-२४।७
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । ६-४०।२
बाजहिं ताल पखाउज बीना । ६-९।९
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । ६-१२।७
बाजहिं बहु बाजने सुहाए । १-२६२।२
बाजहिं बाजने बिबिध प्रकारा । १-३१७।५
बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना । २-१०।१

सौजन्य-श्री राज कुमार गोयनका, ४३, एन.एस.रोड, कलकत्ता-७०000१

बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना । १-१००।५
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । ६-४०।३
बाजार रुचिर न बनइ बरनत । ७-२७।९
बाजिबिरह गति कहि किमि जाती । २-१४२।८
बाजे नभ गहगहे निसाना । १-२६१।४
बाढ़े खल बहु चोर जुआरा । १-१८३।१
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई । २-३०५।६
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । २-२७।८
बातन्ह मनहि रिझाइ सठ । ५-५६।क
बातहिं बात करष बढ़ि आई । ६-१७।४
बातुल भूत बिबस मतवारे । १-११४।७
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन । ७-९९।ख
बादि गलानि करहु मन माहीं । २-२०४।८
बादि बसन बिनु भूषन भारू । २-१७७।४
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । २-२२९।२
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । ६-३।१
बाँधे घाट मनोहर । ७-२८।०
बाँधें बिरद बीर रन गाढ़े । १-२९८।१
बाँधा सेतु नील नल नागर । ६-२।७
बाँध्यो बननिधि नीरनिधि । ६-५।०
बान प्रताप जान मारीचा । ६-३५।९
बानर कटक उमा मैं देखा । ४-२१।१
बानर तनु धरि धरि महि । १-१८७।०
बानर निसाचर निकर मर्दहिं । ६-८७।१३
बानर भालु सकल हरषाने । ६-११६।२
बापीं कूप सरित सर नाना । १-२११।६
बापीं तड़ाग अनूप कूप । ७-२८।९
बाम भाग सोभति अनुकूला । १-१४७।२
बामदेउ अरु देवरिषि । १-३३०।०
बामदेव आदिक रिषय । १-३२०।०
बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी । १-३६०।१
बामदेउ बसिष्ठ तब आए । २-१६८।७
बामदेव बसिष्ट मुनिनायक । ७-४।२
बायस तन रघुपति भगति । ७-५३।०
बायस पलिअहिं अति अनुरागा । १-४।२
बारक राम कहत जग जेऊ । २-२१६।४
बार बार अस्तुति करि । ७-३५।०
बार बार अस कहइ कृपाला । ६-२९।३
बार बार कर दंड प्रनामा । ७-१८।३
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । ६-१११।८
बार बार करि बिनय बड़ाई । १-३४२।१
बार बार कह राउ । २-२५।०
बार बार कौसल्या । १-२०२।०
बार बार कौसिक चरन । १-३३१।०
बार बार गहि चरन सँकोची । २-११।५
बार बार नाएसि पद सीसा । ५-१६।५
बार बार नारद मुनि आवहिं । ७-४१।४
बार बार नावइ पद सीसा । ४-६।१४
बार बार निज सपथ देवाई । २-१५१।८
बार बार पचार हनुमाना । ६-५०।४
बार बार पद लागउँ । ५-३९।क
बार बार प्रभु चहइ उठावा । ५-३२।१
बार बार प्रभु पद सिरु नाई । ३-३५।१३।
बार बार बर मागउँ । ७-१४।क
बार बार बिनती सुनि मोरी । १-२५६।८
बार बार बिनवउँ मुनि तोही । १-१२६।७
बार बार बिरिदावलि भाषी । १-३३९।३
बार बार बूझी कुसलाता । ७-११।२

बार बार मागऊँ कर जोरें । १-३४१।५
बार बार मिलि भेंटि सिय । २-२८७।०
बार बार मुख चुंबति माता । २-५१।३
बार बार मुनि अग्या दीन्ही । १-२२५।६
बार बार मुनि बिप्रबर । १-२८२।०
बार बार मृदु मूरति जोही । २-६६।६
बार बार रघुनायकहि । ७-१९।क
बार बार रघुबीर सँभारी । ५-०।६
बार बार सनमानहिं रानी । १-३२१।७
बार बार सब लागहिं पाएँ । २-११५।५
बार बार सिर नावहिं । ६-१०६।०
बार बार हिलि मिलि दुहु भाईं । २-३१९।५
बारंबार सकोप मुनि । ७-१११।क
बार सहस्त्र सहस्त्र नृप । १-१५५।०
बारहिं बार आरती करहीं । १-३४९।४
बारहिं बार जोरि जुग पानी । २-७९।७
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही । २-६८।७
बारहिं बार लेति उर लाई । १-७१।७
बारहिं बार सनेह बस । १-३१०।०
बारहिं बार सनेह बस । २-७६।०
बारहिं बार सुता उर लाईं । १-३३७।८
बारि मथें घृत होइ बरु । ७-१२२।क
बारि बिलोचन बाँचत पाती । १-२८९।४
बारिज लोचन मोचत बारी । २-३१६।६
बारिदनाद जेठ सुत तासू । १-१७९।७
बारिधि नाघि एक कपि आवा । ६-८।२
बारेहि ते निज हित पति जानी । १-१९७।३
बालचरित अति सरल सुहाए । १-२०३।१
बालचरित कहि बिबिध बिधि । ७-६४।०
बालचरित चहु बंधु के । १-४०।०
बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा । १-२०२।१
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । १-२७१।६
बालबिनय सुनि करि कृपा । १-३।०
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि । १-१४।ग
बालबिनोद करत रघुराई । ७-७५।४
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा । १-२७४।४
बाल बुझाए बिबिध बिधि । १-१५।०
बाल सखा सुनि हियँ हरषाहीं । २-२३।१
बालक बृद्ध बिहाइ गृहँ । २-८४।०
बालक बृंद देखि अति सोभा । १-२१८।२
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही । १-२७१।५
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । ७-७२।६
बालकरूप राम कर ध्याना । ७-११२।७
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । ७-१७।६
बालमीक नारद घटजोनी । १-२।३
बालमीक प्रभु मिलन बखाना । ७-६४।४
बालमीकि मन आनँदु भारी । २-१२४।५
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । २-१२७।२
बालि एक सर मार्‍यो । ६-३६।०
बालितनय कौतुक अति मोही । ६-३७।५
बालितनय बुधि बल गुन धामा । ६-१६।६
बालितनय मारुति नल नीला । ६-९७।३
बालि न कबहुँ गाल अस मारा । ६-३३।६
बालि परम हित जासु प्रसादा । ४-६।११
बालि बिमल जस भाजन जानी । ६-२३।११
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । ४-५।८
बालि त्रास ब्याकुल दिन राती । ४-११।३
बाली ताहि मारि गृह आवा । ४-५।१०

सौजन्य - श्री गीगराज अग्रवाल, पी-३८ कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

बास करहु तहँ रघुकुल राया । ३-१२।१७
बासुदेव पद पंकरुह । १-१४३।०
बाहन अपर अनेक बिधाना । १-२९९।३
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं । ७-१०४।६
बाहेर होइ देखि बहु कीसा । ४-२६।२
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । १-९५।४
बिकट भृकुटि कच घूघरवारे । १-२३२।४
बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । ७-७६।६
बिकल बिलोकि कीस उर लावा । ६-५८।३
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए । ६-६८।८
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा । २-१५०।५
बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । २-१६०।१
बिकल सनेहँ सीय सब रानीं । २-२४६।१
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । ५-३।७
बिकसे सरन्हि बहु कंज। १-८५।११
बिकसे सरसिज नाना रंगा । ३-३९।१
बिकसे संत सरोज सब । १-२५४।०
बिगत काम मम नाम परायन । ७-३७।५
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । १-२३६।६
बिगत बिषाद निषादपति । २-११०।०
बिगत निसा रघुनायक जागे । १-२३७।६
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी । १-२८५।४
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । १-३९।६
बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि । १-७५।०
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह । ६-९९।१४
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं । १-४।४
बिछुरत दीनदयाल प्रिय । १-१६।०
बिजई समर बीर बिख्याता । १-१२१।७
बिजय बिबेक बिभूति नित । ६-१२१।क
बिजय हेतु कटकई बनाई । १-१५३।५
बिटप बिसाल लता अरुझानी । ३-३७।१
बिटप बेलि तृन अगनित जाती । २-२४८।७
बिटप महीधर करहिं प्रहारा । ६-९७।४
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा । ६-११।३
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू । २-२९५।७
बिद्यमान रन पाइ रिपु । १-२७४।०
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला । १-२०३।६
बिद्या बिनु बिबेक उपजाएँ । ३-२०।९
बिदा किए करि बिनय निषादा । २-१४६।२
बिदा किए बटु बिनय करि । २-१०९।०
बिदा किए सिर नाइ सिधाए । २-१३६।३
बिदा कीन्ह करुनायतन । २-१०२।०
बिदा कीन्हि भगवान तब । ७-१८।ख
बिदा कीन्ह सजि पालकी । २-३१९।०
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । २-३२०।१
बिदा मातु सन आवउँ मागी । २-४५।४
बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा । १-२४१।१
बिंध्याचल गभीर बन गयऊ । १-१५५।४
बिंधि मुदित मन सुखु न समाई । २-१३७।८
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । १-२५७।५
बिधि कैकई किरातिनि कीन्ही । २-८३।३
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद । २-२८७।६
बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । २-२६०।१
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । १-१।९
बिधि बस भयउ बिस्व उपकारू । २-३०९।६
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । १-२।१०
बिधि बाम की करनी कठिन । २-२००।९
बिधि बिसमय दायकु बिभव । २-२१४।०

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी । १-२।११
बिधि हरि हर तप देखि अपारा । १-१४४।२
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ । १-३२०।६
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो । १-१८।२
बिधि हरि हर माया बड़ि भारी । २-२९४।५
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला । २-२५३।६
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा । २-१७२।७
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । १-२८६।८
बिधिहि भयउ आचरजु बिसेषी । १-३१३।८
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं । २-४३।६
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । २-१६१।४
बिधु बिष चवै स्रवै हिमु आगी । २-१६८।२
बिधु महि पूर मयूखन्हि । ७-२३।०
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी । १-९।४
बिधुबदनीं सब सब मृगलोचनि । १-३१७।१
बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि । १-२९६।२
बिनु गुर होइ कि ग्यान । ७-८९।क
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । २-२६१।५
बिनती करउँ जोरि कर रावन । ५-२१।७
बिनती करि मुनि नाइ सिरु । ३-४।०
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी । १-२१०।११
बिनती बहुत करौं का स्वामी । २-६५।८
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । १-३४१।८
बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । २-९६।१
बिनती सचिव करहिं कर जोरी । २-४।५
बिनय करत गदगद गिरा । ७-१३।ख
बिनय करत गदगद स्वर । ७-१०७।ख
बिनय कीन्हि उर अति अनुरागें । १-३५२।१
बिनय कीन्हि चतुरानन । ६-१११।०
बिनय न मान खगेस सुनु । ५-५८।०
बिनय न मानत जलधि जड़ । ५-५७।०
बिनय प्रेम बस भई भवानी । १-२३५।५
बिनय सील करुना गुन सागर । १-२८४।३
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि । ४-१५।ख
बिनु अवसर भय तें रह जोई । ३-४।१५
बिनु कारन दीन दयाल हितं । ६-११०।११
बिनु गुर होइ कि ग्यान । ७-८९।क
बिनु घन निर्मल सोह अकासा । ४-१५।९
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू । १-१०३।६
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । ७-८९।५
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । १-११७।५
बिनु प्रयास सागर तरिहि । ५-५०।०
बिनु प्रयास हनुमान उठायो । ६-७६।१
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । २-२६१।५
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं । २-२२६।७
बिनु पूछें मगु देहिं दिखाई । ६-१७।१०
बिनु फर बान राम तेहि मारा । १-२०९।४
बिनु फर सायक मारेउ । ६-५८।०
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि । १-८७।०
बिनु बिग्यान कि समता आवइ । ७-८९।३
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू । १-२४८।४
बिनु बिस्वास भगति नहिं । ७-९०।क
बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला । १-२४४।३
बिनु रघुपति पद पदुम परागा । २-९७।६
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू । २-१७८।६
बिनु सतसंग न हरि कथा । ७-६१।०
बिनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ । ७-११३।३
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । ३-४।१८

सौजन्य - श्री महेश कुमार अग्रवाल, पी-३५, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

बिनु सतसंग बिबेक न होई । १-२।७
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू । २-२६०।६
बिनु संतोष न काम नसाहीं । ७-८९।१
बिनु हरि कृपा न होइ सो । ७-१२५।ख
बिनु हरि भजन न भव तरिअ । ७-१२२।क
बिपति काल कर सतगुन नेहा । ४-६।६
बिपति बीजु बरषा रितु चेरी । २-२२।५
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । ३-२८।५
बिपति हमारि बिलोकि बड़ि । २-११।०
बिपिन गवन केवट अनुरागा । ७-६४।३
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना । १-९२।८
बिपुल बाजने बाजन लागे । १-३४७।३
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । २-२३५।२
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । २-५०।६
बिपुल बिहग बन परेउ निसि । २-१५३।०
बिपुल सुमन सुर बरषहिं । ३-२७।०
बिप्र एक बैदिक सिव पूजा । ७-१०४।३
बिप्रकाजु करि बंधु दोउ । १-२२१।०
बिप्र गिरा सुनि परहित सानी । ७-१०८।२
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना । २-१५६।७
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा । ७-३९।८
बिप्र धेनु सुर संत हित । १-१९२।०
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । ७-९९।८
बिप्र बधू कुलबृद्ध बोलाईं । १-३२१।४
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी । २-४८।३
बिप्रबधू सब भूप बोलाईं । १-३५२।४
बिप्र बिबेकी बेदबिद । २-१४४।०
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू । १-१७२।६
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना । २-१८६।६
बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भाईं । १-३०७।६
बिप्रबृंद सब सादर बंदे । १-२१४।२
बिप्रबंस कै असि प्रभुताई । १-२८३।५
बिप्रबेष देखत फिरहिं । १-१३३।०
बिप्र बेष धरि बेद सब । १-३२३।०
बिप्रभवँन सुरभवन सुहाए । १-१५४।८
बिप्र महाजन सचिव सब । २-२५३।०
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ । ४-०।६
बिप्र रूप धरि पवनसुत । ७-१।क
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए । ५-५।५
बिप्र सहित परिवार गोसाईं । २-२।४
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । २-६।२
बिप्र श्राप तें दूनउ भाई । १-१२१।५
बिप्र श्राप बिनु सुनु महिपाला । १-१६४।६
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन । १-३१२।०
बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे । ७-११।७
बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा । १-१७३।५
बिफल होहिं सब उद्यम ताके । ६-९१।४
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती । ७-६६।२
बिबरन भयउ न जाइ निहारी । २-१४४।५
बिबरन भयउ निपट नरपालू । २-२८।६
बिबस होइ हरिजान । ७-११५।ख
बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं । १-११८।३
बिबिधि कथा कहि कहि मृदु बानी । २-१४२।३
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ । ७-३०।५
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । ४-१४।११
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने । १-१३९।४
बिबिध बसन उपधान तुराईं । २-९०।१
बिबिध बिधान बाजने बाजे । १-३४५।३

सौजन्य - श्री अरुण गुप्त, २, गणेशचंद्र एवेन्यू, कलकत्ता-७०००१३

बिबिध बिलाप करति बैदेही । ३-२८।४
बिबिध बेष धरि करइ लराई । ६-७५।१२
बिबिध भाँति परितोषु करि । १-१०२।०
बिबिध भाँति फूले तरु नाना । ३-३७।३
बिबिध भाँति भूषन बसन । २-११९।०
बिबिध भाँति भोजन करवावा । १-२०६।४
बिबिध भाँति मेवा पकवाना । १-३३२।४
बिबिध भाँति मंगल कलस । १-३४४।०
बिबिध भाँति होइहि पहुनाई । १-३१०।१
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा । १-१७२।३
बिबिधायुध धर निसिचर धाए । ६-४८।१०
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा । १-९८।७
बिबिधि भाँति बाहन रथ जाना । ६-७८।२
बिबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । ७-११०।७
बिबुध बधू नाचहिं मुदित । १-३४७।०
बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी । २-२९४।३
बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन । १-१४।६
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं । २-१३७।३
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की । २-३२०।७
बिभव भेद कछु कोउ न जाना । १-३०६।२
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा । १-३४।६
बिमल कथा हरि पद दायनी । ७-५१।५
बिमल ग्यान जल जब सो नहाई । ७-१२१।११
बिमल बिबेक धरम नय साली । २-२९६।८
बिमल बंस यहु अनुचित एकू । २-९।७
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा । १-२२६।८
बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिं । १-१२९।०
बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ । ७-५३।०
बिरति चर्म असि ग्यान मद । ७-१२०।ख

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना । ३-४५।५
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी । ७-१४।७
बिरिद बाँधि बर बीरु कहाई । २-१४३।८
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । ५-३०।७
बिरह बिकल नर इव रघुराई । १-४८।७
बिरह बिकल बलहीन मोहि । ३-३७।क
बिरहवंत भगवंतहि देखी । ३-४०।५
बिरही इव प्रभु करत बिषादा । ३-३६।२
बिलग बिलग होइ चलहु सब । १-९२।०
बिलग होइ रसु जाइ । १-५७।ख
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा । २-३६।५
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती । २-१५४।३
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी । २-१५५।५
बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई । २-१६६।१
बिष बाटिकाँ कि सोह सुत । २-५९।०
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । १-२४६।६
बिष संजुत कर निकर पसारी । ६-११।१०
बिषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । ७-५२।४
बिषई जीव पाइ प्रभुताई । २-२२७।१
बिषई साधक सिद्ध सयाने । २-२७६।३
बिष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । ६-५१।३
बिष्नु कहा अस बिहसि तब । १-९२।०
बिष्नु कोटि सम पालन कर्ता । ७-९१।६
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी । १-२१९।७
बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी । १-५०।१
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसुकाने । १-९२।२
बिष्नु बिरंचि आदि सुरब्राता । १-९१।७
बिष्नु बिरंचि महेसु बिहाई । १-६०।२
बिषम बियोगु न जाइ बखाना । २-८५।८

बिषम बिषाद तोरावति धारा । २-२७५।३
बिषय अलंपट सील गुनाकर । ७-३७।१
बिषय करन सुर जीव समेता । १-११६।५
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । ७-१२१।४
बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । ४-२०।३
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ७-१२०।३२
बिषय मनोरथ पुंज कंज बन । ६-११४।५
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । ७-११७।१६
बिस्व द्रोह रत यह खल कामी । ६-१०९।४
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी । १-१०६।७
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई । १-३५६।५
बिस्ब बिदित एक कैकय देसू । १-१५२।२
बिस्व भरन पोषन कर जोई । १-१९६।७
बिस्वमोहनी तासु कुमारी । १-१२९।४
बिस्वरूप रघुबंस मनि । ६-१४।०
बिसमयवंत देखि महतारी । १-२०१।६
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु । २-१६५।०
बिसमय हरष रहित रघुराऊ । २-११।३
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं । १-३५९।३
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी । १-३०६।६
बिस्वामित्र महामुनि आए । १-२१३।८
बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी । १-२०५।२
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई । १-२६८।६
बिस्वामित्र समय सुभ जानी । १-२५३।५
बिस्वास करि कह दास तुलसी । ३-३५।१७
बिस्वास करि सब आस परिहरि । ७-१२।११
बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं । ७-१५।१
बिसिख निकर निंसिचर मुख भरेऊ । ६-७०।२
बिहरत हृदय न हहरि हर । २-१९९।०
बिहरहिं बन चहु ओर । २-२५१।०
बिहँसतहीं मुख बाहेर । ७-८२।क
बिहँसा नारि बचन सुनि काना । ६-१५।१
बिहसि दसानन पूँछी बाता । ५-५२।३
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । ५-५५।१०
बिहसि मागु मनभावति बाता । २-२५।७
बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । १-२७२।१
बिहसे अपर भूप सुनि बानी । १-२४४।५
बिहसे करुणाऐन । २-१००।०
बिहसे लखनु कहा मन माहीं । १-२७९।८
बीच बास करि जमुनहिं आए । २-२१९।८
बीच बीच बर बास करि । १-३४३।०
बीच बीच बर बास बनाए । १-३०३।६
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी । १-१३५।४
बीतें अवधि जाउँ जौं । ६-११६।ग
बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना । ७-०।८
बीतें संबत सहस सतासी । १-५९।२
बीथीं सकल सुगंध सिंचाई । ७-८।३
बीथीं सींचीं चतुरसम । १-२९६।०
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । ६-५३।७
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा । १-२७३।८
बीर परहिं जनु तीर तरु । ६-८७।०
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे । ६-८०।८
बीर बिनीत धरम ब्रत धारी । १-२९३।७
बीर सुधीर धुरंधर देवा । २-१४९।४
बीस पयोधि अगाध अपारा । ६-२७।४
बीसहुँ लोचन अंध । ६-३३।क
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । ७-१०३।६
बुध पुरान श्रुति संमत बानी । ५-४०।१

बुध बरनहिं हरि जस अस जानी । १-१२।८
बुध बिश्राम सकल जन रंजनि । १-३०।५
बुधि बल निसिचर परइ न पार्‍यो । ६-९४।८
बुधि बल सील सत्य सब मीना । ३-४३।८
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत । ७-११७।क
बूझउँ तिन्हहि राम गुन गाहा । ७-१०९।११
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि । ७-४।१३
बूझब राउर सादर साईं । २-२६९।८
बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । ७-२५।५
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर । १-२८६।०
बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ । २-२७०।८
बूझि मित्र अरि मध्य गति । २-११२।०
बूझिअ मोहि उपाउ अब । २-२५५।०
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ५-३६।८
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना । ५-१३।२
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान । ७-४।१६
बूड़ सो सकल समाजु । १-२६१।०
बूड़हिं आनहि बोरहिं जेई । ६-२।८
बूढ़ एकु कह सगुन बिचारी । २-११९।५
बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही । ६-७३।५
बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । ६-४८।३
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ । ४-२८।०
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें । ४-१३।४
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहँ आए । ७-६२।४
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । ३-४।८
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला । १-२६७।७
बृषभ कंध केहरि ठवनि । १-२४३।०
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं । १-१९३।३
बृंदारका गन सुमन बरसिहिं । १-३२५।२१

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ । २-१९०।१
बेगि आनु जल पाय पखारू । २-१००।२
बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । १-२७९।७
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई । १-३२१।२
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । २-१८६।४
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ । ५-३१।०
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू । १-२६९।४
बेगि प्रजा दुख मेटब आई । २-६७।६
बेगि पाउ धारिअ थलहि । २-२८४।०
बेगि बिभीषन तिन्हहि सिखायो । ६-१०७।६
बेगि बिलंबु न करिअ नृप । २-४।०
बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी । १-१२८।५
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए । ६-७०।१२
बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं । २-१६७।१
बेतपानि रच्छक चहु पासा । ६-१०७।९
बेताल बीर कपाल ताल । ३-१९।१५
बेताल भूत पिसाच । ६-१००।
बेद पुरान जासु जसु गायो । ६-४७।८
बेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । ७-२५।२
बेद पुरान सुनहिं मन लाई । १-२०४।६
बेद पुरान संत मत एहू । १-२६।२
बेद बचन मुनि मन अगम । २-१३६।०
बेद बिदित कहि सकल बिधाना । २-५।५
बेद बिदित संमत सबही का । २-१७४।३
बेद बिहित अरु कुल आचारू । १-३१८।२
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । ७-११।४
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं । १-१००।४
बेदसिरा मुनि आइ तब । १-७३।०
बेदी पर मुनि साधु समाजू । २-२३८।६

बेदी बेद बिधान सँवारी । १-९९।२
बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे । १-२८७।१
बेल पाती महि परइ सुखाई । १-७३।६
बेलि बिटप तृन सफल सफूला । २-२३५।८
बेलि बिटप सब सफल सफूला । २-२७८।३
बेषु न सो सखि सीय न संगा । २-२२१।३
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । १-१३४।८
बेषु बिलोकें कहेसि कछु । १-२८१।०
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती । १-२९९।६
बैखानस सोइ सोचै जोगू । २-१७२।१
बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । ६-९।८
बैठ जाइ सिंघासन फूली । ६-३७।२
बैठ रहेसि अजगर इव पापी । ७-१०६।७
बैठारि आसन आरती करि । १-३१८।९
बैठारि परम समीप बूझी । ६-१२०।१४
बैठि नमित मुख सोचति सीता । २-५७।२
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा । २-१४६।४
बैठीं सिव समीप हरषाई । १-१०६।४
बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन । ७-४२।२
बैठे देखि कुसासन । ७-१।ख
बैठे प्रभु भ्राता सहित । १-२१७।०
बैठे परम प्रसन्न कृपाला । ३-४०।४
बैठे बजाज सराफ बनिक । ७-२७।११
बैठे बरासन रामु जानकि । १-३२४।११
बैठे राजसभाँ सब जाई । २-१७०।३
बैठे सब बट बिटप तर । २-२७७।०
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई । १-९९।४
बैठे सुर सब करहिं बिचारा । १-१८४।१
बैठे सोह कामरिपु कैसें । १-१०६।१

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । ५-३६।७
बैदेहि अनुज समेत । ६-११२।१५
बैदेहि राम प्रसाद ते जन । १-३६०।१२
बैदेही मुख पटतर दीन्हे । १-२३७।३
बैनतेय खग अहि सहसानन । ६-२५।७
बैनतेय बलि जिमि चह कागू । १-२६६।१
बैनतेय सुनु संभु तब । ७-१३।ख
बैनतेय संकर पहिं जाहू । ७-५९।७
बैर न बिग्रह आस न त्रासा । ७-४५।५
बैर बिगत बिहरत बिपिन । २-२४९।०
बैरिउ राम बड़ाई करहीं । २-१९९।७
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा । १-१५९।६
बोरति ग्यान बिराग करारे । २-२७५।१
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा । ३-३९।२
बोलत लखनहिं जनकु डेराहीं । १-२७७।४
बोलनि मिलनि सिय राम चरन । २-२५०।१०
बोलहिं खग जग आरति हेतू । ६-१०१।८
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा । ७-३८।८
बोल्लहिं जो जय जय मुंड रूंड । ६-८७।११
बोला बचन नीति अति पावन । ६-४७।६
बोला बिहसि महा अभिमानी । ५-२३।२
बोलि लिए कपि निकर बहोरी । ६-०।७
बोलि सकल सुर सादर लीन्हे । १-९९।१
बोलि सुसेवक चारि तब । २-१४३।०
बोली अपर कहेहु सखि नीका । १-२२२।१
बोलीं गिरिजा बचन बर । १-११९।०
बोली चतुर सखी मृदु बानी । १-२५५।६
बोली बचन क्रोध करि भारी । ३-२०।६
बोली सती मनोहर बानी । १-६०।८

बोले उचित बचन रघुनंदू । २-२६२।४
बोले कृपानिधान पुनि । १-१४८।०
बोले कृपासिंधु बृषकेतू । १-८७।७
बोले गुर आयस अनुकूला । २-२५८।३
बोले चितइ परसु की ओरा । १-२७१।४
बोले बचन नीति प्रतिपालक । ५-४९।४
बोले बचन बानि सरबसु से । २-३०३।७
बोले बचन बिगत सब दूषन । २-४०।६
बोले बचनु राम नय नागर । २-६९।७
बोले बामदेव सब साँची । १-३५८।७
बोले बिप्र सकोप तब । १-१७३।०
बोले बिहसि चराचर राया । १-१२७।६
बोले बिहसि महेस तब । १-१२४।क
बोले बिहसि महेसु । १-५१।०
बोले बंदी बचन बर । १-२४९।०
बोले भृगुपति सरुष हसि । १-२८२।०
बोले मधुर बचन सुरसाईं । १-१३५।५
बोले मनु करि दंडवत । १-१४५।०
बोले मनोहर बयन सानि । १-३२५।१४
बोले मुनिबरु बचन बिचारी । २-२५६।७
बोले मुनिबरु समय समाना । २-२५३।१
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । १-७७।२
बोले राउ कठिन करि छाती । २-३०।४
बोले राम सकोप तब। ५-५७।०
बोले रामु सुअवसरु जानी । १-३३५।४
बोले रामहि देइ निहोरा । १-२७७।७
बोले लखनु जोरि जुग पानी । १-२३७।८
बोले लखन मधुर मृदु बानी । २-९१।३
बोले सुचि मन अनुज सन । १-२३०।०

बोलेउ काकभसुंड बहोरी । ७-६९।१
बोलेउ प्रेम सहित गिरा । ७-१२४।ख
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु । १-२१५।०
बंचक भगत कहाइ राम के । १-११।३
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । १-१३६।६
बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । १-१५।१
बंदउँ अवध भुआल। १-१६।०
बदउँ किंनर रजनिचर । १-७।घ
बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । १-१५।४
बंदउँ खल जस सेष सरोषा । १-३।८
बंदउँ गुरु पद कंज । १-०।५
बंदउँ गुरु पद पदुम परागा । १-०।१
बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि । १-१४।ड़
बंदउँ बालरूप सोइ रामू । १-१११।३
बंदउँ बिधि पद रेनु । १-१४।च
बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । १-१।३
बंदउँ पद धरि धरनि सिरु । १-१०९।०
बंदउँ पद सरोज सब केरे । १-१७।४
बंदउँ मुनि पद कंजु । १-१४।घ
बंदउँ लछिमन पद जलजाता । १-१६।५
बंदउँ सब के चरन सुहाए । १-१७।२
बंदउँ सब के पद कमल । १-७।ग
बंदउँ सीता राम पद । १-१८।०
बंदउँ संत असज्जन चरना । १-४।३
बंदउँ संत समान चित । १-३।क
बंदत चरन करत प्रभु सेवा । १-५३।८
बंदनवार पताका केतू । ७-८।२
बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । ६-१७।१
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । १-१५०।४

बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे । १-२५४।७
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु । २-७९।०
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता । १-३५७।७
बंदि बंदि पग सिय सबही के । २-२४५।३
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । १-३५७।६
बंदि राम पद बारहिं बारा । ५-५६।१२
बंदि राम सिय चरन सुहाए । २-७५।२
बंदी बेद पुरान गन कहहिं । २-१०५।०
बंदी बेष बेद तब । ७-१२।ख
बंदी मागध सूतगन । १-२६२।०
बंध मोच्छ प्रद सर्बपर । ३-१५।०
बंधन काटि गयो उरगादा । ७-५७।५
बंधु कहइ कटु संमत तोरें । १-२८०।१
बंधु सदा बिलोकि दुख कीन्हा । ६-१०४।५
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । २-३१५।२
बंधु बचन सुनि चला बिभीषन । ६-६४।१
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । १-२३८।७
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । ६-६३।९
बंधु मनोहर सोहहि संगा । १-३१५।५
बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई । १-२०४।१
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । २-२३९।४
बंधु समेत जनकु तब आए । १-३३७।४
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । ७-१११।३

भ

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी । २-९१।१
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । २-७५।६
भइ मम कीट भृंग की नाई । ३-२४।७
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । १-११८।८
भईं बिकल अबला सकल । १-९६।०
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं । २-११६।८
भए अजस अघ भाजन प्राना । २-१४३।५
भए कामबस जोगीस तापस । १-८४।९
भए कालबस जब पितु माता । ७-१०९।९
भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति । ६-९०।९
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । ३-१९।४
भए कुमार जबहिं सब भ्राता । १-२०३।३
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें । १-१३।६
भए तुरत सब जीव सुखारे । १-८५।३
भए निसाचर जाइ । १-१२२।०
भए प्रगट कृपाला दीन । १-१९१।१
भए परसपर प्रेमबस फिरि । १-३४२।०
भए प्रेमबस सचिव सुनि । १-३३२।०
भए बरन संकर कलि । ७-१००।क
भए बहुत दिन अति अवसेरी । २-६।६
भए बिकल खग मृग एहि भाँती । १-३३७।३
भए बिकल बानर भालु । ६-१००।८
भए बिगतश्रम रामु सुखारे । २-१०६।४
भए बिलोचन चारु अचंचल । १-२२९।४
भए बिसुद्ध दिए सब दाना । २-१६९।८
भए बिसोक कोक मुनि देवा । १-२५४।३
भए मगन छबि तासु बिलोकि । १-४९।८
भए मगन देखत मुख सोभा । १-२०६।६
भए मगन मन तन बचन । २-३१७।०
भए मगन सब देखनिहारे । १-३२४।६
भए मगन सिव सुनत सनेहा । १-८९।३
भए लोग सब मोहबस । ७-९७।ख
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । १-२१४।७
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू । २-१६८।३

भक्त कल्पपादप आराम: । ३-१०।१३
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव । ५-श्लोक-२।३
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । ७-४४।५
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना । १-१४५।८
भगत बछलता प्रभु कै देखी । ७-८२।७
भगत कल्पतरु प्रनत हित । ७-८४।ख
भगत भूमि भूसुर सुरभि । २-९३।०
भगत सिरोमनि भरत तें । २-२१९।०
भगत हेतु नाना बिधि । १-२०५।०
भगत हेतु भगवान प्रभु । ७-७२।क
भगतिहि ग्यानिहि नहिं कछु भेदा । ७-११४।१३
भगतिहि सानुकूल रघुराया । ७-११५।५
भगति करत बिनु जतन प्रयासा । ७-११८।८
भगति कि साधन कहउँ बखानी । ३-१५।५
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । ७-८४।७
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । १-११०।२
भगति ग्यानु बैराग्य जनु । २-३२१।०
भगति जोग सुनि अति सुख पावा । ३-१६।१
भगति तात अनुपम सुखमूला । ३-१५।४
भगति निरूपन बिबिध बिधाना । १-३६।१३
भगति पच्छ हठ करि रहेउँ । ७-११४।ख
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई । ७-४५।८
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । ७-८५।१०
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । १-१८८।६
भगति सुतिय कल करन बिभूषन । १-१९।६
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । ७-८३।५
भगति हीन नर सोहइ कैसा । ३-३४।६
भगति हीन बिरंचि किन होई । ७-८५।९
भगति हेतु बहु कथा पुराना । १-२०९।८
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई । १-१०।४
भगति हेतु सोइ दीनदयाला । १-२२४।५
भजन हीन सुख कवने काजा । ७-८३।६
भजसि न मन तेहि राम । ६-०।१
भजहि राम तजि काम मद । ३-४६।ख
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । ७-२९।२
भजहु राम पद पंकज । ७-११९।क
भजहु राम रघुनायक । ५-२३।०
भजहु राम रघुबीर । ७-९०।ख
भजामि ते पदांबुजं । ३-३।२
भजामि भाव वल्लभं । ३-३।१९
भजि रघुपति करु हित आपना । ६-५५।५
भजिअ राम तजि काम सब । ७-१०४।क
भजे सशक्ति सानुजं । ३-३।१२
भट कटत तन सत खंड । ३-१९।११
भट कपाल करताल बजावहिं । ६-८७।८
भट गिरत रथ ते बाजि गज । ६-७७।११
भट जम नियम सैल रजधानी । २-२३४।७
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । १-९।३
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । १-९।१०
भनिति मोरि सब गुन रहित । १-९।०
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती । १-१४।९
भय अरु प्रीति नीति देखराई । ४-१८।७
भय आतुर कपि भागन लागे । ६-४२।१
भय उचाट बस मन थिर नाहीं । २-३०१।५
भयदायक खल कै प्रिय बानी । ३-२३।८
भय देखाइ लै आवहु । ४-१८।०
भयउ ईस मन छोभु बिसेषी । १-८६।४
भयउ कालबस काहु न माना । ६-८५।२

सौजन्य - श्रीमती कमला देवी मंत्री चैरिटी ट्रस्ट, १५/ए, हेमंत बसु सरणी, कल - १

भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । ६-९७।१४
भयउ कोलाहलु अवध अति । २-१५३।०
भयउ कोलाहल नगर मझारी । ६-१७।८
भयउ कोलाहल हय गय गाजे । १-३०१।५
भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन । २-१३।३
भयउ तासु मन परम उछाहा । ७-६३।६
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी । २-३।८
भयउ तेजहत श्री सब गई । ६-३४।४
भयउ न अहइ न अब होनिहारा । २-१७२।६
भयउ न नारद मन कछु रोषा । १-१२६।१
भयउ निमिष महँ अति अँधिआरा । ६-४५।११
भयउ निषादु बिषादबस । २-१४३।०
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा । १-१६२।४
भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ६-४६।४
भयउ पाखु दिन सजत समाजू । २-१८।३
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । १-२७९।२
भयउ बिकल बरनत इतिहासा । २-१५४।५
भयउ बिषादु निषादहि भारी । २-९१।२
भयउ मनोरथ सुफल तव । १-७४।०
भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । १-९७।८
भयउ रसोईं भूसुर माँसू । १-१७२।७
भयउ राम पद नेह तव । ७-६८।०
भयउ समउ अब धारिअ पाऊ । १-३१२।७
भयउ समय जेहि हेतु जेहि । १-४७।०
भयउ हृदयँ आनंद उछाहू । १-३८।१०
भयो अति कोलाहल बिकल कपि । ६-८१।११
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर । १-३२३।१८
भरत अनुज सौमित्रि समेता । ७-१८।१
भरत अमित महिमा सुनु रानी । २-२८८।२
भरतु अवधि सनेह ममता की । २-२८८।६
भरत अत्रि अनुसासन पाई । २-३०९।१
भरत आइ आगें भइ लीन्हें । २-२९१।७
भरत आगमनु सकल मनावहिं । २-१०।२
भरतु कमल कर जोरि । २-१७६।०
भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई । २-२५८।८
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । २-१९६।७
भरतु कि राउर पूत न होंही । २-२९।२
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । २-२२८।२
भरत कुसल पूँछि न सकहिं । २-१५८।०
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा । २-३०९।७
भरत चरन सिरु नाइ तुरित । ७-२।ख
भरत चरित करि नेमु । २-३२६।०
भरत चरित कीरति करतूती । २-२८७।७
भरतु जनकु मुनिजन सचिव । २-३०२।०
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू । २-१८५।२
भरत तीसरे पहर कहँ । २-२०३।०
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई । २-१६२।८
भरत दरसु देखत खुलेउ । २-२२३।०
भरत दसा तेहि अवसर कैसी । २-२३३।७
भरत दसा सुमिरत मोहि । ६-११६।क
भरत दीख बन सैल समाजू । २-२३४।२
भरत दीन्ह निज बसन डसाई । ७-४९।६
भरत दुखित परिवारु निहारा । २-१५८।४
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । २-२३८।२
भरत धन्य कहि धन्य सुर । २-२०५।०
भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । २-२०९।६
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । २-४८।५
भरत न राजनीति उर आनी । २-१८८।६

सौजन्य- श्रीमती कमला देवी मंत्री चैरिटी ट्रस्ट, १८/ए, हेमंत बसु सरणी, कल-१

भरत नयन भुज दच्छिन । ७-०।४
भरतु नीति रत साधु सुजाना । २-२२७।२
भरत पयादेहिं आए आजू । २-२०३।२
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई । २-३०२।४
भरत प्रेमु तेहि समय जस । २-२२५।०
भरत बचन मुनिबर मन भाए । २-२१२।४
भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे । २-१८३।१
भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे । २-२६९।१
भरत बचन सुनि देखि सनेहू । २-२५६।१
भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । २-२९३।१
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू । २-१९७।८
भरत बचन सुनि माझ त्रिबेनी । २-२०४।६
भरत बचन सुनि मुनि सुखु पाई । २-२११।७
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । २-१७०।४
भरत बाहु बल सील गुन । ६-६०।ख
भरत बिनय सादर सुनिअ । २-२५८।०
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ । २-३००।८
भरत बिनय सुनि सबहि प्रसंसी । २-३१३।८
भरत बिबेक बराहँ बिसाला । २-२९६।४
भरत बिमल जसु बिमल बिधु । २-३०३।०
भरत भगति तुम्हरें मन आई । २-२६५।२
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू । २-१८९।४
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । ७-१०।६
भरत महा महिमा जलरासी । २-२५६।२
भरत मातु पद बंदि प्रभु । २-३१९।०
भरत मुदित अबलंब लहे तें । २-३१५।८
भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । २-१२।५
भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । २-२५६।५
भरत रहनि समुझनि करतूती । २-३२४।७
भरत रहनि सुरपति सुत करनी । ७-६४।८
भरत राज रघुबर बनबासू । २-२७०।४
भरत राम की मिलनि लखि । २-२४०।०
भरत राम गुन ग्राम सनेहू । २-३०८।३
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता । २-२१६।५
भरत राम संबादु सुनि । २-३०८।०
भरतु रामही की अनुहारी । १-३१०।६
भरत श्रवन मन सूल सम । २-१५९।०
भरत सकल साहनी बोलाए । १-२९७।३
भरत सनेह सील ब्रत नेमा । ७-७।३
भरत सनेह सुभाउ सुबानी । २-३२०।४
भरत सपथ तोहि सत्य । २-१५।०
भरत सरिस को राम सनेही । २-२१७।८
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । २-६।७
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । १-३०७।७
भरत सत्रुहन दूनउ भाई । १-१९७।४
भरत सत्रुहन दोनउ भाई । ७-२५।४
भरत सील गुन बिनय बड़ाई । २-२८२।३
भरत सील गुर सचिव समाजू । २-३१५।३
भरत सुजान राम रुख देखी । २-३१२।५
भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । २-३०३।१
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं । २-२२६।४
भरत सुभाउ सीलु बिनु बूझें । २-१९१।८
भरत सुभाउ सुसीतलताई । १-४१।८
भरत हृदयँ सिय राम निवासू । २-२९४।७
भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू । २-४१।१
भरतु बंदिगृह सेइहहिं । २-१९।०
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा । २-२३१।६
भरतहि अवसि देहु जुबराजू । २-४९।२

सौजन्य - श्रीमती कमला देवी मंत्री चैरिटी ट्रस्ट, १५/ए, हेमंत बसु सरणी, कल - १

भरतहि कहहिं सराहि सराही । २-१८३।४
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । ६-१२०।२
भरतहि देखि मातु उठि धाई । २-१६३।१
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । २-२२७।८
भरतहि धरम धुरंधर जानी । २-२५८।२
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत । २-३००।११
भरतहि बहुरि सराहन लागी । २-२२१।८
भरतहि बिसरेउ पितु मरन । २-१६०।०
भरतहि भयउ परम संतोषू । २-३०६।३
भरतहि सहित समाज उछाहू । २-२२४।२
भरतहि होइ न राजमदु । २-२३१।०
भरतहुँ मातु सकल समुझाईं । २-१६६।३
भरतादि अनुज बिभीषनांगद । ७-११।११
भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । ७-५।१
भरद्वाज आश्रम अति पावन । १-४३।६
भरद्वाज आश्रम सब आए । २-१०७।६
भरद्वाज कौतुक सुनहु । १-१२७।०
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा । १-४३।१
भरद्वाज सुनि संकर बानी । १-१४०।७
भरद्वाज सुनु अपर पुनि । १-१५२।०
भरद्वाज सुनु जाहि जब । १-१७५।०
भ्रम तें चकित राम मोहि देखा । ७-७८।४
भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । ७-८१।१
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । २-१२७।५
भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । ७-३१।१
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । ३-१६।५
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी । २-२४९।२
भरि भरि बसहँ अपार कहारा । १-३३२।५
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । २-२०१।४
भरि भरि हेम थार भामिनी । ७-२।६
भरि भुवन रहा उछाहु राम । १-३२४।१३
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी । १-४९।२
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा । ७-११०।११
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । ६-१०४।३
भरे कनक कोपर कलस सो । १-३२२।१२
भरे बिलोचन प्रेम जल । १-२५७।०
भरे भुवन घोर कठोर रव रबि । १-२६०।९
भरे सुधासम सब पकवाने । १-३०४।२
भरेउ सुमानस सुथल थिराना । १-३५।९
भल अनभल निज निज करतूती । १-४।७
भल दिन आजु जानि मन माहीं । २-३१२।२
भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । ६-६२।१
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ । १-२४३।८
भले भवन अब बायन दीन्हा । १-१३६।५
भलेउ पोच सब बिधि उपजाए । १-५।३
भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा । १-१५९।१
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता । १-२१३।७
भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । २-२१२।६
भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाए । १-३३१।८
भलेहि नाथ सब कहहि सहरषा । २-१९०।२
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू । १-१३६।२
भलो भलाइहि पै लहइ । १-५।०
भव अंग भूति मसान की । १-९।१४
भव कि परहिं परमात्मा बिंदक । ७-१११।५
भव खेद छेदन दच्छ हम । ७-१२।८
भव तारन कारन काज परं । ६-११०।१२
भव प्रबाहँ संतत हम परे । ६-१०९।१२
भव पंथ भ्रमत अमित दिबस । ७-१२।६

भव बारन दारन सिंह प्रभो । ६-११०।२
भव बारिधि कुंभज रघुनायक । ७-३४।३
भव बारिधि मंदर परमं दर । ६-११४।६
भव बारिधि मंदर सब बिधि । १-१८५।१५
भव बंधन ते छूटहिं नर । ७-५८।०
भव भव बिभव पराभव कारिनि । १-२३४।८
भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं । ४-३०।क
भव भंजन गंजन संदेहा । ७-१२९।२
भव भंजन रघुनाथ भजु । १-१२४।ख
भव भंजन रंजन सुर यूथः । ३-१०।१०
भव मगु अगम अनंदु तेइ । २-१२३।०
भव श्रम सोषक तोषक तोषा । १-४२।४
भव सागर चह पार जो पावा । ७-५२।३
भव सिंधु अगाध परे नर ते । ७-१३।१०
भवन एक पुनि दीख सुहावा । ५-४।८
भवन गईं रघुपति गुन । ६-१०५।०
भवन गयउ दसकंधर । ५-१०।०
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । १-१९४।७
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं । २-७०।२
भवानीशङ्करौ वन्दे । १-श्लोक-२
भवनु भयंकरु लाग तेहि । २-१४७।०
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । ६-६८।२
भा निरास उपजी मन त्रासा । ३-१।३
भा सब कें मन मोदु न थोरा । २-१८४।१
भाइ सचिव गुर पुरजन साथा । २-२७४।१
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । १-३३५।३
भाइन्ह सहित बिआहि । १-३५०।०
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । २-२७४।८
भाइहि भाइहि परम समीती । १-१५२।७

भाइहि सौंपि मातु सेवकाई । २-११७।४
भाइहु लावहु धोख जनि । २-१९१।०
भाग छोट अभिलाषु बड़ । १-८।०
भाग हमारें आगमनु । २-१३५।०
भाग्य बिभव अवधेस कर । १-३१३।०
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । ६-४६।७
भागि भवन पैठीं अति त्रासा । १-९५।५
भागे बानर धरहिं न धीरा । ६-९५।४
भागे भालु बलीमुख जूथा । ६-६९।१
भागेउ बिबेकु सहाय सहित । १-८३।९
भाजि चले किलकत मुख । १-२०३।०
भाँति अनेक परे पकवाने । १-३२८।२
भाँति अनेक भई जेवनारा । १-९८।४
भाँति अनेक भरतु समुझाए । २-१६६।२
भाँति अनेक संभु समुझावा । १-६१।७
भाँति भाँति बोलहि बिहग । २-१३७।०
भानु कमल कुल पोषनिहारा । २-१६।७
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । १-६८।६
भानुप्रतापहि बाजि समेता । १-१७०।७
भानु पीठि सेइअ उर आगी । ४-२२।४
भानुबंस भए भूप घनेरे । २-२५४।५
भानु बंस राकेस कलंकू । १-२७३।२
भामिनि करहु न कहौं उपाऊ । २-२०।८
भामिनि भयउ तोर मनभावा । २-२६।२
भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । १-२७।१
भायप भगति भरत आचरनू । २-२२२।१
भायप भलि चहुँ बंधु की । १-४२।०
भार धरन सत कोटि अहीसा । ७-९१।८
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । १-२३२।३

सौजन्य-डॉ. इन्द्रावती सिंह, २२१ बिधान सरणी, कलकत्ता-७००००६

भाल बिसाल तिलक झलकाहीं । १-२४२।६
भालु कपिन्ह पट भूषन पाए । ६-११७।१
भालु कीस सब हरषे । ६-१०३।०
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । ६-४६।५
भालु बाघ बृक केहरि नागा । २-६१।८
भाले बालबिधुर्गले च गरलं । २-श्लो-१(२)
भाव बस्य भगवान सुख । ७-९२।ख
भाव भेद रस भेद अपारा । १-८।१०
भाव सहित खोजइ जो प्रानी । ७-११९।१५
भाव सहित सो यह कथा । ७-१२८।०
भावी बस प्रतीति उर आई । २-१८।१
भाषानिबन्धमति मंजुल । १-श्लो-७(४)
भाषाबद्ध करबि मैं सोई । १-३०।२
भाषा भनिति भोरि मति मोरी । १-८।४
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए । ७-१२।ख
भिन्न भिन्न मैं दीख सबु । ७-८१।क
भिरे उभौ बाली अति तर्जा । ४-७।२
भिरे बीर इत रामहिं । ६-७९।०
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । ६-५२।४
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति । २-२८।०
भीतर भवन दीन्ह बर बासू । १-३५१।७
भुअन अनेक रोम प्रति जासू । ७-२१।२
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । ६-९६।३
भुज जुगल फेरत सर सरासन । ६-७०।१५
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । ६-११०।१०
भुजदंड पीन मनोहरायत । ६-८५।१२
भुजदंड सर कोदंड फेरत । ६-१०२।१८
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । ५-४४।४
भुजबल जितेहु काल जम साईं । ६-१०३।८
भुज बल बिपुल भार महि खंडित । ७-५०।५
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ । १-१३८।६
भुजबल बिस्व बस्य करि । १-१८२।क
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । १-२७१।७
भुज बल रिपु दल दलमलि । ६-४५।०
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला । ६-२४।४
भुज बिसाल गहि लिए उठाई । ३-९।२२
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी । १-१९८।५
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी । १-१०५।८
भुजा बिटप सिर सृंग समाना । ६-१८।५
भुवन चारिदस भरा उछाहू । १-२९५।३
भुवन चारिदस भूधर भारी । २-०।२
भुवन भुवन देखत फिरउँ । ७-८१।ख
भूत दया द्विज गुर सेवकाई । ७-१२५।६
भूत द्रोह रत मोहबस । ६-७८।०
भूधर नख बिटपायुध धारी । ६-५२।३
भूप अनुज अरिमर्दन नामा । १-१७५।३
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । १-२८९।२
भूप धरम जे बेद बखाने । १-१५४।५
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । २-१७०।६
भूप प्रतापभानु बल पाई । १-१५४।१
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई । २-३६।४
भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्हीं । २-१६१।३
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं । १-२६६।८
भूप बचन सुनि सहज सुहाए । १-३५५।१
भूप बागु बर देखेउ जाई । १-२२६।३
भूप बिकल मति मोहँ भुलानी । १-१७२।८
भूप बिलोकि लिए उर लाई । १-३५८।१
भूप बिलोके जबहिं मुनि । १-३०७।०

सौजन्य - श्री शिवभगवान तोसनीवाल, ४ ए, गणपत बागला लेन, कलकत्ता-७

भूप भगीरथ सुरसरि आनी । २-२०८।७
भूप भरत पुनि लिए बोलाई । १-२९७।१
भूप भरतु मुनि सहित समाजू । २-२९३।४
भूप भवन किमि जाइ बखाना । १-२९६।४
भूप भवनु तेहि अवसर सोहा । १-३४४।१
भूप मनोरथ सुभग बनु । २-२८।०
भूप मौलि मनि मंडन धरनी । ७-३४।६
भूप रूप गुन सील सराही । २-२७५।८
भूप रूप तब राम दुरावा । ३-९।१८
भूप सजेउ अभिषेक समाजू । २-९।२
भूप सयानप सकल सिरानी । १-२५५।५
भूप सहस दस एकहि बारा । १-२५०।१
भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । २-१४८।१
भूपति गवने भवन तब । १-२९४।०
भूपति जिअब मरब उर आनी । २-२८१।७
भूपति तृषित बिलोकि तेहिं । १-१५८।०
भूपति बोलि बराती लीन्हे । १-३५०।४
भूपति भवन कोलाहलु होई । १-३४४।७
भूपति भवन सुभायँ सुहावा । २-८९।७
भूपति भावी मिटइ नहिं । १-१७४।०
भूपति मरन पेम पनु राखी । २-२६१।१
भूपति राम सपथ जब करई । २-२१।७
भूपहि बचन बानसम लागे । २-७८।६
भूमि जीव संकुल रहे । ४-१७।०
भूमि न छाँड़त कपि चरन । ६-३४।ख
भूमि परत भा ढाबर पानी । ४-१३।६
भूमि परा कर गहत अकासा । ५-५६।२
भूमि सप्त सागर मेखला । ७-२१।१
भूमि सयन पटु मोट पुराना । २-२४।६
भूमि सयन बलकल बसन । २-६२।०
भूर्ज तरू सम संत कृपाला । ७-१२०।१६
भूरि भाग भाजनु भयहु । २-७४।०
भूरि भायँ भेंटे भरत । २-२४१।०
भूषन कराल कपाल कर । १-९२।१०
भूषन बनमाला नयन । १-१९९।४
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे । १-३३९।२
भूषन बसन भोग सुख भूरी । २-३२३।५
भूषन बसन महामनि नाना । १-३०४।४
भूषन मनि पट नाना जाती । १-३४८।२
भूषन सकल सुदेस सुहाए । १-२४७।३
भूषन सजति बिलोकि मृगु । २-२६।०
भूषित उड़गन तड़ित घनु । १-३१६।०
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । २-३२२।३
भूसुर भीर देखि सब रानी । १-३५१।२
भूसुर सचिव समेत समाजा । १-३३८।४
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । ७-५०।४
भृकुटि बिलास जासु जग होई । १-१४७।४
भृकुटि बिलास नचावइ ताही । १-१९९।५
भृकुटि बिलास भयंकर काला । ६-१४।२
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । ३-२७।४
भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ६-६५।२
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी । १-१४६।४
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । १-२६७।७
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता । १-२६९।८
भृगुपति केरि गरब गरुआई । १-२५९।५
भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ । १-२८०।४
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । १-२७७।६
भृगुबर परसु देखावहु मोही । १-२७५।६

सौजन्य - श्री अंबिका प्रसाद भूत, १९, एन.सी.दत्ता स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००০६

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी । १-२७२।५
भे अति अहित रामु तेउ तोही । २-१६१।७
भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । २-१९३।१
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । २-३१६।४
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । ७-४।४
भेंटि भरतु रघुबर समुझाए । २-३१७।४
भेटीं रघुबर मातु सब । २-२४४।०
भेंटेउ तनय सुमित्राँ राम । ७-६।क
भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई । २-१६४।२
भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । २-२४१।१
भेद लेन पठवा दससीसा । ५-४३।६
भेद हमार लेन सठ आवा । ५-४२।७
भेरि नफीरि बाज सहनाई । ६-७८।९
भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं । ७-१२१।ख
भै अति प्रेम बिकल महतारी । १-१०१।६
भै जगबिदित दच्छ गति सोई । १-६४।३
भैया कहहु कुसल दोउ बारे । १-२९०।४
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । २-२१३।५
भोग रोगसम भूषन भारू । २-६४।५
भोगावति जसि अहिकुल बासा । १-१७७।७
भोजन करत चपल चित । १-२०३।०
भोजन करत बोल जब राजा । १-२०२।६
भोजन करिअ तृपिति हित लागी । ७-११८।९
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए । १-१७२।४
भोजन कीन्ह अनेक बिधि । १-३५४।०
भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु । १-९८।१०
भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । २-३१२।१
भोरु भएँ रघुनंदनहि जो । २-२४७।०
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा । २-२७१।६
भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं । २-२८९।०
भंजि धनुष जानकी बिआही । ६-३५।११
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा । १-२८२।६
भंजेउ चाप प्रयास बिनु । १-२९२।०
भंजेउ रथ सारथी निपाता । ६-४२।७
भंजेउ राम आपु भव चापू । १-२३।६

म

मइकें ससुरें सकल सुख । २-९६।०
मकर उरग झष गन अकुलाने । ५-५७।७
मकर नक्र नाना झष ब्याला । ६-३।५
मकरंदु जिन्ह को संभु सिर । १-३२३।१४
मख रखवारी करि दुहुँ भाई । १-३५६।२
मख राखेउ सबु साखि । १-२१६।०
मगबासी नर नारि सुनि । २-२२१।०
मगन ध्यान रस दंड जुग । १-१११।०
मघवा महा मलीन । २-३०१।०
मच्छर काहि कलंक न लावा । ७-७०।३
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता । १-२२७।५
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । २-८६।७
मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । ४-२४।३
मज्जन पान पाप हर एका । १-१४।२
मज्जन पान समेत हय । १-१५८।०
मज्जन फल पेखिअ ततकाला । १-२।१
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । १-४३।८
मज्जहिं भूत पिसाच बेताला । ६-८७।१
मज्जहिं सज्जन बृंद बहु । १-३४।०
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं । २-१६८।४
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी । ६-११।२
मत्त सहस दस सिंधुर साजे । १-३३२।७

सौजन्य- श्री इन्द्रसेन सिंघल, ३ए, मल्लिक स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

मत्सर मान मोह मद चोरा । ७-३०।६
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी । १-७।७
मति अनुरूप कथा मैं भाषी । ७-१२७।१
मति अनुसार सराहन लागे । २-३०८।५
मति अनुहारि सुबारि गुन । १-४३।क
मति कीरति गति भूति भलाई । १-२।५
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु । ६-१२०।१८
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु । १-१३५।८
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित । २-२३८।०
मद मोह महा ममता रजनी । ७-१३।६
मदन अंध ब्याकुल सब लोका । १-८४।५
मध्यदिवस अति सीत न घामा । १-१९०।२
मध्य बाग सरु सोह सुहावा । १-२२६।७
मध्यम परपति देखइ कैसें । ३-४।१३
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । ४-१२।४
मधुकर मुखर भेरि सहनाई । ३-३७।९
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि । १-३२२।११
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं । २-११७।४
मधुर मधुर गरजइ घन घोरा । ६-१२।२
मन अति हरष जनाव न तेही । ३-२५।८
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । १-७८।४
मन क्रम बचन अगोचर जोई । १-२०२।५
मन क्रम बचन कपट तजि । ३-३३।०
मन क्रम बचन चरन अनुरागी । ५-३०।४
मन क्रम बचन चरन रत होई । २-७१।६
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई । १-१९९।६
मन क्रम बचन जनित अघ जाई । ७-१२५।३
मन क्रम बचन राम पद सेवक । ३-९।२
मन क्रम बचन लबार तेइ । ७-९८।ख

मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु । ४-२२।३
मन करि बिषय अनल बन जरई । १-३४।८
मन कामना सिद्ध नर पावा । ७-१२८।५
मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु । ३-५।१२
मन गोतीत अमल अबिनासी । ७-११०।५
मनजात किरात निपात किए । ७-१३।७
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो । १-२३५।९
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही । २-२७४।४
मन ते सकल बासना भागी । ७-१०९।६
मन थिर करहु देव डरु नाहीं । २-२६५।४
मनु थिर करि तब संभु सुजाना । १-८१।४
मन पछिताति सीय महतारी । १-२६९।७
मनु प्रसन्न करि सकुच तजि । २-२६४।०
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा । २-२५५।५
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । ७-११२।३
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी । १-१८५।१२
मन बचन कर्म बिकार तजि । ७-१२।२४
मन बिहसे रघुबंसमनि । १-२६५।०
मन बुद्धि बर बानी अगोचर । १-३२२।१६
मन भावत बर मागउँ स्वामी । ७-८३।८
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं । १-३१०।८
मनु मलीन तनु सुदर कैसें । १-२७७।८
मन मलीन मुह मीठ नृपु । २-१७।०
मन महुँ करइ बिचार बिधाता । ७-५९।३
मन महुँ जात सराहत । ६-६०।ख
मन महुँ तरक करैं कपि लागा । ५-५।२
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी । ७-१।२
मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो । ६-११८।२
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे । ६-२९।४

मन महुँ सराहत भरत भायप । २-३००।१०
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू । २-४०।५
मन मंदिर तिन्ह के बसहु । २-१३०।०
मन समेत जेहि जान न बानी । १-३४०।७
मन संतोष सुनत कपि बानी । ५-१६।१
मन संतोषे सबन्हि के जहँ । १-१९६।०
मन संभव दारुन दुख दारय । ७-३४।४
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा । १-७७।५
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । ४-२३।४
मन हरष सभ गंधर्व सुर मुनि । ५-३४।१२
मनहीं मन मनाव अकुलानी । १-२५६।५
मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं । १-९२।३
मनहीं मन मागहिं बरु एहू । २-२२३।३
मनहुँ करुन रस कटकई । २-४६।०
मनहुँ कोक कोकी कमल । २-८६।०
मनहुँ तौलि निज बाहुबल । १-१७९।०
मनहुँ न आनिअ अमरपति । २-२१८।०
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु । १-२५०।०
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ । २-११०।२
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । २-५७।६
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू । २-८५।३
मनहुँ मत्त गजगन निरखि । १-२६७।०
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । १-३२४।४
मनहुँ लखन सन भेंट । २-१९३।०
मनि खंभ भीति बिरंचि बिरची । ७-२६।१०
मनिगन पुर नर नारि सुजाती । २-०।४
मनिगन मंगल बस्तु अनेका । २-५।४
मनि दीप राजहिं भवन । ७-२६।९
मनि बसन भूषन वारि । १-३२६।१३
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं । १-३१८।१०
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना । १-१५०।६
मनिमय रचित चारु चौबारे । २-८९।८
मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । १-१०।१
मनुज बास सचराचर । ६-१५।क
मनोज बैरि वंदितं । ३-३।९
मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । ७-५५।४
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । ३-१६।९
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । १-१३६।८
मम आधीन जुगुति नृप सोई । १-१६६।३
मम उदर भुअन अनेक लागत । ६-९८।१५
मम उर बसउ सो समन । ३-३१।१८
मम उर सो बासी यह उपहासी । १-१९१।१०
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । ६-२।४
मम गुन ग्राम नाम रत गत । ७-४६।०
मम गुन गावत पुलक सरीरा । ३-१५।११
मम जनकहि तोहि रही मिताई । ६-१९।२
मम दरसन फल परम अनूपा । ३-३५।९
मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा । ७-११२।६
मम पाछें धर धावत । ३-२६।०
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । ५-४०।५
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । ४-८।१०
मम भुज सागर बल जल पूरा । ६-२७।३
मम माया संभव संसारा । ७-८५।३
मम लोचन गोचर सोइ आवा । ४-९।५
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । ७-७।८
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । ६-११३।२
मम हित लागि तजेहु पितु माता । ६-६०।४
मम हिय गगन इंदु इव । ३-११।०

मम हियँ बसहु निरंतर । ३-८।०
मम हृदय पंकज भृंग अंग । ३-३१।१४
ममता तरुन तमी अँधिआरी । ५-४६।३
ममता दादु कंडु इरषाई । ७-१२०।३३
ममता रत सन ग्यान कहानी । ५-५७।३
मय तनुजा मंदोदरि नामा । १-१७७।२
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ । ४-५।२
मयना सत्य सुनहु मम बानी । १-९७।२
मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा । ६-१०१।२
मर्कट बदन भयंकर देही । १-१३३।८
मर्कट बिकट भट जुटत कटत । ६-४८।१३
मर्कटहीन करहु महि जाई । ६-३२।२
मरकत कनक बरन बर जोरी । १-३१४।७
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । ७-७५।५
मरकत सयल पर लरत दामिनि । ३-१७।१५
मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा । ६-९७।२
मरती बेर नाथ मोहि बाली । ७-१७।२
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह । ६-९५।१२
मर्दहिं निसाचर कटक भट । ६-८०।१०
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ५-५४।७
मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा । १-३३४।५
मरन हेतु निज नेहु बिचारी । २-२४६।४
मरमु न कोऊ जान कछु । १-५८।०
मरम बचन जब सीता बोला । ३-२७।५
मरम बचन सुनि राउ । २-३५।०
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ७-११९।१४
मरु गर काटि निलज कुलघाती । ६-३२।४
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । ७-१०५।१२
मरुत कोटि सत बिपुल बल । ७-९१।क
मलिन बसन बिबरन बिकल । २-१६३।०
मसक दंस बीते हिम त्रासा । ४-१६।८
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई । २-२३१।३
मसक समान रूप कपि धरी । ५-३।१
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु । ७-१२२।ख
महा अजय संसार रिपु । ६-८०।क
महानाद करि गर्जा कोटि । ६-६९।०
महा बिटप कोटर महुँ जाई । ७-१०६।८
महाबृष्टि चलि फूटि किआरी । ४-१४।७
महा भीर भूपति के द्वारें । १-३००।३
महा महा मुखिआ जे पावहिं । ६-४४।१
महामोह उपजा उर तोरे । ७-५८।७
महामोह तम पुंज जासु । १-०।५
महामोहु महिषेसु बिसाला । १-४६।६
महामंद मन सुख चहसि । ३-३६।०
महामंत्र जोइ जपत महेसू । १-१८।३
महादेव अवगुन भवन । १-८०।०
महाबीर निसिचर सब कारे । ६-४५।७
महाबीर बिनवउँ हनुमाना । १-१६।१०
महामत्त गजराज कहुँ । १-२५६।०
महाराज अब कीजिअ सोई । २-२९०।८
महाराज कर सुभ अभिषेका । ७-१४।२
महासैल एक तुरत उपारा । ६-५०।२
महि पटकइ गजराज इव । ६-६९।०
महि परत उठि भट भिरत मरत । ३-१९।२६
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह । ६-९४।१०
महि पाताल नाक जसु ब्यापा । १-२६४।५
महि बहु रंग रचित गच काँचा । ७-२६।६
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । २-३१०।६

महि मंडल मंडन चारुतरं । ७-१३।५
महि सरि सागर सर गिरि नाना । ७-८०।४
महिष खाइ करि मदिरा पाना । ६-६३।१
महिसुर मंत्री मातु गुर । २-२४५।०
महिमा अमिति न सकहिं कहि । १-२३५।०
महिमा अमिति बेद नहिं जाना । ७-४७।५
महिमा अमित मोरि मति थोरी । ३-१०।२
महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू । २-१३८।४
महिमा जासु जान गनराऊ । १-१८।४
महिमा तासु कहै किमि तुलसी । २-३०२।६
महिमा नाम रूप गुन गाथा । ७-९०।३
महिमा निगम नेति करि गाई । ७-१२३।२
महिमा निगमु नेति कहि कहई । १-३४०।८
महिमा यह न जलधि कइ बरनी । ६-२।९
महीं सकल अनरथ कर मूला । २-२६१।३
महूँ सनेह सकोच बस । २-२६०।०
माखे लखनु कुटिल भईं भौंहें । १-२५१।८
मागउँ दूसर बर कर जोरी । २-२८।२
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू । २-२०३।७
मागत अभिमत पाव जग । २-२६७।०
मागत बिदा राउ अनुरागे । १-३५९।५
मागत बिदा सभय सकुचाहीं । २-७२।८
मागध सूत बंदि गुनगायक । १-२९९।५
मागध सूत बंदिगन गायक । १-१९३।६
मागध सूत बंदि नट नागर । १-३४७।१
मागहिं हृदयँ महेस मनाई । २-१५६।८
मागहु बर जोइ भाव । १-१४८।०
मागहु बर बहु भाँति लोभाए । १-१४४।३
मागहु बिदा मातु सन जाई । २-७२।१
मागहु भूमि धेनु धन कोसा । १-२०७।३
मागा जल तेहि दीन्ह कमंडल । ६-५६।७
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । ४-४।६
मागि मागि आयसु करत । २-३२५।०
मागी नाव न केवटु आना । २-९९।३
मागु मागु पै कहहु पिय । २-२७।०
मागु मागु बरु भै नभ बानी । १-१४४।६
मागु माथ अबहीं देउँ तोही । २-३३।७
मागें बारिद देहिं जल । ७-२३।०
मागेउ बिदा प्रनामु करि । २-३१६।०
माघ मकरगत रबि जब होई । १-४३।३
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला । १-३२४।१६
माता पितहि उरिन भए नीकें । १-२७५।२
माता पुनि बोली सो मति । १-१९१।१३
माताँ भरतु गोद बैठारे । २-१६४।४
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । २-१७६।२
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । २-२५२।४
मातु कुमत बढ़ई अघ मूला । २-२११।३
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । ५-१३।९
मातु चरन सिरु नाइ । २-७५।०
मातु तात कहँ देहि देखाई । २-१६३।३
मातु नहानीं जानि सब । २-१९७।०
मातु पितहि जनि सोचबस । १-२७२।०
मातु पितहि पुनि यह मत भावा । १-७२।२
मातु पितहि बहुबिधि समुझाई । १-७२।७
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । १-७६।३
मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । ७-३९।५
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू । २-३०५।२
मातु पिता गुरु स्वामि सिख । २-७०।०

सौजन्य - श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल, १ बलराम दे स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००६

मातु पिता परिजन पुरबासी । २-९०।४
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । ७-९८।८
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । २-६४।१
मातु पिता भ्राता हितकारी । ३-४।५
मातु बचन सुनि अति अनुकूला । २-५२।३
मातु बिबेक अलौकिक तोरें । १-१५०।३
मातु भरत के बचन मृदु । २-१६४।०
मातु भरत के बचन सुनि । २-१६८।०
मातु मते महुँ मानि मोहि । २-२३३।०
मातु मुदित मन आयसु देहू । १-३३५।६
मातु मृत्यु पितु समन समाना । ३-९।६
मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । ५-२६।१
मातु मंदि मैं साधु सुचाली । २-२६०।३
मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं । २-८०।०
मातु सचिव गुर पुर नर नारी । २-१८३।३
मातु समीप कहत सकुचाहीं । २-६०।१
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । २-३१४।२
माथें हाथ मूदि दोउ लोचन । २-२८।७
मान मोह मारादि मद । ७-१०१।क
मानत सुखु सेवक सेवकाई । २-२१८।२
मानस मूल मिली सुरसरिही । १-३९।५
मानस रोग कछुक मैं गाए । ७-१२१।२
मानस रोग कहहु समुझाई । ७-१२०।७
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली । २-६२।६
मानहिं मातु पिता नहिं देवा । १-१८३।२
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर । १-३३७।०
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । २-२३६।५
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । १-२२९।२
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर । ६-७८।१५

मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि । २-२४।१०
मानि मातु कर नात बलि । २-५६।०
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । १-२८७।४
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । ७-१०५।७
मानी महिप कुमुद सकुचाने । १-२५४।२
मामभिरक्षय रघुकुल नायक । ६-११४।१
मामवलोकय पंकज लोचन । ७-५०।१
माया ईस न आपु कहँ । ३-१५।०
माया कृत गुन दोष अनेका । ७-५६।२
माया गुन ग्यानातीत अमाना । १-१९१।६
मायाछन्न न देखिऐ । ३-३९।क
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं… । ६-श्लोक-१।३
मायापति सेवक सन माया । २-२१७।२
माया ब्रह्म जीव जगदीसा । १-५।७
माया बस्य जीव अभिमानी । ७-७७।६
मायाबस परिछिन्न जड़ । ७-१११।ख
मायाबस मतिमंद अभागी । ७-७२।८
माया बिगत कपि भालु हरषे । ६-१००।२१
माया बिगत भए सब । ६-७४।क
माया बिबस भए मुनि मूढ़ा । १-१३२।३
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । ७-११५।३
मायामय तेहिं कीन्हि रसोई । १-१७२।२
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ । ४-श्लोक-१।३
माया संभव भ्रम सब । ७-८५।क
माया हरी हरि निमिष महुँ । ६-८८।१२
मार चरित संकरहि सुनाए । १-१२६।६
मारग चलहु पयादेहि पाएँ । २-१११।५
मारग जात भयावनि भारी । १-३५५।८
मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा । ७-९७।३

मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । ५-१८।२
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । ६-८०।५
मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह । ६-८०।११
मारहु धरहु जनि जाइ । ६-१००।१५
मारा बालि राम तब हृदय । ४-८।०
मारि असुर द्विज निर्भयकारी । १-२०९।६
मारिसि मेघनाद कै छाती । ६-७३।७
मारी सो धरि दिब्य तनु । ६-५७।०
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । ६-५२।६
मारुतसुत अंगद नल नीला । ६-७२।८
मारुतसुत के संग सिधावहु । ६-१०७।४
मारुतसुत तब मारुत करई । ७-४९।७
मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । ६-५६।२
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । ७-१।८
मारे निसिचर केहिं अपराधा । ५-२०।३
मारे पछारे उर बिदारे । ३-१९।२०
मारे सहित सहाय किमि । १-३५६।०
मारेउ राहु ससिहि कह कोई । ६-११।६
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । ६-७४।९
माल्यवंत अति जरठ निसाचर । ६-४७।५
माल्यवंत अति सचिव सयाना । ५-३९।१
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । ५-३९।४
माली सुमन सनेह जल । १-३७।०
मास दिवस कर दिवस भा । १-१९५।०
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी । ४-५।७
मास दिवस बीतें मोहि । ५-११।०
मास दिवस महुँ कहा न माना । ५-९।९
मास दिवस महुँ नाथु न आवा । ५-२६।६
मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । २-२११।६

मिटा मोदु मन भए मलीने । २-११७।७
मिटिहहिं पाप प्रपंच सब । २-२६३।०
मिटिहि सोचु होइहि हरषु । २-२३४।०
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ७-९७।४
मिथिला अवध बिसेष तें । २-२७०।०
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । ५-५६।६
मिलत प्रेम नहिं हृदयँ समाता । ७-१।१०
मिलत महा दोउ राज बिराजे । १-३११।२
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । २-१९२।४
मिलनि परसपर बिनय अति । १-३४०।०
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । २-२४०।१
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की । २-२४०।७
मिलब हमार भुलाब निज । १-१६५।०
मिलहिं किरात कोल बनबासी । २-२२३।४
मिलहिं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा । १-७४।४
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । ७-६१।१
मिला असुर बिराध मग जाता । ३-६।६
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । ५-५३।२
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । ७-६६।८
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा । २-२४३।५
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । २-२४४।७
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई । २-२३९।५
मिलि सपेम रिपुसूदनहिं । २-२४१।०
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । २-२४५।८
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु । १-३०८।०
मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं । १-३१९।१
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े । १-२७५।७
मिले लखन रिपुसूदनहि । १-३४२।०
मिले सकल अति भए सुखारी । ५-२७।५

सौजन्य-श्री सतीश देवड़ा, रजनीगंधा, २५, बालीगंज पार्क, कलकत्ता-१९

मिलेहि माझ बिधि बात बेगारी । २-४६।१
मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही । ७-६०।३
मित्र करइ सत रिपु कै करनी । ३-९।७
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । १-१७०।२
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । २-१४३।७
मीन कमठ सूकर नरहरी । ६-१०९।७
मीन पीन पाठीन पुराने । २-१९२।३
मुकताहल गुन गन चुनइ । २-१२८।०
मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान । ४-०।१
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग । ७-११।१५
मुकुत न भए हते भगवाना । १-१२२।१
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना । १-११४।४
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं । १-२३२।६
मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । ६-६६।४
मुख नासिका नयन अरु काना । ६-१८।६
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । २-५०।८
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । ५-२७।४
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू । २-३०६।४
मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । २-१६५।१
मुख बाइ धावहिं खान । ६-१००।६
मुख मलीन उपजी मन चिंता । ६-९८।३
मुख मलीन मन भए दुखारी । ६-५८।४
मुख सरोज मकरंद छबि । १-२३१।०
मुख सुखाहिं लोचन स्त्रवहिं । २-४६।०
मुखाम्बुज श्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु। २-श्लोक(२)
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ । २-३१५।०
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । ६-५२।५
मुठिका एक ताहि कपि मारा । ६-८३।२
मुठिका एक महा कपि हनी । ५-३।४

मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ५-१८।८
मुद मंगलमय संत समाजू । १-१।७
मुदित अवधपति सकल सुत । १-३२५।०
मुदित असीस देहिं गुर नारी । १-२९४।४
मुदित असीसहिं नाइ सिर । १-३११।०
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । १-२६१।८
मुदित देवगन रामहि देखी । १-३१६।८
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा । २-१०५।६
मुदित नारि नर देखहिं सोभा । २-११४।४
मुदित भए सुनि रघुबर बानी । २-७२।२
मुदित महीपति मंदिर आए । २-४।१
मुदित मातु परिछनि करहिं । १-३४८।०
मुदित मातु सब सखीं सहेली । २-०।७
मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला । १-२८६।२
मुदिताँ मथै बिचार मथानी । ७-११६।१५
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । ७-९३।६
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । ७-७७।८
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें । ३-९।११
मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना । ३-९।१
मुनि अति बिकल मोहँ मति नाठी । १-१३४।५
मुनि अनुसासन गनपतिहि । १-१००।०
मुनि आगमन सुना जब राजा । १-२०६।१
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । ४-२७।५
मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । ४-२७।१०
मुनि कर हित मम कौतुक होई । १-१२८।६
मुनि कह उचित कहत रघुराई । २-२७७।६
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा । ३-१०।२४
मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा । २-१२४।१
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ । १-१२९।७

सौजन्य - श्री सहदेव लाल देवड़ा, रजनीगंधा, २५, बालीगंज पार्क, कल-१९

मुनि कौसिक मख के रखवारे । १-२२०।४
मुनि गति देखि सुरेस डेराना । १-१२४।५
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । २-३१६।७
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । २-२६३।३
मुनिगन मिलनु बिसेषि बन । २-४१।०
मुनि जेहि ध्यान न पावहिं । ६-११७।क
मुनि तव चरन देखि कह राऊ । १-२१६।१
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं । २-१२५।३
मुनि तापस बनदेव निहोरी । २-३१७।८
मुनितिय तरी लगत पग धूरी । १-३५६।३
मुनि दुर्लभ बर पायउँ । ७-११४।ख
मुनि दुर्लभ हरि भगति नर । ७-१२६।०
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना । १-१९७।२
मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत । १-५०।९
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । ६-५७।२
मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । २-११४।८
मुनि पट भूषन भाजन आनी । २-७८।२
मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । ३-६।१
मुनि पद कमल परे द्वौ भाई । ३-११।१०
मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । १-२१८।१
मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । २-२१३।३
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । ६-१२०।५
मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका । २-२१४।१
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । २-२।८
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । १-२९४।७
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता । २-३०७।६
मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । १-३५६।१
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । ७-११०।१२
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन । ५-३९।ख

मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू । २-२०५।७
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । २-१०८।५
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए । २-१२४।३
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी । ६-६।६
मुनिबर धाइ लिए उर लाई । २-२४२।४
मुनिबर परम प्रबीन । ३-३।०
मुनिबर बहुरि राम समुझाए । २-२४६।७
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई । १-२२५।३
मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए । ७-९।६
मुनि बहुबिधि बिदेहु समुझाए । २-२७६।६
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे । २-१६८।८
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं । ३-३८।क
मुनि मख राखन गयउ कुमारा । ३-२४।५
मुनि मग माझ अचल होइ बैसा । ३-९।१५
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । १-३५८।६
मुनि मन अगम जम नियम सम दम । २-३२५।१०
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । २-१०८।२
मुनि मन मानस हंस निरंतर । ७-३४।७
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई । २-१०५।८
मुनि मन हरष रूप अति मोरें । १-१३२।६
मुनि महिदेव साधु सनमाने । २-३१८।४
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । १-१७१।३
मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । २-३२१।१
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । ७-१३।१७
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । २-३०८।२
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी । ३-१२।४
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । ७-११२।९
मुनि मोहि बिबिधि भाँति समुझावा । ७-११२।१४
मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा । १-३४०।१

सौजन्य - युनाइटेड ट्रेडर्स एंड इंजी., ३२, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००१

मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी । ७-३२।२
मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं । २-१३३।७
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं । २-१०७।४
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । ७-२९।१०
मुनि रंजन महि मंडल मंडन । ६-११४।९
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल । १-२१०।९
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी । १-४७।६
मुनि समाजु अरु तीरथराजू । २-२१०।१
मुनि समीप देखे दोउ भाई । १-२४७।८
मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख । ३-१२।०
मुनि समेत दोउ बंधु । १-२४४।०
मुनि सिद्ध नर खग नाग । ६-११२।८
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर । १-१८५।१६
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । ३-४५।८
मुनि सुसीलता आपनि करनी । १-१२६।३
मुनि हित कारन कृपानिधाना । १-१३२।७
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । १-१२।१०
मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । १-३०७।१
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । १-२१६।६
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । २-१८४।३
मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला । ३-९।२३
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ । १-१३३।५
मुनिहि राम बहु भाँति जगावा । ३-९।१७
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । २-२१२।७
मुनींद्र संत रंजनं । ३-३।८
मुर्‍यो न मनु तनु टर्‍यो न टार्‍यो । ६-६४।६
मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । ६-६५।४
मुरुछा गै बहोरि सो जागा । ६-८३।३
मुरुछा बिगत भालु कपि । ६-९८।०
मुरुछा भै सक्ति के लागें । ६-५३।८
मुरुछित देखि सकल कपि बीरा । ६-९७।१२
मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति । ६-९७।१८
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । ६-६६।६
मूक बदन जनु सारद छाई । १-३४९।८
मूक होइ बाचाल पंगु । १-०।२
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई । २-३०।२
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । ४-८।९
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । ७-१११।१३
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला । ६-२६।३
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । ५-५५।६
मूदहु नयन बिबर तजि जाहू । ४-२४।५
मूदे सजल नयन पुलके तन । २-२८७।२
मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । ७-७९।१
मूरति मधुर मनोहर देखी । १-२१४।८
मूरुख हृदयँ न चेत । ६-१६।ख
मूलं धर्म तरोर्विवेक । ३-श्लोक-१।१
मृग बधि बंधु सहित हरि आए । १-४८।६
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । ३-२६।७
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी । २-३१०।८
मृगमाला फिरि दाहिनि आई । १-३०२।६
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा । १-१९३।८
मृगलोचनि के नैन सर । ७-७०।ख
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं । ७-१०७।८
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । १-१४४।७
मृत्यु निकट आई खल तोही । ५-२३।३
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । २-१२०।२
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । २-१९९।३
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । ४-०।९

मृषा होउ मम श्राप कृपाला । १-१३७।३
मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा । १-१८१।१
मेघनाद कै मुरछा जागी । ६-७४।१
मेघनाद तहँ करइ लराई । ६-४२।४
मेघनाद तेहि अवसर आयउ । ६-७१।६
मेघनाद मख करइ अपावन । ६-७४।४
मेघनाद मायामय रथ । ६-७२।०
मेघनाद सम कोटि । ६-५४।०
मेघनाद सुनि श्रवन अस । ६-४९।०
मेटि जाइ नहिं राम रजाई । २-९८।७
मेधा महि गत सो जल पावन । १-३५।८
मेरु सिखर बट छायाँ । ७-११०।ख
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । १-२०७।१०
मेली कंठ सुमन कै माला । ४-७।७
मैं अकेल कपि भालु बहु । ६-८८।०
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । २-१७७।२
मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । १-४।१
मैं अपनें मन बैठ तब । ७-१११।क
मै अरु मोर तोर तैं माया । ३-१४।२
मैं आउब सोइ बेषु धरि । १-१६९।०
मैं आपन किमि कहौं कलेसू । २-१५२।३
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हे । १-२८२।४
मैं कछु कहउँ एक बल मोरें । १-३४१।४
मैं कृतकृत्य भइउँ अब । ७-१२९।०
मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । ७-१२४।१
मैं खल मल संकुल मति । ७-१०५।क
मैं खल हृदयँ कपट कुटिलाई । ७-१०५।१६
मैं गुन गाहक परम सुजाना । ६-२३।४
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । ७-६१।६
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । ५-४५।६
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । २-२५९।५
मैं जाना तुम्हार गुन सीला । १-१०४।१
मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । ७-५५।१
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । ४-७।४
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । १-५८।२
मैं तपबल तोहि तुरग समेता । १-१६८।८
मैं तव दसन तोरिबे लायक । ६-३३।१
मैं तुम्हरे संकलप लगि । १-१६८।०
मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । १-२७७।१
मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । ६-५५।७
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । १-१३७।४
मैं देखउँ खल बल दलहि । ६-६७।०
मैं देखउँ तुम्ह नाहीं । ४-२८।०
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा । १-१६८।६
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी । २-२००।५
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन । १-२१०।७
मैं निज मति अनुसार । १-१२०।घ
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । ५-४६।७
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । २-२५९।८
मैं पा परउँ कहइ जगदंबा । १-८०।७
मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । ७-८८।१
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । ५-५९।३
मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । २-६१।१
मैं पुनि निज गुर सन । १-३०।क
मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । २-५८।१
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । २-६३।८
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ । २-३१।०
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा । २-७०।३

मैं बन दीखि राम प्रभुताई । १-१०८।३
मैं बानर फल खात न बारा । ६-३३।४
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । ४-८।६
मैं रघुबीर सरन अब । ५-४१।०
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू । २-१७८।५
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूँछें । २-३१।२
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । २-७१।३
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । २-६६।८
मैं सेवक सचराचर रूप । ४-३।०
मैं सोइ धरमु सुलभि करि पावा । २-९४।६
मैं संकर कर कहा न माना । १-५३।१
मैनाँ सुभ आरती सँवारी । १-९५।२
मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी । १-९५।६
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । २-१८१।२
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा । २-६९।५
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु । २-१२५।०
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी । २-१४।६
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी । २-२५९।६
मो पहिं होइ न प्रति उपकारा । ७-१२४।४
मो बिनु को सचराचर माहीं । २-१८०।६
मो सन कहहु भरत मति फेरू । २-२९४।४
मो सम दीन न दीन हित । ७-१३०।क
मो समान को पातकी । २-१६२।०
मोद प्रमोद बिबस सब माता । १-३४५।१
मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ । १-३५०।०
मोर अभाग्य जिआवत ओही । ६-९८।६
मोर अभागु मातु कुटिलाई । २-२६६।४
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । ३-१८।७
मोर कहा सुनि करहु उपाई । १-८२।१

मोर चकोर कीर बर बाजी । ३-३७।६
मोर जनम रघुबर बन लागी । २-१८१।८
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु । २-३१४।३
मोर दास कहाइ नर आसा । ७-४५।३
मोर न्याउ मैं पूछा साईं । ४-१।८
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि । ६-२७।०
मोर प्रभाउ बिदित नहिं तोरें । १-२८२।५
मोरपंख सिर सोहत नीके । १-२३२।२
मोर बचन सब के मन माना । १-१८४।८
मोर भाग्य राउर गुन गाथा । १-३४१।३
मोर मनोरथु जानहु नीकें । १-२३५।३
मोर मनोरथु सुरतरु फूला । २-२८।८
मोर मरनु राउर अजस । २-३३।०
मोर श्राप द्विज ब्यर्थ न जाइहि । ७-१०८।६
मोर साप करि अंगीकारा । ३-४०।६
मोर सोचु जनि करिअ कछु । २-९८।०
मोर हंस सारस पारावत । ७-२७।५
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई । २-१७९।८
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती । १-२७।३
मोरें जान भरत रुचि राखी । २-२५७।८
मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं । ३-९।६
मोरे जियँ भरोस दृढ़ सोई । ७-०।७
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । ७-१७।४
मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी । ३-४२।८
मोरें भरतु रामु दुइ आँखी । २-३०।६
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । १-२२।२
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा । ७-११९।१६
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । २-७१।६
मोरें सरन रामहि की पनही । २-२३३।२

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । १-१३१।२
मोरें हृदय परम संदेहा । ५-१५।७
मोरेहु कहें न संसय जाहीं । १-५१।६
मोह गएँ बिनु राम पद । ७-६१।०
मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । ७-१२४।३
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । ७-११९।४
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । ७-६९।७
मोह न नारि नारि कें रूपा । ७-११५।२
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा । २-९२।२
मोह विपिन घन दहन कृशानुः । ३-१०।५
मोह मगन मति नहिं बिदेह की । २-२८५।८
मोह महा घन पटल प्रभंजन । ६-११४।२
मोहमूल बहु सूल प्रद । ५-२३।०
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला । ७-१२०।२९
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ....... । ३-श्लोक१।३
मोहि अछत यहु होइ उछाहू । २-३।३
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी । १-२३०।६
मोहि अनुचर कर केतिक बाता । २-२५२।५
मोहि उपजइ अति क्रोध । ७-१०५।ख
मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । २-१७६।१
मोहि कहु मातु तात दुख कारन । २-३९।५
मोहि कुमातु समेत बिहाई । २-१८०।५
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं । १-२८५।६
मोहि जानि अति अभिमान बस । ४-९।८
मोहि जानिऐ निज दास । ६-११२।१६
मोहि तोहि पर अति प्रीति । १-१६३।०
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू । २-१७९।५
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । ५-२१।६
मोहि न मातु करतब कर सोचू । २-२१०।४
मोहि न लाज निज नेहु निहारी । २-१६५।७
मोहि नृप करि भल आपन चहहू । २-१७७।८
मोहि प्रबोधि गयउ गृह । ७-१०९।क
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा । ४-२८।२
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं । ७-७९।२
मोहि भगत प्रिय संतत । ७-८५।ख
मोहि भयउ अति मोह प्रभु । ७-६८।ख
मोहि भाव कोसल भूप । ६-११२।१४
मोहि मग चलत न होइहि हारी । २-६६।१
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी । १-१५९।४
मोहि रहा अति अभिमान । ६-११२।११
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं । २-१७८।२
मोहि राम राउरि आन दसरथ । २-९९।१०
मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा । २-२११।५
मोहि लगि सहेउ सबहि संतापू । २-३१२।७
मोहि लागि दुख सहिअ । १-१६७।०
मोहि लै जाहु सिंधुतट । ४-२७।०
मोहि सन करहिं बिबिधि बिधि क्रीड़ा। ७-७६।९
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । २-३०४।४
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें । २-२।६
मोहि समान को पाप निवासू । २-१७८।३
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा । ३-१३।७
मोहि समेत बिरंचि सिव । ३-३३।०
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी । ६-१०५।११
मोहि सादर पूँछत भए । ७-११०।ग
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । ५-१।१२
मोहि सो कहहु कृपाल । ७-९४।क
मंगन बहु प्रकार पहिराए । ७-१४।१०
मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं । १-२३०।८

मंगल करनि कलि मल हरनि । १-१।११
मंगल क़लस अनेक बनाए । १-२८८।२
मंगलगान करहिं बर भामिनि । १-३५४।१
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । १-२९६।५
मंगल बिपुल तोरन पताका । १-९३।११
मंगल भवन अमंगल हारी । १-९।२
मंगल भवन अमंगल हारी । १-१११।४
मंगलमय कल्यानमय । १-३०३।०
मंगलमय निज निज भवन । १-२९६।०
मंगलमय मंदिर सब केरें । १-२१२।५
मंगलमूरति लोचन भरि भरि । २-२४८।४
मंगल मूल बिप्र परितोषू । २-१२५।४
मंगलमूल रामु सुत जासू । २-१।५
मंगलमूल लगन दिनु आवा । १-३११।५
मंगल मोद उछाह नित । १-३५९।०
मंगलरूप भयउ बन तब ते । ४-१२।५
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें । २-३६।७
मंगल सगुन मनोहरताई । १-३४४।२
मंगल सगुन सुगम सब ताकें । १-३०३।१
मंगल सगुन सुगंध सुहाए । १-३०४।५
मंगल सगुन होहि सब काहू । २-२२४।१
मंगल समय सनेह बस । २-४५।०
मङ्गलानां च कर्त्तारौ । १-श्लो-१।२
मंजीर नूपुर कलित कंकन । १-३२१।१२
मंजु बिलोचन मोचति बारी । २-५७।७
मंजु मधुर मूरति उर आनी । १-३३६।५
मंजुल मनिमय बंदनिवारे । १-३४६।३
मंजुल मंगल मूल । १-२३६।०
मंडपु बिलोकि बिचित्र रचनाँ । १-३१९।९

मंडलीक मनि रावन । १-१८२।क
मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला । २-२७९।६
मंदिर एक रुचिर तहँ । ४-२४।०
मंदिर मनि समूह जनु तारा । १-१९४।६
मंदिर महँ सब राजहिं रानीं । १-१८९।७
मंदिर माझ भई नभ बानी । ७-१०६।१
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । ५-४।५
मंदोदरि आगें भुज सीसा । ६-१०२।७
मंदोदरि उर कंपति भारी । ६-१०१।१०
मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ । ६-१५।८
मंदोदरी आदि सब । ६-१०५।०
मंदोदरी बचन सुनि काना । ६-१०४।१
मंदोदरीं रावनहि । ६-३५।०
मंदोदरी रुदन कर भारी । ६-७६।७
मंदोदरी श्रवन ताटंका । ६-१२।६
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । ६-५।२
मंदोदरी सोच उर बसेऊ । ६-१३।६
मंदोदरीं ह्रदयँ अस जाना । ६-७।६
मंदोदरी ह्रदयँ कर चिंता । ५-३६।६
मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । ६-१६।४
मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । ३-३५।१
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । ५-५०।२
मंत्र परम लघु जासु बस । १-२५६।०
मंत्र महामनि बिषय ब्याल के । १-३१।९
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । २-१२८।६
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं । ४-५।९
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा । ४-४।३
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा । २-९४।२
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू । २-१४१।६

सौजन्य-आधुनिक वस्त्रालय, २०१/बी, एम.जी.रोड, कलकत्ता-७००००७

मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । २-४।४

य

यत्पादप्लवमेकमेव हि । १-श्लोक६।३
यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना । ७-१३०।श्लो१
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं । १-श्लोक।६
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं । १-श्लोक।६
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि । १-श्लोक।३
यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता । २-श्लोक।१
यह इतिहास पुनीत अति । १-१५२।०
यह इतिहास सकल जग जानी । १-६४।४
यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । १-८८।१
यह उमा संभु बिबाहु जे नर । १-१०२।११
यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई । ४-२१।४
यह कलिकाल मलायतन । ६-१२१।ख
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । ५-०।४
यह कुल उचित राम कहुँ टीका । २-१७।७
यह कौतूहल जानइ सोई । ६-५४।३
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । ६-१०९।९
यह गुन साधन तें नहि होई । ४-२०।६
यह चरित कलि मलहर जथामति । ५-५९।१०
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं। १-१९१।१६
यह जियँ जानि सँकोचु तजि । २-२५०।०
यह तनय मम सम बिनय बल । ४-९।१२
यह तुम्हार आचरजु न ताता । २-२०७।२
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । २-१९३।६
यह दुष्ट मारेउ नाथ । ६-११२।४
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । २-२०७।७
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । ७-१२७।३
यह नइ रीति न राउरि होई । २-२६६।६
यह निसिचर दुकाल सम अहई । ६-६९।३
यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा । १-१६५।३
यह प्रताप रबि जाकें । ७-३१।०
यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । ७-५४।१
यह प्रसंग मैं कहा भवानी । १-१३९।७
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । १-१२३।८
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । १-२७।१०
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी । २-३१३।७
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं । २-२१६।३
यह बड़ि बात राम कै नाहीं । २-२४३।४
यह बर मागउँ कृपानिकेता । ३-१२।१०
यह बिचारि नहिं करउँ हठ । २-५६।०
यह बिचारि नारद कर बीना । ३-४०।८
यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं । ३-४२।१०
यह बिचारु उर आनि नृप । २-२।०
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ । ६-६१।५
यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । ६-९।१
यह मुद्रिका मातु मैं आनी । ५-१२।१०
यह रहस्य काहूँ नहिं जाना । १-१९५।१
यह रहस्य रघुनाथ कर । ७-११६।क
यह रावनारि चरित्र पावन । ६-१२०।१९
यह लघु जलधि तरत कति बारा । ६-०।१
यह सपना मैं कहउँ पुकारी । ५-१०।७
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । ७-८८।४
यह सब चरित कहा मैं गाई । १-२०५।१
यह सब जागबलिक कहि राखा । २-२८४।८
यह सब माया कर परिवारा । ७-७०।७
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । १-१८७।६
यह सबु सुखु मुनिराज तव । १-३३१।०

सौजन्य-राजस्थान स्टोर्स, २०१/बी, एम.जी.रोड, कलकत्ता-७००००७

यह स्वारथ परमारथ सारू । २-२६७।६
यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । २-१३४।१
यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई । २-८७।१
यह सुधि पाइ नगर नर नारी । २-२०१।२
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । २-१०७।५
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई । ६-७८।१३
यह सुनि अवर महिप मुसुकाने । १-२४४।८
यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि । २-२६।०
यह सुभ चरित जान पै सोई । १-१९५।६
यह सुभ संभु उमा संबादा । ७-१२९।१
यह संघटु तब होइ जब । १-२२२।०
यह संबाद जासु उर आवा । ५-३३।४
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । २-२५०।३
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई । १-१८८।८
यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ । २-२०६।१
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । २-२६०।२
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें । २-१६५।६
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू । २-१७३।२
यहु संसउ सब के मन माहीं । २-२५१।८
याको फलु पावहिगो आगें । ६-३२।७
याभ्यां विना न पश्यन्ति । १-श्लोक।२
ये पठन्ति नरा भक्त्या । ७-१०७।१८
यो ददाति सतां शम्भुः । ६-श्लोक३(१)
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं । ६-श्लोक१(२)
यों सुधारि सनमानि जन । २-२९९।०

र

रउरे अंग जोगु जग को है । २-२८४।५
रखवारे जब बरजन लागे । ५-२७।८
रखवारे हति बिपिन उजारा । ६-३५।५
रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन । २-२८३।२
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । ७-३४।८
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती । २-१५२।२
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । २-५१।१
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । ७-१।४
रघुकुल मनि दसरथ के जाए । १-२१५।८
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ । १-११६।०
रघुकुल रीति सदा चलि आई । २-२७।४
रघुनायक सायक चले । ६-१०२।०
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । ७-१३।२०
रघुनंदनहि सकोचु बड़ । २-२७२।०
रघुपति अनुजहि आवत देखी । ३-२९।१
रघुपति आएँ उचित जस । २-१७५।०
रघुपति कटक भालु कपि जेते । ६-९५।२
रघुपति कर संदेसु अब । ५-१४।०
रघुपति कीरति बिमल पताका । १-१६।६
रघुपति कृपाँ जथामति गावा । ७-१२९।४
रघुपति कोपि बान झरि लाई । ६-८६।८
रघुपति चरन उपासक जेते । १-१७।३
रघुपति चरन कमल सिरु नाई । ३-३३।४
रघुपति चरन नाइ करि माथा । ४-१०।१०
रघुपति चरन नाइ सिरु । ६-७५।०
रघुपति चरन हृदयँ धरि । ५-१७।०
रघुपति चरित देखि पुरबासी । ७-१९।६
रघुपति चरित महेस तब । १-१११।०
रघुपति चित्रकूट बसि नाना । ३-२।१
रघुपति जस गावत फिरउँ । ७-११०।क
रघुपति निकट गयउ घननादा । ६-५०।५
रघुपति पटु पालकीं मगाईं । २-३१९।४

सौजन्य - श्री गोविन्द प्रसाद खण्डेलवाल, २३ए, एन. एस. रोड, कलकत्ता - १

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी । २-८४।१
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । ६-१११।५
रघुपति प्रियभक्तं....... । ५-श्लोक३(४)
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । २-४४।४
रघुपति पुरीं जन्म तव भयऊ । ७-१०८।९
रघुपति बिमुख जतन कर कोरी । १-१९९।३
रघुपति बिरह सबिष सर भारी । ६-९८।९
रघुपति भगति सजीवन मूरी । ७-१२१।७
रघुपति भगति सुमंगल मूला । २-२४२।७
रघुपति महिमा अगुन अबाधा । १-३६।२
रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । ६-९८।५
रघुबर उर जयमाल देखि । १-२६४।०
रघुबर कहेउ लखन भल घाटू । २-१३२।१
रघुबर जनम अनंद बधाई । १-३९।८
रघुबर बरन बिलोकि बर । २-२२०।०
रघुबीर एकहिं तीर कोपि । ६-१००।२०
रघुबीर करुना सिंधु आरत । ६-८१॥१२
रघुबीर चरित अपार बारिधि । १-३६०।१०
रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन । ३-५।१४
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं । ६-९१।१६
रघुबीर निज मुख जासु गुन गन । ७-१।१९
रघुबीर पद पाथोज मधुकर । ४-२९।१६
रघुबीर बल दर्पित बिभीषनु । ६-९३।१२
रघुबीर बान प्रचंड खंडहिं । ३-१९।१६
रघुबीर बंधु प्रताप पुंज । ६-८३।१२
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति । ५-३४।१७
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि । ५-२।२३
रघुबंस बिभूषन दूषन हा । ६-११०।८
रघुबंस भूषन चरित यह नर । ७-१२९।१३

रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ । १-२३०।५
रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । १-२५२।१
रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु । २-३००।९
रचना देखि बिचित्र अति । १-२८७।०
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि । २-२९४।०
रचहु बिचित्र बितान बनाई । १-२८६।६
रचहु मंजु मनि चौकें चारू । २-५।७
रचि पचि कोटिक कुटिलपन । २-१८।०
रचि प्रपंच माया प्रबल । २-२९५।०
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । २-१७।६
रचि महेस निज मानस राखा । १-३४।११
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । १-२९७।४
रचीं आरतीं बहुत बिधाना । १-३४५।८
रचे रुचिर बर बंदनिवारे । १-२८८।१
रज मग परी निरादर रहई । ७-१०५।११
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं । २-२३७।४
रजत सीप महुँ भास जिमि । १-११७।०
रजनीचर बृंद पतंग रहे । ७-१३।४
रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । १-३५५।४
रति गवनी सुनि संकर बानी । १-८७।३
रति होउ अबिरल अमल सिय । २-७४।१२
रथ अनेक बहु बाजि गज । ७-१०।क
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं । २-८५।२
रथ गिरि सिला दुंदुभीं झरना । ३-३७।८
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु । २-८१।०
रथ चढ़ि चलेउ दसानन । ६-८१।०
रथ तुरंग सारथी निपाता । ६-९४।२
रथ बिभंजि हति केतु पताका । ६-९१।२
रथ समेत रबि थाकेउ । १-१९५।०

सौजन्य - श्री केदारनाथ अग्रवाल, ४१, एन. एस. रोड, कलकत्ता-७००००१

रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए । १-२९८।३
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । २-१४६।७
रथु हाँकेउ हय राम तन । २-९९।०
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । ६-८८।५
रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । ३-१८।१३
रन जीति रिपुदल बंधु जुत । ६-१०६।१२
रन ते निलज भाजि गृह आवा । ६-८४।७
रन बाँकुरा बालिसुत । ६-४३।०
रन मत्त रावन सकल सुभट । ६-९४।१२
रन मद मत्त निसाचर दर्पा । ६-६६।५
रन मद मत्त फिरइ जग धावा । १-१८१।९
रन सोभा लगि प्रभुहिं बँधायो । ६-७२।१३
रनिवासु हास बिलास रस बस । १-३२६।१८
रबि निज उदय ब्याज रघुराया । १-२३८।५
रबि मंडल देखत लघु लागा । १-२५५।८
रबि सम तेज सो बरनि न जाई । ७-११।२
रबि ससि पवन बरुन धनधारी । १-१८१।१०
रमा बिलासु राम अनुरागी । २-३२३।८
रमा रमन पद बंदि बहोरी । २-२७२।५
रमानाथ जहँ राजा । ७-२९।०
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना । २-१३२।६
रस रस सूख सरित सर पानी । ४-१५।५
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई । १-२५१।२
रहति न प्रभु चित चूक किए की । १-२८।५
रहसि जोरि कर पति पग लागी । ५-३५।५
रहसी रानि राम रुख पाई । २-४२।१
रहहु करहु सब कर परितोषू । २-७०।५
रहहु तात असि नीति बिचारी । २-७०।७
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । २-६२।८
रहा एक दिन अवधि कर । ७-०।क
रहा न नगर बसन घृत तेला । ५-२४।५
रहा प्रथम अब ते दिन बीते । २-१६।६
रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरू । २-१४३।४
रही न लाज प्रीति उर छाई । १-३३५।२
रही भुवन भरि जय जय बानी । १-२६१।७
रहे असुर छल छोनिप बेषा । १-२४०।७
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । ६-९१।१४
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । १-१७५।६
रहे तहाँ दुइ रुद्र गन । १-१३३।०
रहे तहाँ निसिचर भट भारे । १-१७८।१
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । ५-१७।२
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि । ६-८१।१०
रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । ७-५६।३
रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी । ६-९५।८
रहे महाभट ताके संगा । ५-१८।६
रहे राखि सेवा पर भारू । २-२३९।६
रहेउ एक दिन अवधि अधारा । ७-०।१
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । ३-१७।१२
रहै करम बस परिहरि नाहू । २-१४४।२
राउ अवधपुर चहत सिधाए । १-३३५।५
राउ तृषित नहिं सो पहिचाना । १-१५७।७
राउ धीर गुन उदधि अगाधू । २-४१।७
राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े । १-३३९।६
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई । २-२०६।४
राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू । २-१४८।७
राउर आयसु सिर सबही कें । २-२९०।४
राउर जा पर अस अनुरागू । २-२५८।६
राउर नगर कोलाहलु होई । २-२२।८

सौजन्य - श्रीमती कमला देवी अग्रवाल, १३८, जी.टी.रोड (साउथ), हावड़ा

राउर बदि भल भव दुख दाहू । २-३१३।२
राउर राय रजायसु होई । २-२९५।८
राउरि रीति सुबानि बड़ाई । २-२९८।१
राका रजनी भगति तव । ३-४२।क
राका ससि रघुपति पुर । ७-३।ग
राकापति षोड़स उअहिं । ७-७८।ख
राखइ गुर जौं कोप बिधाता । १-१६५।६
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । २-५४।४
राखा मोर दुलार गोसाईं । २-२९९।६
राखि न सकइ न कहि सक जाहू । २-५४।१
राखि राम रुख धरमु ब्रतु । २-२९३।०
राखिअ अवध जो अवधि लगि । २-६६।०
राखिअ तीरथ तोय तहँ । २-३०९।०
राखिअ नारि जदपि उर माहीं । ३-३६।९
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती । २-३३।८
राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी । २-२६३।६
राखें राम रजाइ रुख । २-२५४।०
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू । २-७४।५
राच्छस कपट बेष तहँ सोहा । ६-५६।३
राज काज सब लाज पति । २-३०५।०
राजकुअँर तेहि अवसर आए । १-२४०।१
राजकुअँर दोउ सहज सलोने । २-११५।८
राजकुअँर बर बाजि देखावहिं । १-३१५।६
राजकुमारि बिनय हम करहीं । २-११५।६
राजकुमारि सिखावनु सुनहू । २-६०।२
राजघाट सब बिधि सुंदर बर । ७-२८।३
राज धर्म तन तीनि कर । ५-३७।०
राजधरम सरबसु एतनोई । २-३१५।१
राज दुआर सकल बिधि चारू । ७-२७।८
राज धनी जो जेठ सुत आही । १-१५२।५
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । ३-२०।८
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला । १-१०९।८
राज लखन सब अंग तुम्हारें । २-१११।४
राज समाज प्रात जुग जागे । २-२८९।२
राज समाज बिराजत रूरे । १-२४०।३
राज समाजु एक रथ साजा । १-३००।८
राजत राज समाज महुँ । १-२४२।०
राजत रामु सहित भामिनी । ६-११८।५
राजन राउर नामु जसु । २-३।०
राजन रामु अतुलबल जैसें । १-२९२।३
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी । २-१७।५
राजा के उपरोहितहि । १-१७१।०
राजा रामु अवध रजधानी । १-२४।६
राजा रामु जानकी रानी । २-२७२।६
राजा सबु रनिवास बोलाई । १-२९४।१
राजिवनयन धरें धनु सायक । १-१७।१०
राजीव बिलोचन भव भय मोचन । १-२१०।८
राजीव लोचन स्त्रवत जल तन । ७-४।९
राजीवायतलोचनं धृत । ४-श्लो-२।३
राजु करत यह दैअँ बिगोई । २-५०।३
राजु कि भूँजब भरत पुर । २-४९।०
राजु कि रहइ नीति बिनु जानें । ७-१११।६
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ । ४-११।०
राजु देन कहि दीन्ह बनु । २-५५।०
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा । २-५३।७
रातिहिं घाट घाट की तरनी । २-२२०।२
रानि कुचालि सुनत नरपालहि । २-२७०।३
रानि राय सन अवसरु पाई । २-२८३।१

सौजन्य - श्री भेरुदान बंग, ९, क्लाईव रो, कलकत्ता-७०००१

रानिन्ह सहित सोचबस सीया । १-२६६।७
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि । १-३१६।१२
रानी सुनि उपरोहित बानी । १-३२१।३
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । १-१२०।३
राम अनुज मन की गति जानी । १-२१७।३
राम अनुज समेत बैदेही । ३-११।८
राम अनंत अनंत गुन । १-३३।०
राम अनंत अनंत गुनानी । ७-५१।३
राम उठाइ मातु उर लाई । २-५६।८
राम उदर देखेउँ जग नाना । ७-८१।५
राम उपासक जे जग माहीं । ७-१२९।३
राम एक तापस तिय तारी । १-२३।३
रामकथा कलि कामद गाई । १-३०।७
रामकथा कलि पंनग भरनी । १-३०।६
रामकथा कलि बिटप कुठारी । १-११३।२
राम कथा कलि मल हरनि । १-१४१।०
राम कथा के तेइ अधिकारी । ७-१२७।६
रामकथा कै मिति जग नाहीं । १-३२।५
राम कथा गिरिजा मैं बरनी । ७-१२८।१
रामकथा मंदाकिनी । १-३१।०
रामकथा मुनिबर्ज बखानी । १-४७।३
राम कथा मुनिबर बहु बरनी । ७-३१।८
रामकथा ससि किरन समाना । १-४६।७
रामकथा सुंदर कर तारी । १-११३।१
रामकथा सुरधेनु सम । १-११३।०
राम कथा सो कहइ निरंतर । ७-६१।४
राम कपिन्ह जब आवत देखा । ५-२८।७
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । ७-२४।३
राम करहु सब संजम आजू । २-९।३

राम करौं केहि भाँति प्रसंसा । १-३४०।४
राम कस न तुम्ह कहहु । २-९।०
राम कहा अनुजहि समुझाई । ४-१०।९
राम कहा तनु राखहु ताता । ३-३०।५
राम कहा मुनि कहहु बिचारी । १-२८२।७
राम कहा सबु कौसिक पाहीं । १-२३६।२
राम कहा सेवकन्ह बुलाई । ७-१०।२
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा । १-२८०।७
राम काज कारन तनु त्यागी । ४-२६।८
राम काज लगि तव अवतारा । ४-२९।६
राम काज लयलीन मन । ४-२३।०
राम काजु अरु मोर निहोरा । ४-२१।६
राम काजु करि फिरि मैं आवौं । ५-१।४
राम काजु कीन्हें बिनु । ५-१।०
राम काजु सबु करिहहु । ५-२।०
राम कीन्ह आपन जबही तें । २-१९५।२
राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई । १-१२७।१
राम कीन्ह बिश्राम निसि । २-१०८।०
राम कुसल कहु सखा सनेही । २-१४८।३
राम कृपा आपनि जड़ताई । ७-७४।१
राम कृपा करि चितवा सबही । ६-४७।२
राम कृपा करि जुगल निहारे । ६-४५।२
राम कृपा करि सूत उठावा । ६-९०।८
राम कृपा तें पारबति । १-११२।०
राम कृपा नहिं करहिं तसि । ६-११७।ख
राम कृपानिधि कछु दिन । ४-१२।०
राम कृपा बल पाइ कपिंदा । ५-३४।३
राम कृपा बिनु सपनेहुँ । ७-९०।क
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । ७-८८।६

सौजन्य - श्रीमती विमला देवी बंग, ११/१, वाटकिंग्स लेन, हावड़ा

राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । ७-७३।३
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । ५-५४।२
रामकृपाँ अवरेब सुधारी । २-३१६।३
राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा । ६-७१।२
राम कृपाँ तव दरसन भयऊ । ७-६८।८
राम कृपाँ नासहिं सब रोगा । ७-१२१।५
राम कृपाल निषाद नेवाजा । २-२४९।८
राम गवनु बन अनरथ मूला । २-२०६।५
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू । २-१९६।४
राम चरन दृढ़ प्रीति करि । ४-१०।०
राम चरन नूतन रति भई । ७-१२४।२
राम चरन पंकज उर धरहू । ६-०।८
राम चरन पंकज उर धरहू । ५-२२।१
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही । २-८३।८
राम चरन पंकज मन जासू । १-१६।४
राम चरन बारिज जब देखौं । ७-१०९।१४
राम चरन रति जो चह । ७-१२८।०
राम चरन सरसिज उर राखी । ६-५५।१
राम चरित अति अमित मुनीसा । १-१०४।३
रामचरित चिंतामनि चारू । १-३१।१
राम चरित जे निरख मुनि । ७-२७।०
राम चरित जे सुनत अघाहीं । ७-५२।१
राम चरित बिचित्र बिधि नाना । ७-५६।८
रामचरितमानस एहि नामा । १-३४।७
रामचरितमानस मुनि भावन । १-३४।९
रामचरित राकेस कर । १-३२।ख
रामचरित सत कोटि महँ । १-२५।०
राम चरित सत कोटि अपारा । ७-५१।२
रामचरित सर गुप्त सुहावा । ७-११२।११

राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ । १-१०।५
राम चरित सर सुंदर स्वामी । ७-१३।४
राम चलत अति भयउ बिषादू । २-८०।३
राम जननि जब आइहि धाई । २-१४५।३
राम जनम के हेतु अनेका । १-१२१।२
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । २-१९९।५
राम जबहिं प्रेरेउ निज माया । ३-४२।२
राम तिलक हित मंगल साजा । १-४०।७
राम तिलकु जौं साँचेहुँ काली । २-१४।४
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि । २-२००।८
राम तेज बल बुधि बिपुलाई । ५-५५।१
राम दरस की लालसा । २-२२४।०
राम दरस बस सब नर नारी । २-१८७।१
राम दरस लगि लोग सब । २-३२२।०
राम दरस लालसा उछाहू । २-२७४।३
राम दरस हित अति अनुरागीं । १-३४५।२
राम दरस हित नेम ब्रत । २-८६।०
राम दीख मुनि बासु सुहावन । २-१२३।६
राम दूत कर मरौं बरु । ६-५६।०
राम दूत मैं मातु जानकी । ५-१२।९
राम देखावहिं अनुजहि रचना । १-२२४।३
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । २-१२६।७
राम धाम पथ पाइहि सोई । २-१२३।२
राम धामदा पुरी सुहावनि । १-३४।३
राम नाम कर अमित प्रभावा । १-४५।२
राम नाम कलि अभिमत दाता । १-२६।६
राम नाम गुन चरित सुहाए । १-११३।३
राम नाम नरकेसरी । १-२७।०
राम नाम बर बरन जुग । १-१९।०

सौजन्य - श्री बनारसी लाल अग्रवाल, ८/११, हरिपदो गली, कलकत्ता-६

राम नाम बिनु गिरा न सोहा । ५-२२।३
राम नाम मनिदीप धरु । १-२१।०
राम नाम महिमा सुर कहहीं । २-१९४।२
राम नाम सिव सुमिरन लागे । १-५९।३
राम निकाईं रावरी । १-२९।ख
राम निरादर कर फलु पाई । २-२२९।४
राम॰ पदारबिंद रति । ७-२४।०
राम पदारबिंद सिर । ६-५५।०
रामु पयादेहि पायँ सिधाए । २-२०२।६
राम परायन ग्यान रत । ७-५४।०
राम पुनीत बिषय रस रूखे । २-१७८।७
राम प्रताप नाथ बल तोरे । २-१९१।१
राम प्रताप प्रबल कपिजूथा । ६-४१।१
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । ६-०।६
राम प्रताप सुमिरि मन । ६-१९।०
राम प्रतोषीं मातु सब । १-३५७।०
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । २-१०७।७
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू । २-१३३।२
राम प्रभाव बिचारि बहोरी । ६-५९।८
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । २-९८।५
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना । २-६८।२
राम प्रसाद भगति बर पायउँ । ७-८८।२
राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे । २-१६८।१
राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह । ७-२।क
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ । २-३११।०
रामप्रिया जग जननि सिय । २-१४०।०
राम पेम भाजन भरतु । २-३२४।०
राम पेम बिधु अचल अदोषा । २-३२४।६
राम बचन गुरु नृपहि सुनाए । २-२९०।७
राम बचन मृदु गूढ़ सुनि । १-५३।०
राम बचन सब के जिय भाए । ६-२।५
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने । १-२७६।५
राम बचन सुनि बानर जूथा । ५-४८।२
राम बचन सुनि बिहँसा । ६-९०।०
राम बचन सुनि सभय समाजू । २-२४८।१
राम बदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा । ३-९।२४
राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी । १-११९।६
राम ब्रह्म परमारथ रूपा । २-९२।७
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना । १-११५।८
राम बान अहि गन सरिस । ५-३६।०
राम बान रबि उएँ जानकी । ५-१५।२
राम बाम दिसि सोभति । ७-११।ख
राम बालि निज धाम पठावा । ४-१०।१
राम बास थल बिटप बिलोकें । २-२१५।७
राम बास बन संपति भ्राजा । २-२३४।५
राम बाहुबल सिंधु अपारू । १-२५९।८
राम बिदा मागत कर जोरी । १-३३६।३
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा । ६-१०३।१०
राम बिमुख लहि बिधि सम देही । ७-९५।३
राम बिमुख सठ चहसि संपदा । ६-९३।८
राम बिमुख संपति प्रभुताई । ५-२२।५
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । २-८३।१
राम बिरहँ तजि तनु छनभंगू । २-२१०।७
राम बिरह ब्याकुल भरतु । २-२१३।०
राम बिरह सागर महँ । ७-१।क
राम बिरोध कुसल जसि होई । ६-२०।९
राम बिरोध न उबरसि । ५-५६।क
राम बिरोध बिजय चह । ६-८४।०

सौजन्य - श्रीमती भगवती देवी अग्रवाल, ८/१९, हरिपद्दो गली, कलकत्ता-६

राम बिरोधी हृदय तें । २-१६२।०
राम बिलोकनि बोलनि चलनी । ७-१८।४
राम बिलोकि बंधु कर जोरें । २-६९।६
राम बिलोके लोग सब । १-२६०।०
राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ । २-२०८।६
राम भगत जग चारि प्रकारा । १-२१।६
रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी । १-४६।३
राम भगत परहित निरत । २-२१९।०
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । २-१३०।४
राम भगत हित नर तनु धारी । १-२३।१
राम भगति अबिरल उर तोरें । ७-११२।१६
राम भगति एहिं तन उर जामी । ७-९५।४
राम भगति चिंतामनि सुंदर । ७-११९।२
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । १-१।८
राम भगति जल मम मन मीना । ७-११०।९
राम भगति जिन्ह कें उर नाहीं । ७-११२।१३
राम भगति दृढ़ पावहिं । ३-४६।क
राम भगति निरुपम निरुपाधी । ७-११५।६
राम भगति पथ परम प्रबीना । ७-६९।३
राम भगति भूषित जियँ जानी । १-८।७
राम भगति मनि उर बस जाकें । ७-११९।९
राम भगतिमय भरतु निहारे । २-२९३।७
राम भगति रत नर अरु नारी । ७-२०।४
राम भगति रस सिद्धि हित । २-२०८।०
रामभगति सुरसरितहि जाई । १-३९।१
राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं । ७-११८।४
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा । ७-८९।२
राम भरत गुन गनत सप्रीती । २-२८९।१
राम भालु कपि कटकु बटोरा । १-२४।३

राम मनुज कस रे सठ बंगा । ६-२५।५
रामु मनुज बोलत असि बानी । ६-३२।८
राम मातु गुर पद सिरु नाई । २-३२३।१
राम मातु दुखु सुखु सम जानी । २-३०८।७
राम मातु सुठि सरलचित । २-१८१।०
राम मारगन गन चले । ६-९१।०
राम मात्र लघु नाम हमारा । १-२८१।६
राम रजाइ मेट मन माहीं । २-२९७।७
राम रजायसु सीस धरि । २-१११।०
राम रमापति कर धनु लेहू । १-२८३।७
राम रहस्य ललित बिधि नाना । ७-११३।२
राम रहित रथ देखिहि जोई । २-१४४।८
राम राज अभिषेक हित । २-५।०
राम राज अभिषेकु सुनि । २-८।०
राम राज कर सुख संपदा । ७-२१।६
राम राज नभगेस सुनु । ७-२१।०
राम राज बैठें त्रैलोका । ७-१९।७
राम राज सुख बिनय बड़ाई । १-४१।६
राम राम कह राम सनेही । २-१४७।८
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना । ६-५७।६
राम राम कहि जे जमुहाहीं । २-१९३।५
राम राम कहि तनु तजहिं । ३-२०।क
राम राम कहि राम कहि । २-१५५।०
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । ५-५।३
राम राम रघुपति जपत । ७-१।ख
राम राम रट बिकल भुआलू । २-३६।१
राम राम सिय लखन पुकारी । २-१४१।७
राम राम हा राम पुकारी । ४-४।५
राम रूपु अरु सिय छबि देखें । १-२४८।१

राम रूप गुन सील सुभाऊ । २-१४८।६
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । २-०।८
राम रूप गुन सुमिरत । ६-६३।०
रामरूप राकेसु निहारी । १-२६१।३
राम रूपु नख सिख सुभग । १-३१५।०
राम रूपु भूपति भगति । १-३६०।०
राम रोष पावक अति घोरा । ३-२८।१७
राम लखन कै कीरति करनी । १-२९४।६
राम लखन तुम्ह सत्रुहन । २-१७३।०
राम लखन पथि कथा सुहाई । २-१२१।८
राम लखन सिय जान चढ़ि । २-८५।०
राम लखन सिय पद सिरु नाई । २-९८।८
राम लखन सिय प्रीति सुहाई । २-१२२।७
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं । २-२१०।८
राम लखन सिय रूप निहारी । २-८८।१
राम लखन सिय रूप निहारी । २-११३।३
राम लखन सिय रूपु निहारी । २-११०।८
राम लखन सिय सुंदरताई । २-११५।२
राम सकल नामन्ह ते अधिका । ३-४१।८
राम सकल बनचर तब तोषे । २-१३६।२
राम सकुल रन रावनु मारा । १-२४।५
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । २-१९४।३
रामसखा कर दीन्हें लागू । २-२१५।४
रामसखाँ तेहि समय देखावा । २-२२४।५
रामसखा रिषि बरबस भेंटा । २-२४२।६
राम सखा सुनि संदनु त्यागा । २-१९२।७
राम सखाँ तब नाव मगाई । २-१५०।३
राम सच्चिदानंद दिनेसा । १-११५।५
राम सत्यब्रत धरम रत । २-२९२।०

राम सत्य सबु जो कछु कहहू । २-४२।४
राम सदा सेवक रुचि राखी । २-२१८।७
राम सनेह मगन सब जाने । २-१३४।७
राम सनेह सरस मन जासू । २-२७६।४
राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ । २-२८२।२
राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ । २-३१।१
राम सपथ सुनि मुनि जनकु । २-२९६।०
राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । २-१०८।१
राम सप्रेम पुलकि उर लावा । २-११०।१
राम सरिस को दीन हितकारी । ६-११३।९
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । १-३०३।२
राम सरिस सुत कानन जोगू । २-४९।७
राम सरूप तुम्हार । २-१२६।०
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । ७-११९।१७
राम सीय जस सलिल सुधासम । १-३६।३
राम सीय तन सगुन जनाए । २-६।४
राम सीय सिर सेंदुर देहीं । १-३२४।८
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । १-३२४।३
राम सुकीरति भनिति भदेसा । १-१३।१०
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ । १-२४।१
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी । ७-४७।३
राम सुना दुखु कान न काऊ । २-२००।१
राम सुप्रेमहि पोषत पानी । १-४२।३
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही । ६-९९।२
राम सुमंत्रहि आवत देखा । २-३८।६
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो । १-२७।४
राम सेन निज पाछें घाली । ६-६९।६
राम सैल बन देखन जाहीं । २-२४८।५
राम सैल सोभा निरखि । २-२३६।०

सौजन्य- श्री मुन्नालाल अग्रवाल, १६१/१, एम.जी.रोड. कलकत्ता-७००००७

राम सो परमातमा भवानी । १-११८।५
राम संग सिय रहति सुखारी । २-१३९।१
रामु अमित गुन सागर । ७-९२।क
रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही । १-४५।६
रामु कहत पावन परम । २-१९४।०
रामु काम सत कोटि सुभग तन । ७-९०।७
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं । २-३८।८
रामु चले बन प्रान न जाहीं । २-८०।६
रामु चहहिं संकर धनु तोरा । १-२५९।२
रामु जाइ बनु करि सुर काजू । २-२८४।६
रामु जाहिं बन राजु तजि । २-११।०
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई । २-७८।८
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । २-७३।६
रामु रामु रटि भोरु किय । २-३८।०
रामु लखनु उर कर बर चीठी । १-२८९।५
रामु लखनु जिन्ह के तनय । १-२९१।०
रामु लखनु दसरथ के ढोटा । १-२६८।७
रामु लखनु दोउ बंधुबर । १-२१६।०
रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । २-१६५।५
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । २-२३२।८
रामु लखन सीता सहित । २-१४१।०
रामु सत्यसंकल्प प्रभु । ५-४१।०
रामु सनेह सकोच बस । २-२९४।०
रामु सप्रेम संग सब भाई । १-३५९।१०
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । २-३२।७
रामु सीय' सोभा अवधि । १-३०९।०
रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं । १-२६६।६
रामु सो अवध नृपति सुत सोई । १-१०७।८
रामु सँकोची प्रेम बस । २-२१७।०

रामचंद्र के चरित सुहाए । १-१३९।६
रामचंद्र के भजन बिनु । ७-७८।क
रामचंद्र गुन बरनैं लागा । ५-१२।५
रामचंद्र मुख चंद्र छबि । १-३२१।०
रामचंदु पति सो बैदेही । २-९०।७
रामहि केवल प्रेमु पिआरा । २-१३६।१
रामहि चितइ रहे थकि लोचन । १-२६८।८
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । २-४३।४
रामहि चितव भायँ जेहि सीया । १-२४१।६
रामहि चितव सुरेस सुजाना । १-३१६।६
रामहि चितवत चित्र लिखे से । २-३०२।३
रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । २-१३।२
रामहि तिलक कालि जौं भयऊ । २-१८।६
रामहि देउँ कालि जुबराजू । २-२६।३
रामहि देखि एक अनुरागे । २-११३।७
रामहि देखि बरात जुड़ानी । १-३०८।१
रामहि देखि रजायसु पाई । १-३५४।३
रामहि निरखि ग्राम नर नारी । १-३४२।८
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । १-३०।१२
रामहि प्रेम समेत लखि । १-२५५।०
रामहि बंधु सोच दिन राती । २-६।८
रामहि भजहिं तात सिव धाता । ७-१०५।३
रामहि भरतु मनावन जाहीं । २-१९१।६
रामहि मातु बचन सब भाए । २-४२।८
रामहि मिलत कैकई । ७-६।क
रामहि रायँ कहेउ बन जाना । २-२९१।३
रामहि लखनु बिलोकत कैसें । १-२६२।७
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । ७-१२९।६
रामहि सौंपि जानकी । ६-६।०

सौजन्य - श्री मंगनी राम पसारी, ३, वुड स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१६

रामाकार भए तिन्ह के मन । ६-११३।७
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं । ५-श्लो-२(३)
रामानुज आगें करि आए । ४-२०।०
रामानुज कहँ रामु कहँ । ६-७६।०
रामानुज दीन्ही यह पाती । ५-५५।९
रामानुज लघु रेख खचाई । ६-३५।२
रामायणे निगदितं । १-श्लो-७(२)
रामायुध अंकित गृह । ५-५।०
रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं । ६-श्लो-१(१)
रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा । २-१७३।३
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा । २-१७८।४
रायँ राम राखन हित लागी । २-७७।१
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । २-१।६
रावन आगें परहिं ते । ६-४४।०
रावन आवत सुनेउ सकोहा । १-१८१।६
रावन कर दीजहु यह पाती । ५-५१।८
रावन क्रोध अनल निज । ५-४९।क
रावन काल कोटि कहुँ । ५-५५।०
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । ५-४१।३
रावन दूत हमहि सुनि काना । ५-५३।३
रावन नगर अल्प कपि दहई । ६-२२।८
रावन नाम जगत जस जाना । ६-८९।४
रावन बध मंदोदरि सोका । ७-६७।२
रावन बान छुआ नहिं चापा । १-२५५।३
रावन भवन चढ़े द्वौ धाई । ६-४३।२
रावन मरन मनुज कर जाचा । १-४८।१
रावन मागेउ कोटि घट । ६-६३।०
रावन सभा ससंक सब । ६-१३।ख
रावन सिर सरोज बनचारी । ६-९१।७

रावन सुत निज मन अनुमाना । ६-५३।६
रावन हृदयँ बिचारा । ६-८८।०
रावनु एकु देखि सुर हरषे । ६-९६।२
रावनु जातुधान कुल टीका । ६-३७।६
रावनु बानु महाभट भारे । १-२४९।२
रावनु रथी बिरथ रघुबीरा । ६-७९।१
रावनारि जसु पावन । ३-४६।क
रावनारि सुखरूप भूपबर । ७-५०।६
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी । २-२१४।७
रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । ७-११७।७
रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी । २-२१३।१
रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । २-०।३
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख । १-९४।०
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । ५-३९।३
रिपु कर रूप सकल तैं गावा । ६-१५।४
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । ५-५१।२
रिपु के समाचार जब पाए । ६-३८।१
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । १-१७४।८
रिपु तेजसी अकेल अपि । १-१७०।०
रिपु परम कोपे जानि । ३-१९।७
रिपु बल धरषि हरषि कपि । ६-३५।क
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । ३-१८।१०
रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । ६-३४।१०
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । ७-१।५
रिपु रुज पावक पाप प्रभु । ३-२१।क
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । ४-५।११
रिपुसूदन पद कमल नमामी । १-१६।९
रिषय संग रघुबंस मनि । १-२१७।०
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । ५-५६।११

सौजन्य - श्री बेनीगोपाल पसारी, ३, वुड स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१६

रिषि आगवन कहेसि पुनि । ७-६४।०
रिषि आयसु असीस सिर राखी । २-२१५।२
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं । २-३०७।७
रिषि निकाय मुनिबर गति देखी । ३-८।३
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । ३-४।२
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । ५-२२।२
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई । १-४७।४
रिषि मम महत सीलता देखी । ७-११२।४
रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू । २-२७७।७
रिषि हित राम सुकेतुसुता की । १-२३।४
रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । १-७७।१
रिस उर मारि रंक जिमि राजा । १-१५७।५
रिस परिहरु अब मंगल साजू । २-३१।३
रीझत राम सनेह निसोतें । १-२७।११
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी । १-१३३।४
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई । ७-८४।५
रुचिर चौतनीं सुभग सिर । १-२१९।०
रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर । ६-११८।६
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई । ३-१६।७
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं । ६-६७।८
रुदन करत देखीं सब नारी । ६-१०४।४
रुद्रहि देखि मदन भय माना । १-८५।४
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं । ७-१०७।१७
रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो । ६-५३।०
रुधिर देखि बिषाद उर भारी । ६-९७।७
रूख कलपतरु सागरु खारा । २-११८।४
रूख बदन करि बचन मृदु । १-१२८।०
रूप धरें जनु चारिउ बेदा । ७-३१।५
रूप बिसेष नाम बिनु जानें । १-२०।५
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । ७-७६।८
रूप रासि बिधि नारि सँवारी । ३-२१।९
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा । १-१९८।१२
रूप सिंधु सब बंधु लखि । १-३३५।०
रे कपि अधम मरन अब चहसी । ६-३०।७
रे कपिपोत बोलु संभारी । ६-२०।१
रे कपि बर्बर खर्ब खल । ६-२५।०
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । ६-९३।५
रे खल का मारसि कपि भालू । ६-८२।१
रे नृप बालक काल बस । १-२७१।०
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । ३-२८।११
रे त्रिय चोर कुमारग गामी । ६-३२।५
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । १-१९८।३
रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । २-१८।७
रेखा त्रय सुंदर उदर । ७-७६।०
रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ । १-२४२।८
रोदति बदति बहु भाँति करुना । १-८६।१०
रोम राजि अष्टादस भारा । ६-१४।७
रोम रोम प्रति लागे । १-२०१।०
रोवहिं नारि हृदय हति पानी । ६-७१।५
रंगभूमि आए दोउ भाई । १-२३९।५
रंगभूमि जब सिय पगु धारी । १-२४७।४
रंतिदेव बलि भूप सुजाना । २-९४।४
रंभादिक सुरनारि नबीना । १-१२५।४

ल

लइ आए बनचर बिपुल । २-२७८।०
लखइ न रानि निकट दुखु कैसें । २-२१।२
लखन उतर आहुति सरिस । १-२७६।०
लखन कहा जस भाजनु सोई । १-२३९।२

सौजन्य - श्री राजगोपाल पसारी, ३, वुड स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१६

लखन कहा हँसि हमरें जाना । १-२७१।१
लखन कहे कछु बचन कठोरा । २-१५५।७
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । १-२७३।५
लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि । १-२७७।०
लखन जानकी सहित तब । २-११८।०
लखन जानकी सहित प्रभु । २-१३३।०
लखन तुम्हार सपथ पितु आना । २-२३१।४
लखन दीख पय उतर करारा । २-१३२।२
लखन बान धनु धरे बनाई । २-१५०।४
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा । २-१७९।३
लखन राम सिय कानन बसहीं । २-३२५।२
लखन राम सिय पंथ कहानी । २-२१५।६
लखन राम सियँ सुनि सुर बानी । २-२३२।३
लखन राम सिय सुंदरताई । २-१०९।२
लखन राम सीतहि अति प्रीती । २-२०७।४
लखन रोषु पावकु प्रबल । १-२६६।०
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू । २-२२६।६
लखन लखेउ भा अनरथ आजू । २-७२।७
लखन लखेउ रघुबंसमनि । १-२५९।०
लखन सकोप बचन जे बोले । १-२५३।१
लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा । २-८६।३
लखन सपन यह नीक न होई । २-२२५।७
लखन हृदयँ लालसा बिसेषी । १-२१७।१
लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि । २-१३।०
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी । २-९३।८
लखनु रामु सिय जाहुँ बन । २-२८२।०
लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा । १-३१०।७
लखनहि भेंटि प्रनामु करि । २-३१८।०
लखब सनेहु सुभायँ सुहाएँ । २-१९२।१
लखहिं न भूप कपट चतुराई । २-२६।६
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ । २-२५१।३
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू । २-२५९।२
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई । २-१७५।५
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । २-१६२।३
लखि रुख रानि जनायउ राऊ । २-२८६।८
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई । २-२५८।७
लखि सनेह कातरि महतारी । २-६८।१
लखि सनेह सुनि बचन बिनीता । २-२८४।१
लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू । २-२६७।१
लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं । २-१४०।६
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । २-२५१।५
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी । २-२८३।५
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । १-६।५
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू । २-३०१।८
लखी नरेस बात फुरि साँची । २-३३।५
लखी महीप कराल कठोरा । २-३०।३
लखी राम रुख रहत न जाने । २-७७।२
लखेउ न काहूँ मरम कछु । ७-१२।ग
लगन बाचि अज सबहि सुनाई । १-९०।७
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा । २-२६४।६
लगीं देन सिख सीलु सराही । २-४८।४
लगे कहन उपदेस अनेका । २-२७७।३
लगे कहन कछु कथा पुनीता । २-१४०।८
लगे कहन हरिकथा रसाला । १-५९।५
लगे जनक मुनिजन पद बंदन । २-२७४।७
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि । २-६०।०
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू । १-१४०।८
लगे सराहन सहस मुख । १-३१३।०

लगे सँवारन सकल सुर । १-९१।०
लगे सुभग तरु परसत धरनी । १-३४३।८
लगे सुमंगल सजन सब । २-८।०
लगे होन पुर मंगलगाना । १-९८।३
लगे होन मंगल सगुन सुनि । २-२३४।०
लघु जीवन संबतु पंच दसा । ७-१०१।४
लघु बायस बपु धरि हरि संगा । ७-७४।७
लघु लाग बिधि की निपुनता । १-९३।९
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही । १-१४१।४
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने । १-१३०।२
लच्छन धाम राम प्रिय । १-१९७।०
लच्छन सब बिचारि उर राखे । १-१३०।५
लछिमन अति लाघवँ सो । ३-१७।०
लछिमन अरु सीता सहित । ७-७।०
लछिमन कपीस समेत । ६-१००।१०
लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा । ३-२६।१५
लछिमन कहा तोहि सो बरई । ३-१६।१८
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । ४-१७।८
लछिमन गए बनहिं जब । ३-२३।०
लछिमन चले क्रुद्ध होइ । ६-८२।०
लछिमन चले क्रुद्ध होइ । ६-५२।०
लछिमन तुरत बोलाए । ४-११।०
लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो । ६-१०४।६
लछिमन दीख उमाकृत बेषा । १-५२।१
लछिमन देखत काम अनीका । ३-३७।११
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा । ३-३६।३
लछिमन देखु मोर गन । ४-१३।०
लछिमन बान सरासन आनू । ५-५७।१
लछिमन भरत मिले तब । ७-५।०

लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा । ६-७५।१४
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । ६-५३।२
लछिमन सब मातन्ह मिलि । ७-६।ख
लछिमन समुझाए बहु भाँती । ३-२९।८
लछिमन संग जाहु सब भाई । ६-७४।७
लछिमनहूँ यह मरमु न जाना । ३-२३।५
लछिमन होहु धरम के नेगी । ६-१०८।२
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । १-२२०।८
लता ओट तब सखिन्ह लखाए । १-२३१।३
लता बिटप मागें मधु चवहीं । ७-२२।५
लताभवन तें प्रगट भे । १-२३२।०
लता ललित बहु जाति सुहाईं । ७-२७।२
लरत अकास जुगल सम जोधा । ६-९४।६
लरत निसाचर भालु कपि करि । ६-८०।ग
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू । ६-७१।११
लरिका श्रमित उनीद बस । १-३५५।०
लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं । ७-७५।क
लरिकाइहि तें रघुबर बानी । २-२७३।५
ललित अंक कुलिसादिक चारी । ७-७५।७
ललित कपोल मनोहर नासा । ७-७६।४
लव निमेष परमानु जुग । ६-०।क
लव निमेष महुँ भुवन निकाया । १-२२४।४
लसत मंजु मुनि मंडली । २-२३९।०
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि । १-३२६।१७
लहहिं चारि फल अछत तनु । १-२।०
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी । १-३१९।३
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर । २-७०।०
लाग न उर उपदेसु । १-५१।०
लागइ अति पहार कर पानी । २-६२।२

सौजन्य - श्री सत्यनारायण सराफ, पी-३० डालिम तल्ला लेन, एक्सटे., कल-६

लागत बान जलद जिमि गाजहिं । ६-६७।७
लागत बान बीर चिक्करहीं । ६-८६।९
लागत सर धावा रिस भरा । ६-६९।८
लागति अवध भयावनि भारी । २-८२।५
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । २-४२।७
लागहिं सैल बज्र तन तासू । ६-८१।३
लागि तृषा अतिसय अकुलाने । ४-२३।३
लागि बिलोकन सखिन्ह तन । १-२४८।०
लागि देवमाया सबहि । २-३०२।०
लागि लागि पग सबनि सिय । २-२४६।०
लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । ६-९३।३
लागि सासु पग कह कर जोरी । २-६३।५
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई । ५-१२।६
लागे करन ब्रह्म उपदेसा । ७-११०।३
लागे पखारन पाय पंकज । १-३२३।९
लागे बरषन राम पर । ३-१९।क
लागे बिटप मनोहर नाना । १-२२६।४
लागे सराहन भाग सब । २-२५०।९
लागेउ तोहि पिसाच जिमि । २-३५।०
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । ६-२८।६
लाजहिं तन सोभा निरखि । १-१४६।०
लातहुँ मारें चढ़ति सिर । २-२२९।०
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । २-१०६।७
लाभु कि किछु हरि भगति समाना । ७-१११।८
लालन जोगु लखन लघु लोने । २-१९९।१
लिए उठाइ बिटप अरु भूधर । ६-६४।४
लिए उठाइ लगाइ उर । २-१६४।०
लिए गोद करि मोद समेता । १-३५३।३
लिए सनेह बिकल उर लाई । २-४३।३

लिए फल मूल भेंट भरि भारा । २-८७।२
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । २-५४।२
लिएँ संपदा सकल सुख । १-३०६।०
लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान । ६-१२०।१३
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । ६-१।६
लीन्ह एक तेहिं सैल उपाटी । ६-६९।९
लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित । ६-५९।०
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । १-४८।४
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू । २-१७९।४
लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई । ७-१११।१६
लीन्हि परीछा कवन बिधि । १-५५।०
लीन्हि रायँ उर लाइ जानकी । १-३३७।६
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । २-२८५।४
लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा । १-१४०।६
लीला सगुन जो कहहिं बखानी । १-३५।५
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । २-१४७।६
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें । १-२६०।७
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । २-१४७।७
लेन आइहहिं बंधु दोउ । १-३१०।०
लेन चले सादर एहि भाँती । १-३१२।५
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । १-२९४।५
लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ । १-२६५।३
लेहु नयन भरि रूप निहारी । १-३३४।३
लै अगवान बरातहि आए । १-९५।१
लै उछंग कबहुँक हलरावै । १-१९९।८
लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । ३-१७।११
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं । ३-३०।३
लै पुष्पक प्रभु आगें राखा । ६-११६।४
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा । २-८८।५

सौजन्य - चर अचर अर्पण न्यास, ४ नेशनल लाइब्रेरी एवेन्यू, कलकत्ता - २७

लै राखेसि गिरि खोह महुँ । १-१७१।०
लै सिर बाहु चले नाराचा । ६-१०२।२
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । ४-६।२५
लै त्रिसूल धावा कपि भागे । ६-७५।४
लोक कल्पना बेद कर । ६-१४।०
लोकपाल अवलोकि सिहाने । १-३२५।६
लोकपाल बल बिपुल ससि । ६-२२।क
लोक बेद तें बिमुख भा । २-२२८।०
लोक बेद. सब भाँतिहिं नीचा । २-१९३।३
लोक बेद संमत सबु कहई । २-२०६।३
लोकमान्यता अनल सम । १-१६१।०
लोक रीति जननीं करहिं । १-३५०।ख
लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता । ७-८०।१
लोक सुजसु परलोक सुखु । २-२६३।०
लोकप होहिं बिलोकत जासू । २-१३९।८
लोकप होहिं बिलोकत तोरें । २-१०२।६
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा । २-२१७।६
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं । २-२५१।७
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती । १-२७।५
लोग उचाटे अमरपति । २-३१६।०
लोग दुखित दिन दुइ । २-२४८।०
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू । २-७८।७
लोग बियोग बिषम बिष दागे । २-१८३।२
लोग सोग श्रम बस गए सोई । २-८४।६
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा । १-१९१।३
लोचन गोचर सुकृत फल । २-१०६।०
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । २-१२७।६
लोचन जलु रह लोचन कोना । १-२५८।२
लोचन निज पद जंत्रित । ५-३०।०
लोचन मग रामहि उर आनी । १-२३१।७
लोचन सजल जोरि कर दोऊ । ६-१०८।४
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । २-१४४।३
लोचन सरोरुह स्त्रवत सींचत । २-१७५।१०
लोभ कें इच्छा दंभ बल । ३-३८।ख
लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । ४-२०।५
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । ७-२९।६
लोभु न रामहि राजु कर । २-३१।०
लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । ७-३९।१
लोभी जसु चह चार गुमानी । ३-१६।१६
लोभी लोलुप कल कीरति चहई । १-२६६।३
लोभी लंपट लोलुपचारा । २-१६७।३
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । १-३०२।५
लंका निसिचर निकर निवासा । ५-५।१
लंकापति कपीस नल नीला । ७-७।१
लंका बाँके चारि दुआरा । ६-३८।२
लंका सिखर उपर आगारा । ६-९।७
लंका सिखर उपर आगारा । ६-१२।४
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा । ७-६६।४
लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसें । ६-४४।८
लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । ६-३९।१
लंकेस अति बल गर्ब । ६-११२।७
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी । १-११४।२

व

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं । १-श्लोक।३
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वर । १-श्लोक।४
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं । ३-श्लोक।४
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं । ५-श्लोक।१
वन्दे कन्दावदातं सरसिज । ६-श्लोक।१

सौजन्य - श्री द्वारका प्रसाद सारडा, ४३/४४, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता - ७००००७

वन्देऽहं तमशेषकारणपरं । १-श्लोक।६
वर्णानामर्थसंघानां रसानां । १-श्लोक।१
वह सुख संपति समय समाजा । १-११४।२
वह सोभा समाज सुख । ७-१२।क
विनिश्चितं वदामि ते । ७-१२२।ग
विविक्त वासिन: सदा । ३-३।१५
विशुद्ध बोध विग्रहं । ३-३।१०
वैराग्याम्बुज भास्करं ह्यघ । ३श्लोक१(२)
व्रजंति नात्र संशयं । ३-३।२४

श

शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं…… । ६-श्लोक२(२)
शर्व: सर्वगत: शिव: शशिनिभ: । २-श्लोक१(४)
शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं । ५-श्लोक१(१)
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ । ४-श्लोक१(२)
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिज । ७-श्लोक१(१)
श्याम तामरस दाम शरीरं । ३-१०।३
श्रद्धा छमा मयत्री दाया । ३-४५।४
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । ७-८९।४
श्रद्धा भगति समेत प्रभु । २-२४७।०
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । २-६६।४
श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन । ६-७०।१४
श्रमित भूप निद्रा अति आई । १-१६९।२
श्रवन दिसा दस बेद बखानी । ६-१४।४
श्रवन नासिका काटैं लागे । ५-५३।४
श्रवन पुटन्हि मन पान करि । ७-५२।ख
श्रवन समीप भए सित केसा । २-१।७
श्रवन सुजसु सुनि आयउँ । ५-४५।०
श्रवन सुधा सम बचन । १-१४५।०
श्रवन सुनी सठ ता करि बानी । ५-३६।१
श्रवनवंत अस को जग माहीं । ७-५२।५
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं । ३-१६।८
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । ५-५२।७
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । १-१३८।४
श्राप सीस धरि हरषि हियँ । १-१३७।०
श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो । ६-१०८।९
श्रीगुरु चरन सरोज रज । २-०।१
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । १-०।५
श्रीनिवासपुर तें अधिक । १-१२९।०
श्रीपति निज माया ,तब प्रेरी । १-१२९।८
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । ३-२९।१३
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । ७-३३।३
श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । ७-५।१
श्रीमच्छाम्भुमुखेन्दु सुन्दरवरे । ४-श्लोक-२।२
श्री मद बक्र न कीन्ह केहि । ७-७०।ख
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । १-१५०।८
श्रीरघुनाथ नाम तजि । ६-१२१।ख
श्रीरघुबीर प्रताप ते । ६-३।०
श्रीरघुबीर परायन जेहिं । ७-१२७।०
श्रीराम रावन समर चरित । ६-१००।२३
श्री सहित अनुज समेत कृपा । ३-२५।१०
श्री सहित दिनकर बंस भूषन । ७-११।१३
श्रीहत भए भूप धनु टूटे । १-२६२।५
श्रीहत भए हारि हियँ राजा । १-२५०।५
श्रीहत सर सरिता बन बागा । २-१५७।६
श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । २-१९८।५
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर । ७-२३।२
श्रुति पुरान कह नीति असि । ७-८६।०
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । ७-११६।६

सौजन्य - श्री बंशी लाल सोनी, ५, लेक रेंज, कलकत्ता - ७०००२६

श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । ७-१२१।१४
श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी । ७-१२२।२
श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह । २-१२५।१
श्रुति संमत हरि भक्ति पथ । ७-१००।ख
श्रोता बकता ग्याननिधि । १-३०।ख
श्रोता सुमति सुसील सुचि । ७-६९।ख
श्रोता त्रिबिध समाज पुर । १-३९।०

ष

षट कंध साका पंच बीस । ७-१२।१८
षट बिकार जित अनघ अकामा । ३-४४।७

स

सई उतरि गोमतीं नहाए । २-३२१।५
सई तीर बसि चले बिहाने । २-१८८।१
सक सर एक सोषि सत सागर । ५-५५।२
सक संग्राम जीति को ताही । ६-५४।२
सकइ उठाइ सुरासुर मेरू । १-२९१।७
सकइ न बोलि बिकल नरनाहू । २-७६।१
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी । २-२५।३
सक्ति सूल तरवारि कृपाना । ६-७२।१
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा । ७-९०।८
सकरुन बचन सुनत भगवाना । ६-६९।५
सकल अमानुष करम तुम्हारे । १-३५६।६
सकल अलौकिक सुंदरताई । १-३१५।४
सकल अवनि मंडल तेहि काला । १-१५३।८
सकल अंग संपन्न सुराऊ । २-२३४।८
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई । २-१०९।५
सकल कला करि कोटि बिधि । १-८६।०
सकल कहहिं कब होइहि काली । २-१०।६
सकल कामना हीन जे । १-२२।०
सकल काम प्रद तीरथराऊ । २-२०३।६
सकल कुसल कहि भरत सुनाई । २-१५८।७
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु । ७-७८।ख
सकल गुण निधानं । ५-श्लो-३।३
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । ५-५९।८
सकल चरित तिन्ह देखे । ५-५१।०
सकल तनय चिर जीवहुँ । १-१९६।०
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा । ७-४।५
सकल देखाए जानकिहि । ६-११९।ख
सकल प्रकार बिकार बिहाई । २-७४।६
सकल बरात जनक सनमानी । १-३२०।५
सकल बिकार रहित गतभेदा । २-९२।८
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही । १-३८।५
सकल बिलोकत भरत मुखु । २-२९६।०
सकल भाँति सम साजु समाजू । १-३१९।६
सकल मरमु रघुनायक जाना । ६-४६।१
सकल मलिन मन दीन दुखारी । २-२२५।५
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि । ३-९।०
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । ३-२।३
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा । ६-११९।३
सकल लोग सब भूप डेराने । १-२५३।२
सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना । १-६७।३
सकल सनेह सिथिल रघुबर कें । २-२२५।१
सकल सभहि हठि हठकि तब । १-६३।०
सकल सभा कै मति भै भोरी । १-२५७।६
सकल सराहत राम सो । २-२३२।०
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू । २-७४।४
सकल सुकृत फल भूरि भोग से । १-३१।१३
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । २-१।२

सौजन्य - श्री मोतीलाल सोनी, ९, लेक रेंज, कलकत्ता-७०००२६

सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू । ४-२२।२
सकल सुमंगल अंग बनाएँ । १-३१७।३
सकल सुमंगल दायक । ५-६०।०
सकल सुमंगल मूल जग । २-२६५।०
सकल सुमंगल मूल जग । २-२०७।०
सकल सुमंगल सजें आरती । १-३४४।६
सकल सुरन्ह के हृदयँ । १-८८।०
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा । २-१८८।७
सकल सोक संकुल नर नारी । २-२७६।७
सकल सौच करि जाइ नहाए । १-२२६।१
सकल सौच करि राम नहावा । २-९३।३
सकहु त आयसु धरहु सिर । २-४०।०
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । ६-६०।३
सकुच बिहाइ मागु नृप मोही । १-१४८।८
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा । २-११४।५
सकुचउँ तात कहत एक बाता । २-२५५।२
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं । १-३०६।५
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद । १-९९।१०
सकुचि राम निज सपथ देवाई । २-९५।५
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । २-११६।४
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे । १-२३३।३
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । १-२५८।३
सकुचे सकल भुआल जनु । १-२६४।०
सकुनाधम सब भाँति अपावन । ७-१२२।८
सकुल सदल प्रभु रावन मार्‍यो । ६-११५।३
सखर सुकोमल मंजु दोष । १-१४।घ
सखहि सनेह बिबस मग भूला । २-२३७।६
सखा अनुज सिय सहित । २-१०४।०
सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । ५-५०।१
सखा धर्ममय अस रथ जाकें । ६-७९।११
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । ५-४२।८
सखा परम परमारथु एहू । २-९२।६
सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । २-२०१।१
सखा बचन सुनि बिटप निहारी । २-२३७।१
सखा बचन सुनि हरषे । ४-५।०
सखा रामु सिय लखनु । २-१४९।०
सखा समुझि अस परिहरि मोहू । २-९३।१
सखा समेत मनोहर जोटा । २-२३८।१
सखा सोच त्यागहु बल मोरें । ४-६।१०
सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । १-२२२।४
सखि जस राम लखन कर जोटा । १-३१०।३
सखि परंतु पनु राउ न तजई । १-२२१।४
सखि सबु करब पुरारि पुन्य । १-३११।०
सखि सब कौतुक देखनिहारे । १-२५५।१
सखि हमरें आरति अति तातें । १-२२१।८
सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे । १-२६३।१
सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । १-२६२।३
सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत । २-५०।०
सखी बचन सुनि भै परतीती । १-२५६।३
सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता । १-२६४।८
सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही । १-३४८।५
सखीं संग लै कुअँरि तब । १-१३४।०
सगुन उपासक परहित निरत । ५-४८।०
सगुन उपासक संग तहँ । ४-२६।०
सगुन ब्रह्म अवराधन । ७-११०।घ
सगुन बिचारि धरी मन धीरा । ६-९९।६
सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । १-३४५।७
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा । ६-११८।८

सौजन्य - श्रीमती कृष्णा सोनी, ८, लेक रेंज, कलकत्ता-७०००२६

सगुन होहिं सुंदर सकल । ७-१।२
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । २-२३१।५
सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । १-११५।१
सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । ६-१११।७
सचिउ सभीत सकइ नहिं पूछी । २-३७।८
सचिव आगमनु सुनत सबु । २-१४७।०
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू । १-१७५।४
सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती । १-१५४।३
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी । २-१४९।३
सचिव नारि गुर नारि सयानी । २-७७।७
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू । २-२३४।६
सचिव बैद गुर तीनि जौं । ५-३७।०
सचिव बोलि बोले खर दूषन । ३-१८।२
सचिव राम आगमन कहि । २-४३।०
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । २-१०४।३
सचिव सभय सिख देइ न कोई । १-२५७।३
सचिव सभीत बिभीषन जाकें । ५-५५।७
सचिव सयान बंधु बलबीरा । १-१५३।२
सचिव सुभट भूपति बिचार के । १-३१।६
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । २-३२२।१
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । ५-४०।९
सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । २-७५।७
सचिवँ चलायउ तुरत रथु । २-८५।०
सचिवँ सँभारि राउ बैठारे । २-४३।२
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई । २-८६।६
सचिवागवन नगर नृप मरना । ७-६४।५
सची सारदा रमा भवानी । १-३१७।६
सजल नयन कछु मुख करि रूखा । ७-८७।६
सजल नयन कह जुग कर जोरी । ६-१३।७.
सजल नयन तन पुलकि निज । २-११०।०
सजल नयन तन पुलकित । ६-१२०।क
सजल नयन पुलकित कर जोरी । ७-८२।८
सजल बिलोचन पुलक सरीरा । २-११३।४
सजल बिलोचन हृदयँ गलानी । २-१९८।४
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । ५-२२।६
सज्जन कुमुद चकोर चित । १-३२।०
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई । १-७।१४
सजि आरती अनेक बिधि । १-३१७।०
सजि आरती मुदित उठि धाई । २-१५८।३
सजि गज रथ पदचर तुरग । १-३०४।०
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली । २-१६।४
सजि बन साजु समाजु सबु । २-७९।०
सजि सारंग एक सर । ६-९६।०
सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । ६-९९।८
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । ५-५७।२
सठ स्वपच्छ तव हृदयँ बिसाला । ७-१११।१५
सठ साखामृग जोरि सहाई । ६-२७।१
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । १-२।९
सठ सूनें हरि आनेहि मोही । ५-८।९
सठ सेवक की प्रीति रुचि । १-२८।क
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । ६-९६।६
सत जोजन आयउँ छन माहीं । ३-२४।६
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । ५-१।१०
सत पंच चौपाई मनोहर । ७-१२९।१५
सत सत सर मारे दस भाला । ६-८२।६
सतसमाज सुरलोक सब । १-११३।०
सत सुरेस सम बिभव बिलासा । १-१२९।३
सत सेष सारद निगम कबि । ६-१००।२४

सतसंगत मुद मंगल मूला । १-२।८
सत संगति दुर्लभ संसारा । ७-१२२।६
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें । १-१४९।३
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । ५-११।४
सत्य कहउँ खग तोहि सुचि । ७-८७।ख
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही । १-१६७।२
सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि । ६-२३।ख
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ । २-४६।७
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । १-७९।५
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने । १-३३२।२
सत्य तोयनिधि कंपति । ६-५।०
सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा । १-१७४।७
सत्यधाम सर्बग्य तुम्ह । १-४६।०
सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु । ६-२३।क
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा । १-१६५।५
सत्य बचन कहु निसिचर नाहा । ६-२२।७
सत्य बचन बिस्वास न करही । ७-१११।१४
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । २-२७।६
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । ६-८९।१०
सत्य सराहि कहेहु बरु देना । २-२९।६
सत्यलोक नारद चले करत । १-१३८।०
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । ६-६७।३
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । ३-२६।५
सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी । २-२१९।१
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । २-२५३।३
सत्यसंध रघुबर बचन । २-२६४।०
सत्यं वदामि च । ५-श्लो-२।२
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । ७-१०३।३
सतानंद अरु बिप्र सचिव गन । १-३०८।५
सतानंद तब आयसु दीन्हा । १-२६२।८
सतानंदु तब जनक बोलाए । १-२३८।९
सतानंद तब सचिव बोलाए । १-३१२।२
सतानंद पद बंदि प्रभु । १-२३९।०
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू । १-५७।५
सती कपटु जानेउ सुरस्वामी । १-५२।३
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ । १-५२।५
सती बसहिं कैलास तब । १-५८।०
सती बिधात्री इंदिरा । १-५४।०
सतीं बिलोके ब्योम बिमाना । १-६०।३
सती मरनु सुनि संभु गन । १-६४।०
सती सभीत महेस पहिं । १-५३।०
सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ । १-५५।१
सती सिरोमनि सिय गुनगाथा । १-४१।७
सतीं सो दसा संभु कै देखी । १-४९।५
सतीं हृदयँ अनुमान किय । १-५७।क
सतीं कीन्ह सीता कर बेषा । १-५५।७
सतीं जाइ देखेउ तब जागा । १-६२।४
सतीं जो तजी दच्छ मख देहा । १-८२।२
सतीं दीख कौतुकु मग जाता । १-५३।४
सतीं मरत हरि सन बरु मागा । १-६४।५
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । १-३०।१४
सदगुर ग्यान बिराग जोग के । १-३१।३
सदगुर बैद बचन बिस्वासा । ७-१२१।६
सदगुर मिलें जाहि जिमि । ४-१७।०
सदग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महुँ । १-८३।१०
सदा अचल एहि कर अहिवाता । १-६६।४
सदा कृतारथ रूप तुम्ह । ७-६३।ख
सदा रहहिं अपनपौ दुराएँ । १-१६०।२

सदा रामु एहि प्रान समाना । २-४६।६
सदा राम प्रिय होहु तुम्ह । ७-११३।क
सदा रोगबस संतत क्रोधी । ६-३०।३
सदा सर्बगत सर्बहित । ७-१६।०
सदा सुनहिं सादर नर नारी । १-३७।२
सदा सुमन फल सहित सब । १-६५।०
सदा सो सानुकूल रह मो पर । १-१६।८
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह । २-११७।०
सदाचार जप जोग बिरागा । १-८३।८
सन इव खल पर बंधन करई । ७-१२०।१७
सनकादिक नारदहि सराहहिं । ७-४१।७
सनकादिक बिधि लोक सिधाए । ७-३५।१
सनकारे सेवक सकल । २-१९६।०
संबंध राजन रावरें हम । १-३२५।१५
सनमानि सकल बरात आदर । १-३२५।९
सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे । २-२२५।९
सनमाने प्रिय बचन कहि । २-१०।०
सनमुख आयउ दधि अरु मीना । १-३०२।८
सन्मुख चितवहिं राम तन । ६-११८।ग
सन्मुख मरन बीर कै सोभा । ६-४१।१०
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । २-१८९।२
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । ५-४३।२
सनमुख होत जो राम पद । २-१८५।०
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा । ६-३२।६
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे । १-१५३।७
सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । १-३६।१
सप्तावरन भेद करि । ७-७९।ख
सपथ तुम्हार भरत कै आना । २-४२।२
सपनें जेहि सन होइ लराई । ४-६।२०
सपनें बानर लंका जारी । ५-१०।३
सपनें होइ भिखारि नृपु । २-९२।०
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु । २-४८।०
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू । २-२६०।५
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ । २-२५०।६
सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर । १-१५।०
सफल पूगफल कदलि रसाला । १-३४३।७
सफल रसाल पूगफल केरा । २-५।६
सफल सकल सुभ साधन साजू । २-१०६।६
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । ७-१०७।६
सब अमर हरषे सुमन बरषि । १-१०१।१२
सब उदार सब पर उपकारी । ७-२१।७
सब उपमा कबि रहे जुठारी । १-२२९।८
सब कर आजु सुकृत फल बीता । २-५६।५
सब कर परम प्रकासक जोई । १-११६।६
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । ७-९४।६
सब कर फल हरि भगति सुहाई । ७-११९।१८
सब कर मत खगनायक एहा । ७-१२१।१३
सब कर संसउ अरु अग्यानू । १-२५९।४
सब कर हित रुख राउरि राखें । २-२५७।३
सब कहुँ सुखद राम अभिषेकू । २-२५४।१
सब के उर अंतर बसहु । २-२५७।०
सब के देखत बेदन्ह । ७-१३।क
सब के प्रिय सब के हितकारी । २-१२९।३
सब के बचन प्रेम रस साने । ७-४६।७
सब के बचन श्रवन सुनि । ६-८।०
सब के ह्रदयँ मदन अभिलाषा । १-८४।१
सब कें उर अभिलाषु अस । २-१।०
सब कें उर निर्भर हरषु । १-३००।०

सब कें गृह गृह होहिं पुराना । ७-२५।७
सब कें देखत महि परे । ६-९३।क
सब कें देह परम प्रिय स्वामी । ५-२१।४
सब के प्रिय सेवक यह नीती । ७-१५।८
सब कें संमत सर्ब हित । २-२९३।०
सब कै निंदा जे जड़ करहीं । ७-१२०।२७
सब कै ममता ताग बटोरी । ५-४७।५
सब कै सार सँभार गोसाईं । २-७९।६
सब कोउ राम पेममय पेखा । २-२९३।८
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी । १-९।५
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । ७-२०।८
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता । ३-१।८
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । १-१२।१
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई । २-१३०।६
सब तरु फरे राम हित लागी । ६-४।५
सब ते सो दुर्लभ सुरराया । ७-५३।७
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन । ७-९।५
सब दुख दुसह सहावहु मोही । २-४४।२
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी । १-१५४।२
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । ७-२०।२
सब नर कल्पित करहिं अचारा । ७-९९।१०
सब नर काम लोभ रत क्रोधी । ७-९८।३
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी । १-१०१।८
सब निज कथा कहउँ मैं गाई । ७-९४।४
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी । ७-२०।७
सब नृप भए जोगु उपहासी । १-२५०।३
सब प्रकार करिहउँ सेवकाई । ४-४।८
सब प्रकार भूपति बड़भागी । २-१७३।१
सब प्रकार राजहि अपनाई । १-१६०।७

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे । १-२८१।८
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ । २-२२७।०
सब परिहरि रघुबीरहि । ५-३८।०
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई । १-१७३।८
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा । ६-१०६।७
सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी । २-३।१
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । ७-६१।२
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइअ । ६-११५।७
सब बिधि पुरी मनोहर जानी । १-३४।५
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्ही । १-३३०।३
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी । २-०।६
सब बिधि सबहि समदि नरनाहू । १-३५३।१
सब बिधि सानुकूल लखि सीता । २-२४१।६
सब बिधि सोइ करतब्य तुम्हारें । २-१५।२
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । २-१७२।३
सब भरोस तजि जो भज रामहि । ७-१०२।६
सब भाँति अधम निषाद सो । ६-१२०।१छं
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । ७-१६।७
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । ७-८६।४
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता । ४-२५।२
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा । ६-१०५।३
सब मिलि देहिं रावनहि गारी । ६-४१।५
सब मुदित सुंदरता सराहहिं । १-३२४।छं
सब मंचन्ह तें मंचु एक । १-२४४।०
सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं । ७-२।३
सब रजनीचर कपि संघारे । ६-७९।६
सबु रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ । २-२८३।७
सब रीति प्रीति समेत करि सो । १-३२५।छं
सब लच्छन संपन्न कुमारी । १-६६।६

सौजन्य - कुमारी बासवदत्ता फाउण्डेशन, ५, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता - ७०००१९

सब लोग बियोग बिसोक हए । ७-१०१।८
सब सन कहा बुझाइ बिधि । १-८२।०
सब समाचार किरात कोलन्हि । २-२२५।१२
सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । २-२१३।७
सब समेत पुर धारिअ पाऊ । २-२४७।७
सब सर सिंधु नदीं नद नाना । २-१३७।५
सब सादर सुनि मुनिबर बानी । २-२५४।३
सब साधन कर सुफल सुहावा । २-२०९।४
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति । २-२८०।७
सब सिसु एहि मिस प्रेमबस । १-२२४।०
सब सुख खानि भगति तैं मागी । ७-८४।३
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर । ७-२७।१२
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं । १-२०७।५
सब सुंदर सब भूषनधारी । १-२९७।८
सब सुर जिते एक दसकंधर । ६-९५।७
सब सुर बिष्नु बिरंचि समेता । १-८७।५
सबु असमंजस अहइ सयानी । १-२२२।३
सबु करि मागहिं एक फलु । २-१२९।०
सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा । १-९०।१
सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । २-४०।४
सबु समाजु एहि भाँति बनाई । १-३३३।१
सबइ लाभु जग जीव कहँ । १-३४१।०
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । २-१०८।४
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । ५-१०।२
सबरी देखि राम गृहँ आए । ३-३३।६
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा । २-२४९।३
सबहिं बिचारु कीन्ह मन माहीं । २-८३।५
सबहि बंदि मागहिं बरदाना । १-३५०।२
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । २-६६।२
सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई । १-३४१।१
सबहि मनहिं मन किए प्रनामा । १-३२२।३
सबहि मानप्रद आपु अमानी । ७-३७।४
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही । २-२।३
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । १-१।१२
सबिधि सितासित नीर नहाने । २-२०३।४
सभय देव करुनानिधि जान्यो । ६-७०।१
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ । २-२४।५
सभय बिलोके लोग सब । १-२७०।०
सभय रानि कह कहसि किन । २-१३।०
सभय लोक सब लोकपति । २-२३०।०
सभय सप्रेम बिनीत अति । १-२२५।०
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । ५-५८।१
सभय सुभाउ नारि कर साचा । ५-३६।२
सभा माझ जेहि तव बल मथा । ६-३६।३
सभा माझ परि ब्याकुल । ३-२१।०
सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । २-३०२।२
सभा सकल सुनि रघुबर बानी । २-३०६।१
सभा सकुच बस भरत निहारी । २-२९६।१
सभा समेत राउ अनुरागे । १-२९२।७
सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । ६-७।७
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी । ७-३७।२
सम जम नियम फूल फल ग्याना । १-३६।१४
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं । ७-३७।८
सम दम संजम नियम उपासा । २-३२४।४
सम प्रकास तम पाख दुहुँ । १-७।ख
सम महि तृन तरुपल्लव डासी । २-६६।५
सम मानि निरादर आदरही । ७-१३।१६
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती । ३-४५।२

समउ जानि गुर आयसु दीन्हा । १-३४६।७
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाईं । १-३२३।३
समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए । १-३२१।१
समउ समाजु लाज गुरजन की । २-३०४।२
समउ समुझि धरि धीरजु राजा । २-२९१।६
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । ५-४७।६
समदरसी मोहि कह सब कोऊ । ४-३।८
समन अमित उतपात सब । १-४१।०
समन पाप संताप सोक के । १-३१।५
समय जानि उपरोहित आवा । १-१७१।८
समय जानि गुर आयसु पाई । १-२२६।२
समय प्रतापभानु कर जानी । १-१५७।३
समय पाइ तनु तजि अनयासा । १-१५१।८
समय बिलोकि बाजने बाजे । १-३३८।५
समय बिलोकि बिबाह कर । १-९९।०
समय समाज धरम अबिरोधा । २-२९५।३
समय सुहावनि गारि बिराजा । १-३२८।७
समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला । १-३१८।६
समर धीर नहिं जाइ बखाना । १-१७९।६
समर बालि सन करि जसु पावा । ५-२१।२
समर बिजय रघुबीर के । ६-१२१।क
समर भूमि दसकंधर कोप्यो । ६-९२।३
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । २-१८९।३
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा । १-१३८।७
समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं । १-६८।८
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । २-१२०।८
समरथ सरनागत हितकारी । २-२९७।३
समाचार कहि जनक सुनाए । १-२६९।१
समाचार जब लछिमन पाए । २-६९।१
समाचार जानकिहि सुनावहु । ६-१०६।२
समाचार तेहि समय सुनि । २-५७।०
समाचार पुनि सब कहे । ६-३८।ख
समाचार पुरबासिन्ह पाए । ७-२।४
समाचार सब कहि समुझाए । ६-४६।२
समाचार सब लोगन्ह पाए । १-२९५।२
समाचार सब सुने निषादा । २-१८८।२
समाचार सब संकर पाए । १-६४।१
समाचार सुनि तुहिनगिरि । १-९७।०
समाधानु करि सो सबही का । २-३८।५
समाधान तब भा यह जाने । २-२२६।५
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । ४-१३।७
समिधि सेन चतुरंग सुहाई । १-२८२।३
समुझत अमित राम प्रभुताई । १-११।१२
समुझत जासु दूत कइ करनी । ५-३५।७
समुझत सरिस नाम अरु नामी । १-२०।१
समुझत सुनत सुखद सब काहू । २-२८७।८
समुझब कहब करब तुम्ह जोई । २-३२२।८
समुझाए उर लाइ प्रभु । २-७२।०
समुझाए सुरगुरु जड़ जागे । २-२४०।८
समुझावत सब सचिव सयाने । १-३३७।७
समुझि अवध असमंजस दोऊ । २-२७०।६
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा । २-११७।८
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी । १-८६।८
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रबीना । २-३२।३
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । २-२२८।४
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी । ३-२१।४
समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी । १-११।७
समुझि महेस समाज सब । १-९५।०

सौजन्य - कुमारी वासवदत्ता फाउण्डेशन, ५, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१९

समुझि मातु करतब सकुचाहीं । २-२३२।७
समुझि मोरि करतूति कुलु । २-१९५।०
समुझि राजसुख दुखित अराती । १-१५९।७
समुझि राम प्रताप कपि कोपा । ६-३३।८
समुझि सयाने करहु अब । २-२५४।०
समुझि सहम मोहि अपडर अपनें । १-२८।२
समुझि सुमित्राँ राम सिय । २-७३।०
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा । १-६२।८
समुझी नहिं तसि बालपन । १-३०।क
सयन करहु निज निज गृह जाई । ६-१३।५
सयन किएँ देखा कपि तेही । ५-४।७
सयन कीन्ह नृप आयसु मानी । १-१६९।१
सयन कीन्ह रघुबंसमनि । २-८९।०
सयनहिं रघुपति लखनु नेव़ारे । १-२५३।४
स्याम गात कल कंज बिलोचन । १-२२०।५
स्याम गात बिसाल भुज चारी । ३-३१।२
स्याम गात राजीव बिलोचन । ६-११४।७
स्याम गात सरसीरुह लोचन । ६-६२।८
स्याम गात सिर जटा बनाएँ । ४-८।२
स्याम गौर किमि कहौं बखानी । १-२२८।२
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा । १-२१४।५
स्याम गौर सब अंग सुहाए । १-३१०।४
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । १-१९७।५
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । १-२०८।३
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । ३-३३।८
स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन । १-३२६।१
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । ५-९।३
स्याम सुरभि पय बिसद अति । १-१०।ख
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । ७-४।८
स्यामल गात सरोरुह लोचन । ७-३२।३
स्यामल गौर किसोर बर । २-११६।०
स्यामल गौर धरें धनु भाथा । १-२९०।५
सर चाप तोमर सक्ति सूल । ३-१८।१६
सर चाप मनोहर त्रोन धरं । ६-११०।१३
सर निकर छाड़े राम रावन । ६-१००।२२
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ६-९२।६
सर पैठत कपि पद गहा । ६-५७।०
सर मज्जन करि आतुर आवहु । ६-५६।८
सर सक्ति तोमर परसु सूल । ३-१९।२२
सर सक्ति तोमर सर्प चाप । ६-८६।१४
सर समीप गिरिजा गृह सोहा । १-२२७।४
सर समूह सो छाड़ै लागा । ६-४९।५
सर सरिता बन भूमि बिभागा । २-२७८।२
सरग नरक अनुराग बिरागा । १-५।९
सरगु नरकु अपबरगु समाना । २-१३०।७
सरजु तीर रचि चिता बनाई । २-१६९।४
सरजू नाम सुमंगल मूला । १-३८।१२
सरद इंदु तन चितवत । ३-१२।०
सरद चंद चंदिनि लगत । २-७८।०
सरद चंद निंदक मुख नीके । १-२४२।२
सरद परब बिधु बदन बर । २-११५।०
सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन । १-३१५।३
सरद मयंक बदन छबि सींवा । १-१४६।१
सरद सर्बरीनाथ मुखु । २-११६।०
सरद सरोरुह नैन । २-२२६।०
सरदातप निसि ससि अपहरई । ४-१६।६
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । ५-३८।७
सरन गएँ मो से अघ रासी । ७-१२३।८

सौजन्य - कुमारी वासवदत्ता फाउण्डेशन, ५, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१९

सरनागत कहुँ जे तजहिं । ५-४३।०
सरनि सरोज बिटप बन फूले । २-१२३।७
सरनि सरोरुह जल बिहग । २-२४९।०
सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा । ६-७०।३
सर्ब भाव भज कपट तजि । ७-८७।क
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय । ७-३३।७
सर्बस दान दीन्ह सब काहू । १-१९३।७
सर्बसु खाइ भोग करि नाना । ६-४१।८
सरल कबित कीरति बिमल । १-१४।क
सरल बचन नृप के सुनि काना । १-१५९।८
सरल सुभाउ राम महतारी । २-५४।७
सरल सुभाय मायँ हियँ लाए । २-१६४।१
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । ७-४५।२
सरल सुसाहिबु सील निधानू । २-२९७।२
सरल सुसील धरम रत राऊ । २-१६१।५
सरसिज लोचन बाहु बिसाला । ३-३३।७
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । ७-२२।१०
सरित समीप राखि सब लोगा । २-२३२।५
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । ४-१३।८
सरिता बन गिरि अवघट घाटा । ३-६।४
सरिता सकल बहहिं बर बारी । ७-२२।८
सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । १-६५।१
सरिता सर निर्मल जल सोहा । ४-१५।४
सरुज सरीर बादि बहु भोगा । २-१७७।५
सरुष समीप दीखि कैकेई । २-३९।२
स्रक चंदन बनितादिक भोगा । २-२१४।८
स्रवत रुधिर धायउ बलवाना । ६-९१।९
स्रवहिं सैल जनु निर्झर भारी । ६-८६।१०
सबरी गीध सुसेवकनि । १-२४।०
सबरी देखि राम गृहँ आए । ३-३३।६
सबल जुगल दल समबल जोधा । ६-४५।८
स्वपच सबर खस जमन जड़ । २-१९४।०
स्वभक्त कल्प पादपं । ३-३।२०
स्वयं सिद्ध सब काज । ६-१७।ख
स्वबस बिस्व करि बाहुबल । १-१५४।०
स्वागत पूँछि निकट बैठारे । ३-४०।११
स्वागत पूँछि पीत पट । ७-३२।०
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के । १-११।७
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा । १-श्लोक७।३
स्वामि काज करिहउँ रन रारी । २-१८९।५
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं । २-२९७।४
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । २-२९२।८
स्वामि सखा पितु मातु गुर । २-१३०।०
स्वामि सुजानु जानि सबही की । २-३१३।३
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी । २-११५।७
स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । १-१४१।१
स्वारथु नाथ फिरें सबही का । २-२६७।५
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू । २-२१९।२
स्वारथ मीत सकल जग माहीं । ७-४६।६
स्वारथ रत परिवार बिरोधी । ७-३९।४
स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा । ७-९५।१
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह । १-१३६।०
ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । १-११९।१
ससि गुर तिय गामी नघुषु । २-२२८।०
ससिभूषन अस हृदयँ बिचारी । १-१०७।४
ससि सोषक पोषक समुझि । १-७।ख
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । १-९१।३
ससि सत कोटि सुसीतल । ७-९१।क

ससि संपन्न सदा रह धरनी । ७-२२।६

ससि संपन्न सोह महि कैसी । ४-१४।५

सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । ३-२५।४

ससुर चक्कवइ कोसलराऊ । २-९७।३

ससुर भानुकुल भानु भुआलू । २-१९८।७

ससुरु एतादृस अवध निवासू । २-९७।५

ससुरारि पिआरि लगी जब तें । ७-१००।५

सहज अपावनि नारि । ३-५।क

सहज असंक लंकपति । ६-१६।क

सहज एकाकिन्ह के भवन । १-७९।०

सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही । १-२७६।८

सहज पापप्रिय तामस देहा । ५-४४।८

सहज प्रकासरूप भगवाना । १-११५।६

सहज प्रीति भूपति कै देखी । १-१६०।६

सहज बयर बिसराइ रिपु । १-१४।क

सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा । १-६५।२

सहज बानि सेवक सुख दायक । ५-१३।५

सहज बिरागरूप मन मोरा । १-२१५।३

सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । ६-६५।१०

सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । ५-५५।५

सहज मनोहर मूरति दोऊ । १-२४२।१

सहज सनेह बिबस रघुराई । २-८७।४

सहज सनेह राम लखि तासू । २-१०३।७

सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई । २-३००।३

सहज सरल रघुबर बचन । २-४२।०

सहज सरल सुनि रघुबर बानी । २-१२५।७

सहज सुभायँ समाज दुहु । २-२८०।०

सहज सुभाय सुभग तन गोरे । २-११६।५

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख । २-६३।०

सहज सूर कपि भालु सब । ५-५५।०

सहजहिं चले सकल जग स्वामी । १-२५४।५

सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि । २-३९।०

सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी । २-५३।२

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । १-१८।६

सहसबाहु भुज गहन अपारा । ६-२५।२

सहसबाहु भुज छेदनिहारा । १-२७१।८

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । २-२२८।१

सहस सेष नहिं कहि सकहिं । ७-२६।०

सहसा करि पाछें पछिताहीं । २-२३०।४

सहि न सके रघुबर बिरहागी । २-८३।४

सहि सक न भार उदार । ५-३४।११

सहित अनुज मोहि राम गोसाईं । ३-९।५

सहित दोष दुख दास दुरासा । १-२३।५

सहित बधूटिन्ह कुअँर सब । १-३२७।०

सहित बरात राउ सनमाना । १-३०८।६

सहित बसिष्ठ सोइ नृप कैसें । १-३०१।१

सहित बिदेह बिलोकहिं रानी । १-२४१।३

सहित बिपिन मधुकर खग । ३-३७।क

सहित बिभीषन अपर जे । ६-११८।ख

सहित बिषाद परसपर कहहीं । २-११८।२

सहित सनेह निकट बैठारी । २-१४८।२

सहित सभा संभ्रम उठेउ । २-२७४।०

सहित समाज तुम्हार हमारा । २-३०५।१

सहित समाज भरत जनु आए । २-२२५।४

सहित समाज राउ मिथिलेसू । २-२८९।५

सहित समाज साज सब सादें । २-३१०।३

सहित सहाय जाहु मम हेतू । १-१२४।६

सहित सहाय रावनहि मारी । ४-२९।९

सहित सहाय सभीत अति । १-१२६।०
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । ६-८८।६
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा । २-२६४।५
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं । ४-६।१८
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । ५-३२।७
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना । १-१४१।७
सागर निज मरजादाँ रहहीं । ७-२२।९
सागर सरि सर बिपिन अपारा । ७-७९।७
साचेहुँ उन्ह कें मोह न माया । १-९६।३
साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा । ६-३३।७
साजि बाजि गज बाहन नाना । २-३१९।६
साँझ जानि दसकंधर । ६-३५।ख
साँझ समय सानंद नृपु । २-२४।०
सातवँ सम मोहि मय जग देखा । ३-३५।३
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । ७-११६।९
साथ किरात छ सातक दीन्हे । २-२७१।८
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । २-२०२।२
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । २-१०८।३
सादर अरघ देइ घर आने । २-८।३
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही । १-९।६
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी । ३-११।११
सादर चरन सरोज पखारे । १-४४।५
सादर जनकसुता करि आगें । ६-११९।८
सादर जल लै चरन पखारे । ३-३३।१०
सादर तात सुनावहु मोही । ७-६३।४
सादर तेहि आगें करि बानर । ५-४४।१
सादर पान करत अति । ३-७।०
सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । २-१६।१
सादर पुनि भेंटे जामाता । १-३४०।२
सादर बोले सकल बराती । १-९८।६
सादर भलेहिं मिली एक माता । १-६२।२
सादर मज्जन पान किए तें । १-४२।६
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । ४-३।७
सादर मोहि यह कथा सुनाई । ७-११२।१०
सादर लगे परन पनवारे । १-३२७।८
सादर सकल कुअँरि समुझाईं । १-३३३।७
सादर सब कहँ रामगुर । २-२७९।०
सादर सब के पाय पखारे । १-३२७।३
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ । १-२३५।६
सादर सिव कहुँ सीस चढ़ाए । ६-९३।६
सादर सिवहि नाइ अब माथा । १-३३।३
सादर सिंहासन बैठारी । ६-१०५।६
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर । ३-६।क
सादर सुनहिं ते तरहिं भव । ५-६०।०
सादर सुनि रघुपति गुन । ७-५७।०
सादर सुमिरन जे नर करहीं । १-११८।४
सादर सुंदर बदनु निहारी । २-५१।६
साधक एक सकल सिधि देनी । २-३०५।४
साधक नाम जपहिं लय लाएँ । १-२१।४
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । ७-१२३।५
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । ७-४२।८
साधन सिद्धि राम पग नेहू । २-२८८।८
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । ५-२५।५
साधु अवग्या तुरत भवानी । ५-४१।२
साधु असाधु सदन सुक सारीं । १-६।१०
साधु चरित सुभ चरित कपासू । १-१।५
साधु भूप बोले सुनि बानी । १-२६५।६
साधु सभाँ गुर प्रभु निकट । २-२६१।०

सौजन्य - कुमारी वासवदत्ता फाउण्डेशन, ५, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता - ७०००१९

साधु समाज न जाकर लेखा । २-१८९।७
साधु समाज संग महिदेवा । १-३१४।५
साधु सुजान सुसील नृपाला । १-२७।८
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनु.... । ३-श्लोक२।१
सानी सरल रस मातु बानी । २-१७५।९
सानुकूल कोसलपति रहहुँ । ६-१०७।०
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । ७-४४।८
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी । १-३०२।४
सानुकूल सब पर रहहिं । ७-३०।०
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । २-३०९।२
सानुज गे गुर गेहँ बहोरी । २-३२२।६
सानुज पठइअ मोहि बन । २-२६८।०
सानुज भरत उमगि अनुरागा । २-२४१।३
सानुज भरतु सचिव सब माता । २-२४७।६
सानुज मिलि पल महुँ सब काहू । २-२४३।३
सानुज राम नृपहि सिर नाई । २-३१८।१
सानुज राम बिबाह उछाहू । १-४०।५
सानुज राम समर जसु पावन । १-३९।२
सानुज सखा समेत मगन मन । २-२३९।१
सानुज सीय समेत प्रभु । २-३२१।०
साप अनुग्रह होइ जेहिं । ७-१०८।घ
सापत ताड़त परुष कहंता । ३-३३।१
साम दान अरु दंड बिभेदा । ६-३७।९
सामध देखि देव अनुरागे । १-३१९।४
सायक एक नाभि सर सोषा । ६-१०२।१
सारथी दूसर घालि रथ । ६-८३।११
सारद कोटि अमित चतुराई । ७-९१।५
सारद कोटि कोटि सत सेषा । २-१९९।८
सारद दारुनारि सम स्वामी । १-१०४।५
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । १-१७६।८
सारद बोलि बिनय सुर करहीं । २-१०।८
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा । १-१८५।१३
सारद सेस महेस बिधि । १-१२।०
सारंग कर सुंदर निषंग । ६-८५।११
सालु तुम्हार कौसिलहि माई । २-१७।४
सावँकरन अगनित हय होते । १-२९८।५
सावकास सुनि सब सिय सासू । २-२८०।३
सावधान मन करि पुनि संकर । ५-३२।३
सावधान मानद मदहीना । ३-४४।९
सावधान सबही सनमानहिं । २-२७३।४
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । २-२८७।३
सावधान होइ धाए जानि । ३-१९।क
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । १-८८।३
सासु सकल जब सीयँ निहारी । २-२४५।४
सासु समीप गए दोउ भाई । २-३१८।५
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू । २-८१।४
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । २-९६।३
सासु ससुर गुर सजन सहाई । २-६४।२
सासु ससुर गुर सेवा करेहू । १-३३३।५
सासु ससुर सन मोरि हुँति । २-९८।०
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर । २-१३९।६
सासुन्ह सबनि मिली बैदेही । ७-६।१
सासुन्ह सादर जानकिहि । ७-११।क
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ । ३-३६।८
साहस अनृत चपलता माया । ६-१५।३
साहिब सीतानाथ सो । १-२८।०
सिअरें बचन सूखि गए कैसें । २-७०।८
सिख सीतलि हित मधुर मृदु । २-७८।०

सिख हमारि सुनि परम पुनीता । १-२४५।२
सिखर एक उतंग अति देखी । ६-१०।२
सिंघ कंध आयत उर सोहा । ५-४४।५
सिंघासन पर त्रिभुअन साईं । ७-११।८
सिंघासन प्रभु पादुका । २-३२३।०
सिंघासन बैठेउ सिर नाई । ६-३४।५
सिंघासन भूषन बसन अन्न । २-१७०।०
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं । २-२२४।४
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं । २-२९१।२
सिथिल समाज सनेह समाधी । २-३०६।२
सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर । १-१०५।०
सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी । १-८४।८
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं । २-२१६।६
सिधि सब सिय आयसु अकनि । १-३०६।०
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । ५-०।५
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । ६-४।३
सिंधु बचन सुनि राम सचिव । ६-०।ख
सिय कर सोचु जनक पछितावा । १-२५९।६
सिय निंदक अघ ओघ नसाए । १-१५।३
सिय निवास सुंदर सदन सोभा । १-२१३।०
सिय पितु मातु सनेह बस । २-२८६।०
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । २-५९।४
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई । १-२४६।३
सिय बेषु सतीं जो कीन्ह तेहिं । १-९७।९
सिय मनु राम चरन अनुरागा । २-१३९।४
सिय मनु राम चरन अनुरागा । २-७७।५
सिय महिमा रघुनायक जानी । १-३०६।३
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । १-२३७।४
सिय मुख समता पाव । १-२३७।०

सिय रघुबीर कि कानन जोगू । २-९०।८
सिय रघुबीर बिबाहु जे । १-३६१।०
सिय राम अवलोकनि परसपर । १-३२२।१५
सिय राम प्रेम पियूष पूरन । २-३२५।९
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । २-२८५।६
सिय समेत दोउ तनय निहारी । २-७५।८
सिय समेत सियमातु तब । २-२८५।०
सिय सुंदरता बरनि न जाई । १-३२२।१
सिय सुमंत्र भ्राता सहित । २-८९।०
सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । १-२४६।१
सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु । १-२३०।०
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं । २-१३३।८
सिय सौमित्रि राम फल खाए । २-१२४।४
सियँ सुरसरिहि कहेउ कर जोरी । २-१०२।२
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें । १-२५८।८
सिर अरु सैल कथा चित रही । ६-२८।७
सिर जटा मुकुट प्रसून बिच । ६-१०२।१६
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । १-७६।२
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । २-२१२।३
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू । २-१७५।६
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई । २-१८७।७
सिर धरि मुनिबर बचन सबु । २-६।०
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा । १-१४७।८
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा । २-२०२।७
सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी । ६-९७।१
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । ६-९८।२
सिर मालिका कर कालिका । ६-९२।११
सिर लंगूर लपेटि पछारा । ६-५७।५
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । ६-२४।३

सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । ६-१३।४
सिरु धुनि लीन्ह उसास असि । २-३०।०
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन । १-३२५।११
सिरु नाइ बारहिं बार चरनन्हि । ३-४५।११
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला । ६-२२।५
सिव अज पूज्य चरन रघुराई । ७-१२३।३
सिव अज सुक सनकादिक नारद । ७-१२१।१२
सिव अनुसासन सुनि सब आए । १-९२।५
सिव अपमानु न जाइ सहि । १-६३।०
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं । ७-७०।८
सिव द्रोही मम भगत कहावा । ६-१।७
सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं । १-१०३।५
सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । १-३०।१३
सिव बिरंचि कहुँ मोहइ । ७-६२।ख
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं । ६-४८।ख
सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई । ६-२१।१
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा । १-३१३।२
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी । १-१०३।७
सिव समाज जब देखन लागे । १-९४।४
सिव सेवक मन क्रम अरु बानी । ७-९६।२
सिव सेवा कर फल सुत सोई । ७-१०५।२
सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु । १-१००।११
सिवँ राखी श्रुति नीति अरु । ७-१०९।घ
सिवँ समुझाए देव सब । १-३१४।०
सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू । १-८५।२
सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा । १-९१।१
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा । २-२९।७
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी । २-४७।५
सिबि दधीच हरिचंद नरेसा । २-९४।३
सिबिका सुभग ओहार उघारी । १-३४७।८
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी । २-१८६।८
सिसु सब राम प्रेमबस जाने । १-२२४।१
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी। २-२९२।४
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । २-२५९।७
सिंह ठवनि इत उत चितव । ६-१८।०
सिंहनाद करि गर्जा । ६-५०।०
सिंहनाद करि बारहिं बारा । ४-२९।८
सिंहासन अति उच्च मनोहर । ६-११८।४
सिंघासनु अति दिब्य सुहावा । १-९९।३
सीतल अमल मधुर जल । ७-५६।०
सीतल निसित बहसि बर धारा । ५-९।६
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ । ३-३९।८
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । १-१९०।३
सीतल सिख दाहक भइ कैसें । २-६३।२
सीतल सुगंध सुमंद मारुत । १-८५।१०
सीतल सुरभि पवन बह मंदा । ७-२२।४
सीतलता सरलता मयत्री । ७-३७।६
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता । ३-१६।११
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । ३-२८।२३
सीतहि पहिराए प्रभु सादर । ३-०।४
सीतहि सभय देखि रघुराई । ३-१६।२०
सीतहि सासु असीस सिख । २-६९।०
सीतहि त्रास देखावहिं । ५-१०।०
सीता अनुज समेत प्रभु । ३-८।०
सीता केरि करेहु रखवारी । ३-२६।९
सीता कै अति बिपति बिसाला । ५-३०।९
सीता कै बिलाप सुनि भारी । ३-२८।६
सीता चरन चोंच हति भागा । ३-०।७

सीता चरन भरत सिरु नावा । ७-५।२
सीता चितव स्याम मृदु गाता । ३-२०।३
सीता तैं मम कृत अपमाना । ५-९।१
सीता देइ मिलहु न त । ५-५२।०
सीता देहु राम कहुँ अहित । ५-४०।०
सीता परम रुचिर मृग देखा । ३-२६।३
सीता प्रथम अनल महुँ राखी । ६-१०७।१४
सीता मन भरोस तब भयऊ । ५-१५।९
सीता मन बिचार कर नाना । ५-१२।४
सीता मातु सनेह बस । १-२५५।०
सीता रघुपति मिलन बहोरी । ७-६७।३
सीताराम गुणग्राम । १-श्लोक४।१
सीता राम चरन रति मोरें । २-२०४।२
सीता राम संग बनबासू । २-२७९।३
सीता लखन सहित रघुराई । २-११३।१
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं । ३-श्लोक२।४
सीता सचिव सहित दोउ भाई । २-८६।१
सीता सहित अवध कहुँ । ६-१२०।क
सीता सहित कृपानिधि संभुहि । ६-११९।क
सीता हरन तात जनि । ३-३१।०
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ । ४-श्लोक१।४
सीतापति सेवक सेवकाई । २-२६५।१
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । ३-२८।९
सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू । १-१२५।८
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं । २-२४१।५
सीय आइ मुनिबर पग लागी । २-२४५।१
सीय कि पिय सँगु परिहरिहि । २-४९।०
सीय चकित चित रामहि चाहा । १-२४७।७
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । १-३३८।३

सीय बिआहबि राम गरब । १-२८५।०
सीय बिलोकि धीरता भागी । १-३३७।५
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी । २-२८०।८
सीय मातु कह सत्य सुबानी । २-२८१।८
सीय मातु तेहि समय पठाईं । २-२८०।२
सीय राम पद अंक बराएँ । २-१२३।६
सीय राम पद पेमु अवसि । २-३२६।०
सीय राममय सब जग जानी । १-७।२
सीय लखन जन सहित सुहाए । २-१०६।३
सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहहीं । २-१४०।१
सीय सकुच बस उतरु न देई । २-७८।१
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । २-११५।४
सीय स्वयंबर कथा सुहाई । १-४०।१
सीय स्वयंबरु देखिअ जाई । १-२३९।१
सीय स्वयंबर भूप अनेका । १-२९१।४
सीय सहित सुत सुभग दोउ । २-७६।०
सीय सासु प्रति बेष बनाई । २-२५१।२
सीयँ सासु सेवा बस कीन्ही । २-२५१।४
सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती । १-२६२।६
सीय सँवारि समाजु बनाई । १-३२१।८
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । ७-८९।६
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । २-१८२।५
सील सराहि सभा सब सोची । २-३१२।४
सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू । २-२४२।१
सील सकोच सिंधु रघुराऊ । २-२७३।६
सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई । २-८४।५
सीलु सनेहु सकल दुहु ओरा । २-२८०।५
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें । २-२३८।५
सीस जटा ससिबदनु सुहावा । १-२६७।५

सौजन्य - कुमारी वासवदत्ता फाउण्डेशन, ९, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता - ७०००१९

सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । २-१२८।३
सुक सनकादि भगत मुनि नारद । १-१७।५
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । १-२५।२
सुक सारिका जानकी ज्याए । १-३३७।१
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक । ७-२७।७
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी । १-२७।७
सुकबि सरद नभ मन उडगन से । १-३१।१२
सुकृत जाहि अस कहत तुम्हारे । २-४७।८
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । १-३६।७
सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । २-२१०।६
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । १-०।३
सुकृती तुम्ह समान जग माही । १-२९३।५
सुकृती साधु नाम गुन गाना । १-३६।११
सुकृतु जाइ जौं पनु परिहरऊँ । १-२५१।५
सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । २-५१।८
सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ । २-७८।४
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । ७-१०१।२
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। १-१८९।८
सुख धाम पूरनकाम राम । ६-१२०।१६
सुख धाम राम नमामि काम । ६-११२।१८
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें । २-९७।२
सुखु पायउ बिंरचि रचि तेही । २-१२१।७
सुखु बिदेह कर बरनि न जाई । १-२८५।३
सुख भवन संसय समन दवन । ५-५९।११
सुख मकरंद भरे श्रियमूला । २-५२।४
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । ६-११०।१४
सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । २-२१४।२
सुख समेत संबत दुइ साता । २-२७९।८
सुखस्वरूप रघुबंसमनि । २-२००।०

सुख संतोष बिराग बिबेका । ७-३०।८
सुख संदोह मोहपर । १-१९९।०
सुख संपति परिवार बड़ाई । ४-६।१६
सुख संपति सुत सेन सहाई । १-१७९।१
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । २-१४९।७
सुखी मीन जे नीर अगाधा । ४-१६।१
सुखी मीन सब एकरस । ३-३९।ख
सुखमूल दूलहु देखि दंपति । १-३२३।१९
सुगम अगम नाना चरित सुनि । ७-७३।ख
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । २-२९३।२
सुगम उपाय पाइबे केरे । ७-११९।१२
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । ७-१६।६
सुग्रीवहु कै मुरुछा बीती । ६-६५।५
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । ४-१७।४
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । २-८८।८
सुचि सुबिचित्र सुभोगमय । २-९०।०
सुचि सुसील सेवक सुमति । ७-८६।०
सुचि सेवक - तुम्ह राम के । १-१०४।०
सुचि सुंदर आश्रमु निरखि । २-१२४।०
सुजन समाज सकल गुन खानी । १-१।४
सुजस पुरान बिदित निगमागम । ७-५०।७
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई । १-३२३।२
सुठि सुकुमार कुमार दोउ । २-८१।०
सुठि सुंदर संबाद बर । १-३६।०
सुत कहुँ राज समर्पि । ६-६।०
सुत बध सुना दसानन जबहीं । ६-७६।६
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि । ५-२०।०
सुत बित नारि भवन परिवारा । ६-६०।७
सुत बित लोक ईषना तीनी । ७-७०।६

सौजन्य - कुमारी वासवदत्ता फाउण्डेशन, ९, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१९

सुत बिलोकि हरषीं महतारी । ७-११।६
सुत बिषइक तव पद रति होऊ । १-१५०।५
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । ७-१००।४
सुत सन कह दसकंठ रिसाई । ६-९।२
सुत सनेहु इत बचनु । २-४०।०
सुत सनेह बस माता । १-२००।०
सुत समूह जन परिजन नाती । १-१८०।३
सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे । १-३०७।४
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । १-३०८।३
सुतन्ह समेत नहाइ नृप । १-३५४।०
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । १-३५८।४
सुतहि राजु रामहिं बनबासू । २-२१।६
सुतहि ससोच देखि मनु मारें । २-१५८।६
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । १-१३०।६
सुद्ध भएँ दुइ बासर बीते । २-२४७।४
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद । २-८७।०
सुद्ध सत्व समता बिग्याना । ७-१०३।२
सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस । २-२४७।३
सुदिन सुघरी तात कब होइहि । २-६७।८
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब । २-४।०
सुदिन सोधि कल कंकन छोरे । १-३५९।१
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आए । २-१७०।२
सुदिनु सोधि सबु साजु सजाई । २-३०।८
सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । १-९०।४
सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । २-१४।२
सुधा बरषि कपि भालु जिआए । ६-११३।५
सुधाबृष्टि भै दुहु दल ऊपर । ६-११३।६
सुधा समुद्र समीप बिहाई । १-२४५।५
सुधा सराहिअ अमरताँ । १-५।०
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । १-४।८
सुधा सुरा सम साधु असाधू । १-४।६
सुधि करि अंबरीष दुरबासा । २-२६४।४
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी । ७-९५।१०
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । २-१४७।२
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए । ३-११।९
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति । २-१४८।०
सुनत कृपानिधि मन अति भाए । ५-२९।७
सुनत गरूड़ कै गिरा बिनीता । ७-६३।५
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी । १-७४।५
सुनत गीध क्रोधातुर धावा । ३-२८।१५
सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल । ६-१२०।१०
सुनत जनक आगवनु सबु । २-२७२।०
सुनत जातुधानीं सब । ६-१०८।०
सुनत जुगल कर माल उठाई । १-२६३।६
सुनत जुगल तन पुलक मन । ५-६।०
सुनत तीरबासी नर नारी । २-१०९।१
सुनत दसानन उठा रिसाई । ५-४०।२
सुनत नारि नर भए दुखारी । २-११७।६
सुनत निसाचर मारन धाए । ५-२३।६
सुनत नीक आगें दुख पावा । ६-८।४
सुनत फिरउँ हरि गुन अनुबादा । ७-१०९।१२
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा । ६-५८।८
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । ६-८३।७
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा । १-१३५।६
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए । ७-१०।३
सुनत बचन दससीस रिसाना । १-२७।१६
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । ५-११।५
सुनत बचन पुनि मारन धावा । ५-९।७

सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । ६-११७।६
सुनत बचन फिरि अनत निहारे । १-२६९।२
सुनत बचन रावन परजरा । ६-२६।८
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू । १-३३५।७
सुनत बचन बिसमित महतारी । १-७२।६
सुनत बचन बिसरे सब दूखा । ७-१।६
सुनत बचन बिहसा दससीसा । ५-५५।४
सुनत बचन बिहसे रिषय । १-७८।०
सुनत बचन मृदु दीनदयाला । ६-११५।८
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । २-२१।३
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । ४-६।२७
सुनत बिनीत बचन अति । ५-५९।०
सुनत बिनीत बचन सुख पावा । ४-१९।८
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी । ५-४८।३
सुनत बिभीषन बचन राम के । ६-११६।१
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं । ७-२५।६
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । ५-२३।९
सुनत बिहसि बोला दससीसा । ६-१८।२
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ५-५०।५
सुनत भरतु भए बिबस बिषादा । २-१५९।३
सुनत राम अति कोमल बानी । ४-९।१
सुनत राम अभिषेक सुहावा । २-६।३
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । २-२०५।३
सुनत लखन के बचन कठोरा । १-२७४।२
सुनत लखन सिय राम सँदेसू । २-१४५।८
सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । ६-४।१०
सुनत सकल जननीं उठि धाईं । ७-२।३
सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । ५-५६।१
सुनत सभासद उठे अकुलाई । ३-२१।१
सुनत सुधासम बचन राम के । ७-४६।१
सुनत सुमंगल बैन मन । २-२२६।०
सुनतहिं लखनु चले उठि साथा । २-१६५।३
सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई । ७-६८।५
सुनहि कथा इतिहास सब । २-२३७।०
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । ५-११।१०
सुनहि बिमुक्त बिरत अरु बिषई । ७-१४।५
सुनहि मातु मैं दीख । १-७२।०
सुनहि सकल मति बिमल मराला । ७-५६।९
सुनहि सती तव नारि सुभाऊ । १-५०।६
सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । ७-३८।१
सुनहु उदार सहज रघुनायक । ३-४१।१
सुनहु उमा ते लोग अभागी । ३-३२।३
सुनहु तात अब मानस रोगा । ७-१२०।२८
सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । ७-६३।१
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं । २-७६।६
सुनहु तात माया कृत । ७-४१।०
सुनहु तात यह अकथ कहानी । ७-११६।१
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । ३-२६।४
सुनहु देव सचराचर स्वामी । ५-४८।५
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । १-२१६।४
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । १-२७८।२
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । ५-३५।१०
सुनहु नील अंगद हनुमाना । ४-२२।१
सुनहु परम पुनीत इतिहासा । ७-५४।८
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । ५-६।१
सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । २-२८।१
सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला । ३-२३।१
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । ५-५६।४

सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती । ५-६।६
सुनहु भरत भावी प्रबल । २-१७१।०
सुनहु भरत रघुबर मन माहीं । २-२०७।३
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । २-२०९।३
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । २-२०५।८
सुनहु भानुकुल केतु जामवंत । ६-ग।०
सुनहु भानुकुल पंकज भानू । १-२५२।३
सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह । १-२९१।०
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । ५-१६।७
सुनहु राम अब कहउँ निकेता । २-१२७।३
सुनहु राम अवतार चरित । १-१२०।ग
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । ७-७३।५
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । १-२७०।४
सुनहु राम सबु कारनु एहू । २-३९।६
सुनहु राम सरबग्य सुजाना । २-२५६।८
सुनहु राम स्वामी सन । ४-९।०
सुनहु लखन भल भरत सरीसा । २-२३०।८
सुनहु सकल पुरजन मम बानी । ७-४२।३
सुनहु सकल रजनीचर जूथा । १-१८०।५
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । ६-७९।४
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ । ५-४७।१
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । १-६३।१
सुनहु सुभट सब कह दससीसा । ६-३३।१०
सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन । ७-३६।४
सुना सीर मन महुँ असि त्रासा । १-१२४।७
सुनासीर सत सरिस सो । ६-१०।०
सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । ६-०।४
सुनि अति बिकल भरत बर बानी । २-२६२।१
सुनि अनुकथन परस्पर होई । १-४०।३
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। १-२८।३
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । १-३०३।३
सुनि आगवनु दसानन केरा । ६-९९।१०
सुनि आचरज करै जनि कोई । १-२।२
सुनि आचरजु न मानिहहिं । १-३३।०
सुनि आनंदु भयउ सब काहू । १-३५८।८
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल । १-९६।११
सुनि उरगारि बचन सुख माना । ७-११४।१२
सुनि अंगद सकोप कह बानी । ६-२५।१
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । १-२७५।५
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । ५-२३।५
सुनि कठोर बानी कपि केरी । ६-२१।३
सुनि कपि भालु चले करि हूहा । ६-०।१०
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । ६-५९।७
सुनि कपीस बहु दूत पठाए । ६-१।५
सुनि कृपाल अति आरत बानी । ३-१।१४
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । ५-५९।६
सुनि केवट के बैन । २-१००।०
सुनि खग हरष सोक जुत बानी । ४-२६।९
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । ५-५५।८
सुनि गुन गान समाधि बिसारी । ७-४१।८
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं । २-२२२।४
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई । १-३२९।८
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला । २-२४८।२
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति। २-२७१।२
सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । १-२५३।७
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा । २-१९९।७
सुनि जानकीं परम सुखु पावा । ३-५।१
सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी । २-२९२।१

सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई । ७-९४।३
सुनि ता करि बिनती मृदु बानी । ७-६०।२
सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं । ६-५६।०
सुनि दसकंधर बचन तब । ६-६२।०
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । २-३१७।६
सुनि दुर्बचन कालबस जाना । ६-८९।९
सुनि नभगिरा सती उर सोचा । १-५६।६
सुनि नारद के बचन तब । १-९८।०
सुनि नारदहि लागि अति दाया । ७-५८।४
सुनि निषादु निज भाग बड़ाई । २-१९५।८
सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । ७-११३।७
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी । १-२०७।७
सुनि पति बचन कहति बैदेही । २-९६।४
सुनि पति बचन हरषि मन माहीं । १-७१।५
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । १-२४९।५
सुनि प्रभु पद रति उपजइ । ७-९६।क
सुनि प्रभु बचन बिभीषन । ६-८०।ख
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । ५-३३।२
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । १-२९०।१
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । ६-९।४
सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ । ७-८३।३
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा । ५-३३।५
सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी । १-१४८।१
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना । ७-३५।८
सुनि प्रभु बचन भरत सुखु पावा । २-३०७।८
सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे । ६-१०७।१३
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । ७-१६।१
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । ७-७।९
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं । ६-११७।९

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख । ५-३२।०
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । ५-४२।९
सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी । ७-३३।१
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि । २-५४।०
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । २-११४।२
सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए । ६-५८।२
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी । २-१३।७
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना । १-१९१।१५
सुनि बचन हरष बिषाद मन । ६-९८।१६
सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा । २-२६१।४
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे । १-३४१।६
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी । १-८८।५
सुनि बिनती सर्बग्य सिव । ७-१०८।क
सुनि बिराग संजुत कपि बानी । ४-६।२२
सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं । ७-४१।६
सुनि बिरंचि मन हरष तन । १-१८५।०
सुनि बिरंचि रामहि सिरु नावा । ७-५९।२
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा । २-१५२।८
सुनि बिहंगपति बानी । ७-६९।क
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं । २-३२५।४
सुनि बोलीं मुसुकाइ भवानी । १-८९।१
सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । १-२९३।१
सुनि भए बिकल सकल नर नारी । २-४५।७
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि । ७-१।१८
सुनि भसुंडि के बचन भवानी । ७-११४।५
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ । ७-१२४।ख
सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । ७-९२।१
सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । २-२८७।१
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ । २-३११।४

सौजन्य- श्रीमती झमकू देवी पारीक, ३३/१, एन.एस.रोड, कलकत्ता-७००००१

सुनि मम बचन बिनीत मृदु । ७-११०।ग
सुनि महीप तापस बस भयऊ । १-१६२।७
सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी । १-१६६।६
सुनि मारीच निसाचर क्रोही । १-२०९।३
सुनि मुनि आयसु धावन धाए । २-१५६।४
सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा । ७-११३।५
सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी । १-६७।१
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए । २-३।६
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ । २-२५७।२
सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे । २-२९१।१
सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने । २-१२७।१
सुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू । २-२१२।१
सुनि मुनि बचन राम मन भाए । ३-१०।२२
सुनि मुनि बचन राम रुख पाई । २-२५९।१
सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने । २-१०७।१
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । १-२७०।६
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । २-२०९।७
सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ । १-३६०।२
सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती । १-२१७।७
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के । १-२८३।६
सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना । १-१५०।१
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई । २-३२।४
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू । २-२८।४
सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । २-६३।१
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । २-२९५।६
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू । २-९५।३
सुनि रघुपति अतिसय सुख माना । ६-७४।६
सुनि रघुपति के बचन सुहाए । ३-४४।१
सुनि रघुबर आगमनु मुनि । २-१२४।०
सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि । २-२३२।०
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी । २-५९।८
सुनि राजा अति अप्रिय बानी । १-२०७।१
सुनि रावन पठए भट नाना । ५-१७।५
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । २-२१२।८
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । २-१६२।७
सुनि लछिमन बिहसे बहुरि । १-२७८।०
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । ५-५१।७
सुनि लछिमन सीता कै बानी । ६-१०८।३
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । २-२६९।७
सुनि सकोप कह निसिचर नाथा । ६-३०।६
सुनि सनमानहि सबहि सुबानी । १-२७।९
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ । २-७६।५
सुनि सनेहमय पुरजन बानी । २-२७३।१
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । २-११६।२
सुनि सनेहमय बचन गुर । २-२५५।०
सुनि सनेहसानी बर बानी । १-३३६।२
सुनि सनेह साने बचन । १-२९०।०
सुनि सनेह साने बचन । २-९।०
सुनि सप्रेम मम बानी । ७-८३।क
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू । २-२००।७
सुनि सब कथा समीरकुमारा । ७-६६।३
सुनि सब कथा हृदय अति भाई । ७-१२८।७
सुनि सब के मन अचरजु आवा । १-१२६।४
सुनि सब चरित भूपगृहँ आए । १-१२९।८
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । २-११३।२
सुनि सब राम कथा खगनाहा । ७-६७।८
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं । २-१०९।६
सुनि समुझहिं जन मुदित मन । १-२।०

सुनि सरोष बोले सुभट बीर । २-१९१।०
सुनि सरोष भृगुनायकु आए । १-२९२।१
सुनि सरोष भृगुबंसमनि । १-२७३।०
सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा । २-२८९।१
सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । २-१६२।१
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई । २-३१९।३
सुनि सिख पाइ असीस बड़ि । २-३२३।०
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी । २-६८।६
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी । २-१०२।४
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन । २-२२५।६
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना । १-११८।७
सुनि सिव बचन हरषि गुर । ७-१०९।क
सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । १-१९२।१
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । ५-३१।१
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं । २-१७४।५
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । ४-१८।३
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । ५-५१।४
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । ५-२८।६
सुनि सुग्रीव हरष कपि । ५-२८।०
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । २-१६०।५
सुनि सुत बचन कहति कैकेई । २-१५९।७
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । ६-१११।४
सुनि सुत बचन भरोसा आवा । ६-४८।७
सुनि सुत बचन सनेहमय । २-१५९।०
सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । ५-१८।१
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । २-२९३।५
सुनि सुनि राम भरत संबादू । २-३०८।६
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । १-१६३।६
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता । २-२५५।४
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । ७-५१।८
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । १-२९५।४
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी । २-९८।३
सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू । २-२६५।५
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने । २-२३०।५
सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी । २-२९९।३
सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती । २-११।१
सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ । २-२६५।०
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । २-२८२।८
सुनि सुरूपु बूझहिं अकुलाई । २-१२०।७
सुनि सेवक दुख दीनदयाला । ४-५।१४
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । ६-१०७।३
सुनि संदेसु सकल हरषानीं । १-२९४।२
सुनि संपाति बंधु कै करनी । ४-२६।११
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध । १-३२४।०
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी । १-२२८।३
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । ७-६०।५
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु । ४-३०।ख
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल । २-२८९।०
सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । ७-३५।३
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । २-१७५।८
सुनी सकल लोगन्ह यह बाता । १-३११।८
सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना । ४-२।७
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । ५-३१।५
सुनु कपीस अंगद लंकेसा । ७-३।२
सुनु कपीस लंकापति बीरा । ५-४९।१
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । ७-१०५।१३
सुनु खगपति यह कथा पावनी । ७-१४।१
सुनु खगेस कलि कपट । ७-१०१।क

सौजन्य-श्री शिव नारायण हेडा, ३६-बी. एन.एस.रोड, कलकत्ता-७००००१

सुनु खगेस तेहि अवसर । ७-११७ग
सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन । ७-११२।१
सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । ६-११३।३
सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । ७-७३।१
सुनु खगेस हरि भगति बिहाई । ७-११४।३
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । ६-५४।१
सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । १-१२०।१
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम । १-११५।०
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही । ३-३२।८
सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । २-४०।७
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । ३-२९।१४
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । ६-७।२
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । ५-२२।७
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । ५-८।७
सुनु नृपु जासु बिमुख पछिताहीं । २-३।७
सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं । १-१६६।१
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ४-६।२८
सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । ७-११०।१५
सुनु ब्यालारि काल कलि । ७-१०२।क
सुनु बायस तैं सहज सयाना । ७-८४।२
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें । ७-८४।६
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । ६-२८।९
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । ६-२५।८
सुनु मम बचन सत्य अब भाई । ७-१०८।११
सुनु महीस असि नीति जहँ । १-१६३।०
सुनु माता साखामृग नहिं । ५-१६।०
सुनु मातु मै पायो अखिल । ६-१०६।११
सुनु मुनि आजु समागम तोरें । १-१०४।२
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । १-१५२।१
सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । ३-४३।१
सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा । ३-४२।४
सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें । १-१२८।१
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ । ३-४४।६
सुनु मुनीस बर दरसन तोरें । १-३४२।३
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । २-११।५
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही । २-१०२।५
सुनु रावन परिहरि चतुराई । ६-२६।१
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । ५-२०।४
सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । ५-४८।१
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । ६-२०।१०
सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । ६-२४।१
सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला । १-१६०।८
सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो । ७-१७।१
सुनु सरबग्य चराचर नायक । ६-१०१।४
सुनु सर्बग्य प्रनत सुखकारी । ६-३७।८
सुनु सर्बग्य सकल उर बासी । ६-१६।३
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । १-२३५।७
सुनु सिवा सो सुख बचन मन । ७-४।१४
सुनु सीता तव नाम सुमिरि । ३-५१।ख
सुनु सुग्रीव बिभीषन । ६-६७।०
सुनु सुग्रीव मारिहउँ । ४-६।०
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । ५-१६।८
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । ५-३१।७
सुनु सुत भयउ कालबस रावन । ६-६३।७
सुनु सुत सदगुन सकल तव । ६-१०७।०
सुनु सुरेस उपदेसु हमारा । २-२९८।१
सुनु सुभ कथा भवानि । १-१२०।ख
सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । ६-११३।१

सौजन्य - श्री जुगल किशोर जैथलिया, १६१/१, एम. जी. रोड, कलकत्ता -७

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । २-२१७।४
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू । १-१४५।१
सुनु हनुमंत संग लै तारा । ४-१९।३
सुनु हरिजान ग्यान निधि । ७-९७।०
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा । ७-११४।७
सफल सकल सुभ साधन साजू । २-१०६।६
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । १-२३६।४
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । २-३५।३
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । २-२७२।७
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । २-७६।७
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । १-६८।७
सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई । १-१८२।७
सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा । १-२१३।१
सुभग सकल सुठि चंचल करनी । १-२९७।५
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । १-३१२।४
सुभग सुरभि पय फेन समाना । १-३५५।२
सुभग सोन सरसीरुह लोचन । १-२१८।६
सुभट बोलाइ दसानन बोला । ६-७७।४
सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । ६-३९।५
सुभट समर रस दुहु दिसि माते । ६-८०।३
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । ५-३९।५
सुमति छुधा बाढ़इ नित नई । ७-१२१।१०
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । १-३५।३
सुमन चाप निज सर संधाने । १-८६।२
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । १-२३६।३
सुमन बरषि सब सुर चले । ६-११४।क
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं । २-३१०।७
सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना । १-३०८।४
सुमन बाटिका बाग बन । १-२१२।०
सुमन बाटिका सबहिं लगाईं । ७-२७।१
सुमनबृष्टि अकास तें होई । १-१९३।२
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे । १-९०।८
सुमन बृष्टि नभ संकुल । ७-८।ख
सुमन माल जिमि कंठ ते । ४-१०।०
सुमन समेत बाम कर दोना । १-२३२।८
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु । ६-११६।ग
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । १-५२।४
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू ! २-८६।८
सुमिरत प्रभु लीला सोइ । ७-७५।ख
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । २-३०३।३
सुमिरत रामहि तजहिं जन । २-१४०।०
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । १-१९।२
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी । १-१२४।४
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । ६-७५।१५
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना । १-३३८।८
सुमिरि पवनसुत पावन नामू । १-२५।६
सुमिरि भवानी संकरहि । १-४३।क
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । २-४३।७
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । २-१४०।४
सुमिरि राम के गुन गन नाना । ७-१२३।१
सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । १-३०१।३
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । २-१९०।४
सुमिरि राम मागेउ तुरत । २-१९०।०
सुमिरि राम रघुबंस मनि । ७-११२।क
सुमिरि राम सिय चरन तब । २-१८७।०
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । १-१४।८
सुमिरि सीय नारद बचन । १-२२९।०
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । १-२७।२

सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा ।१-३४६।८
सुमिरि संभु गुर बिप्र पद ।१-३५७।०
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें ।१-२०।६
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें ।१-२६०।११
सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा ।६-११३।८
सुर काज धरि नरराज तनु चले ।२-१२५।१२
सुर किंनर नर नाग मुनीसा ।१-२६४।२
सुर गन सहित सभय सुरराजू ।२-२६४।१
सुर डरत चौदह सहस प्रेत ।३-१९।२७
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं ।१-३४६।२
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए ।२-१३६।७
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं ।७-१४।४
सुर दुंदुभीं बजावहिं हरषहिं ।६-७०।९
सुर नर असुर नाग खग माहीं ।३-२२।१
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ।१-२१९।६
सुर नर नारि सुमंगल गाईं ।१-३०१।६
सुर नर मुनि कोउ नाहिं ।१-१४०।०
सुर नर मुनि सचराचर साईं ।३-१३।६
सुर नर मुनि सब कै यह रीती ।४-११।२
सुरपति निज रथ तुरत पठावा ।६-८८।२
सुरपति बसइ बाहँबल जाकें ।२-२४।२
सुरपति सुत जानइ बल थोरा ।६-३५।१२
सुरपति सुत धरि बायस बेषा ।३-०।५
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं ।१-३२२।१०
सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं ।१-२८७।६
सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला ।१-३२२।५
सुर प्रसून बरषहिं हरषि ।१-३३९।०
सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू ।२-१७४।२
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ।६-८०।१
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब ।१-३४४।०
सुर बानर देखे बिकल ।६-९६।०
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन ।६-११२।१९
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ।१-२७२।६
सुरमाया बस बैरिनिहि ।२-१६।०
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे ।२-३०१।४
सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा ।१-१८३।९
सुर मुनि नाग नगर नर नारी ।१-२६९।६
सुर मुनि सभय प्रभु देखि ।३-१९।२८
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर ।७-७९।८
सुर रंजन भंजन महि भारा ।३-२२।३
सुर रंजन सज्जन सुखद ।१-१३९।०
सुर लखे राम सुजान पूजे ।१-३२०।११
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति ।६-१०१।१४
सुर समाज सब भाँति अनूपा ।१-९१।८
सुर समूह बिनती करि ।१-१९१।०
सुरसर सुभग बनज बन चारी ।२-५९।५
सुरसरि जल कृत बारुनि जाना ।१-६९।१
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि ।२-१३१।६
सुरसरि नाघि जान तब आयो ।६-१२०।७
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें ।१-६९।२
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या ।२-१३७।४
सुर स्वारथी मलीन मन ।२-२९५।०
सुर स्वारथी सराहि कुल ।२-३०८।०
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि ।१-३२५।१२
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि ।२-२७५।११
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल ।६-१०२।१४
सुर सुगंध सुचि बरषहिं बारी ।१-३४६।६
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध ।१-३२६।१४

सौजन्य - श्री गोविन्द नारायण काकड़ा, ३७ कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता - ७०० ००१

सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी ।७-१२०।२५
सुर सुरभी सुरतरु सबही कें ।२-२१४।६
सुर सुंदरी करहिं कल गाना ।१-६०।४
सुर सेनप उर बहुत उछाहू ।१-३१६।५
सुर सेवा करि आयसु पाई ।२-११७।२
सुरन्ह कही निज बिपति सब ।१-८३।०
सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही ।२-२९४।१
सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना ।१-३१३।१
सुरभि फूल फल अमिअ समाना ।२-२१४।४
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता ।५-१।२
सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु ।२-३११।०
सुलभ सुखद मारग यह भाई ।७-४४।२
सुहृद सुजान सुसाहिबहि ।२-३००।०
सुंदर उपबन देखन गए ।७-३१।२
सुंदर केकिहि पेखु ।१-१६१।०
सुंदर खग गन गिरा सुहाई ।३-३९।४
सुंदर गौर सुबिप्रबर ।१-७२।०
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोईं ।१-३५७।४
सुंदर बन कुसुमित अति सोभा ।४-१२।१
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा ।७-५५।६
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा ।१-३२६।९
सुंदर मनोहर मंदिरायत ।७-२६।११
सुंदर सकल अलंकृत सोहे ।१-२९८।६
सुंदर सदनु सुखद सब काला ।१-२१६।७
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता ।१-२१६।२
सुंदर स्यामल गौर तन ।१-२४२।०
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला ।१-११८।९
सुंदर सहज अगम अनुमानी ।१-१७८।६
सुंदर सहज सुसील सयानी ।१-६६।२
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं ।२-२४८।८
सुंदर सुखद मोहि अति भावा ।७-११२।८
सुंदर सुखद सकल गुन रासी ।१-२४५।४
सुंदर सुजान कृपा निधान ।७-१२९।१७
सुंदरता कहुँ सुंदर करई ।१-२२९।७
सुंदरता मरजाद भवानी ।१-९९।८
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा ।३-१६।१३
सुंदरीं सुंदर बरन्ह सह सब ।१-३२४।२५
सूख हाड़ लै भाग सठ ।१-१२५।०
सूखहिं अधर जरइ सबु अंगू ।२-३९।१
सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी ।२-१४४।४
सूझ न एकउ अंग उपाऊ ।१-७।६
सूझहिं राम चरित मनि मानिक ।१-०।८
सूत बचन सुनतहिं नरनाहू ।२-१५२।५
सूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना ।७-९९।९
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना ।७-९८।२
सून बीच दसकंधर देखा ।३-२७।७
सूपनखा आगें करि लीनी ।३-१७।६
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी ।६-३५।१३
सूपनखा रावन कै बहिनी ।३-१६।३
सूपनखहि समुझाइ करि ।३-२२।०
सूपोदन सुरभी सरपि ।१-३२८।०
सूर कवन रावन सरिस ।६-२८।०
सूर प्रतापी अतुलबल ।१-१७८।०
सूर सचिव सेनप बहुतेरे ।१-२१३।३
सूर समर करनी करहिं ।१-२७४।०
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे ।२-२४।४
सृंगबेरपुर भरत दीख जब ।२-१९६।१
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा ।१-१८८।५

सेज रुचिर रचि रामु उठाए ।१-३५५।५
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई ।६-३।३
सेतुबंध भइ भीर अति ।६-४।०
सेतु बाँधि कपि सेन जिमि ।७-६७।क
सेन बिलोकि राउ हरषाना ।१-१५३।४
सेन बिलोकि सहज अभिमानी ।१-१८०।४
सेन मनहुँ करुना सरित ।२-२७५।०
सेन सकल तीरथ बर बीरा ।२-१०४।६
सेन समेति जथा रघुबीरा ।७-६६।७
सेन सहित उतरे रघुबीरा ।६-४।२
सेन सहित तव मान मथि ।६-२६।०
सेन संग चतुरंग अपारा ।१-१५३।३
सेनापति कामादि भट ।७-७१।०
सेवक कर पद नयन से ।२-३०६।०
सेवक बचन सत्य सब जाने ।२-२३४।१
सेवक मन मानस मराल से ।१-३१।१४
सेवकु राउ करम मन बानी ।२-२८४।४
सेवक सकल बजनिआ नाना ।१-३५०।८
सेवक सचिव भरत रुख पाई ।२-३१७।५
सेवक सचिव सकल पुरबासी ।२-२।२
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी ।४-६।९
सेवक सदन स्वामि आगमनू ।२-८।५
सेवक स्वामि सखा सिय पी के ।१-१४।४
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन ।२-३०८।४
सेवक सुख चह मान भिखारी ।३-१६।१५
सेवक सुखद सुभग सब अंगा ।१-२८४।४
सेवक सुत पति मातु भरोसें ।४-२।४
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती ।१-२४।७
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा ।२-२२०।७
सेवक सेनप सचिव सब ।२-२४२।०
सेवक सेब्य भाव बिनु ।७-११९।क
सेवक हम स्वामी सियनाहू ।२-२३।६
सेवक हित साहिब सेवकाई ।२-२६७।४
सेवकु सो जो करै सेवकाई ।१-२७०।३
सेवत तोहि सुलभ फल चारी ।१-२३५।१
सेवत बिषय बिबर्ध जिमि ।६-९२।०
सेवत सुलभ सकल सुख दायक ।१-१४५।२
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी ।२-४१।३
सेवहिं लखनु करम मन बानी ।२-१३८।८
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि ।२-१४१।२
सेवहिं सकल चराचर ताही ।१-१३०।४
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें ।२-१७।३
सेवहिं सानकूल सब भाई ।७-२४।१
सेवहिं सुकृती साधु सुचि ।२-१०५।०
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा ।२-६८।४
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा ।६-१०३।६
सेष सहस्रसीस जग कारन ।१-१६।७
सेस सारदा बेद पुराना ।१-१०७।६
सैल बिसाल आनि कपि देहीं ।६-१।१
सैल बिसाल देखि एक आगें ।५-२।८
सैलराज बड़ आदर कीन्हा ।१-६५।६
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं ।१-९३।३
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी ।१-६६।७
सैल हिमाचल आदिक जेते ।२-१३७।७
सैलु सुहावन कानन चारू ।२-१३१।४
सैलोपरि सर सुंदर सोहा ।७-५५।१०
सो अज प्रेम भगति बस ।१-१९८।०
सो अनन्य जाकें असि ।४-३।०

सो अनुराग कहाँ अब भाई ।६-६०।५
सो अब भिरत काल ज्यों ।६-९४।०
सो अबहीं बरु जाउ पराई ।६-७७।५
सोऽयं भूतिबिभुषण: सुरवर: ।२-श्लोक१।३
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं ।७-५७।८
सो अवलंब देव मोहि देई ।२-३०६।८
सो अवसर बिरंचि जब जाना ।१-१९०।५
सो आदरिअ करिअ हित मानी ।२-१७५।२
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा ।६-४८।५
सो उमेस मोहि पर अनुकूला ।१-१४।७
सो एक राम अकाम हित ।७-१२९।१८
सो कछु देव न मोहि निहोरा ।३-७।५
सो कपि भालु न रन महँ देखा ।६-४९।८
सो करउ अघारी चिंत हमारी ।१-१८५।१०
सो करि कहउँ हिए अपने की ।२-३००।२
सो कलिकाल कठिन उरगारी ।७-९६।८
सो कि देह धरि होइ नर ।१-५०।०
सो कि बंध तर आवइ ।६-७३।०
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें ।१-२२२।६
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी ।२-३१६।१
सो कुल धन्य उमा सुनु ।७-१२७।०
सो कृत निंदक मंदमति ।७-४४।०
सो कृपाल मोहि तो पर ।७-१२४।क
सो केवल भगतन हित लागी ।१-१२।५
सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी ।२-२९८।७
सो गोसाइँ बिधि गति जेहिं छेंकी ।२-२५४।८
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा ।१-१३२।८
सो छबि सीता राखि उर ।३-२९।ख
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा ।१-२७५।३
सो जल सुकृत सालि हित होई ।१-३५।७
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ।१-२।६
सो जेवनार कि जाइ बखानी ।१-९८।५
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि ।१-३२४।२०
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर ।७-१२०।११
सो तनु राखि करब मैं काहा ।२-१५४।६
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू ।२-३०५।३
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी ।१-१४८।७
सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना ।२-२०७।१
सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा ।७-११०।६
सो दई रिपुसूदनहि भूपति ।१-३२४।२२
सो दयाल नहिं कहेउ कछु ।७-१०६।ख
सो दससीस स्वान की नाईं ।३-२७।९
सो दसा देखत समय तेहि ।२-१७५।११
सो दासी रघुबीर कै ।७-७१।ख
सो दुख अरु जुबती बिरह ।६-३१।क
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी ।७-१२६।७
सो धनु राजकुअँर कर देहीं ।१-२५५।४
सो न सकहिं कहि कलप सत ।१-३१८।०
सो न होइ बिनु बिमल मति ।१-१४।ख
सो नयन गोचर जासु गुन ।४-९।६
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला ।३-३८।४
सो नर क्यों दसकंध बालि ।६-३३।क
सो प्रगट करुना कंद सोभा ।३-३१।१३
सो पछिताइ अघाइ उर ।२-६३।०
सो परनारि लिलार गोसाईं ।५-३७।६
सो परत्र दुख पावइ ।७-४३।०
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा ।४-२४।७
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ ।१-६३।२

सो फलु मोहि बिधाताँ दीन्हा ।१-५८।३
सो बड़ सो सब गुन गन गेहू ।२-१०७।३
सो बन बरनि न सक अहिराजा ।३-१३।४
सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन ।२-१३८।३
सो बिचारि सहि संकटु भारी ।२-३०५।५
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति ।१-९।०
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा ।१-२७०।५
सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति ।६-८२।९
सो भनु मनुज खाब हम भाई ।६-८।६
सो भावी बस रानि अयानी ।२-२०६।६
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा ।५-९।४
सो भुजबल राखेहु उर घाली ।६-२८।८
सो मति मोरि भरत महिमाही ।२-२८७।५
सो मति मोहि कहत करु भोरी ।२-२९४।६
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई ।७-११९।११
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं ।५-१४।७
सो मम लोचन गोचर आगें ।३-३०।७
सो मम हित लागी जन अनुरागी ।१-१९१।८
सो महिमा समुझत प्रभु केरी ।७-२१।३
सो माया न दुखद मोहि काहीं ।७-७७।२
सो मायाबस भयउ गोसाईं ।७-११६।३
सो माया रघुबीरहि बाँची ।६-८८।७
सो मैं कहौं कवन बिधि बरनी ।१-३५४।६
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती ।२-२४०।६
सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु ।१-१४१।०
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं ।२-१३८।७
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई ।२-२९७।८
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी ।२-१८१।४
सो मो सन कहि जात न कैसें ।१-२।१२
सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई ।७-१२५।८
सो राम बाम बिभाग राजति ।६-१०८।१५
सो राम रमा निवास संतत ।३-३१।१७
सो सकोच रसु अकथ सुबानी ।२-३१७।३
सो सठु कोटिक पुरुष समेता ।२-१८३।७
सो सब अद्भुत देखेउँ ।७-८०।क
सो सब कहिहि देव रघुबीरा ।३-३५।१२
सो सबु कारन जान बिधाता ।१-२३०।४
सो सब तव प्रताप रघुराई ।५-३२।९
सो सब प्रिया सहज बस मोरें ।६-१५।५
सो सबु मोर पाप परिनामू ।२-३५।२
सो सब सादर कहिहउँ ।७-५५।०
सो सब हेतु कहब मैं गाई ।१-३२।२
सो सिख देइअ अवधि लगि ।२-३१३।०
सो सिर धरि धरि करिहि सबु ।२-२६९।०
सो सिर परेउ दसानन आगें ।६-७०।५
सो सीता कर खोज कराइहि ।४-३।४
सो सीतापति भजन को ।२-२४३।०
सो सुख जानइ मन अरु काना ।७-८७।३
सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ ।२-२९०।१
सो सुख धाम राम अस नामा ।१-१९६।६
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी ।१-३४२।५
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना ।७-८६।५
सो सुत बिछुरत गए न प्राना ।२-१४८।८
सो सुतंत्र अवलंब न आना ।३-१५।३
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं ।१-६।३
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई ।२-२४।३
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू ।२-३९।८
सो सुनि रामहि भा अति सोचू ।२-२२६।३

सो संबाद उदार जेहि बिधि ।१-१२०।ग
सो हरिभगति काग किमि पाई ।७-५३।८
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें ।३-३५।७
सोइ उपदेस कहहु करि दाया ।७-११०।१०
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब ।२-८०।०
सोइ कबि कोबिद सोइ रनधीरा ।७-१२६।४
सोइ करतूति बिभीषन केरी ।१-२८।७
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा ।२-१००।४
सोइ कोसलाधीस रघुराया ।६-६।७
सोइ गुन सागर ईस ।६-१७।क
सोइ गुनग्य सोई बड़भागी ।४-२२।७
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा ।५-२।४
सोइ जल अनल अनिल संघाता ।१-६।१२
सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं ।१-१२१।१
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई ।२-१२६।३
सोइ दसरथ सुत भगत हित ।१-११८।०
सोइ निज भगति मोहि प्रभु ।७-८४।ख
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा ।७-७१।२
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ।१-११८।२
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा ।७-९५।२
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा ।१-२४९।३
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि ।१-३०।८
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई ।६-२३।७
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू ।१-७०।६
सोइ बिजई बिनई गुन सागर ।५-२९।३
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु ।१-१५०।०
सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना ।७-६८।२
सोइ भरोस मोरें मन आवा ।१-९।८
सोइ भव तर कछु संसय नाहीं ।७-१०२।७
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ।१-५०।८
सोइ मय दानवँ बहुरि सँवारा ।१-१७७।६
सोइ मयँ दीन्हि रावनहि आनी ।१-१७७।३
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं ।७-११४।१०
सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता ।१-५४।५
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी ।६-६।५
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन ।१-५०।११
सोइ रावन कहुँ बनी सहाई ।५-३७।१
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी ।६-२४।८
सोइ लरिकाई मो सन ।७-८२।ख
सोइ सच्चिदानंद घन ।७-२५।०
सोइ सच्चिदानंद घन रामा ।७-७१।३
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ।२-१५१।२
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ।२-७९।८
सोइ सयान जो परधन हारी ।७-९७।५
सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता ।७-१२६।१
सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित ।७-४८।७
सोइ सादर सर मज्जनु करई ।१-३८।६
सोइ सिय चलन चहति बन साथा ।२-५८।७
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा ।१-२९।४
सोइ सिसुपन सोइ सोभा ।७-८१।ख
सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति ।१-१५०।०
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ।४-११।४
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई ।१-२६५।८
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई ।७-४२।५
सोइ सोइ भाव देखावइ ।७-७२।ख
सोइ संपदा बिभीषनहि ।५-४९।ख
सोइ हम करब न आन कछु ।१-१३२।०
सोइ हरिमाया सब गुन खानी ।१-१२९।५

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज ।१-२१०।१४
सोई सुख लवलेस जिन्ह ।७-८८।ख
सोउ जाने कर फल यह लीला ।७-२१।५
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें ।६-२८।३
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी ।७-२१।४
सोउ मुनि ग्यान निधान ।७-११५।ख
सोक कनकलोचन मति छोनी ।२-२९६।३
सोक नेवारेउ सबहि कर ।२-१५६।०
सोक बिकल अति सकल समाजू ।२-२४६।६
सोक बिकल दोउ राज समाजा ।२-२७५।७
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू ।२-१४८।५
सोक बिकल सब रोवहिं रानी ।२-१५५।३
सोक बिबस कछु कहै न पारा ।२-४३।५
सोक मगन सब सभाँ खभारू ।२-२६२।२
सोक मोह संदेह भ्रम ।१-११२।०
सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ ।२-२९९।१
सोक समाजु राजु केहि लेखें ।२-१७७।३
सोक सिथिल रथ सकइ न हाँकी ।२-१४२।४
सोक सिंधु बूड़त सबहि ।२-१८४।०
सोच उसास समीर तरंगा ।२-२७५।२
सोचनीय नहिं कोसलराऊ ।२-१७२।५
सोचनीय सबहीं बिधि सोई ।२-१७२।४
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ ।२-३७।७
सोच बिकल मग परइ न पाऊ ।२-३८।३
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना ।२-१४३।३
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा ।२-६९।४
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं ।१-१७४।२
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ।१-२४८।२
सोचहिं सब निज हृदय मझारी ।६-१३।२

सोचिअ गृही जो मोह बस ।२-१७२।०
सोचिअ जती प्रपंच रत ।२-१७२।०
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना ।२-१७१।४
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी ।२-१७२।२
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी ।२-१७१।७
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई ।२-१७१।८
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू ।२-१७१।५
सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना ।२-१७१।३
सोचिअ सूद्रु बिप्र अवमानी ।२-१७१।६
सोधि सुमृति सब बेद पुराना ।२-१६९।६
सोनित स्त्रवत सोह तन कारे ।६-६८।७
सोपान सुंदर नीर निर्मल ।७-२८।१०
सोपि राम महिमा मुनिराया ।१-४५।५
सोभत भयउ मराल इव ।६-२२।०
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु ।२-७।०
सोभा दसरथ भवन कइ ।१-२९७।०
सोभा देखि हरषि मन ।६-११२।०
सोभा देखि हरषि सुर ।६-८६।०
सोभा धाम राम अस नामा ।३-२१।८
सोभा मंगल मोद भरि ।१-३२७।०
सोभा रजु मंदरु सिंगारू ।१-२४६।८
सोभासिंधु बिलोकत ।६-१११।०
सोभासिंधु हृदयँ धरि ।७-५१।०
सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा ।१-२३२।१
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ ।५-१।८
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू ।२-८९।५
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला ।५-५४।६
सोह न राम पेम बिनु ग्यानू ।२-२७६।५
सोह नवल तनु सुंदर सारी ।१-२४७।२

सोह मदनु मुनि बेष जनु ।२-१३३।०
सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा ।७-११७।१
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ ।१-६५।३
सोहत जनु जुग जलज सनाला ।१-२६३।७
सोहत दिएँ निषादहि लागू ।२-१९६।२
सोहत ब्याह साज सब साजे ।१-३२६।६
सोहत मौरु मनोहर माथे ।१-३२६।१०
सोहत साथ सुभग सुत चारी ।१-३१४।६
सोहति बनिता बृंद महुँ ।१-३२२।०
सोहति सीय राम कै जोरी ।१-२६४।७
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं ।६-९४।७
सौंपि नगर सुचि सेवकनि ।२-१८७।०
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू ।२-३२१।७
सौंपे भूप रिषिहि सुत ।१-२०८।क
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी ।६-६०।१५
सौंपेहु राजु राम के आएँ ।२-१७४।८
सौभागिनीं बिभूषन हीना ।७-९८।५
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।६-७९।५
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका ।१-८६।५
सौरभ पल्लव सुभग सुठि ।१-२८८।०
संकट सहत सकोच बस।२-२९२।०
संकर उर अति छोभु ।१-४८।ख
संकर चापु जहाजु ।१-२६१।०
संकरु जगतबंद्य जगदीसा ।१-४९।६
संकर दीनदयाल अब ।७-१०८।घ
संकरप्रिय मम द्रोही ।६-२।०
संकर बिमुख भगति चह मोरी ।६-१।८
संकर भजन बिना नर ।७-४५।०
संकरु राम रूप अनुरागे ।१-३१६।२

संकर रुख अवलोकि भवानी ।१-५७।३
संकर सहज सरूपु सम्हारा ।१-५७।८
संकर सहस बिष्नु अज तोही ।५-२२।८
संकुल मकर उरग झष जाती ।५-४९।६
संकुल लता बिटप घन कानन ।३-३२।५
संख निसान पनव बहु बाजे ।१-३१२।३
संग तें जती कुमंत्र ते राजा ।३-२०।१०
संग भालु भूधर तरु धारी ।६-९७।१३
संग लाइ करिनीं करि लेहीं ।३-३६।७
संग सखीं सब सुभग सयानीं ।१-२२७।३
संग सखीं सुंदर चतुर ।१-२६३।०
संग सचिव सुचि भूरि भट ।१-२१४।०
संग सती जगजननि भवानी ।१-४७।२
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी ।१-१८३।१०
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि ।१-९४।१०
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा ।२-१०४।७
संग्राम अंगन राम अंग ।६-१०२।१५
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं ।६-८७।१४
संग्राम पुर बासी मनहुँ ।३-१९।१९
संग्राम भूमि बिराज रघुपति ।६-७०।१३
संत असंत भेद बिलगाई ।७-३६।५
संत असंत मरम तुम्ह जानहु ।७-१२०।५
संत असंतन्ह के गुन भाषे ।७-४०।८
संत असंतन्हि कै असि करनी ।७-३६।७
संत उदय संतत सुखकारी ।७-१२०।२१
संत कहहिं असि नीति दसानन ।६-६।३
संत कहहिं असि नीति प्रभु ।१-४५।०
संत चरन पंकज अति प्रेमा ।३-१५।९
संत बिटप सरिता गिरि धरनी ।७-१२४।६

संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही ।७-६८।७
संतसभा अनुपम अवध ।१-३९।०
संतसभा चहुँ दिसि अवँराई ।१-३६।१२
संत समाज पयोधि रमा सी ।१-३०।१०
संत सरल चित जगत हित ।१-३।ख
संत सहहिं दुख परहित लागी ।७-१२०।१५
संत संग अपबर्ग कर ।७-३३।०
संत सुधा ससि धेनु ।१-१४।च
संत संभु श्रीपति अपबादा ।१-६३।३
संत हृदय जस निर्मल बारी ।३-३८।७
संत हृदय नवनीत समाना ।७-१२४।७
संत हंस गुन गहहिं पय ।१-६।०
संतत जपत संभु अबिनासी ।१-४५।३
संतत दासन्ह देहु बड़ाई ।३-१२।१४
संतत मो पर कृपा करेहू ।३-५।३
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा ।३-४४।५
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता ।७-३६।६
संतन्ह कै महिमा रघुराई ।७-३६।२
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ ।७-९२।क
संध्या भइ फिरी द्वौ बाहनी ।६-५४।४
संध्या समय जानि दससीसा ।६-९।६
संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि ।६-९२।१०
संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि ।६-८१।९
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला ।५-५७।६
संपति चकई भरतु चक ।२-२१५।०
संपति सब रघुपति कै आही ।२-१८५।३
संपुट भरत सनेह रतन के ।२-३१५।६
संबत मध्य नास तव होऊ ।१-१७३।३
संबत सप्त सहस्र पुनि ।१-१४४।०
संबत सहस मूल फल खाए ।१-७३।४
संबत सोरह सै एकतीसा ।१-३३।४
संबंध राजन रावरे हम ।१-३२५।१५
संबुक भेक सेवार समाना ।१-३७।४
संभारि उठि दसकंठ घोर ।६-९६।१०
संभारि श्री रघुबीर धीर ।६-९४।९
संभावित कहुँ अपजस लाहू ।२-९४।७
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा ।१-२९।३
संभु कीन्ह संग्राम अपारा ।१-१२२।६
संभुगिरा पुनि मृषा न होई ।१-५०।३
संभु चरित सुनि सरस सुहावा ।१-१०३।१
संभुचाप बड़ बोहितु पाई ।१-२५९।७
संभु दीन्ह उपदेस हित ।१-१२७।०
संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी ।१-३५।१
संभु बचन मुनि मन नहिं भाए ।१-१२७।२
संभु बिरोध न कुसल मोहि ।१-८३।०
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना ।१-१४३।६
संभु मंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा ।७-१०४।७
संभु समय तेहि रामहि देखा ।१-४९।१
संभु सरासनु काहुँ न टारा ।१-२९१।५
संभु सरासनु तोरि सठ ।१-२८०।०
संभु सहज समरथ भगवाना ।१-६९।३
संभु सुक्र संभूत सुत ।१-८२।०
संशय सर्प ग्रसन उरगाद: ।३-१०।९
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता ।७-९२।६
संसय सील प्रेम बस अहहू ।२-१८०।८
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि ।७-२९।७
संसार महँ पूरुष त्रिबिध ।६-८९।१२
संसार सिंधु अपार पार ।६-१०५।१२

संसारामयभेषजं सुखकरं ।४-श्लोक२।३
संसृत मूल सूलप्रद नाना ।७-७३।६
संसृति रोग सजीवन मूरी ।७-१२८।२
सांत बेषु करनी कठिन ।१-२६८।०

ह

हठ बस सब संकट सहे ।२-६१।०
हठि फेरु रामहि जात बन ।२-४९।१०
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे ।७-१३।८
हतौं न खेत खेलाइ खेलाई ।६-३४।११
हथवाँसहु बोरहु तरनि ।२-१८९।०
हनुमत जन्म सुफल करि माना ।४-२२।१२
हनुमनादि मुरुछित करि बंदर ।६-९७।११
हनुमदादि सब बानर बीरा ।७-७।२
हनुमंत अंगद नील नल।६-९५।११
हनुमंत संकट देखि मर्कट ।६-९४।११
हनूमान अंगद के मारे ।६-११८।१०
हनूमान अंगद रन गाजे ।६-४६।६
हनूमान तेहि परसा ।५-१।०
हनूमान भरतादिक भ्राता ।७-४९।२
हनूमान सम नहिं बड़भागी ।७-४९।८
हने निसान पनव बर बाजे ।१-३४३।१
हम अब बन तें बनहि पटाई ।२-२९१।४
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा ।१-१५८।७
हम काहू के मरहिं न मारें ।१-१७६।४
हम कुल घालक सत्य तुम्ह ।६-२१।०
हम छत्री मृगया बन करहीं ।३-१८।९
हम जड़ जीव जीव गन घाती ।२-२५०।४
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ।५-२५।४
हम देवता परम अधिकारी ।६-१०९।११
हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई ।४-२७।२
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई ।३-१८।४
हम सब धन्य सहित परिवारा ।२-१३५।३
हम सब भाँति करब सेवकाई ।२-१३५।५
हम सब सकल सुकृत कै रासी ।१-३०९।४
हम सब सानुज भरतहि देखें ।२-२२२।३
हम सब सेवक अति बड़भागी ।४-२५।१३
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे ।२-२७३।८
हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना ।४-२५।९
हम सेवक परिवार समेता ।२-१३५।८
हमरें जान सदा सिव जोगी ।१-८९।३
हमरें तौ अब ईस गति ।२-२८४।०
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा ।२-२४९।७
हमहि कृतारथ करन लगि ।२-२५०।०
हमहि तुम्हहि सरिबरि कसि नाथा ।१-२८१।५
हमहि देखि मृग निकर पराहीं ।३-३६।५
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती ।२-१५।४
हमहू उमा रहे तेहिं संगा ।६-८०।२
हय गय कोटिन्ह केलि मृग। २-८३।०
हर उर सर सरोज पद जेई। ५-४१।८
हर कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ ।७-१०५।५
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा ।५-२०।८
हर गन मुनिहि जात पथ देखी ।१-१३८।१
हर गन हम न बिप्र मुनिराया ।१-१३८।३
हरगिरि मथन निरखु मम बाहू ।६-२७।८
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू ।१-१००।६
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ ।१-१०२।६
हर गुर निंदक दादुर होई ।७-१२०।२३
हर बिरहँ जाइ बहोरि पितु के ।१-९७।१०

सौजन्य - श्री आनन्द कुमार लडिया, ११०/६, बांगुर एवेन्यू, कलकत्ता-५५

हर हियँ रामचरित सब आए ।१-११०।७
हर हृदि मानस बाल मरालं ।३-१०।८
हरइ सिष्य धन सोक न हरई ।७-९८।७
हरत मनोहर मीन छबि ।१-३२६।०
हरद दूब दधि पल्लव फूला ।१-३४५।४
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ।२-३२५।६
हरन मोह तम दिनकर कर से ।१-३१।१०
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई ।७-४९।५
हरष बिबस तन दसा भुलानी ।१-१४७।७
हरष बिषाद ग्यान अग्याना ।१-११५।७
हरष बिषाद सहित चले ।६-११८।क
हरष समय बिसमउ करसि ।२-१५।०
हरष समेत बसिष्ट पद ।७-१०।ख
हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ ।७-११३।९
हरषवंत सब जहँ तहँ ।१-१९४।०
हरषहिं निरखि राम पद अंका ।२-२३७।३
हरषि चले निज निज गृह आए ।१-२८६।५
हरषि चले मुनि बृंद सहाया ।१-२११।४
हरषि चले सुग्रीव तब ।४-२०।०
हरषि परसपर मिलन हित ।१-३०५।०
हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए ।१-३०६।७
हरषि भरत कोसलपुर आए ।७-२।१
हरषि मिले उठि रमानिकेता ।१-१२७।५
हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी ।२-५।१
हरषि राम तब कीन्ह पयाना ।५-३४।४
हरषि राम भेटेउ हनुमाना ।६-६१।१
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं ।१-२४७।५
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आईं ।२-११।८
हरषित गुर परिजन अनुज ।७-३।क
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी ।१-१९२।२
हरषित बरषहिं सुमन सुर ।३-२०।ख
हरषित भयउ नारि भलि पाई ।१-१७७।४
हरषित महतारी मुनि मन हारी ।१-१९१।२
हरषित रहहिं नगर के लोगा ।७-२४।४
हरषित राम चरन सिर नावहिं ।६-३८।७
हरषित हृदयँ मातु पहिं आए ।२-७२।३
हरषे जनकु देखि दोउ भाई ।१-२४३।४
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता ।१-३२२।४
हरषे पुर नर नारि सब ।१-२८५।०
हरषे बिबुध बिलोकि बराता ।१-३०१।४
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी ।१-२३९।३
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता ।१-३०७।८
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी ।७-३।८
हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।५-२७।३
हरषे हेतु हेरि हर ही को ।१-१८।७
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू ।१-१६४।७
हरि अनंत हरिकथा अनंता ।१-१३९।५
हरि अवतार हेतु जेहि होई ।१-१२०।२
हरि इच्छा भावी बलवाना ।१-५५।६
हरि गुन नाम अपार ।१-१२०।घ
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा ।७-५२।७
हरि जन द्विज देखें जरउँ ।७-१०५।क
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी ।५-१३।१
हरि जननी बहुबिधि समुझाई ।१-२०१।८
हरि पद बिमुख परम गति चाहा ।१-२६६।४
हरि प्रेरित जेहिं कलप जोइ ।१-१७८।ख
हरि प्रेरित तेहि अवसर ।५-२५।०
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना ।१-१८४।५

हरि बिषइक अस मोह बिहंगा ।७-७२।७
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता ।१-२४१।५
हरि माया अति दुस्तर ।७-११८।क
हरि माया कर अमिति प्रभावा ।७-५९।४
हरि माया कृत दोष गुन ।७-१०४।क
हरि माया बल बरनत ।७-५९।०
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं ।१-११४।६
हरि सन मागौं सुंदरताई ।१-१३१।१
हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या ।७-७८।२
हरि हर कथा बिराजति बेनी ।१-१।१०
हरि हर जस राकेस राहु से ।१-३।३
हरि हर निंदा सुनइ जो काना ।६-३१।२
हरि हर पद रति मति न कुतरकी ।१-८।६
हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं ।१-१०५।१
हरि हित सहित रामु जब जोहे ।१-३१६।३
हरित भूमि तृन संकुल ।४-१४।०
हरित मनिन्ह के पत्र फल ।१-२८७।०
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई ।१-१८६।७
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं ।७-१२२।ग
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई ।१-२४८।३
हा गुन खानि जानकी सीता ।३-२९।७
हा जग एक बीर रघुराया ।३-२८।१
हा जानकी लखन हा रघुबर ।२-१५४।८
हा रघुनंदन प्रान पिरीते ।२-१५४।७
हा राम हा रघुनाथ ।६-१००।११
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा ।३-२८।३
हाट बाट घर गलीं अथाईं ।२-१०।३
हाट बाट नहिं जाइ निहारी ।२-१५८।१
हाट बाट मंदिर सुरबासा ।१-२८६।४
हाटक धेनु बसन मनि ।१-१९३।०
हानि कि जग एहि सम किछु भाई ।७-१११।९
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ।१-६।८
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी ।२-१४४।६
हानि लाभु जीवनु मरनु ।२-१७१।०
हारि परा खल बहु बिधि ।३-२९।०
हाहाकार करत सुर भागे ।६-९६।७
हाहाकार कीन्ह गुर ।७-१०७।क
हाहाकार भयउ जग भारी ।१-८६।७
हाहाकार भयउ पुर भारी ।६-४१।४
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा ।६-९२।५
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना ।२-२६३।४
हित मत तोहि न लागत कैसें ।६-९।५
हित हमार सियपति सेवकाई ।२-१७७।१
हिम ते अनल प्रगट बरु होई ।७-१२१।१९
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू ।१-४१।२
हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा ।७-९१।३
हिमगिरि गुहा एक अति पावनि ।१-१२४।१
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि ।१-३२३।२१
हियँ धरि राम रूप सब ।७-१७।क
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि ।२-२६४।८
हियँ सुमिरी सारदा सुहाई ।२-२९६।७
हियँ हरषहि बरषहिं सुमन ।१-२२३।०
हियँ हरषे कामारि तब ।१-१२०।क
हियँ हरषे मुनि बचन सुनि ।१-९०।०
हियँ हरषे सुर सेन निहारी ।१-९४।३
हिरन्याच्छ भ्राता सहित ।६-४८।क
हिंसा पर अति प्रीति ।१-१८३।०
हुने अनल अति हरष बहु ।६-२८।०

सौजन्य- श्री वीरेन्द्र स्वरूप कालानी, १० इण्डियन मिरर स्ट्रीट, कलकत्ता-१३

हुमगि लात तकि कूबर मारा ।२-१६२।४
हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि ।२-१४६।०
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं ।१-५४।६
हृदय सिंधु मति सीप समाना ।१-१०।८
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा ।१-१९७।७
हृदयँ असीसहिं पेम बस ।२-२४६।०
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना ।२-९३।५
हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना ।१-१५५।१
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु ।१-२७०।०
हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा ।४-८।४
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम ।१-१४२।०
हृदयँ बिचारत जात हर ।१-४८।क
हृदयँ बिचारति बारहिं बारा ।७-६।७
हृदयँ बिचारहु धीर धरि ।१-३१४।०
हृदयँ बिचारि संभु प्रभुताई ।१-९०।३
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई ।२-३६।२
हृदयँ रामु सिय लखन समेता ।२-३१९।७
हृदयँ लगाइ कुअँरि सब लीन्ही ।१-३३५।८
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता ।६-६१।३
हृदयँ सराहत सीय लोनाई ।१-२३६।१
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं ।१-३०५।८
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई ।२-१५७।२
हृदयँ सोचु समुझत निज करनी ।१-५७।१
हृदयँ हेरि हारेउ सब ओरा ।२-२६०।७
हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए ।१-१४४।८
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी ।३-२९।९
हे बिधि दीनबंधु रघुराया ।३-९।४
हेतु अपनपउ जानि जियँ ।२-१६०।०
हेतु रहित जग जुग उपकारी ।७-४६।५
हेम बौर मरकत घवरि ।१-२८८।०
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ।३-१२।१५
हैं दससीस मनुज रघुनायक ।६-६२।३
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना ।५-१५।६
होइ अकाजु आजु निसि बीतें ।२-२१।८
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि ।६-२।३
होइ घुनाच्छर न्याय जौं ।७-११८।ख
होइ न बिमल बिबेक उर ।१-४५।०
होइ न बिषय बिराग भवन ।१-१४२।०
होइ न मृषा देवरिषि भाषा ।१-६७।४
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा ।१-१२१।८
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल ।१-१४।छ
होइ बिकल सक मनहि न रोकी ।३-१६।६
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा ।२-९२।५
होइ बुद्धि जौं परम सयानी ।७-११७।९
होइ मरनु जेहिं बिनहिं श्रम ।१-५९।०
होइहहिं राम चरन अनुरागी ।१-१४।११
होइहहु अवध भुआल तब ।१-१५१।०
होइहि कहा कहसि किन माता ।६-९८।४
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ।७-६१।८
होइहि पूज्य सकल जग माहीं ।१-६६।५
होइहि भजनु न तामस देहा ।३-२२।५
होइहि यह कल्यान अब ।१-७०।०
होइहि सोइ जो राम रचि राखा ।१-५१।७
होइहैं सुफल आजु मम लोचन ।३-९।९
होएहु संतत पियहि पिआरी ।१-३३३।४
होत चकित चित कोट बिलोकी ।१-२१२।८
होत न भूतल भाउ भरत को ।२-२३७।८
होत प्रात बट छीरु मगावा ।२-१५०।२

सौजन्य - फास्ट फूड, द्वारा ट्रेंडन्यूज पब्लिकेशन, २३ सेन्ट्रल मार्केट, अशोक विहार, दिल्ली-५२

होत प्रातु मुनिबेष धरि ।२-३३।०
होत मगन बारिधि बिरह ।२-२२०।०
होत महा रन रावन रामहिं ।६-५६।५
होत सगुन सुंदर सबहि ।१-२९१।०
होनिहार का करतार को ।१-८३।११
होम करन लागे मुनि झारी ।१-२०९।२
होम समय तनु धरि अनलु ।१-३२३।०
होहि कि राम सरानल ।५-५६।ख
होहिं उलूक संत निंदा रत ।७-१२०।२६
होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए ।२-३०५।८
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग ।१-७।क
होहिं प्रेमबस लोग इमि ।२-१२१।०
होहिं बिप्र बस्य कवन बिधि ।१-१६६।०
होहिं सगुन बरषहिं सुमन ।१-३४७।०
होहिं सगुन मंगल सुभद ।१-९१।०
होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि ।७-९।ख
होहिं सनाथ जनम फलु पाई ।२-१०८।८
होहिं सहस दस सारद सेषा ।१-३४१।२
होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी ।३-२४।२
होहु निसाचर जाइ तुम्ह ।१-१३५।०
होहु प्रसन्न देहु बरदानू ।१-१३।७
होहु सँजोइल रोकहु घाटा ।२-१८९।१
हौं मारिहउँ भूप द्वौ भाई ।६-७८।१२
हौंहु कहावत सबु कहत ।१-२८।ख
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू ।२-६२।५
हंस बंस गुर जनक पुरोधा ।२-२७७।२
हंसबंसु दसरथु जनकु ।२-१६१।०
हँसत देखि नख सिख रिस ब्यापी ।१-२७६।६
हंसहि बक दादुर चातकही ।१-८।२
हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें ।२-१२।७
हँसि बोलेउ दसमौलि तब ।६-२३।च
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी ।१-७।१०
हँसे रामु श्री अनुज समेता ।६-११६।८
हँसेहु हमहि सो लेहु फल ।१-१३५।०

त्र

त्रय:शूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।७-१०७।१०
त्राहि त्राहि आरति हरन ।५-४५।०
त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह ।१-६६।०
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा ।७-१०६।६
त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ ।७-१०९।१
त्रिजटा नाम राच्छसी एका ।५-१०।१
त्रिजटा सन बोली कर जोरी ।५-११।१
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी ।१-३९।४
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन ।१-३४।१०
त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया ।१-१०५।३
त्रिभुवन जय समेत बैदेही ।१-२४९।४
त्रेताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही ।४-२७।७
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं ।७-१०२।२
त्रैलोक पावन सुजसु सुर ।४-२९।१४

मानस-अनुक्रमणिका

आद्याक्षरी प्रथम खण्ड पूर्ण

सौजन्य - आर. एस. एस. इंटरप्राइजेज (इम्पोर्ट + एक्सपोर्ट), १३७ कॉटन स्ट्रीट, कल-७

द्वितीय खण्ड
'मध्याक्षरी'